डॉ. ग. न. साठे

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा : प्रकाशन – ५८

मराठी स्वयं-शिक्षक

लेखक

प्रा. डॉ. गजानन नरसिंह साठे,

एम्. ए. (बम्बई), एम्. ए. (बनारस),
बी. टी., साहित्यरत्न, पीएच. डी.

द्वितीय संस्करण

१० आषाढ़ १८९५ | १ जुलाई १९७३

मूल्य ... रुपये
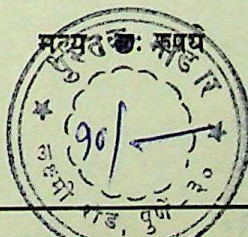
महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे

प्रकाशक :

ग. वा. करमरकर,
सचिव,
महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा,
राष्ट्रभाषा भवन, पुणे ३०

~ ~ ~

प्रथम संस्करण, अगस्त १९६०
द्वितीय संस्करण, १ जुलाई १९७३

~ ~ ~

प्रतियाँ : २,१००

~ ~ ~

मुद्रक :

गो. प. नेने,
राष्ट्रभाषा मुद्रणालय,
३८७ नारायण पेठ, पुणे ३०

प्र का श की य

हमारा भारत विशाल है। इसकी विशालता अनेक प्रकार की विविधता को अपने में समाए हुए है। विविधता हमारी विशेषता है, जो एक हद तक हमारे गौरव और वैभव को बढ़ाती है। इनमें से भाषा की अनेकता भी एक है। इस प्रकार हमारे देश की विशालता और विविधता को कायम रखते हुए राष्ट्र की एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने की आवश्यकता है। प्राचीन काल से धर्म, भाषा, आचार-विचार, तीर्थ-यात्रा आदि साधनों द्वारा भारत के जन-नायक इसकी एकता कायम रखने की कोशिश करते आए हैं। राष्ट्रभाषा-प्रचार का उद्देश्य भी यही है। एकता की भावना को कायम रखने का यह अच्छा साधन है।

भिन्न भाषी लोगों में परस्पर सौहार्द बनाए रखने तथा बढ़ाने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि हम एक-दूसरे के जीवन को अच्छी तरह समझें और एक-दूसरे की उपयोगी बातों को ग्रहण करते जाएँ। विचारों के आदान-प्रदान का सबसे अच्छा साधन भाषा ही है। इसलिए हम एक-दूसरे की भाषा सीखें। इस कार्य में **मराठी स्वयं-शिक्षक** जैसी पुस्तकें लाभकारी सिद्ध होंगी।

विभिन्न भाषाएँ बोलनेवाले लोगों को दूसरों की भाषा सीखने के लिए एक समान माध्यम भाषा की आवश्यकता होती है। सौभाग्य से हमारे देश में आम जनता के लिए हिन्दी ही ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा प्रादेशिक भाषाएँ सीखी-सिखाई जा सकती हैं।

भारत में साहित्यिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ाने के लिए प्रादेशिक साहित्य में जो कुछ उपयुक्त है उसे आत्मसात कर अपनी भाषा में लाना एक महत्त्वपूर्ण काम है। आजकल अनुवाद द्वारा जो आदान-प्रदान हो रहा है, उसका महत्त्व अवश्य बड़ा है, परन्तु इसके साथ ही एक भाषा का लेखक दूसरी भाषा में लिखने की कोशिश करे, तो उसका महत्त्व अधिक मानना पड़ेगा। 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा' ऐसे कार्य में लोगों को प्रेरित करना चाहती है। 'सभा' अहिन्दी भाषी प्रदेश में हिन्दी के प्रचार का कार्य करती है, जिसमें भाषिक तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान का समावेश होता है। केवल हिन्दी-प्रचार का कार्य एकांगी होगा; उससे संस्था के व्यापक उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो सकेगी। इसलिए 'सभा' ने साहित्यिक ग्रन्थों के अनुवाद प्रकाशित करने का कार्य आरम्भ किया है। अब तक ऋतुचक्र, चट्टान का बेटा (गारंबीचा बापू), अमीर (श्रीमंत), जूआ (जुगार) आदि अनूदित पुस्तकें 'सभा' की ओर से प्रकाशित की जा चुकी हैं। इस आदान-प्रदान के क्रम को सुलभ करने के लिए **मराठी स्वयं-शिक्षक** की योजना प्रस्तुत की गई है।

ऐसी पुस्तक के लिए यह आवश्यक है कि लेखक दोनों भाषाओं का ज्ञाता हो। प्रो. ग. न. साठे मराठी और हिन्दी लेकर एम. ए. हुए हैं। उन्हें माध्यमिक पाठशाला में पढ़ाने का पर्याप्त अनुभव है। आज-कल वे मुम्बई के पोदार कॉलेज ऑफ कॉमर्स में हिन्दी के प्राध्यापक हैं। उनके जैसे विद्वान और मर्मज्ञ लेखक को पुस्तक तैयार करने का काम सौंपा गया और उन्होंने यह जिम्मेदारी स्वीकार की जिसके लिए हम कृतज्ञ हैं। **मराठी स्वयं-शिक्षक** पाठकों के हाथ में देते हुए हम प्रार्थना करेंगे कि इसकी सहायता से मराठी पढ़ते समय उन्हें जो कठिनाइयाँ दिखाई देंगी और जिन बातों के सम्बन्ध में पुस्तक में उल्लेख होना आवश्यक प्रतीत होगा, उन्हें वे हमें अवश्य बताएँ, जिससे अगले संस्करण में उन्हें ग्रथित किया जा सके।

हमें आशा है कि यह पुस्तक मराठी के शिक्षार्थियों को लाभदायक होगी।

पुणे,
स्वतंत्रता-दिन, १९६०

गो. प. नेने

अपनी बात

भारतीय भाषाओं में मराठी का अपना एक स्थान है। बम्बई, पूना, नासिक, नागपुर जैसे महाराष्ट्र के नगरों में भारत के अन्यान्य प्रदेशों के निवासी व्यापार या किसी व्यवसाय के लिए बस गए हैं। इनमें हिन्दी-भाषियों की तादाद काफी बड़ी है। ये लोग यहाँ की मराठी भाषा सीखने की आवश्यकता अनुभव करते हैं। महाराष्ट्र में हिन्दी माध्यमवाली पाठशालाओं में मराठी भाषा प्रादेशिक भाषा के तौर पर पढ़ाई जाती है। देश में और विशेषतः हिन्दी-भाषी प्रदेश के लोगों में भिन्न-भिन्न प्रादेशिक भाषाएँ सीखने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वे मुख्यतः हिन्दी द्वारा ही मराठी या अन्य भाषाएँ सीखने का यत्न करते हैं। मराठी के इन नए शिक्षार्थियों की आवश्यकता को ध्यान में लेते हुए इस पुस्तक की रचना की गई है। महाराष्ट्र में जो लोग मराठी नहीं जानते, वे भी यहाँ के लोगों के साथ व्यवहार करते समय हिन्दी भाषा—चाहे वह टूटी-फूटी क्यों न हो—को ही ज्यादातर काम में लाते हैं। उन लोगों को मराठी सीखने में इस पुस्तक से निःसन्देह सहायता मिलेगी।

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे मुख्यतः मराठी-भाषी प्रदेश में हिन्दी का प्रचार करनेवाली प्रमुख संस्था है। ऐसी संस्था ही मराठी और हिन्दी के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कर सकती है। पर मराठी द्वारा हिन्दी का परिचय कराने के साथ-साथ हिन्दी द्वारा मराठी का परिचय कराने का भी उत्तरदायित्व 'सभा' पर है। इसलिए इस पुस्तक के प्रकाशन की योजना प्रस्तुत की गई। उक्त योजना के अनुसार **मराठी स्वयं-शिक्षक** को मराठी के शिक्षार्थियों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए मुझे खुशी हो रही है। मराठी के ऐसे नव-शिक्षार्थियों में न केवल पाठशालाओं के विद्यार्थी हैं, बल्कि पढ़े-लिखे तथा व्यवसायी प्रौढ़ व्यक्ति भी हैं। उच्च उपाधिधारी व्यक्तियों की भी कमी नहीं है। इनमें से पाठशालाओं के छात्रों को अध्यापकों से सहायता मिलेगी; लेकिन अन्य शिक्षार्थियों को या बोलचाल की 'प्रत्यक्ष' प्रणाली द्वारा मराठी सीखनी पड़ती है, या घर पर बैठे-बैठे किसी पुस्तक-पर निर्भर रहना पड़ता है। ऐसे सभी लोग इस 'स्वयं-शिक्षक' से लाभ उठा सकेंगे। इस पुस्तक की कुछ विशेषताओं का उल्लेख मैं '**अपनी बात**' में करना चाहता हूँ।

१. हिन्दी स्कूलों की सातवीं कक्षा उत्तीर्ण किए हुए विद्यार्थियों के भाषा तथा व्याकरण के ज्ञान का स्तर ध्यान में रखते हुए पाठों की रचना की गई है। व्याकरण की बारीकियों में शिक्षार्थियों को घसीट ले जाने की कहीं भी कोशिश नहीं की गई है। वाक्य-रचना के लिए आवश्यक प्रायोगिक व्याकरण का ही आधार लिया गया है। अतः जो प्रौढ़ व्यक्ति 'व्याकरण' शब्द से भी परिचित नहीं हैं, वे भी बिना किसी कठिनाई के वाक्य-रचना के तत्त्वों को अपना सकेंगे। यद्यपि अधिकांश पाठों के नामों में व्याकरण-सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दों को प्रयुक्त किया गया है, तथापि वह केवल रचना-तत्त्वों को सूचित करने के हेतु ही है। शिक्षार्थी उनका उपयोग न करते हुए भी रचना-तत्त्वों को अपना सकेगा।

२. शब्दों के रूपों वाक्यांशों तथा वाक्यों के अनेकानेक उदाहरण हर स्थान पर प्रचुर मात्रा में दिए गए हैं। इनके अनुकरण से नए-नए रूपों या वाक्यों को आसानी से बनाया जा सकता है।

३. हर एक पाठ में 'मराठी से हिन्दी' और 'हिन्दी से मराठी' शब्द-कोश दिए गए हैं। वैसे ही हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों का भी संग्रह प्रस्तुत किया गया है। इन शब्द-कोशों में रोज़मर्रा के शब्दों को स्थान दिया गया है। अन्त में ऐसे व्यावहारिक शब्दों का वर्गीकरण करते हुए भी एक संक्षिप्त शब्द-कोश दिया गया है। इससे मराठी के शिक्षार्थियों को अपना शब्द-भांडार पुष्ट करने में सहायता मिलेगी। 'शब्द-सिद्धि' में संज्ञा, विशेषण आदि शब्द-भेदों को कैसे बनाया जाता है, इसका मोटे तौर पर परिचय दिया गया है।

४. मराठी मुहावरों और कहावतों का कोश पर्याप्त मात्रा में उपयुक्त सिद्ध होगा।

५. मराठी के पत्र-लेखन की विधि का आवश्यक विवरण भी दिया गया है।

६. मराठी के कुछ विशेष शब्द-प्रयोगों का उदाहरण-सहित विवरण स्थान-स्थान पर दिया गया है। उससे ऐसे शब्दों के प्रयोग को, तथा एक ही शब्द की भिन्न-भिन्न अर्थ-छटाओं को समझने में शिक्षार्थी को काफी मदद मिलेगी।

७. प्रत्येक पाठ के अन्त में हिन्दी से मराठी में और मराठी से हिन्दी में अनुवाद करने के लिए वाक्य-संग्रह दिए हुए हैं, जिससे शब्द-कोश में दिए हुए

अधिकांश शब्दों का प्रयोग करने का मौका मिलेगा। पहले तथा दूसरे विभाग के अन्त में दो-दो 'अभ्यास' रखे हुए हैं।

८. शिक्षार्थी की आवश्यकता का ध्यान रखते हुए इन 'अनुवाद-खण्डों' के लिए 'अनुवाद-मार्गदर्शिका' तीसरे विभाग में दी गई है। जो शिक्षार्थी किसी अध्यापक के मार्गदर्शन के बिना मराठी सीखना चाहेगा, उसे ऐसी 'मार्गदर्शिका' से पर्याप्त सहायता मिलेगी।

आशा है, हिन्दी द्वारा मराठी सीखनेवालों की कठिनाई इस पुस्तक की सहायता से दूर होगी। शिक्षार्थी इस पुस्तक में अगर कोई त्रुटि अनुभव करें, तो वैसा सूचित करें। मेरी राय में भी इसमें कुछ त्रुटियाँ हैं। उन सबको दूसरे संस्करण में दूर किया जाएगा।

श्री गो. प. नेनेजी, मंत्री, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे तथा सुहृद्वर प्रा. वसन्त देव (पार्ले कॉलेज, बम्बई ५७) ने समय समय पर कई छोटी-बड़ी बातों के बारे में मेरा मार्गदर्शन करके मुझे इस पुस्तक के लेखन-कार्य में प्रोत्साहित किया है; इसलिए मैं उनका ऋणी हूँ। उनके प्रति शब्दों से कृतज्ञता व्यक्त करना असम्भव है। राष्ट्रभाषा मुद्रणालय, पुणे के व्यवस्थापक तथा उनके सहयोगी कर्मचारियों ने भी मेरी सुविधा का ध्यान रखते हुए इस पुस्तक के मुद्रण को पूर्ण किया। इसलिए उनका भी मैं आभारी हूँ।

जी–२, सहकार-निवास
दादर, बम्बई २८

कृपाभिलाषी,
ग. न. साठे

द्वितीय संस्करण

१९६० में '**मराठी स्वयं-शिक्षक**' का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ। हर्ष की बात है कि उसका विभिन्न क्षेत्रों में स्वागत हुआ। कुछ संस्थाओं ने अपनी-अपनी परीक्षाओं की पाठ्य-पुस्तकों में भी इसे स्थान दिया है।

आज इसका नया संस्करण प्रकाशित हो रहा है। हिन्दी-वर्तनी तथा मराठी की नई लेखन-पद्धति का ध्यान रखते हुए इसमें आवश्यक परिवर्तन किया गया है। इस दृष्टि से मराठी की नई लेखन-पद्धति का परिचय देना आवश्यक जान पड़ता है। अत : 'पाठानुक्रम' के पश्चात उसे प्रस्तुत किया है।

ग. न. साठे

१ जुलाई १९७३

पाठानुक्रम

विभाग–१

विभाग–२

विभाग—३

मराठी : नई लेखन-पद्धति

१. मराठी की पुरानी या रूढ़ लेखन-पद्धति का १८३६ से प्राय : अभी-अभी तक प्रचलन रहा। पिछली शताब्दी के पूर्वार्ध में बाळशास्त्री जांभेकर, दादोबा पाण्डुरंग तर्खडकर आदि विद्वानों ने मराठी व्याकरण-सम्बन्धी पुस्तकें लिखीं। उन पुस्तकों में दिए हुए नियमों के आधार पर लेखन-पद्धति निर्धारित हो गई।

२. फिर भी यह बात नहीं थी कि सब लोग उन नियमों का पालन करते थे। विशेषत: शिक्षा के प्रचार के साथ जब से लेखन-पठन आम बात हो गई, तब से मराठी की रूढ़ लेखन-पद्धति के प्रति मनमाना विद्रोह करने की प्रवृत्ति बढ़ती गई। यह विद्रोह कुछ तो अज्ञान-वश होता रहा, तो कुछ जान-बूझकर किया जाता था। अतः मराठी लेखन-पद्धति के क्षेत्र में एक प्रकार की अराजकता-सी उत्पन्न हो गई।

३. इस दुरवस्था को दूर करने के हेतु 'महाराष्ट्र साहित्य परिषद' ने १९३० में और बम्बई विश्वविद्यालय ने १९४७ में लेखन-पद्धति सम्बन्धी कुछ सुधार सुझाए। फिर 'महाराष्ट्र साहित्य परिषद' और 'विदर्भ साहित्य संघ' ने लेखन-पद्धति में सुगमता लाने का प्रयास किया। १९५८ में 'मराठी शुद्ध लेखन महामण्डल' ने पुनश्च महाराष्ट्र साहित्य परिषद द्वारा प्रस्तुत नियमों को प्रायः पूर्णतः स्वीकार किया। १९६१ में 'मराठी साहित्य महामण्डल' की स्थापना हुई। तब महाराष्ट्र राज्य सरकार ने मराठी की लेखन-पद्धति सम्बन्धी समस्या को उसके सुपुर्द किया। उक्त महामण्डल द्वारा प्रस्तुत नियमावली को महाराष्ट्र राज्य सरकार तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं साहित्य संज्ञाओं ने स्वीकार किया है।

४. इसके फलस्वरूप, मराठी लेखन-पद्धति सम्बन्धी अराजकता प्रायः नष्ट हो गई है और इसमें निश्चय ही सुगमता आ गई है। हाँ, कुछ लोग अब भी न्यूनाधिक रूप में नई पद्धति का विरोध करते रहते हैं। फिर भी उपरोक्त प्रयास को सराहनीय समझा जाता है।

५. यहाँ मराठी की नई लेखन-पद्धति का स्वरूप स्पष्ट किया जा रहा है।

कतिपय नियम

(क) अनुस्वार-सम्बन्धी नियम

मराठी लेखन-पद्धति के क्षेत्र में सबसे अधिक क्रांतिकारी सुधार अनुस्वार–सम्बन्धी है। पुरानी प्रथा के अनुस्वार स्पष्टोच्चारित अनुनासिकों के अतिरिक्त, व्याकरण-सम्बन्धी तकाजों के अनुसार कुछ शब्दों में तथा कुछ शब्दों में केवल रूढ़ी के अनुसार शीर्ष-बिन्दु अर्थात अनुस्वार-चिह्न आता था। जैसे –

स्पष्टोच्चारित : चंद्र, कंद, कांत (कान्त)
व्याकरणिक : घरीं, तें–तीं मुलांना
रूढ़ी : कांहीं, नाहीं, कोंस, करणें, खाणें

नई पद्धति के अनुसार

(१) केवल स्पष्टोच्चारित अनुस्वार तथा अनुनासिक सूचित करने के लिए ही अनुस्वार-चिन्ह (ं) लगाया जाता है। जैसे –

मंद, परंतु, कंठा, भांडण, कुंभार

(२) संस्कृत तत्सम शब्द में स्पष्टोच्चारित अनुनासिक अनुस्वार-चिह्न के विकल्प में पंचम वर्ण द्वारा सूचित किया जा सकता है। जैसे :–

मंद – मन्द, परंतु – परन्तु, अंचल – अञ्चल

(३) परंतु अर्थ-सम्बन्धी संदिग्धता को टालने के लिए पंचम वर्ण का प्रयोग करना अधिक उचित है। जैसे :–

देहांत = १ देहों में; २ मृत्यु। अतः देहांत (= देहों में)। देहान्त (= मृत्यु)

(४) संज्ञाओं और सर्वनामों के बहुवचन विकृत रूपों में विभक्तियाँ या सम्बन्ध-सूचक जोड़ते समय अनुस्वार-चिह्न लगाएँ। जैसे –

मुलाचा (ए. व.) – मुलांचा (ब. व.) त्याचा (उसका), त्यांचा (उनका)

(५) उपर्युक्त नियमों के अतिरिक्त अन्य किसी भी कारण से अनुस्वार-चिह्न का प्रयोग न करें। अर्थात अनुच्चारित अनुस्वार –- द्वारा सूचित न करें। जैसे :–

कोंस – केस   नाहीं – नाही   कांहीं – काही
जेथें – जेथे   खाणें – खाणे   करणें – करणे
पांच – पाच   कीं – की   गुरूं – गुरू
मोतीं – मोती   मिरें – मिरे   पुस्तकें – पुस्तके
कसें – कसे   तूं – तू   मध्यें – मध्ये
प्रमाणें – प्रमाणे

(ख) ह्रस्व-दीर्घ स्वरान्त शब्द

पुरानी पद्धति के अनुसार, संस्कृत तत्सम ह्रस्व इ-कारान्त और उ-कारान्त शब्द ह्रस्व स्वरान्त लिखे जाते थे। परन्तु अब नई पद्धति के अनुसार –

(१) संस्कृत तत्सम ह्रस्व इ-कारान्त और उ-कारान्त शब्द कर्ता कारक में दीर्घ स्वरान्त लिखे जाते हैं। जैसे :–

पुरानी पद्धति : कवि गति साधु गुरु

नई पद्धति : कवी गती साधू गुरू

(२) 'हि' सम्बन्ध-सूचक अब 'ही' हो गया है।

अपवाद :–

अ–निम्न-लिखित अव्यय ह्रस्व स्वरान्त लिखे जाएँ –

परंतु, यथामति, यद्यपि ... तथापि। नि, आणि

आ–सामासिक शब्द के अंतर्गत ह्रस्व इ-कारान्त या ह्रस्व उ-कारान्त पूर्वपद ह्रस्वस्वरान्त ही लिखा जाए। जैसे –

नीतियुक्त ('नीतीयुक्त' नहीं,) कविराज ('कवीराज' नहीं),

गुरुदेव ('गुरूदेव' नहीं), पशु-पती ('पशू-पती' नहीं).

इ–ह्रस्व इ-कारान्त या ह्रस्व उ-कारान्त तत्सम शब्द वाक्य में प्रयुक्त न करते हुए केवल स्वतंत्र रूप में आते हों, तो ह्रस्व-स्वरान्त ही लिखे जाएँ। जैसे –

(शब्दसूची) कवि, गुरु, हरि, सुनीति, साधु

(३) एकाक्षरी शब्द दीर्घान्त लिखें। जैसे –

मी, तू, जी, धू, जू इ०

(४) दीर्घ ई-कारान्त और दीर्घ ऊ-कारान्त शब्दों में उपान्त्य इ और उ ह्रस्व लिखें। जैसे

गरिबी, माहिती, रोजनिशी, सुरू

अपवाद : नीती, भीती, रीती, कीर्ती, प्रीती,

(निती, भिती, रिती, किर्ती, प्रिती नहीं)

(५) अ-कारान्त शब्द में उपान्त्य इ-कार या उ-कार दीर्घ लिखें। जैसे –

गरीब, वकील, पूर, सून, धूर, जीभ

अपवाद : संस्कृत तत्सम शब्द – गुण, विष, मधुर, रसिक, मासिक, इ०

(६) उपान्त्य दीर्घ ई और ऊ-स्वरान्त शब्दों के विकृत रूपों में ह्रस्व इ और उ का प्रयोग करें। जैसे –

गरीब – गरिबाला, पूर – पुरात, जीव – जिवात इ०

अपवाद : दीर्घ ई-ऊ उपान्त्य संस्कृत तत्सम शब्द :– शरीर – शरीराला, गीता –गीतेत, पूजा – पूजेचा

(ग) हलन्त शब्द

नई प्रथा के अनुसार संस्कृत तत्सम व्यंजनान्त शब्दों में हलन्त चिह्न का प्रयोग नहीं किया जाता। जैसे –

अर्थात् – अर्थात, श्रीमान् – श्रीमान, भगवान् – भगवान, इ०

शुद्धि-पत्र

[कतिपय महत्त्वपूर्ण अशुद्धियों को शुद्ध करके दिया जा रहा है।]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	१९	चटई	चटाई
१९	२३	पूं. ब. व	पुं. ब. व
२१	१९	वांगला	चांगला
४३	२	ह्याच्याशी	हिच्याशी
	२३	कोणाचा-ची-चे	कोणाचा-ची-चे-च्या
		कोणांचा-ची-चे	कोणांचा-ची-चे-च्या
		कशाचा-ची-चे	कशाचा-ची-चे-च्या
		कशांचा-ची-चे	कशांचा-ची-चे-च्या
४७	२५	१८. तुम्हाला	१८. ते तुम्हाला
५०	१८	देवांनीं, देवांशीं (देवीं	देवांनी, देवांशी (देवी
५१	१३	मामानीं	मामांनी
५२	७	चाकूस	चाकूंस
५९	४	(० तें), (० तें),	(० ते), (० ते),
६५	८	वेलींला-सा,	वेलींला-ना
	२२	शाळेचा-ची-चे-वा-चे	शाळेचा-ची-चे-च्या
६६	४	स. व्यक्तींत	स. व्यक्तीत
६७	२	बदल होता	बदल होता है
६९	८	नदीचे पानी	नदीचे पाणी
७०	४	उत्तर	अत्तर
७२	१५	साधू	साधु
७३	२२	ते	(नपुं.) ते

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७४	१८	वाघाला (ला)	वाघाला (स)
	१९	पुलिस से	पुलिस (के आदमियों) से
७५	१०	हवा, वी-वे-वे	हवा-वी-वे-व्या
७७	१६	जलना	जलाना
७९	[आ]	वाक्यों की क्रमसंख्या बदल ले: १०, ११, १२, १३, १४, १५ के स्थान पर क्रमश ८, ९, १०, ११, १२, १३.	
७९	२२	परिणाम	परिमाण
८४	८	तूफान होता	तूफान आता
	९	आँधी होती	आँधी आती
९९	३	तारेने जलद	तारेने सुद्धा जलद
१०१	२१	इत्यादी	इत्यादि
१०५	१७	आँगण	आँगन
१०६	१८	इत्यादी	इत्यादि
११७	१५, १६, १७, १९, २१, २३ २५, २७.	इत्यादी	इत्यादि
११८	१,३,५,७,१०	इत्यादी	इत्यादि
१२२	२४	हुआ	हुई
१२४	२५,२६,२७	पुं.	पु.
१२९	२३	न्यायधीश	न्यायाधीश
१३८	१०	ऊ-कारान्त	आऊ-कारान्त
१४१	२२	(= आम्ही) यथाशक्ति	(= आम्ही) यथाशक्ती
१४२	६	शाळेत	शाळेला
१५२	१५	अचानकता-बोथक	अचानकता-बोधक
१६५	२०	करण	करणे
	२३	अनुवाद-खण्ड – ३	अनुवाद-खण्ड – २३
१६८	१७	नोकराकडून	नोकरांकडून
१७२	१७	ढासळण	ढासळणे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७७	५	करते	बनाते
१७९	५	बुझ़ाना	बुझाना
	१३	उतरना	उतारना
१८१	२	ग्राम्य नाटच	ग्राम्य नाटच-विशेष
	५	दग	दंग
	२६	विचारण	विचारणे
	२८	संदर	सुंदर
१८२	२०	मेहुणी	मेहुणी-मेवणी
१८४	२२	डॉक्टकी	डॉक्टरी, डॉक्टरकी
	२४	वैद्यकी, डॉक्टरकी	वैद्यकी
१८५	१३	भूकेलेला	भुकेलेला
	१३	नाकेल	नाकेला
	२८	तिरका	तिरवा
१८६	३०	चा़वण	चा़वणे
१८७	९	आड़ा-तेढ़ा	आड़ा-टेढ़ा
१९०	१६	भुगतने पड़ना	भुगतना पड़ना
१९१	१३	होना	होणे
	३२	ढेकळ प्रमाणे	ढेकळाप्रमाणे
	३२	लज्जि	लज्जित
१९३	१७	बुद्धिचा़	बुद्धीचा़
	२०	भवति न भवति	भवती न भवती
१९४	१५, १६, १७	अति	अती
	२२	भगदान	भगवान
१९६	२९	मगर से	मगर-मच्छ से
१९७	१२	ढग	ढंग
२०५	१६	मर्ति	मूर्ति
२१०	२७	सोचा तक	सोचा
२१७	२८	मसूड़े दुखड़े	मसूढ़े दुखते

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१८	१२	नमक, कचूमर	नमक, अचार, कचूमर
२२१	१८	भाज्या	भाज्या इत्यादी
	२२	पैंतीस	पचपन
	२४	गरीब है	गरीब हैं
२२२	४	फल	फल इत्यादि
२२३	५	भेजते हैं। आजकल	भेजते हैं। इस तरह डाक-घर से हमारी बड़ी सुविधा होती है। आजकल
२२४	११	चीज़ें हैं।	चीज़ें हैं। उन्हें खरीदने के लिए हम बाजार (में) जाएँगे।
	२३	अगाला	अंगाला
	२४	चोळन	चोळून
२२५	१५	जात होता.	जात होता. पोलीस त्याला पकडण्याचा प्रयत्न करीत होते.
२२६	८	काहीच्	काही
	९	अब	अब फिर से
	१२	हुआ	आया
	१४	[अंक ३ हटाएँ और आगे ४ से ११ के स्थान पर क्रमशः ३ से १० लिखें।]	
२३८	३०–३१	जनावरांचा लांबट (जबड़ा)	(जनावरांचा लांबट) जबड़ा
२४२	४	गलर	गूलर

✦ ✦ ✦

विभाग — १

परिचय

मराठी : लिपि

[१] हिन्दी और मराठी दोनों भाषाएँ देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं। हिन्दी वर्णमाला के सभी वर्णों के अतिरिक्त, मराठी के लिए प्रयुक्त नागरी लिपि में एक वर्ण अधिक है और कुछ लिपि-चिह्न भिन्न ढंग से लिखे जाते हैं।

मराठी वर्णमाला

स्वर — अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ
लृ ए ऐ ओ औ अं अः

व्यंजन — क ख ग घ ङ
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व
श ष स ह
ळ क्ष ज्ञ

अनुस्वार — ं   विसर्ग— ः

[२] विशेषताएँ —

१. नीचे लिखे वर्णों को इस प्रकार भी लिखा जाता है :—

इ = अि   ई = अी   उ = अु   ऊ = अू   ऋ = अृ
ॠ = अॄ   ए = अे   ऐ = अै   छ = छ   श = श

२. क्ष असल में संयुक्त वर्ण है–क्ष = क् + ष। ज्ञ भी संयुक्त वर्ण है, जिसका उच्चारण मराठी में द् + न् + य किया जाता है।

३. ज से मराठी में दो ध्वनियाँ सूचित होती हैं। ज = ज्य से कुछ मिलती-जुलती ध्वनि, जो इन हिन्दी शब्दों में है – जलना, जगत्, जतलाना। और ज़ = ज़ (ज़मीन, ज़रा)। यद्यपि हिन्दी में यह फर्क ज और ज़ लिपि-चिह्नों द्वारा दिखाया जाता है, तथापि मराठी में दोनों ध्वनियों के लिए एक ही ज लिपि-चिह्न प्रयुक्त होता है। उच्चारण-भेद को स्पष्ट करने के लिए इस पुस्तक में ज और ज़ दोनों को काम में लाया गया है।

४. च से दो ध्वनियाँ सूचित होती हैं–एक च = च्य – हिन्दी च के समान और दूसरी वर्त्स्य ध्वनि, जो हिन्दी में नहीं है। ज़ के उच्चारण में जीभ की नोक तालु के अग्रभाग में जहाँ लगती है, वहीं उसे लगाकर च का उच्चारण करने से यह वर्त्स्य च़ ध्वनि सुनाई देगी। उदा० :–

च = मराठी शब्द चहा (= चाय), चमत्कार, चतुर।
च़ = " च़मचा (= चम्मच), च़ढ (= चढ़), च़ोर।

इस पुस्तक में इन ध्वनियों को अलग अलग दिखाने के लिए च और च़–दोनों लिपि-चिह्नों का प्रयोग किया गया है।

५. च और ज की तरह झ से भी दो ध्वनियों का बोध होता है। पहली झ ध्वनि हिन्दी और संस्कृत झ की तरह है; जैसे– झ = झ्य से मिलती-जुलती। उदा०–झंकृत। दूसरी ज़ + ह से मिलती-जुलती वर्त्स्य ध्वनि है। जैसे इन मराठी शब्दों में–झ़गा (= फ्रॉक), झ़गझ़गीत।

इस पुस्तक में इस फर्क को स्पष्ट करने के लिए झ और झ़ दो लिपि-चिह्नों को प्रयुक्त किया गया है।

६. क़, ख़, ग़, ड़, ढ़, फ़ ध्वनियाँ जो वास्तव में क्रमशः क, ख, ग, ड, ढ, फ से भिन्न हैं, मराठी में नहीं हैं। इसलिए उनको मराठी के लिए प्रयुक्त लिपि में स्थान नहीं दिया जाता।

७. ळ मराठी की विशेष ध्वनि है। ल के उच्चारण में जिह्वा की नोक तालु से जहाँ स्पर्श करती है, उस स्थान के ज़रा पिछली ओर (मध्य तालु से) लगाकर ल का उच्चारण करने से ळ ध्वनि सुनाई देती है।

८. **ऐ** और **औ** का उच्चारण मराठी में सर्वत्र संस्कृत उक्त वर्णों की तरह (क्रमशः कुछ **अइ** और **अउ** से मिलता-जुलता) होता है।

जैसे– गैर = (' गएर ' नहीं) गइर (इससे मिलता-जुलता), वैभव, शैली, औषधि।

९. अनुस्वार (अ) पूर्ण = ं : छंद (छन्द), मंद (मन्द)

(आ) अर्ध-अनुस्वार = ँ। मराठी में भी अर्ध-अनुनासिक ध्वनि पाई जाती है। फिर भी उसे ं चिह्न से ही सूचित करते हैं। जैसे–

घरांत (= घरों में)

नोकरांना (= नौकरों को)

लोकांसाठी (= लोगों के लिए)

(इ) हिन्दी में **संस्कृत, संस्था, अंश, संसार** आदि शब्दों में स्थित अनुनासिक का उच्चारण **न्** जैसा करते हैं; जैसे संस्कृत–सन्स्कृत, संस्था–सन्स्था, अंश–अन्श, संसार–सन्सार। परन्तु मराठी में उक्त अनुनासिक का उच्चारण अँव् होता है। जैसे–

संस्कृत–सँव्स्कृत, संस्था–सँव्स्था, संसार–सँव्सार

अन्य शब्द–अंश, हंस, संस्कृति इ०

१०. अन्य लिपि-चिह्नों के हिन्दी और मराठी उच्चारण में कोई फर्क नहीं है। जब कई अक्षरों से शब्द बनता है, तब उस शब्द के अन्तर्गत आए हुए वर्णों की उच्चारण-प्रणाली हिन्दी और मराठी में आम तौर पर एक-सी है। जहाँ कहीं विशेषता पाई जाएगी, वहीं उसे स्पष्ट किया जाएगा।

[३] **विराम-चिह्न** : वाक्य के अन्त में हिन्दी में **चरण-रेखा** आती है; मगर मराठी में चरण-रेखा का प्रयोग नहीं होता। उसके स्थान पर . (पूर्ण-विराम) को काम में लाते हैं। अन्य विराम-चिह्न दोनों भाषाओं में एक-से हैं। जैसे– , (अल्प-विराम) ; (अर्ध-विराम) ? (प्रश्न-चिह्न) ! (विस्मयादिबोधक-चिह्न) '...' "..." (अवतरण-चिह्न)

[४] हिन्दी में आम तौर पर शब्द में विभक्ति जोड़कर नहीं लिखी जाती, मगर मराठी में विभक्ति को शब्द का या वाक्य के पद का अभिन्न अंग माना जाता है, इसलिए उसे शब्द से सटकर लिखा जाता है। जैसे– हिन्दी : **घर पर**। मराठी : **घरावर** (**'घरा वर'** नहीं)

[५] **शब्द-सम्पदा :** मराठी तथा हिन्दी दोनों भाषाएँ संस्कृतोत्पन्न हैं। इसलिए यह स्वाभाविक है कि इन दोनों भाषाओं में सैकड़ों संस्कृत तत्सम (संस्कृत मूल रूप में ही आए हुए) और तद्‌भव (मूल शब्द में कुछ बदल होकर बने हुए) शब्द पाए जाते हैं। उसी तरह इन दोनों भाषाओं ने सैकड़ों अरबी-फारसी और अँग्रेज़ी शब्द भी अपनाए हैं। इसलिए मराठी भाषा सीखनेवालों को मराठी शब्दों को अपनाने में अधिक कठिनाई नहीं अनुभव होगी। इन दोनों भाषाओं में कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनके मराठी और हिन्दी में प्रयुक्त रूपों में एकाध वर्ण का फर्क पाया जाता है।

दोनों भाषाओं में पाए जानेवाले कुछ शब्द —

(अ) संस्कृत (तत्सम) – विद्या, विषय, भगवान, शरीर, प्राण, इत्यादि

(आ) संस्कृत (तद्‌भव) – घर, कान, दूध इ.

(इ) अरबी या फारसी – ज़मीन, सरदार, सरकार, तलवार इ.

(ई) अँग्रेज़ी – कोट, स्टेशन, रेडियो, टेलिफोन इ.

(उ) आंशिक भेद – हिन्दी – बादशाह, मोटर, कागज़, मदद इ.
मराठी–बादशहा, मोटार, कागद, मदत इ.

[५ अ] कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो यद्यपि दोनों भाषाओं में पाए जाते हैं, तथापि उनका हिन्दी में जो अर्थ है, उससे कुछ भिन्न अर्थ में वे मराठी में प्रयुक्त होते हैं। जैसे–

‘ **चेष्टा** ’ का हिन्दी में अर्थ है ‘ यत्न ’, मगर मराठी में ‘दिल्लगी, मज़ाक ’ है।

इस पुस्तक के कई पाठों में शब्दकोश के एक विभाग में दोनों भाषाओं में पाए जानेवाले ऐसे शब्द दिए गए हैं, जिनका अर्थ दोनों भाषाओं में समान है।

✦ ❖ ✦

१. वाक्य-रचना

[६] हिन्दी और मराठी भाषाओं में वाक्य-रचना करने की पद्धति एक-सी ही है। जैसे :-

हिन्दी – १. यह नदी है। २. वह कौन है ?

मराठी – १. ही नदी आहे. २. तो कोण आहे?

हिन्दी – ३. रमेश काम करेगा। ४. यह पुस्तक पढ़ो।

मराठी – ३. रमेश काम करील. ४. हे पुस्तक वाच.

हिन्दी – ५. इस वृक्ष पर एक पक्षी बैठा है।

मराठी – ५. या वृक्षावर एक पक्षी बसला आहे.

हिन्दी – ६. अनिल, तू अपना काम कर।

मराठी – ६. अनिल, तू आपले काम कर.

इससे यह स्पष्ट होता है कि आम तौर पर वाक्य में पहले उद्देश्य आता है, उसके बाद कर्म और अन्त में क्रिया आती है। इनमें से हर एक से सम्बन्धित शब्द उसी के साथ रखे जाते हैं।

[७] हिन्दी में संज्ञाओं के दो लिंग हैं – (१) पुंलिंग और (२) स्त्रीलिंग। परन्तु मराठी में तीन लिंग हैं – (१ **पुंलिंग,** (२) **स्त्रीलिंग** और (३) **नपुंसकलिंग** (= नान्यतर जाति, न्यूटर जेण्डर)

बहुतेरी हिन्दी संज्ञाओं का जो लिंग है, मराठी में भी उनका वही लिंग है। जैसे :-

१. वे सभी संज्ञाएँ, जो पुरुष-जाति के प्राणियों के नाम हैं, पुंलिंग हैं।

२. वे सभी संज्ञाएँ, जो स्त्री-जाति के प्राणियों के नाम हैं, स्त्रीलिंग हैं।

३. हिन्दी और मराठी अन्य पुंलिंग संज्ञाएँ (अचेतन वस्तुओं के नाम) – वृक्ष, दरवाज़ा, नाला, बंगला, भाला, पंखा, बाज़ार इ.

४. अन्य हिन्दी और मराठी स्त्रीलिंग संज्ञाएँ (अचेतन वस्तुओं के नाम) – वस्तु, पोथी, नदी, टोपी, तलवार, जमीन, तारीख, गाड़ी, मिठाई, इ.

'**संज्ञा**' को मराठी में '**नाम**' कहते हैं।

[८] **सर्वनाम :–**

मराठी नाम	हिन्दी नाम	एकवचन	बहुवचन
१. प्रथम पुरुष :	उत्तम पुरुष :	मी = मैं	आम्ही = हम।
२. द्वितीय पुरुष :	मध्यम पुरुष :	तू = तू	तुम्ही = तुम।
			आपण = आप।
३. तृतीय पुरुष :	अन्य पुरुष :	तो (पुं.), ती (स्त्री), ते (न.) } वह	ते (पुं.), त्या (स्त्री.), ती (न.) } वे।

वैसे ही – हा (पुं.), ही (स्त्री.), हे (न.) = यह।
हे (,,), ह्या, या(,,), ही (,,) = ये।
काय = क्या, **कोण** = कौन।

मी, **आम्ही**; **तू**, **तुम्ही**, **आपण** – ये मराठी सर्वनाम पुंलिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग में वैसे ही रहते हैं।

[९] हिन्दी '**तू**' के प्रयोग की तरह मराठी '**तू**' का प्रयोग मर्यादित नहीं है। बोलनेवाला अपने से छोटे, अपने **बराबरीवाले**, चिर-परिचित तथा अपनेसे हीन व्यक्ति के लिए '**तू**' का प्रयोग करता है।

'**आपण**' सर्वनाम '**आप**' की तरह आदरसूचक है।

[१०] '**आहे**' (= होना – सिर्फ वर्तमानकाल में प्रयुक्त = है, हैं इ.) के रूप :–

	एकवचन	बहुवचन
उ. पु. :	**मी आहे**–मैं हूँ।	**आम्ही आहो-आहोत**–हम हैं।
म. पु. :	**तू आहेस**–तू है।	**तुम्ही आहा-आहात**–तुम हो।
		आपण आहा-आहात–आप हैं।
अ. पु. :	**तो-ती-ते आहे**–वह है।	**ते-त्या-ती आहेत**–वे हैं।

क्रिया के ये रूप ही तीनों लिंगों में प्रयुक्त होते हैं।

[११] **नाही** (= नहीं होना–सिर्फ वर्तमान काल में=**नहीं है**, **नहीं हैं**, इ.) के रूप :–

	एकवचन	बहुवचन
उ. पु. :	**मी नाही**–मैं नहीं हूँ।	**आम्ही नाही**–हम नहीं हैं।
म. पु. :	**तू नाहीस**–तू नहीं है।	**तुम्ही नाही**–तुम नहीं हो।
		आपण नाही–आप नहीं हैं।
अ. पु. :	**तो-ती-ते नाही**–वह नहीं है।	**ते-त्या-ती नाहीत**- वे नहीं हैं।

कभी कभी **नाही, नाहीस, नाहीत** के स्थान पर क्रमशः **नव्हे, नव्हस-नव्हेस, नव्हत-नव्हेत** का भी प्रयोग किया जाता है।

[१२] ये वाक्य पढ़िए :–

हिन्दी		मराठी
१. मैं विद्यार्थी हूँ	:	१. मी विद्यार्थी आहे.
२. हम व्यापारी नहीं हैं।	:	२. आम्ही व्यापारी नाही.
३. तू स्वतंत्र नहीं है।	:	३. तू स्वतंत्र नाहीस.
४. तुम **सिपाही** हो।	:	४. तुम्ही **शिपाई** आहात.
५. आप प्राध्यापक हैं।	:	५. आपण प्राध्यापक आहात.
६. **वह दरवाज़ा** है।	:	६. **तो दरवाजा** आहे.
७. **यह खिड़की** है।	:	७. **ही खिडकी** आहे.
८. वह फूल है।	:	८. **ते फूल** आहे.

छठे वाक्य में **वह (दरवाज़ा)** शब्द है। मराठी में 'दरवाज़ा' पुं. **संज्ञा** है; इसलिए **वह** (दरवाज़ा) के लिए मराठी सर्वनाम **तो** (दरवाज़ा) रखा **गया** है। वैसे ही '**यह** खिड़की (स्त्री.)' के लिए मराठी में '**ही** खिडकी' और '**वह** फूल' के लिए मराठी में '**ते** फूल' लिखा गया है। मराठी में 'फूल' संज्ञा नपुंसकलिंग है, इसलिए **वह** (न.) के लिए मराठी शब्द '**ते**' (न.) रखा गया है।

[१३] नीचे लिखे वाक्यांश तथा वाक्य पढ़िए :–

हिन्दी		मराठी
१. **वह** वृक्ष (पुं.)	:	**तो** वृक्ष (पुं.)
२. **यह** नदी (स्त्री.)	:	**ही** नदी (स्त्री.)
३. वह दूकान (स्त्री.)	:	**ते** दुकान (न.)
४. **यह** पुस्तक (,,)	:	**हे** पुस्तक (,,)

मराठी		हिन्दी
१. हे काय आहे ?	:	१. यह क्या है ?
हे **पुस्तक** आहे. (न.)	:	यह पुस्तक है।
२. हा कोण आहे ?	:	२. यह कौन है ?
हा **राम** आहे.	:	यह राम है।
३. ती **गाडी** नाही.	:	३. वह गाड़ी नहीं है।
४. तो **व्यापारी** नाही.	:	४. वह व्यापारी नहीं है।
५. ते **घर** आहे. (न.)	:	५. वह घर है।

[१४] शब्दकोश– १ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
आम	**आंबा** [पुं.]	दीवार	**भिंत** [स्त्री.]
कुर्सी	**खुर्ची** [स्त्री.]	आदमी	**माणूस, मनुष्य** [पुं.]
पेड़	**झाड** [न.]	कलम	**लेखणी** [स्त्री.]
दवात	**दऊत, दौत** [स्त्री.]	पाठशाला	**शाळा** [स्त्री.]
फ़ल	**फळ** [न.]	सिपाही	**शिपाई** [पुं.]

शब्दकोश– १ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
कागद [पुं.]	कागज़	**बाग** [पुं. स्त्री.]	बगीचा
चटई [स्त्री.]	चटई	**मुलगा**	लड़का
दिवा [पुं.]	दिया	**मुलगी**	लड़की
नोकर [पुं.]	नौकर	**वाघ** [पुं.]	बाघ
पान [न.]	पत्ता, पन्ना	**शाई** [स्त्री.]	स्याही

शब्दकोश– १ (इ)

नीचे लिखे शब्द हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओं में पाए जाते हैं। (लिंग–विशेष मराठी के अनुसार दिया गया है।)

१. पुं. संज्ञाएँ– घोडा दरवाजा नाला पक्षी पंखा प्राध्यापक बकरा बंगला बाज़ार बैल भाला विद्यार्थी वृक्ष व्यापारी सिंह

२. स्त्री. संज्ञाएँ– खिडकी गाडी गाय घोडी जमीन टोपी
तलवार तारीख नदी पोथी मिठाई वस्तु
विद्यार्थिनी संपत्ति

३ न. संज्ञाएँ– काम चित्र छप्पर दुकान पुस्तक फूल शहर

[१५] अनुवाद-खण्ड – १

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए :—

१. वह चटाई है। २. तू लड़की है। ३. वह बगीचा है। ४. वह फल है। ५. यह दीवार है। ६. मैं आदमी हूँ। ७. वह सिंह है। ८. यह शहर नहीं है। ९. वह बैल नहीं है; वह गाय है। १०. यह बकरा है; वह बकरी है।

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

१. मी मुलगा आहे. २. ती मुलगी आहे. ३. तू शिपाई आहेस. ४. ते चित्र आहे. ५. हे छप्पर नाही. ६. हा घोडा आहे. ७. ती टोपी नव्हे ८. ते पान आहे. ९. ती दऊत आहे. १०. हा कागद आहे. ११. ती तलवार आहे; हा भाला आहे. १२. हा दरवाजा आहे. ती खिडकी आहे. १३. ही दऊत आहे; ती लेखणी आहे. १४. तो बंगला आहे; ते दुकान आहे. १५. ती नदी आहे; हा नाला आहे.

✦ ✦ ✦

२. बहुवचन : पुंलिंग और नपुंसकलिंग संज्ञाएँ

(१) पुंलिंग संज्ञाएँ

[१६] नीचे लिखी मराठी पुंलिंग संज्ञाएँ देखिए :—

संज्ञा		एक	अनेक	एक	अनेक
१. अ-कारान्त	:	वृक्ष	वृक्ष	वाघ	वाघ
२. आ-कारान्त	:	घोडा	घोडे	दरवाजा	दरवाजे
३. इ-कारान्त	:	कवि	कवि	ध्वनि	ध्वनि
४. ई-कारान्त	:	शिपाई	शिपाई	हलवाई	हलवाई
५. उ-कारान्त	:	साधु	साधु	बंधु	बंधु
६. ऊ-कारान्त	:	विंचू (= बिच्छू)	विंचू	डाकू	डाकू
७, ओ-कारान्त	:	फोनो	फोनो	फोटो	फोटो

(' विंचू ' शब्द के ' चू ' में ' च़ ' है, ' च ' नहीं।)

(अ) मराठी में **ऋ**-कारान्त, **ॠ**-कारान्त, **ए**-कारान्त, **ऐ**-कारान्त और **औ**-कारान्त पुंलिग संज्ञाएँ नहीं हैं।

इन शब्दों से दिखाई देता है कि एकवचन पुंलिग मराठी संज्ञा को बहुवचन में कैसे बदला जा सकता है।

(‘**बहुवचन**’ को मराठी में ‘**अनेकवचन**’ कहा जाता है।)

[१७] आ-कारान्त पुं. संज्ञाओं के अतिरिक्त अन्य सभी पुं. सज्ञाएँ एकवचन और बहुवचन में एकरूप रहती हैं। हिन्दी में भी ऐसा ही होता है। अन्य उदाहरण —

ए. व. –	पुरुष,	संन्यासी,	चाकू,	सेनापति,	शेतकरी,
ब. व. –	पुरुष,	संन्यासी,	चाकू,	सेनापति,	शेतकरी,

(**शेतकरी = किसान**)

[१८] आ-कारान्त पुंलिग संज्ञा के अन्त्य ‘**आ**’ का ‘**ए**’ करने से उसका बहुवचन होता है। जैसे --

ए. व. –	बकरा	मुलगा	कुत्रा	दिवा	पैसा
ब. व. –	बकरे	मुलगे	कुत्रे	दिवे	पैसे

(**कुत्रा** – कुत्ता)

अपवाद – (१) **काका** (चाचा), **मामा**, **दादा**, **आजोबा**, (= दादा, नाना) आदि शब्द साधारणतः बहुवचन में अविकृत रहते हैं।

(**दादा** मराठी में साधारणतः बड़े भाई या किसी भी अन्य व्यक्ति को सम्मानार्थ कहा जाता है।)

(२) नपुंसकलिंग संज्ञाएँ

[१९] अ-कारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएँ –

एक	**अनेक**	**एक**	**अनेक**	**एक**	**अनेक**
घर	घरे,	पुस्तक	पुस्तके,	पान	पाने,
झाड़	झाड़े,	दार	दारे,	काम	कामे
फळ	फळे,	टेबल	टेबले,	चित्र	चित्रे

(**टेबल** – मेज़, **दार** – दरवाज़ा)

(अ) इससे यह दिखाई देता है कि अ-कारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा के अन्त्य अ का ए करने से उसका बहुवचन होता है। और (आ) उत्पान्त्य स्वर दीर्घ ई या दीर्घ ऊ हो, तो वह बहुवचन संज्ञा में ह्रस्व होता है। जैसे–

ए. व,– **पीठ** **चीट** **फूल** **सूप** **मूल**
व. व,– पिठे **चिटे** फुले **सुपे** **मुले**

(**पीठ**–आटा, **चीट**–छींट का कपड़ा, **मूल**–बच्चा, बालक)

[२०] मराठी में ऐसी नपुंसकलिंग संज्ञाएँ नहीं हैं, जिनके अन्त में **आ, इ, ऋ, ॠ, ऐ** या **औ** स्वर है।

[२१] ई-कारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएँ बहुवचन में अविकृत रहती हैं। ऐसी संज्ञाएँ बहुत ही कम हैं। जैसे—

पाणी – पाणी ; **लोणी** – लोणी
(**पाणी** = पानी ; **लोणी** = मक्खन)

[२२] कुछ ई-कारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं का बहुवचन अन्त्य **इ** का **ये** करके वनाया जाता है। जैसे–

मोती – मोत्ये ; **मिरी** – मिऱ्ये
(**मोती**–मोती ; **मिरी**–गोल काली मिर्च। मराठी में **मोती**–पुं. और न. लिंग भी है। वैसे ही **मिरे** और **मिरी** दोनों शब्द मराठी में हैं।)

[२३] ऊ-कारान्त नपुं. संज्ञा का बहुवचन अन्त्य **ऊ** का **ए** करके बनाया जाता है। जैसे–

गुरू–गुरे **लिंबू**–लिंबे **करडू**–करडे
पाखरू–पाखरे **वासरू**–वासरे **कोकरू**–कोकरे

अपवाद—निम्न-लिखित शब्दों के बहुवचन ध्यान में रखिए —

तारू–तारवे, **गळू**–गळवे **आसू**–आसवे

(**शब्दार्थ**-**गुरू**–ढोर, गोरू **लिंबू**–नीबू **पाखरू**–चिड़िया
वासरू–बछड़ा **तारू**–छोटी नाव **आसू**–आँसू
गळू–फोड़ा, **करडू**–मेमना, **कोकरू**–बकरी का वच्चा)

[२४] ए-कारान्त नपुं. एकवचन संज्ञा का बहुवचन करते समय अन्त्य ए का ई किया जाए। जैसे—

केळे–केळी   तळे–तळी
मडके–मडकी   जाळे–जाळी
(शब्दार्थ–केळे–केला   तळे–छोटा तालाब
मडके–मटका   जाळे–जाल)

[२५] नमूने के लिए वाक्य :—

हिन्दी	मराठी
१. ये केले हैं।	१. ही केळी आहेत.
२. तुम सिपाही हो।	२. तुम्ही शिपाई आहात.
३. वे डाकू नहीं हैं।	३. ते डाकू नाहीत.
४. वे चार नीबू हैं।	४. ती चार लिंबे आहेत.
५. वे ढोर हैं।	५. ती गुरे आहेत.

मराठी	हिन्दी
१. ही मोत्ये आहेत.	१. ये मोती हैं।
२. ते चोर आहेत.	२. वे चोर हैं।
३. आपण संन्यासी आहात.	३. आप संन्यासी हैं।
४. आम्ही विद्यार्थी नाही.	४. हम विद्यार्थी नहीं हैं।
५. ती पाखरे आहेत,	५. वे चिड़ियाँ हैं।

[२६] शब्दकोश–२ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
मुर्गा	कोंबडा	भाई	भाऊ
मुर्गी	कोंबडी	बच्चा	मूल [न.]
हल	नांगर [पुं.]	खेत	शेत [न]
पाँव	पाय [पुं]	साँप	साप [पुं]
बहन	बहीण	हाथ	हात [पुं]
बत्तख	बदक [न.]	हाथी	हत्ती [पुं.]

शब्दकोश–२ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
आणि, व	और	दगड [पुं.]	पत्थर
का, काय	क्या	येथे	यहाँ
गाढव [पुं. न.]	गधा	नारळ [,,]	नारियल
गादी [स्त्री.]	गद्दी	पेरू [,,]	अमरूद
चहा [पुं.]	चाय	सदरा [पुं.]	कुरता
चेंडू [,,]	गेंद	अंगरखा [,,]	,,

शब्दकोश–२ (इ)

[अ] नीचे लिखे शब्द मराठी में भी हैं। उनका लिंग-विशेष कोष्ठक में दिया गया है।

कान [पुं.]	आकाश [न.]	बर्फी [स्त्री.]
मोर [,,]	दूध [,,]	सडक [,,]
राज़ा–जा [,,]	नाक [,,]	स्त्री [,,]

पुं.–कवि साधु फोनो फोटो हलवाई
पुरुष संन्यासी सेनापति अध्यापक शिक्षक

[आ] कुछ मराठी अंक —

१ एक	२ दोन	३ तीन	४ चार	५ पाच
६ सहा	७ सात	८ आठ	९ नऊ	१० दहा

[२७] अनुवाद-खण्ड–२

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए :—

१. ये पत्थर हैं। २. वे कुरते हैं। ३. यह गद्दी है। ४. तुम भाई-भाई हो। ५. मैं किसान नहीं हूँ, अध्यापक हूँ। ६. यह अमरूद है और वह केला है। ७. यह मक्खन है, मिठाई नहीं है। ८. ये छः सूप हैं। ९. ये नौ पेड़ हैं। १० ये पाँच चित्र हैं। ११. वह स्त्री है और यह लड़की है। १२. वह राजा है। १३. ये पक्षी मोर हैं। १४. ये आदमी साधु हैं। १५. यह खेत है और वह बगीचा है।

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

१. हे शिपाई आहेत व ते शेतकरी आहेत. २. ही मुले आहेत व ते शिक्षक आहेत. ३. ते नारळ आहेत व ही केळी आहेत. ४. ते आकाश आहे. ५. ते चेंडू आहेत. ६. हा नांगर नाही. ७. हा घोडा नाही, [नव्हे], हे गाढव आहे. ८. हा चहा आहे व ते दूध आहे. ९. येथे पाणी आहे, दूध नाही. १०. तो कोंबडा आहे व ती कोंबडी आहे. ११. हे शेत आहे, बाग नाही. १२. येथे साप आहेत का? १३. ती मिठाई आहे का? १४. हा हलवाई आहे. १५. तो सेनापती नाही [नव्हे].

◆ ◆ ◆

३. स्त्रीलिंग संज्ञाएँ : बहुवचन

[२८] अ-कारान्त स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञा का बहुवचन भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है। जैसे—

(अ) अन्त्य अ का आ करके :—

माळ – माळा काच़ – काच़ा
लवंग – लवंगा वेळ – वेळा
जीभ – जिभा वीट – विटा
सून – सुना चूक – चुका (इसमें च़ है)

उपान्त्य दीर्घ ई या ऊ का ह्रस्व इ या उ किया जाता है।

(**शब्दार्थ—माळ** – माला, **काच़** – काँच, **वेळ** (पुं. स्त्री.) – समय, **लवंग** – लौंग, **सून** – बहू, **वीट** – ईंट, **चूक** – गलती)

(आ) अन्त्य अ का ई करके —

भिंत – भिंती जात – ज़ाती
गाय – गायी (गाई) नात – नाती
वाघीण– वाघिणी हत्तीण – हत्तिणी

(**शब्दार्थ — ज़ात** – जाति, बिरादरी; **वाघीण** – बाघिन, **नात** – पोती, नतिनी, **हत्तीण** – हथिनी)

(इ) अन्त्य अ का **आ** या ई करके—
परात – पराता, पराती (**परात** – परात)

[२९] **आ**-कारान्त, इ-कारान्त, ई-कारान्त, उ-कारान्त और ऊ-कारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ (जो मराठी में सीधे संस्कृत से आई हैं) बहुवचन में अविकृत रहती हैं। जैसे–

१. आ-कारान्त :	ए. व. – विद्या	कला	भाषा
	ब. व. – विद्या	कला	भाषा
२. इ-कारान्त :	ए. व. – रीति	रुचि	प्राप्ति
	ब. व. – रीति	रुचि	प्राप्ति
३. ई-कारान्त :	ए. व. – दासी	नारी	कुमारी
	ब. व. – दासी	नारी	कुमारी

अपवाद– नदी – नद्या, **स्त्री** – स्त्रिया,

४. उ-कारान्त :	ए. व. – धेनु, वस्तु
	ब. व. – धेनु, वस्तु
५. ऊ-कारान्त :	ए. व. – वधू
	ब. व. – वधू

[३०] ई-कारान्त (तत्सम संस्कृत को छोड़कर) स्त्रीलिंग संज्ञा का बहुवचन अन्त्य **ई** का **या** करके बनाया जाए।

जैसे :–					
ए. व. –	लेखणी	काठी	लाठी	पोळी	सुई
ब. व. –	लेखण्या	काठ्या	लाठ्या	पोळ्या	सुया

(**शब्दार्थ**–– **काठी** – छड़ी, लाठी, **पोळी** – चपाती)

[३१] ऊ-कारान्त स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञा का बहुवचन **वा**-कारान्त होता है। उपान्त्य व्यंजन पूर्ण अ-कारान्त बना रहेगा। जैसे :—

ए. व.	**ब. व.**	**ए. व.**	**ब. व.**	**ए. व.**	**ब. व.**
सासू	सासवा	पिसू	पिसवा	ज़ळू	ज़ळवा

अपवाद– ऊ–उवा; बाज़ू – बाज़ू, (बाज़वा), काकू – काकू (काकवा), ज़ाऊ – ज़ावा

(**शब्दार्थ**— **सासू** – सास, **पिसू** – पिस्सू, **ज़ळू** – जौंक **ज़ाऊ** – देवरानी, **ऊ** – जूं, **बाज़ू** – ओर)

[३२] नीचे लिखे शब्द ध्यान में रखिए :–

१. ए-कारान्त स्त्री. – **आते** (= बुवा) – आता – आत्या
२. ऐ-कारान्त ,, – **पै** (= पाई) – पया
३. ओ-कारान्त ,, – **बायको** (= जोरू) – बायका
४. ई-कारान्त **मुलगी** (= बेटी, लड़की) – मुली
बाई (= स्त्री) बाई, बाया
पोर, पोरगी (= छोकरी) – पोरी

('**बाया**' शब्द हीनत्व-सूचक है।)

[३३] कुछ प्राणिवाचक शब्द मराठी में तीनों लिंगों में प्रयुक्त होते हैं। उनमें से कुछ के रूपान्तर ध्यान में रखिए—

पुं.	स्त्री.	पुं.
घोडा	घोडी	घोडे
कोबडा	कोंबडी	कोंबडे
कुत्रा	कुत्री	कुत्रे
मेंढा (= भेड़)	मेंढी	मेंढरू

[३४] नमूने के लिए वाक्य—

हिन्दी	मराठी
१. यह सास है और वे बहुएँ हैं।	१. ही सासू आहे व त्या सुना आहेत.
२. ये बाघ हैं और वे बाघिनें।	२. हे वाघ आहेत व त्या वाघिणी (आहेत).
३. हम छात्राएँ हैं।	३. आम्ही **विद्यार्थिनी** आहोत.
४. तुम आर्य नारियाँ हो।	४. तुम्ही आर्य स्त्रिया आहात.
५. कमला और विमला देवरानियाँ हैं।	५. कमला व विमला ज़ावा (ज़ावा-ज़ावा) आहेत.

मराठी	हिन्दी
१. ह्या बारा लेखण्या आहेत.	१. ये बारह लेखनियाँ हैं।
२. त्या विटा आहेत व ते दगड आहेत.	२. वे ईंटें हैं और ये पत्थर हैं।
३. हे दरवाज़े आहेत व त्या खिडक्या आहेत.	३. ये दरवाज़े हैं और वे खिड़कियाँ हैं।
४. गंगा व यमुना नद्या आहेत.	४. गंगा और यमुना नदियाँ हैं।
५. येथे घोडे व घोड्या आहेत.	५. यहाँ घोड़े और घोड़ियाँ हैं।

[३५]

शब्दकोश—३ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
तकिया	उशी [स्त्री.]	वहाँ	तेथे
कली	कळी [,,]	करछुली	पळी [स्त्री.]
कहाँ	कोठे	पहाड	पर्वत [पुं.]
चम्मच	चमचा [पुं.]	रोटी	भाकरी [स्त्री.]
पहाड़ी, टीला	टेकडी, [स्त्री.]	रानी	राणी
	डोंगर [पुं.]	नाव	नाव, होडी

शब्दकोश—३ (आ)

मराठी		हिन्दी	मराठी		हिन्दी
उंट	[पुं.]	ऊँट	फरशी	[स्त्री.]	फर्श
कढई	[स्त्री.]	कड़ाही	मोलकरीण	[,,]	नौकरानी, महरी
कावळा	[पुं.]	कौआ	वही	[,,]	बही, कापी
चंद्र, चांदोबा		चाँद	सुरी	[,,]	छुरी
जोडा	[पुं.]	जूता	सूर्य	[पुं.]	सूरज
पायतण	[न.]	,,	तुकडा	[,,]	टुकड़ा
जाऊ		देवरानी	पातेली	[स्त्री.] पातेले [न.]	—पतीली

शब्दकोश—३ (इ)

[अ] **नीचे लिखे शब्द मराठी और हिन्दी दोनों में पाए जाते हैं।—**

(मराठी के अनुसार लिंग-विशेष कोष्ठक में दिया गया है):—

शरीर	[न.]	पत्नी	[स्त्री.]	व्यक्ति	[स्त्री.]
सरदार	[पुं.]	अध्यापिका	[,,]	सुई	[,,]
तारा	[,,]	शिक्षिका	[,,]	चपाती	[,,]

[आ] **कुछ अंक :—**

११ अकरा १२ बारा १३ तेरा १४ चौदा १५ पंधरा
१६ सोळा १७ सतरा १८ अठरा १९ एकोणीस २० वीस

[३६] अनुवाद-खण्ड—३

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए :–

१. यहाँ बीस लड़कियाँ और पंद्रह लड़के हैं। २. वह स्त्री अध्यापिका है। ३. ये चम्मच हैं और वे करछुलियाँ हैं। ४. वहाँ छुरियाँ और चाकू नहीं हैं। ५. ये ईंटें हैं, पत्थर नहीं हैं। ६. ये कौन हैं ? ये नौकरानियाँ हैं। ७. ये रोटियाँ हैं; चपातियाँ नहीं हैं। ८. पाठशाला कहाँ है ? ९. क्या यहाँ ऊँट नहीं हैं ? १०. ये कापियाँ और पुस्तकें हैं। ११. क्या वहाँ कड़ाहियाँ हैं ? १२. यह व्यक्ति सरदार है। १३. सूर्य और तारे कहाँ हैं ? १४. यहाँ गद्दी और तकिए नहीं हैं। १५. यहाँ दस सुइयाँ हैं। १६. वहाँ बारह चम्मच, सोलह पतीलियाँ और बीस करछुलियाँ हैं। १७. यह व्यक्ति कौन है ? १८. चाँद कहाँ है ? १९. रामराव अध्यापक और कवि हैं। २०. सह्याद्रि पहाड़ है।

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए :–

१. त्या मुली बहिणी आहेत. २. या कळया आहेत का ? ३. कावळा कोठे आहे ? ४. हिमालय पर्वत आहे. ५. त्या गाई आहेत; ती वासरे आहेत. ६. ह्या काचा आहेत. ७. तो वाघ नाही, ती वाघीण आहे. ८. ती स्त्री शिक्षिका आहे व या मुली विद्यार्थिनी आहेत. ९. ती राणी आहे व या दासी आहेत. १०. या माळा आहेत. ११. जळवा कोठे आहेत ? १२. येथे जोडे आहेत का ? १३. ह्या हत्तिणी व वाघिणी आहेत. १४. लवंगा कोठे आहेत ? १५. त्या पंधरा लाठ्या आहेत. १६. ह्या किती वह्या आहेत ? त्या वह्या अठरा आहेत. १७. उश्या (उशा) कोठे आहेत ? १८. येथे तीन होड्या आहेत का ? १९. ह्या बारा सुया आहेत. २०. त्या विटा एकोणीस आहेत.

✦ ✦ ✦

४. विशेषण

[३७] नीचे लिखे वाक्य पढ़िए –

मराठी	हिन्दी
१. हे **लाल फूल** आहे.	यह लाल फूल है।
२. तो **मुलगा चतुर** आहे.	वह लड़का चतुर है।
३. ही **मुलगी सुंदर** आहे.	यह लड़की सुंदर है।
४. ती **टिकाऊ वस्तू** नाही.	वह टिकाऊ चीज़ नहीं है।
५. आम्ही **गरीब** आहो.	हम गरीब हैं।

इन वाक्यों से दिखाई देता है कि हिन्दी में जिस प्रकार विशेषण प्रयुक्त होता है, उसी प्रकार मराठी में भी उसका प्रयोग किया जाता है।

[३८] आ-कारान्त विशेषणों के अतिरिक्त अन्य सभी विशेषण तीनों लिंगों में बिना परिवर्तन के प्रयुक्त होते हैं। जैसे –

(मराठी)	**लाल** कागद	(पुं.)	**लाल** घोड़ी	(स्त्री)	**लाल** फूल	(न.)
	चतुर राज़ा	(,,)	**चतुर** राणी	(,,)	**चतुर** मूल	(न.)
	त्यागी राज़ा	(,,)	**त्यागी** राणी	(,,)	**त्यागी** घराणे	(न.)
	कष्टाळू पुरुष	(,,)	**कष्टाळू** स्त्री	(,,)	**कष्टाळू** मुले	(न.)

(**कष्टाळू** – मेहनती, **घराणे** – खानदान)

[३९] आ-कारान्त विशेषणों के अतिरिक्त अन्य सभी विशेषण दोनों वचनों में (अविकृत) एकरूप रहते हैं। जैसे –

लाल टोपी	(स्त्री. ए. व.)	**लाल** टोप्या	(स्त्री. ब. व.)
सुंदर स्त्री	(,,)	**सुंदर** स्त्रिया	(,,)
शूर पुरुष	(पुं. ए. व.)	**शूर** पुरुष	(पूं. ब. व.)
उंच़ झाड़	(न. ए. व.)	**उंच़** झाड़े	(न. ब. व.)

[४०] आ-कारान्त विशेषणों का प्रयोग नीचे लिखे अनुसार होता है – (अ) पुं. ए. व. में **आ** कायम रहता है। जैसे –

काळा घोड़ा, **मोठा** (= बड़ा) मनुष्य।

(आ) स्त्री. ए. व. में **आ** का **ई** होता है। जैसे –
काळी घोडी, **मोठी** (= बड़ी) स्त्री।

(इ) न. ए. व. में **आ** का ए होता है। जैसे –
काळे घोडे, **मोठे** घर।

कुछ **आ**-कारान्त विशेषणों के रूप –

विशेषण	पुं. ए. व.	स्त्री. ए. व.	न. ए. व.
चांगला	चांगला	चांगली	चांगले
काळा	काळा	काळी	काळे
हिरवा	हिरवा	हिरवी	हिरवे
निळा	निळा	निळी	निळे

[४१] **आ**-कारान्त विशेषणों का **बहुवचन** नीचे लिखे अनुसार होता है :–

(अ) पुंलिग में **आ** का **ए** होता है। जैसे –
मोठा बंगला – **मोठे** बंगले
हिरवा पक्षी – **हिरवे** पक्षी

(आ) स्त्रीलिंग में अन्त्य **ई** का **या** होता है, और उसके पूर्व आनेवाले व्यंजन और **या** का संयोग होता है। जैसे –
चांगली स्त्री – चांगल्या स्त्रिया, **निळी** साडी – **निळ्या** साड्या

(इ) नपुंसकलिंग में अन्त्य **ए** का **ई** होता है। जैसे =
निळें फूल – **निळी** फुले, **चांगले** घर – **चांगली** घरे

[४२] संख्या-सूचकों का प्रयोग मराठी में ठीक उसी प्रकार होता है, जैसा वह हिन्दी में होता है।

[४२ अ] किसी वस्तु की संख्या या परिमाण पूछने के लिए हिन्दी में जैसे '**कितना – ने – नी**' का प्रयोग करते हैं, वैसे मराठी में '**किती**' का करते हैं।

'किती' का प्रयोग तीनों लिंगों में होता है। जैसे –
किती तेल = कितना तेल ? **किती मुलगे** = कितने लड़के ? **किती मुली** –कितनी लड़कियाँ ?

हिन्दी	मराठी
[४३] नमूने के लिए वाक्य :–	
१. ये खुशबूदार फूल हैं।	१. ही सुवासिक फुले आहेत.
२. वह कागज़ अच्छा नहीं है।	२. तो कागद चांगला नाही.
३. ये साड़ियाँ नीली हैं।	३. ह्या साडचा निळचा आहेत.
४. तुम दौलतमन्द हो।	४ तुम्ही श्रीमंत आहात.
५. वे किसान मेहनती हैं।	५. ते शेतकरी मेहनती आहेत.

मराठी	हिन्दी
१. हा पर्वत उंच आहे.	१. यह पहाड़ ऊँचा है।
२. ती विहीर खोल आहे.	२. वह कुआँ गहरा है।
३. ही तळी खोल नाहीत.	३. ये तालाब गहरे नहीं हैं।
४. ती शेते सुपीक आहेत.	४. वे खेत उपजाऊ हैं।
५. त्या मुली चांगल्या आहेत.	५. वे लड़कियाँ अच्छी हैं।

[४४] शब्दकोश– ४ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
ऊँचा	उंच	पीला	पिवळा
मेहनती	कष्टाळू, मेहनती	बड़ा	बडा, मोठा
काला	काळा	लाल	लाल, तांबडा
अच्छा	चांगला	दौलतमन्द	श्रीमंत
नीला	निळा	हरा	हिरवा
पक्का	पक्का, पिकलेला	मिर्च	मिरची

शब्दकोश– ४ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
उथळ	उथला	लहान	छोटा
आंबट	खट्टा	शूर	बहादुर, शूर
खोल	गहरा	सुंदर, सुरेख	खूबसूरत
गोड	मीठा	सुपीक	उपजाऊ
पांढरा, सफेत	सफेद	सुवासिक, सुगंधी	खुशबूदार
बुद्धिमान	अक्लमन्द	विहीर [स्त्री.]	कुआँ

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
लढवय्या	लड़ाकू	वेडा	पागल
लाजरा	शर्मीला	सोपा	आसान
लाडका	लाड़ला	हट्टी	हठीला

शब्दकोश– ४ (इ)

[अ] नीचे लिखे विशेषण मराठी में भी हैं :—

अनाथ, उदार, उद्योगी, क्रूर, गरीब, चतुर, कच्चा त्यागी, मनोरंजक, लोभी, विद्वान, विरक्त, टिकाऊ

[आ] गिनती :—

२१ एकवीस २२ बावीस २३ तेवीस २४ चौवीस २५ पंचवीस
२६ सव्वीस २७ सत्तावीस २८ अठ्ठावीस २९ एकोणतीस ३० तीस

[४५] अनुवाद-खंड

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए—

१. आसमान नीला है। २. यह कुत्ता काला है। ३. यह साड़ी सफेद है। ४. ये सिपाही शूर हैं। ५. ये चपातियाँ अच्छी हैं। ६. ये फूल खुशबूदार नहीं हैं। ७. यह ज़मीन उपजाऊ है। ८. वह आदमी दौलतमन्द है। ९. तुम मेहनती हो। १०. ये पत्ते हरे हैं। ११. वे बच्चे अनाथ हैं। १२. ये लोग क्रूर और लोभी नहीं हैं। १३ वह आदमी पागल है। १४. लाल और पीले कागज़ कहाँ हैं ? १५. वह स्त्री उदार और विरक्त है। १६. ये कितने फल हैं ?

[अ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. हा लहान मुलगा चतुर आहे. २. ही नीळी साडी चांगली नाही. ३ हा गुलाब सुवासिक आहे. ४. ते पाच भाऊ आहेत. ५. या नद्या मोठ्या नाहीत. ६. ही तळी खोल नाहीत; उथळ आहेत. ७ या वस्तु टिकाऊ नाहीत ८. तुम्ही उदार व त्यागी आहात. ९. हा आंबा कच्चा व आंबट आहे, पिकलेला व गोड नाही. १०. तो मनुष्य विद्वान आहे. ११. ते शिपाई लढवय्ये आहेत. १२. ती झाडे उंच आहेत. १३. ही विहीर लहान आहे. १४. हा मुलगा बुद्धिमान आहे. १५. या मिरच्या हिरव्या आहेत. १६. तेथे किती घरे आहेत ?

✦ ✦ ✦

५. आज्ञार्थ

[४६] हिन्दी में **करना, देना, बोलना, उठना** आदि साधारण क्रियाएँ हैं। ऐसी साधारण क्रिया के अन्त्य **ना** को हटाने से **धातु** या **मूल क्रिया** मिलती है। जैसे–कर, दे, बोल, उठ आदि। मराठी में **हिन्दी की** क्रिया के अन्त्य **ना** की तरह साधारण क्रिया में **णे** रहता है। जैसे–**करणे, देणे, बोलणे, उठणे** आदि। **णे** को हटा देने पर धातु या मूल क्रिया मिलती है। उदाहरणार्थ–

हिन्दी –	करना	खाना	देना	पड़ना	उठना
मराठी –	करणे	खाणे	देणे	पडणे	उठणे
मूल क्रिया –	**कर**	**खा**	**दे**	**पड**	**उठ**

मराठी में कुछ धातुओं के **अ**–कारान्त और **इ**–कारान्त दो-दो **रूप** पाए जाते हैं। जैसे–पाठ**व**–पाठ**वि** (भेज), बोलवि-बोलाव इ.

[४७] मराठी के 'द्वितीय पुरुष' (= मध्यम पुरुष) सर्वनाम **हैं– तू, तुम्ही, आपण।**

बोलनेवाला दूसरे को आज्ञा देता है, इसलिए आज्ञार्थ क्रिया **का** उद्देश्य इनमें से कोई न कोई सर्वनाम ही रहता है। मराठी में **क्रिया के** आज्ञार्थ के रूप नीचे लिखे अनुसार बनाए जाते हैं।

[४८] **तू** (मध्यम पुरुष ए. व.) के साथ मूल क्रिया आती है। जैसे–**तू कर, तू बोल, तू खा।**

(हिन्दी में भी इसी तरह मूल क्रिया प्रयुक्त होती है।)

धातु ह्रस्व इ–करान्त और उ–कारान्त हो तो इ या **उ** को दीर्घ किया जाता है। जैसे : पिणे–तू **पी**; **धुणे**–तू धू।

[४९] **तुम्ही** और **आपण** (म. पु. व. व.) के साथ –

(अ) धातु अ–कारान्त हो तो उसमें **आ** जोड़ें, जैसे– **तुम्ही करा** (कर + आ), तुम्ही **बोला** (बोल + आ), **तुम्ही उठा** (उठ + आ), **आपण करा, आपण बोला.**

(आ) धातु आ-कारान्त हो तो वह क्रिया मूल रूप में रहेगी। जैसे- **तुम्ही खा, तुम्ही ज्ञा;** । **आपण खा, आपण ज्ञा।**

(इ) धातु इ-कारान्त, ई-कारान्त हो, तो अन्त्य इ या ई के स्थान पर **या** आता है। जैसे-**तुम्ही प्या** (पि = प् + इ = प् + या = प्या), **आपण प्या।**

(ई) धातु उ-कारान्त या ऊ-कारान्त हो तो उसमें **वा** प्रत्यय जोड़ें। जैसे-**धुणें** (धोना) - धु (धातु) = धु + वा; **तुम्ही धुवा, आपण धुवा।**

(उ) ए-कारान्त धातु में ए के स्थान पर या रखें। जैसे-**तुम्ही द्या** (दे = द् + ए = द् + या), आपण द्या; **घेणे**-तुम्ही घ्या; आपण घ्या।

अपवाद-येणे (= आना) - तुम्ही **या**, आपण **या**।

कुछ लोग ' आपण ' के साथ आज्ञार्थ में वे-कारान्त क्रिया का प्रयोग करते हैं। जैसे :- खाणे-(आपण) खावे, **करणे**-करावे, पिणे-प्यावे।

यह **वे** प्रत्यय 'तुम्ही' के साथ आनेवाली आज्ञार्थ क्रिया में लगाया जाए।

[५०] नमूने के लिए उदाहरण -

	मूल क्रिया	तू	तुम्ही	आपण
(१) अ-कारान्त	: बोल :	बोल	बोला	बोला
	आण :	आण	आणा	आणा
(२) आ-कारान्त	: खा :	खा	खा	खा
	: ज्ञा :	ज्ञा	ज्ञा	ज्ञा
(३) इ-कारान्त	: पि :	पी	प्या	प्या
(४) ई-कारान्त	: - :		-	
(५) उ-कारान्त	: धु	धू	धुवा	धुवा
(६) ऊ-कारान्त	: -		-	
(७) ए-कारान्त	: दे	दे	द्या	द्या
	घे	घे	घ्या	घ्या
	ये	ये	या	या

[५१] निषेध-सूचक रूप यों बनाए जाते हैं :-

तू बोल – तू **बोलू नकोस**
तू खा – तू **खाऊ नकोस**
तुम्ही बोला – तुम्ही **बोलू नका**
आपण ,, – आपण ,,
तुम्ही या – तुम्ही **येऊ नका**
आपण घ्या – आपण **घेऊ नका**

मूल क्रिया में ऊ प्रत्यय जोड़ें और उसके साथ ए. व. में सहायकारी क्रिया **नकोस** और बहुवचन में **नका** का प्रयोग करें।

[५२] आज्ञार्थ-सूचक वाक्यों में क्रिया का उद्देश्य कभी कभी लुप्त रहता है। क्रिया के रूप से उसे पहचाना जा सकता है। जैसे :-

पुस्तक **आण** = (तू) पुस्तक **आण** = (तू पुस्तक ला।)

[५३] नमूने के लिए वाक्य —

मराठी	**हिन्दी**
१. (तू) हे ताज़े पाणी **पी.**	१. (तू) यह ताज़ा पानी **पी।**
२. (तू) एक ग्लास दूध **दे.**	२. (तू) एक गिलास दूध **दे।**
३. (तुम्ही) ही फळे **खाऊ नका.**	३. (तुम) ये फल मत **खाओ।**
४. (तुम्ही) हुतुतू **खेळा.**	४. (तुम) कबड्डी **खेलो।**
५. (आपण) पुस्तके **घ्या.**	५. (आप) पुस्तकें **लीजिए।**
६. (आपण) सरबत **प्या.**	६. (आप) शरबत **पीजिए।**

हिन्दी	**मराठी**
१. आनंद, एक अच्छा गीत **गा।**	१. आनंद, एक चांगले **गाणे म्हण.**
२. गुरुजी, एक मनोरंजक कहानी **कहिए।**	२. गुरुजी, (आपण) एक मनोरंजक गोष्ट **सांगा.**
३. (तुम) खुशबूदार फूल **लाओ।**	३. (तुम्ही) सुवासिक फुले **आणा.**
४. (तुम) हमेशा सच बोलो और अच्छे काम करो।	४. (तुम्ही) नेहमी खरे बोला व चांगली कामे करा.
५. (तुम) उधर मत जाओ, यहाँ बैठो।	५. (तुम्ही) तिकडे जाऊ नका, येथे बसा.

शब्दकोश–५ (अ)

[५४] हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
लाना	आणणे	देना	देणे
करना	करणे	धोना	धुणे
खाना	खाणे	पीना	पिणे
खेलना	खेळणे	शरबत	सरबत [न.]
सच	खरे	कबड्डी	हुतुतू [पुं.]
उठना	उठणे	बुलाना	बोलाव(वि)णे

शब्दकोश–५ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
गाणे [गाणे म्हणणे]	गाना	येणे	आना
घेणे	लेना	लिहिणे	लिखना
जाणे	जाना	वाचणे	पढ़ना
बसणे	बैठना	शिकणे	सीखना
नेहमी	हमेशा	शिकव (वि)णे	पढ़ाना
बोलणे	बोलना	सांगणे	कहना, सुनाना
मरणे	मरना	गोष्ट [स्त्री.]	कहानी
आले [न.]	अदरक	बॅट [स्त्री.]	बल्ला
उत्तर [न.]	जवाब	विचारणे	पूछना
खेळ [पुं.]	खेल	मीठ [न.]	नमक
खेळाडू	खिलाड़ी	लपंडाव [पुं.]	आँखमिचौली
खोटा	झूठा	विटी [स्त्री.]	गुल्ली
चिंच [स्त्री.]	इमली	विटीदांडू [पुं.]	गुल्ली-डण्डा
तिखट	तीखा	शिळा	बासी
थंड	ठण्डा	सकाळी	सबेरे
दांडू [पुं.]	डंडा	साखर [स्त्री.]	शक्कर

शब्दकोश – ५ (इ)

[अ] ये शब्द मराठी में भी हैं :–

शब्द [पुं] प्रश्न [पुं.] वाक्य [न.] शब्दकोश (-ष) [पुं.]
कसरत [स्त्री.] पेटी [स्त्री.] व्यायाम [पुं.] रुपया [पुं.]

[आ] कुछ संख्याएँ :–

३१ एकतीस ३२ बत्तीस ३३ ते [हे] तीस ३४ चौतीस
३५ पस्तीस ३६ छत्तीस ३७ सदतीस ३८ अडतीस
३९ एकुणचाळीस ४० चाळीस

[५५] अनुवाद – खण्ड – ५

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए :–

१. आइए, बैठिए। यह पुस्तक पढ़िए। २. सुबह ताज़ा दूध पिओ, चाय मत पिओ। ३. अनिल चलो, गुल्ली-डण्डा खेलो। ४. रमेश, ये चालीस रुपये लो। ५. हमेशा सच बोलो, झूठ मत बोलो। ६. यह चाय गर्म है, मगर वह कॉफी ठण्ड़ी है। ७. यहाँ अदरक, मिर्च, इमली, नमक और कच्चा आम है। ८. तुम यह गेंद और बल्ला लो और खेलो। ९. शीला, कपड़े धोओ और यहाँ आओ। १०. सुनील, यहाँ बैठो और एक अच्छा गीत गाओ। ११. वे सब लड़कियाँ आँख-मिचौली खेलती हैं। १२. ये कितनी इमलियाँ हैं? १३. झूठ मत बोलो, सच कहो। १४. गुरुजी, यह पाठ पढ़ाइए। १५. ये कितने रुपये हैं?

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए :–

१. तुम्ही चांगले खेळाडू आहात. येथे या व हुतुतू खेळा. २. आपण हे काम करू नका. ३. त्या वह्या आण व उत्तरे लिही. ४. हिन्दी राष्ट्रभाषा आहे. ही भाषा तुम्ही शिका. ५. हे पत्र वाचा व उत्तर लिहा. ६. कमल, ही निळी साडी चांगली आहे. ती तू घे. ७. हे सरबत आंबट आहे. साखर दे. ८. ही पोथी वाचा व अर्थ सांगा. ९ हे आंबे कच्चे आहेत. ते तू खाऊ नकोस. १०. तू हे चार पाठ वाच व तेथे जा. ११. एक मोठा शब्दकोश आणा. १२. ती पस्तीस पुस्तके घ्या व तिकडे जा. १३. ती किती वाक्ये आहेत? १४. हे प्रश्न विचारू नका. १५. सकाळी उठा व व्यायाम करा

✦ ✦ ✦

६. सामान्य वर्तमानकाल

[५६] अब यह देखेंगे कि 'मैं काम करता हूँ।' 'गाय दूध देती है।' – जैसे वाक्य मराठी में कैसे बनाए जाते हैं। नीचे लिखे हिन्दी और मराठी वाक्य पढ़िए –

मराठी	हिन्दी
१. मी काम **करतो.**	मैं काम **करता** हूँ।
२. मुलगा पुस्तक **वाचतो.**	लड़का पुस्तक **पढ़ता** है।
३. कमला गाणे गाते (म्हणते).	कमला गाना **गाती** है।
४. नोकर सामान **आणतात**	नौकर सामान **लाते** हैं।

इन वाक्यों से ध्यान में आया होगा कि –

(अ) हिन्दी में जैसे वर्तमानकाल में क्रिया के साथ '(**होना**' के रूप रहते हैं, वैसे मराठी में '**आहे**' के नहीं आते। (आ) मराठी में वर्तमानकाल के रूप बना लेने के लिए धातु में **तो, तोस, ते, तात** आदि प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

[५७] मराठी में क्रिया के वर्तमानकाल के रूप बनाने के लिए धातु में नीचे लिखे अनुसार प्रत्यय जोड़ें –

	एकवचन			बहुवचन
	पुं.	**स्त्री.**	**नपुं.**	**तीनों लिंगों में**
उ. पु.	तो	ते – त्ये	ते	तो
म. पु.	तोस	तेस – त्येस	तेस	ता
अ. पु.	तो	ते – त्ये	ते	तात

[५८] **करणे** क्रिया के अब रूप बनाएँगे। **करणे** में **कर** धातु है। इसलिए उसमें प्रत्यय ज़ोड़कर यों रूप बनाए जाएँगे –

कर + तो = करतो, कर + तोस = करतोस, करतात इत्यादि

इसी प्रकार – **खाणे** – खातो, खातोस, खातात इ.

देणे – देतो, देते, देतोस, देतात इ.

सुविधा के लिए स्त्रीलिंग में भिन्न भिन्न प्रत्ययों में से एक ही लें।

[५९] (१) **करणे – वर्तमानकाल**

पुंलिग

	ए. व.	ब. व.
उ. पु.	**मी करतो** (मैं करता हूँ।	**आम्ही करतो** (हम करते हैं।)
म. पु.	**तू करतोस** (तू करता है।)	**तुम्ही करता** (तुम करते हो।)
		आपण करता (आप करते हैं।)
अ. पु.	**तो करतो** (वह करता है।)	**ते करतात** (वे करते हैं।)

स्त्रीलिंग

	ए. व.	ब. व.
उ. पु.	**मी करते-त्यें** (मैं करती हूँ।)	**आम्ही करतो** (हम करती हैं।)
म. पु.	**तू करतेस-त्येस** (तू करती है।)	**तुम्ही करता** (तुम करती हो।)
		आपण करता (आप करती हैं।)
अ. पु.	**तीं करते-त्ये** (वह करती है।)	**त्या करतात** (वे करती हैं।)

नपुंसकलिंग

	ए. व.	ब. व.
उ. पु.	मी करते	आम्ही करतो
म. पु.	तू करतेस	तुम्ही करता, आपण करता
अ. पु.	ते करते	ती करतात

(२) **ज़ाणे – वर्तमानकाल**

	पुं.	**स्त्री.**	**नपुं.**	**तीनों लिगों में**
उ. पु.	**मी** ज़ातो	ज़ाते-त्ये	ज़ाते	आम्ही ज़ातो
म. पु.	**तू** ज़ातोस	ज़ातेस-त्येस	ज़ातेस	तुम्ही ज़ाता आपण ज़ाता
अ. पु.	**तो** ज़ातो	(ती) ज़ाते-त्ये	(ते) जाते	ते, त्या, ती ज़ातात

(३) देणे – वर्तमानकाल

	एकवचन			**बहुवचन**
	पुं	स्त्री	न.	तीनों लिगों में
उ. पु.	मी देतो	देते – त्ये	देते	आम्ही देतो
म. पु.	तू देतोस	देतेस – त्येस	देतेस	तुम्ही देता, आपण देता
अ. पु.	तो देतो	ती देते – त्ये	ते देते	ते - त्या – ती देतात

(४) असणे = होना

	ए. व.			ब. व.
	पुं.	स्त्री.	न.	तीनों लिंगों में
उ. पु. मी	असतो	असते-त्ये	असते	आम्ही असतो
म. पु. तू	असतोस	असतेस-त्येस	असतेस	तुम्ही-आपण-असता
अ. पु. तो	असतो	ती असते	ते असते	ते-त्या-ती-असतात

(५) होणे (होना—to become)

ए. व.			ब. व.
पुं.	स्त्री.	न.	(तीनों लिंग)
मी होतो	होते, होत्ये	होते	आम्ही होतो
तू होतोस	होतेस, होत्येस	होतेस	तुम्ही होता, आपण होता
तो होतो,	ती होते – होत्ये	ते होते	ते–त्या – ती–होतात

(**मी होतो** = मैं होता हूँ। **तुम्ही होता** = तुम होते हो, इत्यादि)

[६०] नीचे लिखे वाक्य पढ़िए—

हिन्दी	**मराठी**
१. हम काम करते हैं।	आम्ही काम करतो.
२. तू फल खाता है।	तू फळ खातोस.
३. श्यामा चिट्ठी लिखती है।	श्यामा पत्र लिहिते.
४. गाएँ घास खाती हैं।	गाई गवत खातात.
५. बच्चे क्रिकेट खेलते हैं।	मुले क्रिकेट खेळतात.

मराठी	**हिन्दी**
१. आशा फुले आणते व माळ बनविते.	आशा फूल लाती है और माला बनाती है।
२. शेतकरी धान्य आणतो.	किसान अनाज लाता है।
३. मुली गाणी म्हणतात (गातात).	लड़कियाँ गाने गाती हैं।
४. पाखरे दाणे टिपतात.	चिड़ियाँ दाने चुगती हैं।
५. मांज़र उंदीर खाते.	बिल्ली चूहा खाती है।

[६१] शब्दकोश–६ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
कपड़ा	कापड [न.]	बनाना	बनविणे
कुम्हार	कुंभार	बीज	बी [स्त्री. न.]
घास	गवत [न.]	मटका	मडके [न.] माठ [पुं.]
गढ़ना	घडविणे	माली	माळी
पहनना	[कपडे] घालणे	बिल्ली	मांजर [न.]
चमार	चांभार	लुहार	लोहार [न.]
छाता	छत्री [स्त्री.]	बेचना	विकणे
गहना	दागिना [न.]	सींचना	शिंपणे
जोतना	नांगरणे	दर्जी	शिंपी [पुं.]
बोना	पेरणे	सीना	शिवणे
	रुजत घालणे	हँसना	हसणे
भैंस	म्हैस	समाचार-पत्र	वर्तमान-पत्र [न.]

शब्दकोश–६ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
अभ्यास [पुं.]	पढ़ाई	टिपणे, वेचणे	चुगना
आंघोळ [स्त्री.]	नहाना	तिकडे	उधर
इकडे	यहाँ	तोंड [न.]	मुँह
उडणे	उड़ना	दाणा [पुं.]	दाना
उंदीर [पुं.]	चूहा	दूध काढणे	दुहना
ऐकणे	सुनना	धान्य [न.]	अनाज
ओढणे	खींचना	न्याहारी [स्त्री.]	नाश्ता
कोष्टी	जुलाहा	पकडणे	पकड़ना
खरेदी करणे	खरीदना	बजे	वाजता
गवळी	ग्वाला	बुद्धिबळे [न.]	शतरंज
गोधडी [स्त्री]	गुदड़ी	विणणे	बुनना

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
झोपणे	सोना	शेर [पुं.]	सेर
झाकण [न.]	ढक्कन	पत्र [न.]	चिट्ठी, पत्र
झरा [पुं.]	सोता	सुंठ [स्त्री.]	सोंठ
डबा [पुं.]	डिब्बा	सुनार	सुनार

शब्दकोश - ६ (इ)

(१) नीचे लिखे शब्द मराठी और हिन्दी दोनों भाषाओं में हैं।

लिंग-विशेष कोष्ठक में बताया है।

गीत [न.], रंग, चारा [= चारा], चादर [= चादर], भात, पूजा, स्नान, प्रार्थना, पुजारी, पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, पत्ते (= ताश), सामान [न.], दिशा, बंद

(२) गिनती--

४१ एकेचाळीस ४२ बेचाळीस ४३ त्रेचाळीस ४४ चौवेचाळीस
४५ पंचेचाळीस ४६ सेचाळीस ४७ सत्तेचाळीस ४८ अट्ठेचाळीस
४९ एकुणपन्नास ५० पन्नास

[६२] अनुवाद-खण्ड-६

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए :—

१ दर्जी कपड़े सीता है। २. हम कपड़े पहनते हैं। ३. सुनार गहने गढ़ता है। ४. जुलाहा कपड़ा बुनता है। ५. धोबी कपड़े धोता है। ६. विद्यार्थी पुस्तकें पढ़ते हैं। ७. लड़कियाँ गीत गाती हैं। ८. मैं चिट्ठी लिखता हूँ। ९. हंस दूध पीते हैं। १०. तू काम करती है। ११. तुम अनाज बेचते हो। १२. आप सुबह नहाते हैं। १३. बैल गाड़ी खींचते हैं। १४. अरुणा चादर लाती है। १५. बिल्ली चूहे पकड़ती है और खाती है। १६. ये लड़कियाँ प्रार्थना करती हैं। १७. पुजारी पूजा करता है और पोथी पढ़ता है। १८. तुम कितने बजे स्नान करते हो ? १९. विद्यार्थी कहाँ बैठते हैं ? २० क्या तुम सुबह अखबार पढ़ते हो ?

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए :–

१. शेतकरी शेत नांगरतो व बी पेरतो. २. कुंभार मडकी बनवतो व विकतो. आम्ही मडकी खरेदी करतो. ३. गाय दूध देते. गवळी दूध काढतो व विकतो. ४. पाखरे दाणे टिपतात. ५. मी सकाळी उठते, हात तोंड धुते व दूध पिते. ६. तुम्ही पत्ते खेळता व त्या बुद्धिबळे खेळतात. ७. तू गोष्ट सांगतेस व मुली ऐकतात. ८. तुम्ही मराठी शिकविता व आम्ही शिकतो. ९. आम्ही दहा वाजता झोपतो. १०. चांभार जोडे बनवितो. ११. ते पत्र इकडे आणा. १२. म्हशी चारा खातात. १३. टेबले मोठी आहेत; खुर्च्या मोठ्या नाहीत. १४. लवंग तिखट असते. १५. बर्फी गोड असते. १६. हे धान्य अट्ठेचाळीस किलो आहे. १७. तेथे पन्नास गोधड्या आहेत का? १८ तुम्ही पूजा केव्हा करता? १९. झरा कोठे आहे? २० झाकण बंद करू नका.

✦ ✦ ✦

७. सर्वनाम : कारक-रचना–१

[६३] नीचे लिखे वाक्य पढ़िए और मोटे टाईप में छपे शब्दों पर गौर कीजिए ––

हिन्दी	मराठी
१. **मुझे** यह पुस्तक दो।	१. **मला** हे पुस्तक द्या.
२. भारत **हमारा** देश है।	२. भारत आमचा (आपला) देश आहे.
३. ये **उसकी** पुस्तकें हैं।	३. ही **त्याची** पुस्तके आहेत.

मुझे – **मला**, हमारा – **आमचा-आपला**, उसकी – **त्याची**। **मुझे हमारा, उसकी** क्रमशः **मैं, हम** और **वह** के कारक-रूप हैं; वैसे ही **मला, आमचा** और **त्याची** क्रमशः **मी, आम्ही, तो** के रूप हैं। ऐसे ही सर्वनामों के रूप नीचे दिए जा रहे हैं। कोष्ठक में दिए हुए रूप पुरानी मराठी और काव्य में पाए जाते हैं। आम तौर पर उनका प्रयोग रोजमर्रा की बोलचाल में नहीं होता।

१. मी	हिन्दी	२. आम्ही	हिन्दी
१. मी	मैं	आम्ही	हम
२. मला, मजला, (माते)	मुझे	आम्हास, आम्हाला, (आम्हाते)	हमें
३. मी, मजशी, (म्या) माझ्याशी	मुझसे, मेरे द्वारा	आम्ही, आम्हाशी, आमच्याशी	हमसे-हमारे द्वारा
४. मला, मजला (माते)	मुझे	आम्हास, आम्हाला, (आम्हाते)	हमें
५. मजहून, माझ्याहून	मुझसे	आम्हाहून, आमच्याहून	हमसे
६. माझा, माझी, माझे, माझ्या माझे	मेरा-री-रे	आमचा. आमची, आमचे, आमच्या आमचे	हमारा-री-रे
७. माझ्यात	मुझमें	आम्हात, आमच्यात	हममें

३. तू	हिन्दी	४. तुम्ही	हिन्दी	५. आपण (आदरार्थ में)	हिन्दी
१. तू	तू	तुम्ही	तुम	आपण	आप
२. तुला, तुजला, (तूते)	तुझे	तुम्हास, तुम्हाला, (तुम्हाते)	तुमको	आपल्या (णा) स, आपल्या (णा) ला (आपणा-त्या-ते), आपल्याना	आपको
३. तू, तुजशी (त्वा) तुझ्याशी	तुझसे	तुम्ही, तुम्हाशी, तुमच्याशी	तुमसे	आपण, आपल्या (णा) शी	आपसे
४. तुला, तुजला, (तूते)	तुझे	तुम्हास, तुम्हाला, (तुम्हाते)	तुमको	आपल्या (णा) स, आपल्या (णा) ला (आपणा-त्या-ते), आपल्याना	आपको
५. तुजहून, तुझ्याहून	तुझसे	तुम्हाहून, तुमच्याहून	तुमसे	आपल्या (णा) हून	आपसे
६. तुझा, तुझी तुझे, तुझ्या तुझे	तेरा-री-रे	तुमचा, तुमची, तुमचे तुमचे, तुमच्या	तुम्हारा-री-रे	आपला, आपली, आपले आपले, आपल्या	आपका-की-के
७. (तूत), तुझ्यात	तुझमें	तुम्हात, तुमच्यात	तुममें	आपल्या (णा) त	आपमें

६. आपण (निजवाचक)		७. स्वतः (स्वता)
(तीनों लिंगों और दोनों वचनों में)	हिन्दी	(दोनों वचनों और तीनों लिंगों में)
१. आपण	आप	१. स्वतः
२. आपणास, ०ला, (०ते) आपल्यास, ०ला,	अपनेको	२. स्वतः, स्वताला, स्वतःस
३. आपण, आपल्या (णा) शी	अपनेसे	३. स्वतः, स्वताशी
४. आपणास, ०ला, (०ते) आपल्याला, ०ला	अपनेको	४. स्वतःस, स्वतःला
५. आपल्या (णा) हून	अपनेसे	५. स्वतःहून
६. आपल्या, ०ली, ०ले, ०ला, ०ले	अपना-नी-ने	६. स्वतःचा, स्वतःची, स्वतःचे, स्वतःच्या
७. आपल्या (णा) त	अपनेमें	७. स्वतात

(‘स्वतः’ के स्थान पर हर कहीं ‘स्वता’ रूप भी आता है।)

८. तो, ती, ते	हिन्दी
१. (पुं.) तो, (स्त्री.) ती, (न.) ते	वह
२. पुं. न. त्यास, त्याला, (त्याते) स्त्री. तिला, (तीस, तीते, तिजला)	उसे
३. पुं. न. त्याने, (त्याशी), त्याच्याशी स्त्री. तिने, तिच्याशी, (तिज़शी)	उससे
४. पुं. न. त्यास–त्याला, (त्याते) स्त्री. तीस, तिला, तिजला	उसे
५. पुं. न. त्याहून–त्याच्याहून स्त्री–तीहून, तिच्याहून,	उससे
६. पु. न. त्याच्या–ची–चे़–च्या–चे़ स्त्री. तिचा़–ची–चे़-च्या–चे़	उसका-की-के
७. पुं. न. त्यात, त्याच्यात स्त्री. तीत, तिच्यात	उसमें

९. ते, त्या, ती (तीनों लिंगों में)	हिन्दी
१. (पुं.) ते, (स्त्री.) त्या, (न.) ती	वे
२. त्यांस, त्यांला, त्यांना (त्याते)	उनको
३. त्यांनी, त्यांशी,	उनसे
४. त्यांस, त्यांला, त्यांना (त्यांते)	उनको
५. त्यांहून, त्यांच्याहून	उनसे
६. त्यांचा़, त्यांची, त्यांचे़ त्यांच्या त्यांचे़	उनका-की-के
७. त्यांत, त्यांच्यात	उनमें

[६५] **मी, आम्ही, तू, तुम्ही, आपण** – इन सर्वनामों के रूप तीनों लिंगों में एक-से हैं। जिस संज्ञा के बदले उसका प्रयोग किया जाता है, उसके अनुसार उसका लिंग माना जाए।

[६६] 'आपण' निजवाचक का एक मतलब होता है 'हम और तुम सब मिलकर'। उसके लिए हिन्दी में **हम** का ही प्रयोग किया जाता है। जैसे – (१) **आपण** भारतीय आहोत = **हम** (तुम और हम सब मिलकर) भारतीय हैं।

(२) मालक **आपल्याला** पैसे देतो – मालिक **हमको** (हम और तुम – सबको) पैसे देता है।

[६७] गौर से देखने पर नीचे लिखी बातें ध्यान में आएँगी। उन्हें ध्यान में रखने से इन रूपों को याद करने में कोई कठिनाई नहीं अनुभव होगी।

(अ) **मी** और **तू** के रूपों में समानता है; तथा **आम्ही** और **तुम्ही** के रूपों में भी वही बात पाई जाती है। सिर्फ आरम्भ में फर्क दिखाई देता है। **म** के स्थान पर **तु** और **आ** के स्थान पर **तु** करने से अधिकांश रूप बनते हैं। जैसे – मला – तुला; आम्हाला – तुम्हाला

[६८] मराठी व्याकरण के नियमों का शब्दशः पालन करने से जो रूप मिलते हैं, उनमें से कुछ रूपों से भिन्न रूप प्रत्यक्ष व्यवहार में प्रयुक्त होते हैं। जैसे – मज़हून – माझ्याहून, तुज़शी – तुझ्याशी इ०

सर्वनामों के ये रूप कुछ अलग ढंग से बनाते हैं। वास्तव में ये मिश्र रूप हैं। मगर उनका प्रयोग रूढ़ होने के कारण यहाँ दिए गए हैं। सर्वनाम के सम्बन्ध कारक के **या**-कारान्त रूप में विभक्ति जोड़ी जाती है।

जैसे – **तो** – त्याच्या + शी = **त्याच्याशी**

मी – माझ्या + शी = **माझ्याशी**

स्वतः, स्वतःला शब्द स्वता, स्वताला जैसे भी (विसर्ग को लुप्त करके) लिखे जाते हैं।

[६८ अ] आपला–अपना, आपली–अपनी–आपले–अपना इत्यादि

आपला (बोलनेवाले का निजी, खुद का) का प्रयोग हिन्दी के अपना के जैसा होता है। जैसे –

मी आपले काम करतो – मैं अपना काम करता हूँ।

तू अपनी पुस्तक दे – तू आपले पुस्तक दे।

तो आपली वही आणतो – वह अपनी कापी लाता है।

[६८ आ] जो जी, जे; जे, ज्या, जी (= जो) की कारक-रचना अन्यत्र दी गई है।

[६९] नमूने के लिए वाक्य :—

हिन्दी	मराठी
१. (तुम) मुझे पेन दो।	१. (तुम्ही) मला पेन द्या.
२. मुझसे दूर जाओ।	२. माझ्यापासून दूर जा.
३. यह मेरी माँ है और वे मेरे पिताजी हैं।	३. ही माझी आई आहे व ते माझे वडील आहेत.
४. वे मेरे दोस्त नहीं हैं।	४. ते माझे मित्र नाहीत.
५. यह हमारा घर है।	५. हे आमचे घर आहे.
६. हमको पैसे दीजिए।	६. आम्हाला पैसे द्या.
७. तुझे मैं मिठाई देती हूँ।	७. तुला मी मिठाई देते.
८. तेरा भाई यहाँ नहीं है।	८. तुझा भाऊ येथे नाही.
९. यह तुम्हारी पुस्तक है।	९. हे तुमचे पुस्तक आहे.
१०. आपकी माँ पोथी पढ़ती है।	१०. आपली आई पोथी वाचते.

मराठी	हिन्दी
१. ही माझी वही आहे, त्याची नाही. (नव्हे.)	१. यह मेरी कापी है, उसकी नहीं (है)।
२. अरुण तिचा भाऊ आहे.	२. अरुण उसका भाई है।
३. हे शेतकरी आहेत. ही त्यांची गाडी आहे.	३. ये किसान हैं। यह उनकी गाड़ी है।
४. तो आपला ग्लास आणतो. त्यात पाणी आहे.	४. वह अपना ग्लास लाता है। उसमें पानी है।

मराठी	हिन्दी
५. तिचे घर लहान आहे.	५. उसका घर छोटा है।
६. मृणाल माझ्याहून लहान आहे.	६. मृणाल मुझसे छोटी है।
७. त्यांचे नाव काय आहे ?	७. उनका क्या नाम है ?
८. त्यांचे भाऊ कोठे राहतात ?	८. उनके भाई कहाँ रहते हैं ?
९. ती आपली साडी धुते.	९. वह अपनी साड़ी धोती है।
१०. तिच्याशी बोलू नकोस.	१०. उससे मत बोल।

[७०] शब्दकोश – ७ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
दादा, नाना	आजोबा	खिलना	फुलणे
दादी, नानी	आजी	भाभी	भावजय, वहिनी
काटना	कापणे	झगड़ा	भांडणे
राज	गवंडी	झगड़ालू	भांडखोर
चमकना	चमकणे	साला	मेहुणा
जमाई	जावई	जल्द	लवकर, जलद
नुकीला	टोकदार	लूटना	लुटणे
होशियार	दक्ष, सावध	बजाना	वाजविणे
देवर	दीर	बहना	वहाणे-वाहणे
नक्कारा	नगारा [पुं.]	ससुर	सासरा
ननद	नणंद	सौत	सवत

शब्दकोश – ७ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
आस्ते, हळू	आहिस्ता	दळणे	पीसना, दलना
आरसा [पुं.]	आईना	नाव	नाम
आंधळा	अंधा	पहाणे, पाहणे	देखना
आजारी	बीमार	भुंकणे	भूंकना

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
[तेल] काढणे	[तेल] पेरना	लढणे	लड़ना
खाली	नीचे	लखोटा [पुं.]	लिफाफा
घाणेरडा	गन्दा	लंगडा	लँगड़ा
जलद	जल्द, तेज़	लुटारू	लुटेरा
च्	ही	लुळा	लूला
जळणे	जलना	सोडणे	छोड़ना
जाळणे	जलाना	सुद्धा	भी
तळणे	तलना	भजे [न.]	पकौड़ा

शब्दकोश – ७ (इ)

[अ] नीचे लिखे शब्द मराठी में भी हैं—

अद्भुत, अमृत [न.], छडी, माल [पुं.], तेल [न.], तेली [पुं.], दुष्ट, पति, पृथ्वी, फकीर, सेवा, सेवक

[आ] गिनती --

५१ एकावन ५२ बावन ५३ त्रेपन ५४ चौपन ५५ पंचावन
५६ छप्पन ५७ सत्तावन ५८ अट्ठावन ५९ एकुणसाठ ६० साठ

[७१] अनुवाद–खण्ड– ७

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए :–

१. यह लड़का मेरा भाई है और वह लड़की मेरी बहन है। २. मेरा भाई तेज़ दौड़ता है। ३. भारत हमारी मातृभूमि है। ४. हम उसकी सेवा करते हैं। ५. तुम्हारा घर बड़ा है, मगर उसका [घर] छोटा है। ६. आपका नौकर काम करता है। उसे कपड़े दीजिए। ७. उसका दोस्त बीमार है। ८. अविनाश मेरा बड़ा भाई है। अरुणाबेन उसकी पत्नी है। मैं उसका देवर हूँ। ९. आशा मेरी बहन है। रमाकान्त उसके पति हैं। रामराय उसके ससुर और सीताबेन उसकी सास है। १०. ये लड़कियाँ झगड़ालू हैं। वे रोज़ झगड़ती हैं। ११. तुम्हारा घर कहाँ है ? १२. वह आदमी लूला और लंगड़ा है। १३. यह फकीर अंधा है। १४. सिपाही लड़ते हैं। १५. मुझे पचपन रुपये दो।

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

१. माझा एक मित्र आहे. त्याचे नाव श्रीकांत आहे. मी त्याला पुस्तके देतो. २. तुमचे शेत मोठे आहे. त्यात तुम्ही बी पेरता. ३. आपण उदार आहात. आपण त्याला पैसे द्या. ४. तिला मराठी शिकवा. ५. मी तुला दूध देतो. ६. तू केळी आण, आंबे सुद्धा विकत घे. ७. हा कुत्रा घाणेरडा आहे. ८. हा मनुष्य आंधळा आहे. ९. तेली तेल काढतो व विकतो. १०. ही त्यांची चित्रे पहा. ११. सकाळी कळ्या फुलतात. १२. पृथ्वी मोठी आहे. चंद्र तिच्यापेक्षा लहान आहे व सूर्य त्यापेक्षा मोठा आहे. १३. नोकर नगारा वाजवितो. १४. गवंडी भिंत बांधतो. १५. तिची नणंद चतुर आहे. १६. कागद जलद जळतो. १७. तुम्ही आमचे कागद जाळू नका. १८. लुटारू त्यांना लुटतात. १९. विमला व कमला सवती-सवती आहेत. २०. माझी भावजय भजी तळते.

✦ ✦ ✦

८. सर्वनाम : कारक-रचना--२

[प्रश्न-सूचक वाक्य और आवृत्ति]

[७२] पिछले पाठ में मी, आम्ही; तू, तुम्ही, आपण, स्वतः, तो, ती, ते; ते, त्या, ती, -- इन सर्वनामों के रूप देखे गए। अब यहाँ हा, ही, हे-हे, ह्या, ही; कोण, काय के रूप दिए जा रहे हैं।

हा, ही आदि के रूपों की तो, ते आदि के रूपों से समानता ध्यान में रखिए। त्याला, त्याचा, तिचा आदि रूपों में त्या, ति के स्थान पर ह्या, हि आदि रखने से हयाला, हयाचा, हिचा आदि शब्द बनते हैं।

[७३] १०. हा, ही, हे ११. हे, ह्या, ही

	१०. हा, ही, हे	११. हे, ह्या, ही
१.	(पुं.) हा, (स्त्री.) ही (न.) हे (यह)	(पुं.) हे, (स्त्री.) ह्या, (न.) ही
२.	पुं. न. ह्यास, ह्याला, (इसे) स्त्री हीस, हिला (हिजला)	ह्यांस, ह्यांना ह्यांला (इन्हें) (ह्यांते)

	एकवचन	बहुवचन
३.	पुं. न. ह्याने, ह्याशी, ह्याच्याशी स्त्री. हिने, ह्याच्याशी (इससे)	ह्यांनी, ह्यांच्यांशी (इनसे) ह्यांशी
४.	पुं. न. ह्यास, ह्याला (ह्याते) (इसे) स्त्री. हीस, हिला, (हिजला)	ह्यांना, ह्यांस, ह्यांला
५.	पुं. न. ह्याहून, ह्याच्याहून (इससे) स्त्री. हीहून, हिच्याहून	ह्यांहून, ह्यांच्याहून (इनसे)
६.	पुं.न. ह्याचा, ह्याची, ह्याचे, ह्याच्या स्त्री. हिचा, हिची, हिचे, हिच्या (इसका–की–के)	ह्यांचा, ह्यांची, ह्यांचे ह्यांच्या
७.	पुं. न. ह्यात, ह्याच्यात (इसमें) स्त्री. हीत, हिच्यात	ह्यांत, ह्यांच्यात (इनमें)

[७३ अ] हा, ही, हे आदि सर्वनाम के रूपों में ह्या के स्थान पर **या** करके भी अन्य रूप बनाए जाते हैं। जैसे –

ह्यांना – यांना   ह्याला – याला
ह्याचा – याचा   ह्याहून – याहून इत्यादि

[७४] १२. कोण (कौन)   १३. काय (क्या)

	ए. व.	ब. व.	ए. व.	ब. व.
१.	कोण	कोण	काय	काय
२.	कोणास-ला	कोणांस-ला	कशास-ला	कशांस-ला
३.	कोणी, कोणाशी,	कोणी, कोणांशी	कशाने-शी	कशांनी-शी
४.	कोणास-ला	कोणांस-ला	कशास-ला	कशांस-ला
५.	कोणाहून	कोणांहून	कशाहून	कशांहून
६.	कोणाचा-ची-चे,	कोणांचा-ची-चे	कशाचा-ची-चे	कशांचा-ची-चे
७.	कोणात	कोणांत	कशात	कशांत

[७५] हिन्दी में वह–वे, यह–ये, कौन, क्या आदि सर्वनामों का विशेषण के रूप में भी प्रयोग होता है। उस वक्त उनके साथ संज्ञाएँ आती हैं। जैसे :– यह घर, वे लड़के, **क्या** काम, कौन आदमी।

मराठी में भी इस प्रकार तो, ती, ते; ते, त्या, ती; हा, ही, हे; हे, ह्या, ही; कोणता-ती-ते, कोण, काय इत्यादि सर्वनामों का विशेषणों के रूप में प्रयोग होता है। ऐसे प्रयोग में उनके कारक-रूप वैसे ही रहते हैं। जैसे :–

१. यह **किसका** घर है ? -- हे घर **कोणाचें** आहे ?
२. **उसका** नाम अनिल है। -- **त्याचे** नाव अनिल आहे.

[७६] नीचे लिखे वाक्य तथा वाक्यांश ध्यान में रखिए --

मराठी	हिन्दी
१. हा कोण आहे ?	यह कौन है ?
२. ते काय आहे ?	वह क्या है ?
३. हे **कोणाचे** पत्र आहे ?	यह किसका पत्र है ?
४. हा कोणाचा मुलगा आहे ?	यह किसका पुत्र है ?
५. साखर कशात आहे ?	शक्कर किसमें है ?
६. राम कोणाहून (पेक्षा) मोठा आहे ?	राम किससे बड़ा है ?

हिन्दी	मराठी
१. आप किसे बुलाते हैं ?	आपण कोणाला बोलविता ?
२. यह आदमी कौन है ?	हा मनुष्य कोण आहे ?
३. इसका क्या नाम है ?	ह्याचे नाव काय आहे ?
४. तुम ये पैसे किसको देते हो ?	तुम्ही हे पैसे कोणाला देता ?
५. यह किसकी बहू है ?	ही कोणाची सून आहे ?
६. इससे मत बोल।	ह्याच्याशी बोलू नकोस.

[७७] ऊपर लिखे वाक्य पढ़कर आपके ध्यान में आया होगा कि मराठी में प्रश्न-सूचक वाक्य कैसे बनाए जाते हैं। प्रश्न-सूचक वाक्यों की रचना करते समय आम तौर पर नीचे लिखे शब्दों को काम में लाया जाता है –

काय–क्या	**का**–क्या
कोण–कौन	**कसे**–कैसे
किती–कितना-नी-ने	**का**–क्यों

कोणता-ते-ती–कौन-सा, ० से, ० सी (कोणते-ती-नपुं. लिंग में)

केव्हा–कब	**कसा-शी-से**–कैसा-सी-से
कोठे–कहाँ	(**कसे-शी**-नपुं. लिंग में)

इसलिए **कोण, काय** आदि के रूप ध्यान में रखिए।

[७८] नमूने के लिए प्रश्न-सूचक वाक्य —

मराठी	हिन्दी
१. ते **कोण** आहेत ?	१. वे **कौन** हैं ?
२. तुम्ही **काय** करता ?	२, तुम **क्या** करते हो ?
३. ती **कोणाची** मुलगी आहे ?	३. वह **किसकी** बेटी है ?
४. आपण **कोणाला** शिकविता ?	४. **आप** किसको पढ़ाते हैं ?
५. ते **किती** लोक आहेत ?	५. वे **कितने** लोग हैं ?
६. तुम्ही **कोणता** पाठ वाचता ?	६. आप **कौन-सा** पाठ पढ़ते हैं ?
७. त्या **केव्हा** जातात ?	७. वे **कब** जाती हैं ?
८. ते **कोठे** राहतात ?	८. ते **कहाँ** रहते हैं ?
९. तो कसा (काय) मनुष्य आहे ?	९. वह **कैसा** आदमी है ?
तो भोळा आहे.	वह भोला-भाला है ?
१०. ती का रडते ?	१०. वह **क्यों** रोती है ?

[७९] शब्दकोश – ८ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
देहात	**खेडेगाव** [न.]	डाकघर	**पोस्ट** [न.]
चलना	**चलणे, चालणे**	सूबा	**प्रान्त** [पुं.]

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
चलाना	चालविणे	बँटवारा	बटवडा
चूल्हा	चूल [स्त्री.]	भीगना	भिजणे
जिला	जिल्हा [पुं.]	भोला	भोळा
डाकिया	डाकवाला, पोस्टमन	मिलना	मिळणे
अनार	डाळिंब [न.]	बाँटना	वाटणे
नाचना	नाचणे	बचाना	वाचविणे
दौड़ना	पळणे	पूछना	विचारणे
भागना	पळून जाणे	हिलना	हलणे, हालणे
मुहल्ला	पेठ [स्त्री.]	पुकारना	हाक मारणे

शब्दकोश–८ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
उचलणे	उठाना	चिखल [पुं.]	कीचड़
कमळ-ल [न.]	कमल	ताक [न.]	छाछ
किल्ला [पुं.]	किला	पाठवणे	भेजना
कुच(ज)का	सड़ा	पुढारी	नेता
कुदळ-ळी [स्त्री.]	कुदाल	**पोहणे**	तैरना
कोमट	कुनकुना	बक्षिस [न.]	इनाम, पुरस्कार
कात [पुं.]	कत्था	बांगडी [स्त्री]	कंगन, चूड़ी
कोठार [न.]	कोठा	म्हणणे	कहना
कोळसा [पुं.]	कोयला	रडणे	रोना
खणणे, खोदणे	खोदना	लोक	लोग
खाजवणे	खुजलाना	वळकटी [स्त्री.]	बिस्तर
खवा [पुं.]	खोया	वाढदिवस [पुं.]	बरसगाँठ

शब्दकोश–८ (इ)

अ नीचे लिखे शब्द मराठी में भी हैं --

किनारा, तीर [किनारा, बाण], तट, तीर्थ [न.]. तीर्थयात्रा, पवित्र, स्थान [न.], पगडी [स्त्री.], पंडित, प्राण [पुं.], बाण [पुं.].

[आ] गिनती --

६१ एकसट [ष्ट] ६२ बासट [ष्ट] ६३ त्रेसट [ष्ट] ६४ चौसट [ष्ट]
६५ पासट [ष्ट] ६६ सहासट [ष्ट] ६७ सदुसट [ष्ट] ६८ अडुसट [ष्ट]
६९ एकुणसत्तर ७० सत्तर

[८०] अनुवाद – खण्ड – ८

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए —

१. यह कौन-सा गाँव है? २. क्या उसमें डाकघर नहीं है? ३. बच्चे क्यों हँसते हैं? ४. वह गाड़ीवाला अपनी गाड़ी चलाता है। ५. ये लड़कियाँ क्यों दौड़ती हैं? ६. हमारे गुरुजी हमसे प्रश्न पूछते हैं और हम उनका जवाब देते हैं। ७. बिल्ली आती है, तो चूहे भागते हैं। ८. उसकी बहन अच्छा नाचती है। ९. सुहास क्यों रोता है? १०. तुम कब चिट्ठी लिखते हो? ११. तुम्हारे कितने भाई हैं? १२. ये कितने कमल हैं? १३. वह कहानी कब पढ़ती है? १४. इनका घर कहाँ है? १५. गंगा नदी पवित्र है। १६. पाटन तहसील कहाँ है? १७. डाकिया चिट्ठियाँ बाँटता है। १८. उसमें चादर नहीं है। १९. आज मेरी बरसगाँठ है। २०. वहाँ कौन रोता है?

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए —

१. ह्याला चार पुस्तके द्या. २. तिचा भाऊ कोठे आहे? ३. ह्याला काय म्हणतात? ४. तुम्ही आपले काम करा. ५. पक्षी काय खातात? ६. आमचे पुढारी कोण आहेत? ७. हे ताक आहे, ह्यात लोणी सुद्धा आहे. ८. प्रयाग व काशी मोठी पवित्र तीर्थे आहेत. तेथे गंगा नदी आहे. ९. भारत आपला देश आहे. त्याल हिंदुस्थानसुद्धा म्हणतात. १०. हे लोक कोण आहेत? ११. ते कोठे राहतात? त्यांचा पुढारी कोण आहे? १२. माझी टोपी कोठे आहे? मला ती दे. १३. मी सत्तर रुपये देते. १४. तिची नणंद काय करते? १५. तुमचे काका तुम्हाला पुस्तके देतात का? १६. तुझी आई तुला मिठाई देते. १७. ह्यात कोणती फळे आहेत? १८. तुम्हाला किती रुपये देतात? १९. खवा कोठे मिळतो? २०. तेथे कमला गाणे म्हणते का?

◆ ◆ ◆

९. संज्ञा : कारक-रचना – १ : पुंलिंग

[८१] मराठी संज्ञा में साधारणतः निम्न-लिखित प्रत्यय (विभक्तियाँ) जोड़कर उसके कारण-रूप बनाए जाते हैं।

मराठी				हिन्दी
विभक्ति	**कारक**	**ए. व.**	**ब. व.**	**दोनों वचन**
प्रथमा	कर्ता	०	०	० ने
द्वितीया	कर्म	**स, ला,** (ते)	**स, ला, ना,** (ते)	को
तृतीया	करण	**ने,** (ए), **शी**	**नी,** (ई, ही), **शी**	से
चतुर्थी	संप्रदान	**स, ला,** (ते)	**स, ला, ना,** (ते)	को
पंचमी	अपादान	**ऊन, हून**	**ऊन, हून**	से
षष्ठी	सम्बन्ध	**चा, ची, चे**	**चा, ची, चे; चे, च्या, ची**	का, की, के
सप्तमी	अधिकरण	**ई,** (आ), **आत**	**ई,** (आ), **आत**	में
संबोधन	संबोधन	—	**नो**	—

सूचना :– १. बड़े टाईप में छपे प्रत्यय ही आम तौर पर प्रयुक्त होते हैं। कोष्ठक में छपे हुए प्रत्यय साधारणतः कभी-कभी काव्य में तथा पुरानी मराठी में प्रयुक्त होते हैं।

२. मराठी में (हिन्दी) विभक्ति को सिर्फ 'विभक्ति प्रत्यय' कहते हैं। ये विभक्तियाँ '**प्रथमा**' से '**संबोधन**' तक आठ हैं।

३. हिन्दी में एकवचन और बहुवचन की विभक्तियाँ एक-सी हैं; मगर मराठी में सबकी एक-सी नहीं हैं।

[८२] विभक्ति लगते समय संज्ञा में कुछ परिवर्तन होता है। ऐसे परिवर्तित रूप को मराठी में 'सामान्य रूप' (=विकृत रूप) कहा जाता है। संज्ञाओं के ऐसे 'सामान्य रूप' बनाना जटिल काम है। इसलिए उन्हें ध्यान में रखें।

उदा :– **वाघ** + ला = **वाघा** + ला = वाघाला
मनुष्य + ना = **मनुष्यां** + ना = मनुष्यांना
नदी + ला = नदीला
कवि + चा = **कवी** + चा = कवीचा
घोडा + ला = **घोड्या** + ला = घोड्याला
भाऊ + ला = **भावा** + ला = भावाला
जाळें + ची = **जाळ्या** + ची = जाळ्याची

[८३] पुंलिग संज्ञाओं के विकृत रूप यों होते हैं —

(+ आ = अ में आ मिलने पर आ ही रहेगा। आ – **या** = **आ** का **या** होता है। इ – **ई** = इ का **ई** में रूपान्तर हो जाएगा। कोष्ठक **में** दी हुई सूचना का यहाँ और आगे भी इस प्रकार अर्थ लिया जाए।)

		ए. व.	ब. व.
अ-कारान्त –	मनुष्य	**मनुष्या** (+ आ)	**मनुष्यां** (+ आं)
	देव	**देवा** ,,	**देवां** ,,
आ-कारान्त –	घोडा	घोड्या (आ – या)	घोड्यां (आ – यां)
	नेता	नेत्या ,,	नेत्यां ,,
अपवाद –	राजा	राजा	राजां
(अन्य शब्द –	काका,	मामा, इत्यादि।)	
इ-कारान्त –	कवि	कवी (इ – ई)	कवीं (इ – ईं)
	अग्नि	अग्नी ,,	अग्नीं ,,
ई-कारान्त –	शिपाई	शिपाया (ई – या)	शिपायां (ई – यां)
	धोबी	धोब्या ,,	धोब्यां ,,

[८३ अ] **सी**-कारान्त संज्ञा में विभक्ति, सम्बन्ध-सूचक आदि लगते समय विकृत रूप में **स** के स्थान पर **श** आता है। जैसे–आदिवा**सी**–आदिवा**श्या**ला; पर्वत-निवा**सी**–पर्वत-निवा**श्या**चा; विला**सी** (विलासी मनुष्य), विला**श्या**पासून; संन्या**सी**–संन्या**श्या**वर; प्रवा**सी**–प्रवा**श्या**ला

उ-कारान्त –	गुरु	गुरू (ऊ–ऊ)	गुरूं (उ–ऊं)
	साधु	साधू ,,	साधूं ,,

ऊ-कारान्त –	चा़कू	चा़कू (ऊ–ऊ)	चा़कूं (ऊ–ऊं)
		चा़कवा (ऊ–अवा)	चा़कवां (उ–अवां)
	लाडू	लाडू-लाडवा	लाडूं-लाडवां
	भाऊ	भावा	भावां
	डाकू	डाकू	डाकूं
			(वा-कारान्त नहीं है।)
ए-कारान्त	—	—	—
ऐ-कारान्त		— —	—
ओ-कारान्त	फोनो	फोनो	फोनों (ओ-ओं)

[८३ आ] इससे ये बातें ध्यान में आई होंगी –

१. बहुवचन के विकृत रूप का अन्त्य अक्षर सानुस्वार होता है।

२. अन्त्य ह्रस्व स्वर (अ, इ, उ) विकृत रूप में दीर्घ होता है।

[८४] नमूने के लिए कुछ शब्दों के रूप –

१ **देव** (अ-कारान्त पुंलिग)

	ए. व.	ब. व.
प्र.	देव	देव
द्वि.	देवास, देवाला, (० ते)	देवांस, देवांला, देवांना, (देवांते)
तृ.	देवाने, (देवे), देवाशी	देवांनीं, देवांशीं (देवीं, देवांही)
च.	देवास–ला (० ते)	देवांस, –ला, –ना (० ते)
पं	देवाहून	देवांहून
ष.	देवाचा़–ची–चे़–च्या–चे़	देवांचा़–ची–चे़–च्या–चे़
स.	देवात, देवी, देवा	देवांत, देवीं, देवां
सं.	देवा	देवांनो

माणूस = मनुष्य; **माणूस** शब्द के कारक-रूप यों होते हैं -- माणसाला, माणसाचा़ इ.। उपान्त्य ऊ का अ हुआ है। **मुंगूस** (पुं. न.) के रूप भी इसी प्रकार होते हैं – मुंग (गु) साला इ.।

२. घोडा (आ-कारान्त पुंलिग)

	ए. व.	ब. व.
प्र.	घोडा	घोडे
द्वि.	घोड्यास-ला (० ते)	घोड्यांस-ला-ना-(० ते)
तृ.	घोड्याने-शी	घोड्यांनी-शी (० ही)
च.	घोड्यास-ला (० ते)	घोड्यांस-ला-ना (० ते)
पं.	घोड्याहून	घोड्यांहून
ष.	घोड्याचा-ची-चे-च्या-चे	घोड्यांचा-ची-चे-चं-च्या
स.	घोड्यात	घोड्यांत
सं.	घोड्या	घोड्यांनो

(**राजा, मामा, काका** आदि शब्दों के अन्त्य **आ** में परिवर्तन नहीं होता। बहुवचन में अन्त्य आ का **आं** होता है। जैसे–राजाला–राजांना काकाचा– काकांचा, मामाने – मामानीं इत्यादि।) **राजा** और **राजा** दोनों उच्चारणवाले शब्द मराठी में प्रयुक्त होते हैं। राजा शब्द में विभक्ति आदि लगने पर **ज** का **ज** होता है।

३. कवि (इ-कारान्त पुंलिग)

	ए. व.	ब. व.
प्र.	कवी	कवी
द्वि.	**कवी**स-ला (० ते)	**कवी**स-ला-ना (० ते)
तृ.	कवीने-शी	कवींनी-शी
	इत्यादि	

४. धोबी (ई-कारान्त पुंलिग)

	ए. व.	ब. व.
प्र.	धोबी	धोबी
द्वि.	धोब्यास-ला (० ते)	धोब्यांस-मा-ना (० ते)
तृ.	धोब्याने-शी	धोब्यांनी-शी
	इत्यादि	

(**प्रवासी**–प्रवाश्या + ला = प्रवाश्याला। प्रवाश्याचा इत्यादि। शिपाई–शिपाया+ला=शिपायाला, शिपायाचा, शिपायांनी इत्यादि।)

५ गुरु (उ-कारान्त पुंलिग)

प्र.	गुरू	गुरू
द्वि.	गुरूला-स (० ते)	गुरूला-स-ना (० ते)
	इत्यादि	

६ **चाकू** (ऊ-कारान्त पुंलिग)

प्र.	चाकू	चाकू
द्वि.	चाकूला-स- (–ते)	चाकूस-ला-ना (–ते)
	चाकवास-ला (–ते)	चाकवांस-ला-ना (–ते)
	इत्यादि	

नातू – नातवास-(ला)

डाकू – संज्ञा का **वा**-कारान्त विकृत रूप नहीं होता। (इसलिए उसके रूप सिर्फ यों होंगे– डाकू, डाकूने, डाकूस इ.)

७ **फोनो** (ओ-कारान्त पुंलिग)

प्र.	फोनो	फोनो
द्वि.	फोनोस-ला (– ते)	फोनोंस-ला-ना (–ते)
	इत्यादि	

[८५] **वर्तमान-काल में निषेध-सूचक वाक्य :–**

नीचे लिखे वाक्य पढ़िए और मोटे टाईप में छपे शब्दों पर गौर कीजिए :-

(अ) १. हे कमळ आहे = हे कमळ **नव्हे (नाही)**.
२. हा माझा भाऊ **नव्हे (नाही)**.

इस प्रकार की वाक्य-रचना के बारे में प्रथम पाठ [११] में वताया गया है। '**नाही**' (= नहीं है) का प्रयोग करना आप जानते ही हैं।

(आ) १. तो पत्र **आणतो**, – तो पत्र **आणीत नाही**.
२. ती काम **करते**. – ती काम **करीत नाही**.
३. तू फळे **खातोस**. – तू फळे **खात नाहीस**.
४. तुम्ही गोष्ट **सांगता**. – तुम्ही गोष्ट **सांगत नाही**.
५. मी उत्तर **लिहितो**. – मी उत्तर **लिहीत नाही**.

इनमें — **आणतो** = लाता है। **आणीत नाही** – नहीं लाता है।
करते = करती है। **करीत नाही** – नहीं करती है।

गौर से देखने पर समझ में आएगा कि मूल क्रिया में **त** प्रत्यय जोड़ा गया है और उस रूप (कृदन्त) के साथ '**नाही**' के रूप रखे गए हैं।

(करीत के बदले **करत**, **आणीत** के बदले आणत का प्रयोग **भी** रूढ़ है।)

[८६] नमूने के लिए वाक्य और वाक्यांश :—

हिन्दी		मराठी
१. बाघ **हरिणों का** शत्रु है।	=	वाघ **हरिणांचा** शत्रु आहे.
२. **आसमान में** तारे चमकते हैं।	=	**आकाशात** तारे लकलकतात.
३. **सिपाहियों की** टोपियाँ काली हैं।	=	**शिपायांच्या** टोप्या काळ्या आहेत.
४. घोड़ा आदमी का दोस्त है।	=	घोडा **मनुष्याचा** (माणसाचा) मित्र आहे.
५. लोग **डाकुओं को** पकड़ते हैं।	=	लोग **डाकूंना** पकडतात.

मराठी		हिन्दी
१. **चाकूने** (चाकवाने) फळे कापा.	=	**चाकू से** फल काटो।
२. **ग्लासात** पाणी आणू नकोस.	=	**गिलास में** पानी मत ला।
३. **साधूला** प्रणाम करा.	=	**साधु को** प्रणाम करो।
४. मी **कुत्र्याला** बोलावीत नाही.	=	मैं **कुत्ते को** बुलाता नहीं (हूँ)।
५. ती **कवीचे** काव्य वाचते.	=	वह **कवि का** काव्य पढ़ती है।

(८६ अ) **वाक्यांश** :--

१. **विद्यार्थ्याचा** कोट (पुं.)	=	विद्यार्थी **का** कोट।
विद्यार्थ्यांचे कोट (,,)	=	विद्यार्थियों **के** कोट।
विद्यार्थ्याची वही (स्त्री.)	=	विद्यार्थी **की** कापी।
विद्यार्थ्याच्या वह्या (,,)	=	विद्यार्थी की कापियाँ।
विद्यार्थ्याचे पुस्तक (न.)	=	विद्यार्थी की पुस्तक।
विद्यार्थ्याची पुस्तके (,,)	=	विद्यार्थी की पुस्तकें।
२. **वाघाचे** नख (न.)	=	बाघ का नाखून।

मराठी			हिन्दी
वाघाची नखे	(न.)	=	बाघ के नाखून।
३. साधूची झोपडी	(स्त्री.)	=	साधु की झोंपड़ी।
साधूंच्या झोपड्या	(,,)	=	साधुओं की झोंपड़ियाँ।
४. रेडिओची किंमत	(,,)	=	रेडिओ की कीमत।
५. व्यापाऱ्यांचा तांडा	(पुं.)	=	व्यापारियों का कारवाँ।
६. घोड्याची शेपटी	(स्त्री.)	=	घोड़े की पूँछ।
७. पक्ष्याची चोच	(,,)	=	पक्षी की चोंच।
८. कावळ्याचे घरटे	(न.)	=	कौए का घोंसला।

[८७] शब्दकोश–९ [अ]

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
रोकना	अडविणे	रखना	ठेवणे
आज्ञाकारी	आज्ञाधारक	कारवाँ	तांडा
अन्य	इतर	पकड़ना	धरणे, पकडणे
[नदी] निकलना	[नदी] उगम पावणे	बहुत	पुष्कळ, फार
		बेर	बोर [न.]
अलमारी	कपाट [न.]	भरना	भरणे
[कुत्ता आदि]– काटना	चावणे	पालतू	पाळीव
		पालना	पाळणे
कृपालु	कृपाळू	मगर	पण, परंतु
घड़ी	घड्याळ [न.]	चौडा	रुंद
घोंसला	घरटे [न.]	लम्बा	लांब
झोंपड़ी	झोपड़ी	सोचना	विचार करणे

शब्दकोश–९ [आ]

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
आळशी	सुस्त	तयार	तैयार
आपटणे	पटकना	पोपट [पुं.]	तोता
उभा	खड़ा	पिंजरा [पुं.]	पिंजड़ा
कोकिळा [स्त्री.]	कोयल	बारीक	महीन
कोल्हा	सियार	भित्रा	डरपोक
खडबडीत – खरखरीत	खुरदरा	भिकारी	भिखारी
		मरतुकडा	मरियल
खार [स्त्री.]	गिलहरी	माकड [न.]	बन्दर
गुळगुळीत	चिकना	वानर, वांदर [पुं.]	बन्दर
चपळ	चपल	वाकणे	झुकना
चित्ता	चीता	चोरणे	चुराना
जाड	मोटा	वाढणे	बढ़ना
जनावर [न.]	जानवर	शहाणा	सयाना
डुक्कर [पुं. न.]	सूअर	शेजारी	पड़ोसी
किंमत	कीमत	वडील [पुं.]	पिता

शब्दकोश–९ [इ]

[अ] नीचे लिखे शब्द मराठी में भी हैं —

जंगल [न.], दान [न.], दाता, दृष्टि, नजर, पशु, प्रणाम [पुं.], भक्त, भजन [न.], शोक, ज्ञान [न.], ज्ञानी, सुप्रसिद्ध

[आ] गिनती

७१ एकाहत्तर ७२ बहात्तर, ७३ त्र्याहत्तर, ७४ चौऱ्याहत्तर,
७५ पंचाहत्तर, ७६ शहात्तर, ७७ सत्त्याहत्तर, ७८ अठ्ठ्याहत्तर,
७९ एकुणऐंशी ८० ऐंशी

[८८] अनुवाद-खण्ड- ९

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए :—

१. किसानों के बैल हल खींचते हैं। २. चीता, बाघ, भेड़िया और सियार जंगल में रहते हैं। उन्हें जंगली जानवर कहते हैं। मगर लोग गाय, भैंस, कुत्ता, घोडा, आदि जानवरों को पालते हैं; इन जानवरों को 'पालतू जानवर' कहते हैं। ३. लोग तोते को पिंजड़े में रखते हैं। ४. वसंत ऋतु में कोयल मीठे स्वर में गाती है। ५. बन्दर, खरगोश, गिलहरी और हिरन बहुत तेज़ दौड़ते हैं। ६. यहाँ पहाड़ी पर हनुमानजी का विख्यात मंदिर है। वहाँ लोग जाते हैं और उनकी पूजा करते हैं। ७. यह कागज़ चिकना नहीं है, यह खुरदरा है। ८. वे नारियल पत्थर पर पटकते हैं। ९. हिमालय से गंगा, यमुना और अन्य नदियाँ निकलती हैं। १० चोर उसके गहने चुराता है। ११. भक्त मंदिर में जाते हैं और भजन-पूजन करते हैं। १२. भगवान कृपालु हैं। १३. यह गली चौड़ी नहीं है, मगर बहुत लम्बी है।

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

१. तो मला पंचाहत्तर रुपये देतो. २. घोडा व कुत्रा मनुष्याचे मित्र आहेत. ३. ह्या तलावात पुष्कळ पाणी आहे. हा फार खोल आहे. ४. पक्षी घरट्यात राहतात. ५. आमच्या बंगल्यात चार कपाटे आहेत. ६. चोरापासून दूर रहा. ७. पोपटाला कच्ची फळे द्या. ८ रस्त्यात उभे राहू नका. ९. त्या स्त्रिया काम करीत नाहीत. १०. तुम्ही पोपट पकडता व त्यांना पिंजऱ्यांत ठेवता. ११. लांडगा लहान लहान प्राण्यांना मारतो व खातो. १२. ते व्यापारी घड्याळे खरेदी करतात. १३. ह्या गावच्या डोंगरावर उंच उंच झाडे आहेत. १४. त्या व्यापाऱ्यांचा तांडा मोठा आहे. १५. भिकाऱ्यांना दान द्या. १६. गरीब लोक झोपड्यांत राहतात. १७. ते शिपाई शूर आहेत. ते देशाचे रक्षण करतात. १८. नद्यांचे पाणी गोड आहे. १९. हा नोकर आळशी आहे. त्याला जास्त पैसे देऊ नका. २०. विद्यार्थ्यांचे कपडे चांगले नाहीत.

१० संज्ञाएँ : कारक-रचना –२ : नपुंसकलिंग

[८९] यह ध्यान में आया होगा कि पुंलिग (मराठी) संज्ञाओं की कारक-रचना कैसे की जाती है। नपुंसकलिंग संज्ञाओं का 'विकृत-रूप भी साधारणतः वैसा ही होता है, जैसा पुंलिग संज्ञाओं का। इसी विकृत रूप में विभक्तियाँ लगाई जाती हैं।

[९०] तुलनात्मक दृष्टिसे पुंलिग तथा नपुंसकलिंग संज्ञाओं के विकृत-रूप बनाने की विधि यों स्पष्ट की जा सकती है।

	पुंलिग	नपुंसकलिंग
१. अ-कारान्त :	देव –**देवा** (+आ)	घर–**घरा** (+आ)
	देवां (+आं)	**घरां** (+आं)
२. आ-कारान्त :	घोडा–**घोड्या** (आ–या)	–
	घोड्यां (आ–यां)	–
३. इ-कारान्त :	कवि–**कवी** (इ–ई)	–
	कवीं (इ–ई)	—
४. ई-कारान्त :	व्यापारी–**व्यापाऱ्या** (ई–या)	मोती–**मोत्या** (ई–या)
	व्यापाऱ्यां (ई–यां)	**मोत्यां** (ई–यां)
५. उ-कारान्त :	साधु–**साधू** (उ–ऊ)	–
	साधूं (उ–ऊं)	–
६. ऊ-कारान्त :	विंचू–**विंचवा** (ऊ–अवा)	कोकरू–**कोकरा** ! ऊ–आ)
	विंचवां (ऊ–अवां)	(**कोकरां** (ऊ–आं)
	लाडू–**लाडवा** (ऊ–अवा)	
	लाडवां (ऊ–अवां)	
७. ए-कारान्त :	–	केळे–**केळया** (ए–या)
		केळयां (ए–यां)

[९१] कुछ नपुंसकलिंग संज्ञाओं के विकृत रूपों और विभक्तियों की जोड़ यों है — **झाड** – झाडाचा, झाडात, झाडाचा

फळ – फळाला, फळात, फळाची, फळाचा

पाणी – पाण्याला, पाण्यात, पाण्याने, पाण्याला
मेंढरू – मेंढराला, मेंढराशी, मेंढरांना, मेंढरांचा
रताळे (= रातालू) – रताळ्याचा, रताळ्याशी, रताळ्यांचा

[९२] ये रूप देखिए –

मूल (= बच्चा) – मुलाचा; फूल – फुलाला

इससे दिखाई देता है कि पुंलिग संज्ञाओं की तरह नपुंसकलिंग संज्ञा का विकृत रूप बनाते वक्त उपान्त्य दीर्घ स्वर को ह्रस्व किया जाता है।

[९३] विभक्तियों की जोड़ के उदाहरण —

(१) अकारान्त : **घर**

	ए. व.	ब. व.
प्र. –	घर	घरे
द्वि. –	घरास, घराला, (०ते)	घरांस–ला–ना, (०ते)
तृ. –	घराने–शी ...	घरांनी–शी ...

इत्यादि। (अ–कारान्त पुंलिग संज्ञा के अनुसार)

(२) ई–कारान्त : **पाणी**

प्र. –	पाणी	पाणी
द्वि. –	पाण्यास–ला, (०ते)	पाण्यांस–ला–ना, (०ते)
तृ. –	पाण्याने–शी ...	पाण्यांनी–शी ...

इत्यादि। (ई–कारान्त पुंलिग संज्ञा के अनुसार)

(३) ऊ–कारान्त–**वासरू** (=बछडा)

प्र. –	वासरू	वासरे
द्वि. –	वासरास–ला, (०ते)	वासरांस–ला–ना, (० ते)
तृ. –	वासराने–शी ...	वासरांनी–शी ...

इत्यादि ...

(४) ए-कारान्त-तळे

	ए. व.	ब. व.
प्र. –	तळे	तळी
द्वि. –	तळयास–ला, (० तें)	तळयांस–ला–ना, (०तें)
तृ. –	तळयाने–शी ...	तळयांनी–शी ...

इत्यादि।

[९४] नपुंसकलिंग संज्ञा के साथ जब कोई विशेषण आता है, तो उस विशेषण में भी बदल होता है। पुंलिंग संज्ञा के विशेषण के सम्बन्ध में बतलाए नियमों को ध्यान में रखिए। उदाहरण :—

१. अ-कारान्त विशेषण – लाल फूल   लाल फुले
– लाल फुलाचा   लाल फुलांचा

२. आ-कारान्त विशेषण ए-कारान्त होता है। संज्ञा में विभक्ति लगते ही उसमें भी बदल होता है। जैसे :— **काळा** घोडा (पुं.)

काळे घोडे (नपुं.) – **काळी** घोडी
काळया घोडयाला – **काळया** घोडयांना
हिरवे फूल – **हिरवी** फुले
हिरव्या फुलाला – **हिरव्या** फुलांना

[९५] संक्षेप में :— (अ) अ-कारान्त विशेषण में किसी भी लिंग और किसी भी वचन में परिवर्तन नहीं होता।

(आ) आ-कारान्त विशेषण में यों रूपान्तर होता है–

पुंलिंग – ए. व. आ   ब. व. ए
विकृत रूप **आ–या** **आ–या** (दोनों वचन)

नपुंसकलिंग – ए. व. ए   ब. व. ई
विकृत रूप **ए–या** **ए–या** (दोनों वचन)

[९६] नमूने के लिए वाक्यांश और वाक्य —

मराठी	हिन्दी
१. हे झाड उंच़ आहे.	१. यह पेड़ ऊँचा है।
२. ही झ़ाडे उंच़ आहेत.	२. ये पेड़ ऊँचे हैं।
३. तेथे उंच़ झ़ाडावर फळे आहेत.	३. वहाँ ऊँचे पेड़ पर फल हैं।
४. हे पक्ष्याच़े घरटे आहे.	४. यह पक्षी का घोंसला है।
५. ही पक्ष्यांची घरटी आहेत.	५. ये पक्षियों के घोंसले हैं।
६. झ़ाडाच़े पान.	६. पेड़ का पत्ता।
झ़ाडाची पाने.	पेड़ के पत्ते।
झ़ाडांची पाने.	पेड़ों के पत्ते।
झ़ाडाच्या पानाच़ा	पेड़ के पत्ते का।
झ़ाडांच्या पानांच़ा	पेड़ों के पत्तों का।
७. घराच़े छप्पर	७. घर का छप्पर
घरांची छपरे ('छप्परे' नहीं)	घरों के छप्पर
लहान घराचे छप्पर	छोटे घर का छप्पर
लहान घरांची छपरे	छोटे घर के छप्पर
मोठ्या घराचे छप्पर	बड़े घर का छप्पर
मोठ्या घराच्या छपरावर	बड़े घर के छप्पर पर
८. गाईचे वासरू	८. गाय का बछड़ा।
गाईंची वासरे	गायों के बछड़े।
गाईच्या वासराला	गाय के बछड़े को।
गाईच्या वासरांना	गायों के बछड़ों को।
९. मोठे व खोल तळे	९. बड़ा और गहरा तालाब।
मोठ्या व खोल तळ्यात	बड़े और गहरे तालाब में।
१०. समुद्राच़े पाणी	१०. समुद्र का पानी।
समुद्राच्या पाण्यात	समुद्र के पानी में।

[९७]

शब्दकोश–१० (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
गीला	ओला	महँगा	महाग
पहचानना	ओळखणे	रंगीन	रंगीत
रुई, कपास	कापूस [पुं.]	मोरनी	लांडोर
गुड	गूळ [पुं.]	लकड़ी	लाकूड [न.]
पहिया	चाक [न.]	सींग	शिंग [न.]
छीलना	तासणे, सोलणे	गोबर	शेण [न.]
	(चे) साल काढणे	छिलका	साल [न. स्त्री.]
बस्ता	दप्तर [न.]	इंधन	सरपण [न.]
धोती	धोतर [न.]	सीधा	सरळ
पोंछना	पुसणे	सस्ता	स्वस्त
(पैदा) होना	(उत्पन्न) होणे	शोर	गोंगाट, गलका [पुं.]
सेब	सफरचंद [न.]	ऊपर	वर

शब्दकोश–१० (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
कधी कधी	कभी-कभी	काढणे	निकालना
चाचपणे, चाचपडणे	टटोलना	वड, वडाचे झाड [पुं.]	बरगद का पेड़
जाहिरात [स्त्री.]	विज्ञापन	बातमी [स्त्री.]	खबर
टाकणे–घालणे	डालना	वाट [स्त्री.]	राह
दोरी [स्त्री.]	रस्सी	वाढविणे	बढ़ाना
पाऊल [न.]	कदम	वास घेणे	सूंघना
पाऊलवाट [स्त्री.]	पगडंडी	वीज [स्त्री.]	बिजली
प्रतीक्षा	प्रतीक्षा, इंतज़ार	बादली [स्त्री.]	बालटी
पुनः, मग	फिर	राजवाडा [पुं.]	राजमहल

बुडणे	डूबना	शांत	खामोश
रहाट [पं.]	रहँट	शिजविणे	पकाना
रांग–क [स्त्री]	कतार	(ची) वाट पहाणे	(की) राह देखना
राग [पुं.]	गुस्सा		(की) प्रतीक्षा करना

शब्दकोश–१० (इ)

(अ) नीचे लिखे शब्द मराठी में भी हैं —

सुपारी [स्त्री.]	मुकुट [पुं.]	राख [स्त्री.]
मुखपृष्ठ [न.]	समुद्र [पुं.]	निबन्ध [पुं.]
पान [न.]	आकार [पुं.]	नियम [पुं.]

[आ] गिनती :—

८१ एक्याऐंशी ८२ ब्याऐंशी ८३ त्र्याऐंशी ८४ चौऱ्याऐंशी ८५ पंच्याऐंशी ८६ शहाऐंशी ८७ सत्याऐंशी ८८ अट्ठयाऐंशी ८९ एकुण-नव्वद ९० नव्वद

[९९] अनुवाद–खण्ड–१०

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए :—

१. यह मेरी पुस्तक है। मेरी पुस्तक में नब्बे पन्ने हैं। इसमें बारह चित्र हैं। इसके मुखपृष्ठ पर रंगीन चित्र हैं। मेरी पुस्तक में कुछ कहानियाँ हैं, तो कुछ निबन्ध हैं। मैं यह पुस्तक रोज पढ़ता हूँ। २. यह बलराम का खेत है। बलराम खेत जोतता है, खेत में हल चलाता है और बीज बोता है। उसके खेत में चावल पैदा होता है। ३. हम चाय में शक्कर डालते हैं, गुड नहीं डालते। ४. सुरेश अपने बस्ते में अपनी कापियाँ और पुस्तकें रखता है। ५. गाय के सींग नुकीले होते हैं। ६. गीली लकड़ी नहीं जलती। ७. मैं केला छीलती हूँ और खाती हूँ। ८. मैं तौलिए से हाथ पोंछता हूँ। ९. हम सुबह नहाते हैं; अच्छे-अच्छे कपड़े पहनते हैं। १०. हमारे घर में चार संदूक हैं। ११. खामोश बैठो, शोरोगुल मत करो। १२. राजा राजमहल में रहता है। १३. बरगद का पेड़ बड़ा होता है। १४ हम समाचार-पत्र में खबरें पढ़ते हैं। उसमें विज्ञापन भी होते हैं। हम विज्ञापन भी पढ़ते हैं। १५. पत्थर पानी में डूबता है।

(आ) हिंदी में अनुवाद कीजिए :—

१. नारळीचे झाड ऊंच वाढते. २. तू लवकर कपडे घाल व बाहेर जा. तुझे मित्र तुझी वाट पहातात. ३. ही पाऊलवाट चांगली नाही. ४. पान व सुपारी खाऊ नका. ५. सरपण महाग आहेत. ६. झाडाची पाने हिरवी असतात. ७. मी माझ्या भावाच्या मित्राला ओळखतो. ८. त्या घराच्या छपरावर माकड आहे. ९. फुले आण व माळ तयार कर. १०. बाजारात जा व तांदूळ आणा. ११. ही माझ्या भावाची पुस्तके आहेत. १२. काश्मिरात सफरचंदे होतात. १३. गुजराथमध्ये कापूस होतो. १४. गूळ स्वस्त असतो, पण साखर महाग असते. १५. नोकर विहिरीचे पाणी रहाटाने काढतो. कधी कधी तो दोरीला बादली बांधतो व ती बादली विहिरीत सोडतो. तो ती बादली दोरीने वर ओढतो.

✦ ✦ ✦

११. संज्ञाएँ : कारक-रचना ३ : स्त्रीलिंग

[९९] स्त्रीलिंग संज्ञाओं के विकृत रूप नीचे लिखे अनुसार बनाए जाते हैं और उनमें विभक्तियाँ लगाई जाती हैं।

		ए. व.	प्रत्यय	ब. व.	प्रत्यय
१. अ–कारान्त =	माळ	माळा	+आ	माळां	+आं
और	जीभ	जिभे	अ–ए	जिभां	+,,
	वाघीण	वाघिणी	अ–ई	वाघिणीं	अ–ईं
२. आ-कारान्त =	शाळा	शाळे	अ-ए	शाळां	+आं
	बालिका	बालिके	,,	बालिकां	,,
३. इ–कारान्त =	आकृति	आकृती	इ–ई	आकृतीं	इ–ईं
	कृति	कृती	,,	कृतीं	,
४. ई–कारान्त =	नदी	नदी	०	नद्यां	इ यां
	वेणी	वेणी	०	वेण्यां	,,
	स्त्री	स्त्री	०	स्त्रियां	,,

५. उ-कारान्त =	**वस्तु**	वस्तू	उ-ऊ	वस्तूं	उ-ऊँ
	धेनु	धेनू	,,	धेनूं	,,
६. ऊ-कारान्त =	**सासू**	सासू	०	सासूं	ऊ-ऊँ
	--	सासवे	ऊ-अवे	सासवां	ऊ-अवाँ
	ऊ,	ऊ, उवे	०, + वे	उवां	
७. ए-कारान्त =	—		—		
८. ओ-कारान्त =	—		--		

[१००] यहाँ भी दिखाई देता है कि अ-कारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा का विकृत रूप बनाते समय उपान्त्य दीर्घ स्वर को ह्रस्व बना लिया जाता है। जैसे :-

जीभ-जिभेला, जिभेस; **सून**-सुनेला, सुनेची; **नागीण**-नागिणीला, नागिणीच़ा। (**सून** = बहू)

[१०१] कभी-कभी विकृत रूप होते समय उपान्त्य ई के स्थान पर अ आता है। जैसे:- महारीण (स्त्री.) - महारणीला
मोलकरीण (स्त्री.) - मोलकरणीस

[१०२] नमूने के लिए और स्त्रीलिंग शब्दों के विकृत रूप (विभक्ति-सहित दोनों वचन) देखिए —

इसमें कुछ वैकल्पिक या अपवाद-रूप भी हैं। (दोनों वचन)

वेल – वेलीच़ा, वेलींच़ा, वेलीला, वेलींना

चूल – चुलीला, चुलींत

मुलगी – मुलीला, मुलीच़ा, मुलींच़ा, मुलींना (मुलगीला आदि रूप उतने रूढ़ नहीं हैं।)

मालकीण – मालकिणीला, मालकिणींना

मोलकरीण – मोलकरणीस, मोलकरणींस

काकू – काकूस, काकूंस, (कहीं कहीं-काकवांना)

मामी – मामीस, मामींस, (,, ,, -माम्यांना)

आजी – आजीस, आजींना, (,, ,, -आज्यांना)

मावशी – मावशीला, मावशींना, (,, ,, -मावश्यांना)

[१०३] नमूने के लिए स्त्रीलिंग संज्ञाओं की कारक-रचना :—
(यहाँ **प्रथमा, द्वितीया** आदि विभक्तियों के मराठी नामों को प्रयुक्त किया गया है।)

(अ) अ-कारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा
वेल (लता)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	वेल	वेली
द्वि.	वेलीस, वेलीला, (०ते)	वेलींस, वेलींला-सा, (०ते)
तृ.	वेलोने, वेलीशी	वेलींनी-शी
च.	वेलीस, वेलीला, (०ते)	वेलींस-ला-ना, (०ते)
पं.	वेलीहून (वेलीच्याहून)	वेलींहून (वेलींच्याहून)
ष.	वेलीचा-ची-चे-च्या-चे	वेलींचा-ची-चे-चे-च्या
स.	वेलीत	वेलींत
संबोधन	वेली	वेलींनो

(आ) आ-कारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा
शाळा (= पाठशाळा)

प्र.	शाळा	शाळा
द्वि.	शाळेस-ला (०ते)	शाळांस-ला-ना (०ते)
तृ.	शाळेने-शी	शाळांनी-शी
च.	शाळेस-ला (०ते)	शाळांस-ला-ना- (०ते)
पं.	शाळेहून, (शाळेच्याहून)	शाळांहून (शाळांच्याहून)
ष.	शाळेचा-ची-चे-वा-चे	शाळांचा-ची-चे-च्या-चे
स.	शाळेत	शाळांत
संबो.	शाळे	शाळांनो

(इ) इ-कारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा
व्यक्ति

प्र.	व्यक्ती	व्यक्ती
द्वि.	व्यक्तीस-ला- (०ते)	व्यक्तींस-ला-ना- (०तें)
तृ.	व्यक्तीने-शी	व्यक्तींनी-शी

च.	व्यक्तीस-ला-(०ते)	व्यक्तींस-ला-ना-(०ते)
पं.	व्यक्तीहून (व्यक्तीच्याहून)	व्यक्तींहून (व्यक्तींच्याहून)
ष.	व्यक्तीचा-ची-चे--च्या	व्यक्तींचा-ची-चे--च्या
स.	व्यक्तींत	व्यक्तींत
सं.	व्यक्ती	व्यक्तींनो

(ई) ई-कारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा

नदी

प्र.	नदी	नद्या
द्वि.	नदीस-ला-(०ते)	नद्यांस-ला-ना-(०ते)
तृ.	नदीने-शी	नद्यांनी-शी
	इत्यादि।	

(उ) उ-कारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा

वस्तु

प्र.	वस्तू	वस्तू
द्वि.	वस्तूस-ला-(०ते)	वस्तूंस-ला-ना-(०ते)
तृ.	वस्तूने-शी	वस्तूंनी-शी
	इत्यादि।	

(ऊ) ऊ-कारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा

सासू

प्र.	सासू	सासवा
द्वि.	सासू-ला, (०ते) सासवेस-ला-(०ते)	सासवांस-ला-ना-(०ते)
तृ.	सासूने-शी सासवेने-शी	सासवांनी-शी
च.	सासूस-ला-(०ते) सासवेस-ला-(०ते)	सासवांस-ला-ना-(०ते)
	इत्यादि।	

(कुछ लोग **सासवा** के स्थान पर **सास्वा** जैसा प्रयोग भी करते हैं।)

[१०४] **स्त्रीलिंग संज्ञाएँ और विशेषण** – स्त्रीलिंग संज्ञा के साथ जो विशेषण आता है, उसमें निम्न-लिखित बदल होता —

१. अ-कारान्त विशेषण अपरिवर्तित रहता है। जैसे —
लाल मिरची, **उत्तम** पुस्तिका, **सुंदर** मुलगी

२. आ-कारान्त विशेषण ई-कारान्त होता है। जैसे–
काळा – **काळी** गाय; **हिरवा** – **हिरवी** साडी
बहुवचन में अन्त्य **ई** का **या** होता है। जैसे –
काळ्या गाई, **हिरव्या** साड्या

३. संज्ञा विभक्ति या संयोग-सूचक अव्यय सहित हो, तो आ-कारान्त विशेषण का विकृत रूप आता है। जैसे -
काळा – **काळी** ज़मीन – **काळ्या** ज़मिनीवर
निळा – **निळी** साडी – **निळ्या** साडीला

४. अन्य विशेषण अपरिवर्तित रहते हैं। जैसे —
जळाऊ सामान (न.) **जळाऊ** वस्तु (स्त्री.), **जळाऊ** पदार्थ (पुं.) **जळाऊ** सामानाला-वस्तूला–पदार्थाला
आजारी मुलगा (पुं.), **आजारी** मुलगी (स्त्री.), **आजारी** मूल (न.); **आजारी** मुलाला–मुलीला–मुलांना
भोंदू माणूस, **भोंदू** माणसे, **भोंदू** माणसाला, **भोंदू** स्त्रीला।
विलासी राजा (पुं), **विलासी** राणी; **विलासी** राजाला इत्यादि।

[१०४ अ] **च़ा, ची, च़े** आदि विभक्तिवाले शब्द के साथ आनेवाली संज्ञा में कोई विभक्ति, सम्बन्धसूचक आदि लगाया हुआ हो तो **च़ा, ची, च़े** आदि के स्थान पर **च्या** विभक्ति आती है। हिन्दी में ठीक इसी तरह पुंलिग में **का** के स्थान पर के विभक्ति आती है। जैसे –

घरा**चा** दरवाज़ा – घर **का** दरवाज़ा
घरा**च्या** दरवाजाला – घर **के** दरवाज़े को
घरा**च्या** दरवाजावर – घर **के** दरवाज़े पर।
मुला**ची** आई – बच्चे **की माँ**
मुला**च्या** आई**च़ा** – बच्चे **की** माँ का इ०

[१०४ ब] कभी-कभी सम्बन्ध-कारक की विभक्ति लगाने के पहले अ-कारान्त संज्ञा का विकृत रूप नहीं किया जाता। जैसे –

घरचे काम ('घराचे काम' नहीं) – घर का काम।

घरचा गडी –घर का नौकर

ऐसे प्रयोग में **चा** आदि का मतलब में, **का, में स्थित** जैसा होता है। **घराचे काम** और **घरचे काम** में फर्क है। **घराचे काम** याने 'घर के सम्बन्ध में कोई काम' और '**घरचे काम**' याने 'घर में किया जानेवाला कोई काम'। वैसे ही –

माझ्या दुकानचा माल – मेरी दूकान में प्राप्य माल,

माझ्या गावाचा मनुष्य – मेरे गांव में रहनेवाला आदमी

[१०५] मराठी के तीनों लिंगों संज्ञाओं का विकृत रूप कैसे बनाया जाता है, इसकी तुलनात्मक रूपरेखा नीचे दी जा रही है –

संज्ञा	**पुंल्लिग**		**स्त्रीलिंग**		**नपुंसकलिंग**	
	ए. व.	**ब. व.**	**ए. व.**	**ब. व.**	**ए. व.**	**ब. व.**
अ-कारान्त	अ–आ	अ–आं	अ–ए	अ–आं	अ–आ	अ–आं
			अ–इ	अ–ई		
आ-कारान्त	आ–या	आ–यां	आ–ए	अ–आं	—	—
इ-कारान्त	इ–ई	इ–ई	इ–ई	इ–ई	—	—
ई-कारान्त	ई–या	ई–यां	ई–ई	ई–यां	ई–या	ई–यां
					ई–या	ई–यां
उ-कारान्त	उ–ऊ	उ–ऊं	उ–ऊं	उ–ऊं	—	—
ऊ-कारान्त	ऊ–वा	ऊ–वां	ऊ–ऊ	ऊ–वां	ऊ–आं	ऊ–आं
	+ अवा	+अवां =	–अवे, वे	+अवां		

[१०५ अ] नीचे लिखे प्रयोग ध्यान में रखिए —

उस, उन = त्या (मराठी)

इस, इन = ह्या, या (,,)

जैसे- तो कुत्रा = **वह** कुत्ता

त्या कुत्र्याचा = **उस** कुत्ते का

ह्या पुस्तकात = इस पुस्तक में

या लोकांत = इन लोगों में

[१०६] नमूने के लिए वाक्यांश और वाक्य —

हिन्दी	मराठी
१. कुएँ का पानी	विहिरीचे पाणी
२. पाठशाला का समय	शाळेची वेळ
३. गाड़ियों के पहिए	**गाड्यांची** चाके
४. उसकी बहन का देवर	त्याच्या **बहिणीचा** दीर
५. वस्तु की कीमत	वस्तूची किंमत
६. **इस नदी का** पानी अच्छा नहीं है।	**या नदीचे** पानी चांगले नाही.
७. **उन लताओं में** खुशबूदार फूल हैं।	**त्या वेलींवर** सुवासिक फुले आहेत.
८. माता की बहन को मौसी कहते हैं।	**आईच्या बहिणीला** मावशी म्हणतात.
९. **बकरी का दूध** अच्छा होता है।	**बकरीचे दूध** चांगले असते
१० उन गायों को मत सताओ।	**त्या गाईंना** त्रास देऊ नका.

मराठी	हिन्दी
१. **शाईची** दौत	स्याही की दवात।
२. **टोप्यांचा** रंग	टोपियों का रंग।
३. **चिमण्यांची** घरटी	चिड़ियों का रंग।
४. **शाळांच्या** इमारती	पाठशालाओं की इमारतें।
५. **गाईचे** वासरू	गाय का बछड़ा।
गाईंची वासरे	गायों के बछड़े।
गाईच्या वासरांना	गायों के बछड़ों को।
६. लोकांच्या वस्तूंना हात लाऊ नका.	(दूसरे) लोगों की वस्तुओं को हाथ मत लगाओ।
७. या खुर्च्यांवर बसा.	इन कुर्सियों पर बैठो।
८. लताच्या सासवेला बोलवा.	लता की सास को बुलाओ।
९. माझ्या मावशीचे घर त्या खेडेगावात आहे.	मेरी मौसी का घर उस गाँव में है।
१०. तेथे किती बैलगाड्या आहेत ?	वहाँ कितनी बैलगाड़ियाँ हैं ?

[१०७]

शब्दकोश-११ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
अनाड़ी	अडाणी	ठण्ड	थंडी
इत्र	उत्तर [न.]	पूरा	पूर्ण, पक्का, पुरा
अनगिनत	अगणित, असंख्य	वर्षाऋतु	पावसाळा [पुं.]
सुस्ती	आळस (पुं.)	आलू	बटाटा
गर्मियों के दिन	उन्हाळा	भुनना	भाजणे
कातना	कातणे	मौसी	मावशी
प्याज	कांदा	बूढ़ा	म्हातारा
सूखा	कोरडा	लहसून	लसूण
गर्म	गरम, उष्ण, कडत	लगाना	लावणे
चरखा	चरखा	रोपाई	लावणी
चबाना	चावणे	लता	वेल
जवान	तरुण	गिरगिट	सरडा
ठण्डा	थंड, गार	जाड़े के दिन	हिंवाळा

शब्दकोश-११ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
आवडणे	भाना, अच्छा लगना पसन्द आना,	डोके-दुखी	सिर-दर्द
		डोके [न.]	सिर
एकटा	अकेला	तिकिट [न.]	टिकट
एकुलता	इकलौता	दाढ [स्त्री.]	डाढ़
ओसाड	परती	दुखणे	दुखना, दर्द होना
ओढणे [तंबाखू-विडी]	पीना	पांघरणे	ओढ़ना
काठ [पुं.]	किनारा	म्हणून	इसलिए
काढणे [तिकिट]	[टिकट] कटाना	ठार मारणे	मार डालना
केस [पुं.]	बाल	मारणे	पीटना
कांबळे [न.]	कंबल	वापरणे	काम में लाना
खोडकर	नटखट	सावत्र	सौतेला

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
खोली [स्त्री.]	कमरा	हिरडी [स्त्री.]	मसूढ़ा
गडी	नौकर	तरी सुद्धा	फिर भी
टोपली	टोकरी	पिकवणे	पैदा करना

शब्दकोश – ११ (इ)

[अ] नीचे लिखे शब्द मराठी में भी हैं —

आशा [स्त्री.]	सूत [न.]	हत्या [स्त्री.]	आवश्यकता
आशीर्वाद [पुं.]	रक्त [न.]	सहानुभूति [स्त्री.]	विलासी
शाप [पुं.]	इमारत [स्त्री.]	हवा [स्त्री.]	ढोल [पुं.]

[आ] गिनती

९१ एक्याण्णव, ९२ ब्याण्णव, ९३ त्र्याण्णव, ९४ चौऱ्याण्णव, ९५ पंचाण्णव, ९६ शहाण्णव, ९७ सत्त्याण्णव, ९८ अठ्ठ्याण्णव, ९९ नव्याण्णव, १०० शंभर.

[१०८] अनुवाद – खण्ड – ११

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए :—

१. आसमान में अनगिनत तारे हैं। २. वह बुढ़िया चरखे पर सूत कातती है और बेचती है। ३. वह सुस्त और आलसी नहीं है, मेहनती है। ४. मेरी मौसी नागपुर में रहती है; वह हर साल मेरे लिए संतरे भेजती है। ५. वह पूरा अनाड़ी है। इसलिए वह मामूली काम भी अच्छा नहीं करता। ६. जाड़े के दिनों में हम गर्म पानी से नहाते हैं, मगर गर्मियों के दिनों में गुनगुने पानी से स्नान करते हैं। ७. कुएँ का पानी ठण्डा होता है। ८. हम अपने खेत में आलू, प्याज, लहसून पैदा करते हैं। ९. चने कौन भूनता है? १०. मोटर के पहिए रबर से बनाते हैं।

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए —

१. गरीब लोक कांबळे वापरतात. २. आम्ही स्टेशनवर जाऊन तिकीट काढतो. ३. ह्या नदीच्या काठी ओसाड जमीन आहे. तेथे शेत तयार करा.

४. ती स्त्री त्याची सावत्र आई आहे व हा मुलगा त्याचा सावत्र भाऊ आहे. ५. तंबाकू ओढणे चांगले नाही. तरीसुद्धा गरीब लोक त्यासाठी फार पैसा खर्च करतात. ६. माझी खोली मोठी आहे. ७. तो मुलगा फार खोडकर आहे. ८. वाघ गाईला ठार मारतो. ९. मला फळे आवडतात. १०. माझे दात व हिरड्या दुखत आहेत. ११. त्या म्हाताऱ्या माणसाचा एकुलता एक मुलगा फार आजारी आहे. १२. ह्या टोपलीत शंभर आंबे आहेत. १३ रोज मोकळ्या (= खुली) हवेत खेळा. १४ ह्या गल्लीत मोठमोठ्या इमारती नाहीत. १५. त्या मुलाला का मारता ?

✦ ✦ ✦

१२. [अ] सम्बन्ध-सूचक अव्यय

[१०९] नीचे लिखे शब्द पढ़िए और समझ लीजिए कि ये शब्द कैसे बनाए गए हैं।

घर – घरावर, घराबाहेर, घराजवळ

किल्ला – किल्ल्यासमोर, किल्ल्यापासून, किल्ल्यांवर

खलाशी – खलाश्यावर, खलाश्यापासून, खलाश्यावर

साधू – साधूजवळ, साधूंपासून, साधूंमुळे

लुटारू – लुटारूपाशी, लुटारूंकरिता, लुटारूंवर

नदी – नदीजवळ, नदीवर, नद्यांमुळे

[११०] **वर**–पर; **बाहेर**–बाहर; **जवळ**–पास; **पासून**–से; **पाशी**–पास; **करिता**–के लिए; **मुळे**–के कारण; **समोर**–सामने; **पेक्षा**–से।

मोटे टाईप में छपे मराठी शब्द सम्बन्ध-सूचक अव्यय है। सम्बन्ध-सूचक अव्यय को मराठी में '**शब्दयोगी अव्यय**' कहा जाता है।

विभक्ति की तरह वह संज्ञा आदि के विकृत रूप में लगाया जाता है। जैसे—

घोड़ा + वर = घोड्या + वर = घोड्यावर (ए. व.)

घोड़े + ज़वळ = घोड्यां + ज़वळ = घोड्यांज़वळ (ब. व.)

[१११] नमूने के लिए कुछ वाक्य और वाक्यांश—

हिन्दी	मराठी
१. पत्थर के **नीचे**	दगड़ा**खाली**
२. बाग के **सामने**	बागे**समोर**
३. बालकों के **लिए**	मुलां**करिता**
४. नदियों की **तरह**	नद्यां**प्रमाणे**
५. **मेज़ के नीचे** जूते हैं।	टेबलाखाली जोडे आहेत.
६. **इस कुत्ते से** दूर रहो।	या **कुत्र्यापासून** दूर रहा.
७. **घर के अंदर** मत आना।	**घरात** येऊ नको.
८. **उस आदमी के पास** पैसे नहीं हैं।	**त्या माणसाजवळ** पैसे नाहीत.

[११२] सर्वनामों में सम्बन्ध-सूचक अव्यय लगाते समय सर्वनाम के सम्बन्ध-कारक को ही विकृत रूप माना जाता है। उसी में सम्बन्ध-सूचक अव्यय जुड़ता है। जैसे —

मी + ज़वळ = **माझ्या** + ज़वळ = माझ्याज़वळ, (**मज**ज़वळ)

तू + वर = **तुझ्या** + वर = तुझ्यावर, (**तुज**वर)

अन्य सर्वनामों के दो-दो रूप होते हैं। जैसे —

आम्ही + वर = **आम्हावर, आमच्यावर**

तुम्ही + ज़वळ = **तुम्हांज़वळ, तुमच्याज़वळ**

आपण + खाली = **आपणांखाली, आपल्याखाली**

तो + समोर = **त्या**समोर, त्याच्यासमोर

ती + पाशी = तिच्यापाशी (तिज़पाशी)

ते + वर = **त्या**वर, त्याच्यावर

तथा – ज्याच्यापासून (ज़ो), ह्यापासून – ह्याच्यापासून (हा), ह्यांपासून – ह्यांच्यापासून (हे, ह्या, ही)

कोणा – कोणापासून इ. **काय – कशा**ज़वळ

आदि रूपान्तर ध्यान में रखिए।

\+ + +

[आ] कतिपय प्रयोग-विशेष

[११३] मराठी में गति-सूचक क्रियाओं (ज़ाणे, येणे इ.) का प्रयोग करते समय जिसके प्रति गति है, उसके सूचक शब्द में साधारणत: **ला** प्रत्यय लगता है। अर्थ के अनुसार **ई, वर, आत** आदि भी लगाए जाते हैं। जैसे ––

१. मैं **गाँव** जाता हूँ = मी (खेडे) **गावाला** (गावी) ज़ातो.

२. वह **पाठशाला** जाती है = ती **शाळेला** ज़ाते.

३. वे घर आते हैं = ते **घरी** येतात.

४. हम **बाग में** जाते हैं = आम्ही **बागेत** ज़ातो.

५. वह **स्टेशन** जाता है = तो **स्टेशन (ना)** वर ज़ातो.

[११४] **भिणे, डरणे** (= डरना) क्रिया का प्रयोग करते समय जिससे भय होता है, साधारणत: उसके एकवचन में **ला** और बहुवचन में **ना** प्रत्यय लगाया जाता है। कभी-कभी **स** अथवा ते प्रत्यय भी जुड़ता है। हिन्दी की **से** विभक्ति का अनुवाद **शी** प्रत्यय में न किया जाए। जैसे ––

१. लोक मरणा**ला** भितात.	लोग मौत से डरते हैं।
२. मी निंदे**ला** भीत नाहीं.	मैं निन्दा से डरता नहीं हूँ।
३. वाघा**ला** (**ला**) कोण भितो ?	बाघ से कौन डरता है ?
४. पोलिसांना (**ला**) च़ोर भितात.	पुलिस से चोर डरते हैं।

[११५] किसी के कितनी सन्तानें हैं–यह बताते वक्त हिन्दी में सम्बन्ध कारक की विभक्ति **के** का प्रयोग किया जाता है। मगर मराठी में **के** के स्थान पर **ला, ना, स** आदि विभक्तियाँ आती हैं, न कि च़ा, ची, च़े आदि। जैसे––

१. दशरथ के चार पुत्र हैं = दशरथ (था) **ला** चार मुलगे (पुत्र) आहेत.

२. उस किसान **के** सिर्फ एक बेटी है = त्या शेतकऱ्या**ला** फक्त एक मुलगी आहे.

३. आप**के** कितनी संतानें हैं ? = आपल्याला किती मुले आहेत ?

[११६] व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का विकृत रूप = आजकल साधारणत: बिना कोई प्रत्यय लगाए ही व्यक्तिवाचक संज्ञा में विभक्ति लगाई जाती है। कुछ लोग अन्य संज्ञाओं के अनुसार उनका भी सामान्य रूप बनाते हैं। जैसे –

दशरथ	दशरथला	दशरथाला
राम	रामला	रामाला
उषा	उषाला	उषेला
विमल	विमलचा	विमलेचा
अनिल	अनिलला	अनिलाला

[११६ अ] **हवा, वी-वे-वे** इ० (= **आवश्यक असणे**) = **पाहिजे** का प्रयोग हिन्दी के **चाहिए** की तरह होता है। जैसे — मला पुस्तक **पाहिजे** (= हवे) = मुझे पुस्तक चाहिए।

[११७] नमूने के लिए वाक्य तथा वाक्यांश —

हिन्दी	**मराठी**
१. शहर के पास बगीचा है।	१. शहराजवळ बाग आहे.
२. उनके घर के बाहर खड़े रहो।	२. त्यांच्या घराबाहेर उभे रहा.
३. बम्बई **से** दिल्ली करीब तेरह सौ पचास किलोमीटर दूर है।	३. मुंबई**पासून** दिल्ली सुमारे तेराशे पन्नास कि. मी दूर आहे.
४. हमें व्यापार के लिए पैसा चाहिए।	४. आम्हाला व्यापारासाठी पैसा पाहिज़े
५. आँगन में कुएँ के पास मौलसिरी का बड़ा पेड़ है।	५. आंगणात विहिरीजवळ बकुळीचे मोठे झाड आहे.
६. उसकी चाची अपने घर जाती है।	६. त्याची काकू आपल्या घरी ज़ाते.
७. चूहा बिल्ली से डरता है।	७. उंदीर मांज़राला भितो.
८. मेरे मामा के दो बेटे हैं। वे मेरे ममेरे भाई हैं।	८. **माझ्या मामा**ला दोन मुलगे आहेत. ते माझे मामेभाऊ होत.
९. हमारी पाठशाला यहाँ से पाँच किलोमीटर दूर है।	९. आमची शाळा येथून पाच किलोमीटर दूर आहे.
१०. उस नदी के किनारे पर कुछ झोंपड़ियाँ हैं।	१०. त्या नदीच्या किनाऱ्यावर काही झोपड्या आहेत.

मराठी	हिन्दी
१. त्यांच्या घरामागे एक छोटे तळे आहे. त्या तळ्यात कमळाची फुले फुलतात.	१. उसके घर के पीछे एक छोटा तालाब है। उस तालाब में कमल के फूल खिलते हैं।
२. हिमालय **सह्याद्रीपेक्षा** पुष्कळ उंच आहे. तो भारताच्या **उत्तरेला** आहे.	२. हिमालय सह्याद्रि **से** बहुत ऊँचा है। वह भारत की उत्तर में है।
३. मधमाशी**सारखे** उद्योगी बना.	३. मधुमक्खी की **तरह** उद्योगी बनो।
४. त्याला किती मुलगे आहेत ?	४. उसके कितने बेटे हैं ?
५. वीर पुरुष मरणाला भीत नाहीत.	५. वीर पुरुष मौत से नहीं डरते।
६. येथून कलकत्ता किती दूर आहे ?	६. यहाँ से कलकत्ता कितनी दूर है?
७. तुम्ही आपले काम करा; मी आपले करतो	७. तुम अपना काम करो; मैं अपना काम करता हूँ।
८. कुसुम आपले कपडे स्वतः शिवते.	८. कुसुम अपने कपड़े खुद सीती है।
९. चांभार आमच्याकरिता जोडे तयार करतो; सुतार लाकडी सामान बनवतो व शिंपी आपल्यासाठी कपडे शिवतो.	९. चमार हमारे लिए जूते तैयार करता है (बनाता है); बढ़ई लकड़ी का सामान बनाता है और दर्जी हमारे लिए कपड़े सीता है।
१०. लेखक पुस्तके लिहितात; छापखान्यात ती छापतात; पुस्तक विक्रेते ती विकतात व आपण ती खरेदी करतो.	१०. लेखक पुस्तकें लिखते हैं; छापाखाने में वे छपती हैं; पुस्तक-विक्रेता उन्हें बेचते हैं और हम उन्हें खरीदते हैं।

[११८] शब्दकोश–१२ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
(के) अन्दर	(च्या) आत	ऐना	आरसा
(के) लिए	(च्या) करिता	ऐनक	चश्मा, आरशी
	(च्या) साठी		(पुं.) (स्त्री.)
,, नीचे	,, खाली	चिल्लाना	ओरडणे
,, पास }	,, जवळ, पाशी	खिलाना	खाऊ घालणे
, नज़दीक }	,, नजीक	चिपकाना	डकवणे,
देर	उशीर [न.]		चिकटवणे
पुराना	जुना	भारी	जड
तोप	तोफ [स्त्री.]	तकलीफ	त्रास [पुं.]
(के) बाहर	(च्या) बाहेर	सताना	{ त्रास देणे
(की) तरह	,, प्रमाणे		सतविणे
(के) पीछे	,, मागे	पता	पत्ता
(की) वजह	(च्या) मुळे	लिफाफा	पाकीट (न.)
(के) ऊपर	(च्या) वर	जलना, सुलगाना	पेटवणे
,, सामने	,, समोर	(रोटी) सेंकना	(भाकरी) भाजणे

शब्दकोश–१२ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
आणखी	और	घाबरणे	घबराना
आमटी	दाल	चा़ळणी (स्त्री.)	छलनी
उडीद [पुं.]	उडद	चा़ळणी	छानना
अवघड	कठिन	टाकणे	डालना, छोड़ना
(सूर्य इ.) उगवणे	निकलना	ठिपका (पुं.)	छींटा
काकडी (स्त्री.)	ककड़ी	थेंब ,,	बूंद
किंमत ,,	कीमत	फोडणी (स्त्री.)	छौंक
कोशिंबीर ,,	कचूमर	फोडणी देणे	छौंकना

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
कोथिंबीर (स्त्री.)	धनिया	भाजी	साग
खारट, खारा	नमकीन	लोणचें (न.)	अचार
साल (न. स्त्री.)	छिलका	सोसणे	सहना
फक्त	सिर्फ	लाकडी	लकड़ी का

शब्दकोश – १२ (इ)

[अ] नीचे लिखे शब्द मराठी में भी हैं :-

ढाल [स्त्री.] चटनी [स्त्री.] दही [न.] सामान [न.]
बटन [न.] भाग्य [न.] लिपि [स्त्री.] कढी [स्त्री.]
पदार्थ [पुं.] इतिहास [पुं.] भूगोल [पुं.] ऋतु [पुं.]

[आ] गिनती :-

शे– १००, एक शे एक १०१, एक शे दोन १०२, एक शे दहा ११०, पाच शे ५००, कितने सैंकड़े = किती शे, १००० हज़ार, सहस्र, लाख – लक्ष, कोटी [= करोड़]

[११९] अनुवाद–खण्ड–१२

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए :-

१. मेरे घर के सामने बगीचा है और उसके पीछे नौकरों के लिए एक झोंपड़ी है। २. छोटे अरुण के लिए उसके पिताजी शहर से क्या लाते हैं? ३. इस शहर के बाहर एक किला है। उस किले में पुरानी तोपें, बंदूकें, तलवारें और ढालें हैं। ४. इस लिफाफे पर पता लिखो और बीस नए पैसे के टिकट चिपकाओ। ५. मेरी तरह काम करो। ६. फटे पुराने कागज मत जलाओ। ७. शोरोगुल बन्द करो; यहाँ क्यों चिल्लाते हो? ८. उन छोटे बच्चों को मत सताओ। ९. हमारे पास बैठो और सुनो – हम क्या कहते हैं। १०. गरीबी के कारण वह नए कपड़े नहीं खरीदता। ११. वह रोटियाँ सेंकती हैं और अपने बच्चों को खिलाती है।

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए —

१. या चांगल्या कागदावर शाईचे थेंब पाडू नकोस. २. ह्या ताटात मीठ, लोणचे, कोशिंबीर व चटणी वाढा. ३. सुंठ, आले, मिरची व मिरी हे पदार्थ तिखट असतात. ४. काकडीची साल काढा. ५. ती चाळणीने पीठ चाळते. ६. आमटीला तेलाची फोडणी द्या. ७. काही लोकांना कोथिंबीर आवडत नाही. १० मराठी भाषा नागरी लिपीत लिहितात. ११. आम्हाला शाळेत भारताचा इतिहास व भूगोल पण शिकवतात. १२. माझ्यासाठी पाच बटणे आणा. १३. वर्षाचे मुख्य ऋतु कोणते ? १४. सूर्य पूर्वेला उगवतो. १५. त्याच्यापाशी पुस्तके नाहीत.

✦ ✦ ✦

१३. [अ] क्रिया-विशेषण (अव्यय) और विस्मयादि-बोधक अव्यय

[१२०] सम्बन्ध-सूचकों का मराठी में प्रयोग कैसे किया जाता है, यह देखा गया। अब क्रिया-विशेषणों का प्रयोग देखिए —

सम्बन्ध-सूचक – घराबाहेर, दरवाज्याजवळ, झाडासमोर

क्रिया-विशेषण-**बाहेर** उभा रहा. (**बाहर** खड़ा रहो।)

आत येऊ नकोस. (**अन्दर** मत आना।)

समोर बस. (**सामने** बैठो)

तो **हळू-हळू** चालतो. (वह **धीरे-धीरे** चलता है।)

आता तुम्ही घरी जा. (**अब** तुम घर जाओ।)

इससे दिखाई देता है कि मराठी में क्रिया-विशेषण ठीक वैसे ही प्रयुक्त होते हैं, जैसे वे हिन्दी में होते हैं।

[१२१] क्रिया के स्थान, काल, परिणाम और रीति आदि के सम्बन्ध में क्रिया-विशेषण जानकारी देते हैं। कुछ मराठी क्रिया-विशेषण—

स्थल दिखानेवाले – येथे, तेथे, इकडे, जवळ, मागे, पुढे, आस-पास इत्यादि।

काल दिखानेवाले – आता, आज, काल, सतत, नेहमी, वारंवार, पुन्हा इत्यादि ।

परिमाण दिखानेवाले – ज़रा, थोडा-सा, किंचित्, फार, पुष्कळ इत्यादि ।

रीति दिखानेवाले – असे, तसे इत्यादि —

[१२२] हिन्दी में जैसे विस्मयादि-बोधकों को प्रयुक्त किया जाता है, वैसे ही मराठी में उनका प्रयोग किया जाता है। ये विस्मयादि-बोधक हर्ष, शोक, घृणा आदि विकार दिखाते हैं। मराठी के कुछ विस्मयादि-बोधक नीचे लिखे अनुसार हैं। —

आनन्द दिखानेवाले		—वा, वः, बाः वाहवा, ओहो, इ०
आश्चर्य	,,	—ओहो, अबब, हाँ, अगबाई, अरे बाप रे
शोक	,,	—हाय, हायहाय, हाय रे, आह, अगई अरेरे, देवा रे, रामराम इ०
स्वीकृति	,,	—होय (हाँ), ठीक, अच्छा, हं इ०
प्रशंसा	,,	—वाहवा, शाबास, भले, ठीक इ०
विरोध	,,	—हट्, छट्, छेः, ऊः, अहं, ऊहू इ०
तिरस्कार	,,	—धिक्, छीः, छीः छीः, थूः, इत्यादि ।

[१२३] किसी को बुलाते समय व्यक्ति-विशेष तथा उससे बोलनेवाले के सम्बन्ध-विशेष को ध्यान में लेकर सम्बोधन के पूर्व कुछ शब्दों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए —

अरे, रे–अपने से छोटे, हीन या बराबरीवाले (पुरुष) के लिए

अहो, ओ–अपने से बड़ों के लिए (आदर-सूचक)

अग, गे, ग,–अपने से छोटी, हीन या बराबरीवाली स्त्री के लिए,

ग–सम्बोधन सूचक शब्द के पश्चात् भी आता है।

उदा०– **अरे** गोविन्द, इकडे ये.

काय रे, इकडे कोठे जातोस ? **अहो** काका, घरात या.

अग कमल, मला तुझी वही दे.

आई **ग,** मला दूध दे

काय ग, तुझे नाव काय ?

✦ ✦ ✦

[आ] कतिपय प्रयोग-विशेष

[१२४] नीचे लिखी विशेष रचनाएँ ध्यान में रखिए : -

१. **मदत करणे** = मदद करना

गरीब **लोकांना** मदत करा (= गरीब **लोगों की** मदद करो।) 'लोगों की' का अनुवाद यहाँ 'लोकांची' नहीं करना चाहिए। **मदत, सहायता, साह्य** (= मदद) आदि शब्दों के प्रयोग में मराठी में **ला–ना–स** आदि का प्रयोग होता है।

२. **बोलणे**–मी **तुझ्याशी** (तुझ्याजवळ) बोलतो (= मैं **तुझसे** बोलता हूँ।)

३. **–ला (ना) बोलणे**–गुरुजी त्या **खोडकर** विद्यार्थ्याला बोलतात. (= गुरुजी उस नटखट विद्यार्थी को **खरी-खोटी सुनाते** हैं।) 'गुस्से से बोलना' के अर्थ में '**–ला (ना) बोलणे**' का प्रयोग होता है।

४. **सांगणे**– कहना : ती आपल्या **मुलाला** असे सांगते की तू **खोटें** बोलू नकोस (= वह अपने **बेटे से** कहती है कि तुम झूठ **मत** बोलो।) **–ला (ना)** का प्रयोग 'सांगणे' के साथ होता है, '**शी**' का नहीं।

५. **प्रार्थना करणे – देवाला** प्रार्थना करा (= भगवान से प्रार्थना करो।) हिन्दी की तरह **शी** (= **से**) का प्रयोग नहीं होता।

६. **– ला (ना) विनंती करणे** –से विनती करना। गुरुजींना विनंती करा. (= गुरुजी **से** विनती कीजिए।)

७. **–ला (ना) विचारणे** : गुरुजी **मुलांना** प्रश्न विचारतात. (= गुरुजी वालकों से प्रश्न पूछते हैं।)

८. '**प्रेम करणे**' के साथ '**वर**' आता है। जैसे– आईबाप **मुलांवर** प्रेम करतात. (= माता-पिता बच्चों से प्रेम करते हैं।)

९. द्वेष करणे, तिरस्कार करणे = कोणाचाही द्वेष करू नका. (= किसी से भी द्वेष न करो।) गरीबांचा तिरस्कार करू नका. (= गरीबों से तिरस्कार मत करो।) इनके साथ सम्बन्ध-कारक की विभक्ति का प्रयोग करें।

१०. सोमवारी–सोमवार को; दुपारी–दुपहर को; सायंकाळी–शाम को; सकाळी–सबेरे; चार तारखेला–चार तारीख को।

[१२५] शब्दकोश–१३ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
काँटा	काटा [पुं.]	फोड़ना	फोडणे
केंकड़ा	खेकडा	बनाना	बनव(वि)णे
चाटना	चाटणे	बताशा	बत्तासा
चिड़चिड़ा	चिडखोर	छुट्टी	सुटी, सुट्टी
चाँदी	चांदी	गुस्सैला	रागीट
ताँगा	टांगा	लोहा	लोखंड [न.]
ठठेरा	तांबट	हवा	वारा [पुं.], हवा
ताँबा	तांबे [न.]	आँधी	वावटळ [स्त्री.]
तूफान	तुफान [न.]	राहगीर	वाटसरू
पीतल	पितळ [स्त्री.]	रँगना	रंगव(वि)णे
छोटा	[वयाने] धाकटा	सोना	सोने [न.]
बड़ा	["] वडील	सुनार	सोनार

शब्दकोश–१३ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
आचारी	रसोइया	दही करणे [बनवणे]	दही जमाना
आटवणे	औटाना	पेंड [स्त्री.]	खली
आंबोण [न.]	सानी	रूक्ष	रूखा
गवळी	ग्वाला	सरकी [स्त्री.]	बिनौला
गुराखी	चरवाहा	स्वयंपाक [पुं.]	रसोई

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
घेऊन जाणे, नेणे	ले जाना	कुंचला, ब्रश [पु.]	बुरुश
		अर्धा	आधा
चामडे [न.]	चमड़ा	स्वयंपाकघर [न.]	रसोईघर
कातडे [,,]	चमड़ा	हळद [स्त्री.]	हलदी
पाजणे	पिलाना	पोळपाट	चकला
लाटणे	बेलना	लाटणे [न.]	बेलन
तूप [न.]	घी	बरोबर	साथ, ठीक
तुडव(वि)णे	कुचलना	वडील [पुं.]	बाप

शब्दकोश – १३ (इ)

[अ] नीचे लिखे शब्द मराठी में भी हैं :—

अलंकार [पु.] आराम [पुं.] उपयोग [पुं.]
उचित, गणित [न.] मंत्री, योग्य. शिकार [स्त्री.]
स्वर्ग [पुं.] स्वागत [न.] साहस [न.]

[ब] दिनों के नाम :—

१. रविवार—आदितवार २. सोमवार ३. मंगळवार ४. बुधवार
५. गुरु [र] वार ६. शुक्रवार ७. शनि [न] वार

[स] समय-दर्शक शब्द :—

प्रहर पुं. [= पहर] सेकंड, मिनिट न. [= मिनट]
तास पुं. [= घण्टा] घटका [= घड़ी]
दुपार स्त्री. [= दुपहर] सकाळ स्त्री. [सबेरा]
संध्याकाळ स्त्री. [= शाम] रात स्त्री.[रात]
आठवडा पुं. [= हफ्ता]
पंधरवडा पुं. [= पखवारा] काल – कल [पिछला दिन]
रात्री – रात को उद्या – कल [अगला दिन]
दिवसा – दिन के वक्त आज – आज
पहाटेस [ला] – मुँह अंधेरे परवा – परसों

[१२६] अनुवाद – खण्ड – १३

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए –

१. मेरा छोटा भाई गुस्सैला और चिड़चिड़ा है; इसलिए वह सबके साथ झगड़ता है। २. सोना और चाँदी कीमती धातुएँ हैं, मगर ताँबा और पीतल सस्ती धातुएँ हैं। ३. लोहा सस्ता होता है, मगर वह सोने-चाँदी से अधिक उपयोगी है। ४. लुहार लोहे से हल बनाता है और सुनार सोने-चाँदी के गहने बनाता है। ५. ठठेरा ताँबे-पीतल के बर्तन बनाता है और बेचता है। ६. बरसात के दिनों में कई बार तूफान होता है। ७. घोड़े ताँगा खींचते हैं। ८. आंधी होती है,तब हवा तेज़ चलती है। ९. काँच जल्द टूटता है। १०. धीरे-धीरे मत चलो। ११. सामने देखो-कौन खड़ा है। १२. अन्दर जाओ और दो कुर्सियाँ बाहर लाओ। १३. नीचे जाओ और फिर ऊपर मत आओ। १४. कभी-कभी मैं उसके घर जाता हूँ। १५. बुरुश से उस कागज़ पर चित्र खींचो। १६. सियार केंकड़े खाता है। १७. मुझसे ऐसी बात न कहो। १८. वह भगवान से प्रार्थना करती है। १९. दुपहर को हम यहाँ नहीं रहते। २०. रात को वहाँ न बैठो।

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए :-

१. मी पहाटे उठतो व व्यायाम करतो. संध्याकाळी मित्रांबरोबर खेळतो. २. गुराखी गुरांना गावाबाहेर नेतात; गवळी गाई व म्हशीचे दूध काढतात. ३. वासरे ज़ोरात धावतात. ४. गुरांच्या चामड्यापासून चांभार जोडे बनवितात. ५. आमचा आचारी स्वयंपाक-घरांत स्वयंपाक तयार करतो. ६. लोक दुधापासून दही बनवतात. ७. दुधापासून खवा, तूप, मिठाई, बासुंदी व खीरसुद्धा करतात. ८. ओले गवत जळत नाही. ९. गाईंना आंबोण व पेंड घाला; त्यांना सकाळी व संध्याकाळी चारापाणी द्या. १०. आम्हाला दर रविवारी पूर्ण व शनिवारी अर्धी सुट्टी असते. ११. एक मिनिटाचे साठ सेकंड असतात; साठ मिनिटांचा एक तास होतो. १२. एका प्रहरात तीन तास असतात; अशा आठ प्रहरांचा एक दिवस होतो. १३. एक महिन्यात किती आठवडे असतात ? १४. मंत्री सेनापतीचे स्वागत करतात. १५. आठवड्याचे दिवस किती असतात ? १६. त्या मुलीला दूध पाजा. १७. पोळपाट व लाटणे घ्या व पापड लाटा (करा). १८ आपण आम्हाला असे प्रश्न का विचारता ? १९. छिः ! चांगले नव्हे ! २०. वाहवा ! फारच छान।

✦ ✦ ✦

१४ [अ] संयोग-सूचक अव्यय

[१२७] नीचे लिखे वाक्य पढ़िए –

१. विनय **आणि** (= **व**) मोहन चांगल्या गोष्टी लिहितात.

२. तो अभ्यास करतो **व** (= **आणि**) नंतर खेळतो.

३. तू माझ्या घरी ये **किंवा** आपल्या भावाला पाठव.

४. शंकर गरीब आहे, **पण** (= परंतु) अप्रामाणिक नाही.

५. तो आज़ारी आहे, **म्हणून** घरी आहे.

आणि, व, किंवा, पण, परंतु, म्हणून आदि संयोग-सूचक अव्यय हैं। हिन्दी के और, व, या, किंवा, पर, परंतु, लेकिन, इसलिए आदि अव्यय जो काम करते हैं, वही काम मराठी के ये संयोग-सूचक करते हैं। उनका प्रयोग भी वैसा ही होता है। संयोग-सूचक को मराठी में ' उभयान्वयी ' अव्यय कहा जाता है।

[१२८] मराठी के और संयोग-सूचक नीचे लिखे अनुसार हैं –

ज़ेव्हा...तेव्हा (जब...तब), **जेथे...तेथे** (जहाँ...वहाँ), **ज़र... तर** (यदि...तो), **ज़से...तसे** (जैसे...वैसे), **ज़ो ज़ो...तो तो** (जैसे-जैसे...वैसे-वैसे), **यद्यपि.. तथापि, ज़री.. तरी** (यद्यपि...तथापि), **की** (कि, तत्क्षण), **म्हणज़े** (= यानी) इत्यादि।

मराठी शब्द **अगर** का अर्थ है–**किंवा**।

[१२८ अ] वाक्यों में प्रयोग –

१. **मराठी**– सकाळी **ज़ेव्हा** तो येतो, **तेव्हा मी** त्याला पुस्तके देतो.
हिन्दी– सुबह **जब** वह आता है, **तब मैं** उसे पुस्तकें देता हूँ।

२. **मराठी– जेथे** पाऊस अधिक पडतो, **तेथे** पाणी पुष्कळ मिळते.
हिन्दी– जहाँ बरसात अधिक होती है, **वहाँ** पानी बहुत मिलता है।

३. **मराठी– ज़र** तुला पैसा हवा, **तर** काम कर.
हिन्दी– यदि तुझे पैसा चाहिए, **तो** काम कर।

४. **मराठी– ज़से** करावे, **तसे** भरावे.
हिन्दी– जैसे करें, **वैसे** पावें।

५. **मराठी– यद्यपि** (जरी) तो श्रीमंत आहे, **तथापि** (तरी) तो गर्विष्ठ नाही.

हिन्दी– यद्यपि वह दौलतमन्द है, **तथापि** वह घमंडखोर नहीं है।

६. **मराठी**– गुरुजी म्हणाले **की** उद्या शाळेत लवकर या.

हिन्दी– गुरुजी ने कहा कि कल पाठशाला में जल्दी आओ।

७. **मराठी**– शंभर नवे पैसे **म्हणजे** एक रुपया.

हिन्दी– एक सौ नए पैसे **यानी** एक रुपया।

[१२८ ब] मिश्र वाक्य में साधारणतः संज्ञा-वाक्य अगर कर्म हो, तो मराठी में मुख्य उपवाक्य के पहले आता है और दोनों के बीच **असा-असे** आदि संयोजक आते हैं। जैसे –

तो म्हणतो की मी पण तुझ्याबरोबर येतो (= वह कहता है कि मैं भी तेरे साथ आता हूँ।) व्याकरण की दृष्टि से यह वाक्य-रचना गलत नहीं है; फिर भी अधिकतर यों कहा जाता है –

मी पण तुझ्याबरोबर येतो, **असे** तो म्हणतो. ✦ ✦ ✦

[आ] कतिपय कृदन्त

[१२९] नीचे लिखे वाक्यों पर गौर कीजिए —

हिन्दी–यह परिच्छेद **पढ़कर** प्रश्नों के उत्तर लिखो।

मराठी–हा परिच्छेद **वाचून** प्रश्नांची उत्तरे लिहा.

हिन्दी –अपना काम पूर्ण **करके** इधर आओ।

मराठी–आपले काम पूर्ण **करून** इकडे या.

वाचून = पढ़कर; **करून** = करके। ये शब्द यों बने हैं –

वाचणे – मूल क्रिया – वाच् + ऊन = वाचून (अ – ऊन)

करणे – ,, – कर + ऊन = करून

खेळणे – ,, – खेळ + ऊन = खेळून

इससे यह दिखाई देता है कि अ–कारान्त धातु में **ऊन** प्रत्यय जोड़कर **पूर्वकालिक कृदन्त** बनाए जाते हैं। अन्त्य **अ** और **ऊन** मिलाकर **ऊन** ही रहता है। अन्य उदाहरण –

चालणे – **चालून** (चलकर); सांगणे – **सांगून** (कहकर)
म्हणणे – **म्हणून** (कहकर); बोलणे – **बोलून** (बोलकर)
ऐकणे – **ऐकून** (सुनकर); आणणे – **आणून** (लाकर)

[१३०] परन्तु अन्य धातुओं (**अ**–कारान्त धातुओं के अतिरिक्त) में **ऊन** प्रत्यय लगते समय धातु के अन्त्य स्वर तथा **ऊन** में से **ऊ** की संधि नहीं होती। वह सिर्फ जोड़ा जाता है। जैसे–

१. आ-कारान्त – खाणे – खा + ऊन = **खाऊन**
२. इ-कारान्त – **पिणे** – पि + ऊन = **पिऊन**
३. उ-कारान्त – **धुणे** – धु + ऊन = **धुऊन**
४. ए-कारान्त – **देणे** – **दे** + ऊन = **देऊन**
– **घेणे** – घे + ऊन = **घेऊन**

[१३१] १. **खेळता खेळता** तो बोलतो (**खेलते-खेलते**)
२. **बोलता बोलता** आम्ही लिहितो (**बोलते-बोलते**)

खेलते-खेलते, **बोलते-बोलते** जैसे कृदन्तों से एक क्रिया के जारी रहने और उसी समय दूसरी क्रिया के किए जाने का बोध होता है। हिन्दी में धातु में **ते** प्रत्यय लगाकर उक्त शब्द दुबारा लिया जाता है। मराठी में धातु में **ता** प्रत्यय लगाकर उसे भी दो बार लिया जाता है। अन्य उदाहरण–

१. करणे – **करता करता**, २. वाचणे – वाचता वाचता
३. लिहिणे – **लिहिता लिहिता**, ४. ऐकणे – ऐकता ऐकता

[१३१ अ] वाक्यों में प्रयोग–

मराठी	**हिन्दी**
१. **खाता खाता** बोलू नकोस.	**खाते-खाते** मत बोलो।
२. **वाचता वाचता** तो खेळतो.	**पढ़ते-पढ़ते** वह खेलता है।
३. काम **करता करता** ती गाते.	काम **करते-करते** वह गाती है।

[१३२] हिन्दी में मूल क्रिया में **वाला** प्रत्यय लगाकर **उससे** 'क्रिया का करनेवाला' सूचित करनेवाला शब्द बनाते हैं। **जैसे करना**–करनेवाला, तैरना–तैरनेवाला।

मराठी में इसी तरह क्रिया की मूल धातु में **णारा** प्रत्यय जोड़कर ऐसे शब्द बनाए जाते हैं। जैसे—

करणे – कर + णारा = **करणारा** (करनेवाला)

आणणे – आण + णारा = आणणारा (लानेवाला)

घेणे – **घेणारा** पोहणे – **पोहणारा**

खाणे – **खाणारा** रडणे – **रडणारा**

[१३३] **घेणारा, खाणारा** आदि शब्दों का प्रयोग भिन्न-भिन्न लिंगों में अन्य आ-कारान्त विशेषणों की तरह होता है। जैसे–

काम करणारा मनुष्य (पुं.), काम करणारी मुलगी (स्त्री.)

काम करणारे मूल (न.)। और कुछ उदाहरण—

पुं.		**स्त्री.**		**नपुं.**	
ए. व.	**ब. व.**	**ए. व.**	**ब. व.**	**ए. व.**	**ब. व.**
रडणारा	रडणारे	रडणारी	रडणाऱ्या	रडणारे	रडणारी
खाणारा	खाणारे	खाणारी	खाणाऱ्या	खाणारे	खाणारी

[१३३ अ] इन शब्दों का प्रयोग संज्ञाओं की तरह भी किया जाता है, तब उसके रूप यों होते हैं —

पुंलिंग	**स्त्री.**	**नपुं.**
वाचणारा	वाचणारीण	वाचणारे
खाणारा	खाणारीण	खाणारे

✦ ✦ ✦

[इ] कुछ सर्वनाम

[१३४] सम्बन्ध-दर्शक सर्वनामों का प्रयोग करके भी मिश्र वाक्य बनाए जाते हैं। हिन्दी में '**जो**' की तरह मराठी में **जो–जी–जे, जे–ज्या–जी** का प्रयोग होता है।

इन सर्वनामों की कारक-रचना नीचे लिखे अनुसार है –

एकवचन

मराठी		**हिन्दी**
पुं. और न.	**स्त्री.**	
१. ज्जो (पुं.), जे (न.)	**जी**	**जो**

२. ज्यास, ज्याला	जीस, जिला	जिसे
३. ज्याने, ज्याशी, (ज्याच्याशी)	जिच्याशी, जिने	जिससे
४. ज्यास, ज्याला	जीस, जिला	जिसे
५. ज्याहून (ज्याच्याहून)	जीहून (जिच्याहून)	जिससे
६. ज्याचा ची–चे इ.	जिचा–ची–चे इ.	जिसका
७. ज्यात (ज्याच्यात)	जीत (जिच्यात)	जिसमें

बहुवचन

१. जे (पुं.), ज्या (स्त्री.), जी (न.	जो
२. ज्यांस, ज्यांना, (ज्यांला)	जिन्हें
३. ज्यांनी, ज्यांशी	जिनसे
४. ज्यांस, ज्यांना (ज्यांला)	जिन्हें
५. ज्यांहून (ज्यांच्याहून)	जिनसे
६. ज्यांचा–ची–चे इ.	जिनका–की–के
७. ज्यांत (ज्यांच्यात)	जिनमें

[१३४ अ] **जो–जी–जे** आदि का वाक्यों में प्रयोग–

मराठी	हिन्दी
१. **जो** काम करतो, त्याला पैसे मिळतात.	१. **जो** काम करता है, उसे पैसे मिलते हैं।
२. **जिचे** हे पुस्तक आहे, तिला मी ते देतो.	२. **जिसकी** यह पुस्तक है, उसे मैं (वह) देता हूँ।
३. **जे** उद्योगी आहेत, ते नेहमी यशस्वी होतात.	३. **जो** मेहनती हैं, वे हमेशा सफल होते हैं।

[१३४ आ] **सर्व** (= **सब**) सर्वनाम के रूप —

सर्वांना, **सर्वांनी**, **सर्वांशी**, **सर्वांहून**, **सर्वांचा** इत्यादि

[१३५] नमूने के लिए वाक्यांश और वाक्य —

हिन्दी	मराठी
१. **जब** हवा ठण्डी होती है **तब** हम सबको अच्छा लगता है।	१. जेव्हा हवा थंड असते तेव्हा आम्हा सर्वांना बरे वाटते.

हिन्दी	मराठी
२. यदि तुमको पुस्तक चाहिए तो मेरे यहाँ आओ।	२. ज़र तुम्हाला पुस्तक हवे तर माझ्याकडे या.
३. माँ अपने बेटे से कहती है कि हमेशा सच बोलो।	३. आई आपल्या मुलाला सांगते की नेहमी खरे बोल.
४. वह जैसे बोलता है, वैसे करता है।	४. तो जसे बोलतो, तसे करतो.
५. स्टेशन जाओ और टिकट कटाकर जल्दी घर आओ।	५. स्टेशनवर जा आणि तिकीट काढून लवकर घरी ये.
६. मैं सुबह पाँच बजे उठता हूँ और दूध पीकर समाचार-पत्र पढ़ता हूँ।	६. मी सकाळी पाच् वाज़ता उठतो आणि दूध पिऊन वर्तमान-पत्र वाच्तो.
७. चलते-चलते वह बैठती है और कुछ आराम करके फिर उठती है।	७. चालता चालता ती बसते व थोडी विश्रांती घेऊन पुनः उठते.
८. वह अन्धा भिखमंगा गाते-गाते भीख माँगता है, मगर उसको कोई कुछ नहीं देता।	८. तो आंधळा भिकारी गात गात भिक मागतो, परंतु त्याला कोणी काही देत नाही.
९. डूबनेवाले को तिनके का सहारा।	९. बुडणाऱ्याला काडीचा आधार.
१०. बोलनेवाले बहुत होते हैं, मगर करनेवाले कम होते हैं।	१०. बोलणारे पुष्कळ असतात; पण करणारे थोडे असतात.

मराठी	हिन्दी
१. झाडे लावणाऱ्याला फळे मिळतात.	१. पेड़ लगानेवाले को फल मिलते हैं।
२. कुत्रा सश्याला मारतो, पण कुत्र्याला वाघ मारतो.	२. कुत्ता खरगोश को मारता है, मगर कुत्ते को वाघ मारता है।

मराठी	हिन्दी
३. लिहिता लिहिता थांबू नका; उत्तर पूर्ण लिहून पुस्तके बंद करा.	३. लिखते-लिखते मत रुको; जवाब पूरा लिखकर पुस्तकों को बन्द करो।
४. जरी मी पुष्कळ काम करतो, तरी माझी मिळकत थोडी आहे.	४. यद्यपि मैं बहुत काम करता हूँ तो भी (तथापि) मेरी कमाई थोड़ी है।
५. कोकणात पाऊस भरपूर पडतो, पण तेथे उन्हाळ्याच्या दिवसात पाण्याची कमतरता असते.	५. कोंकण में बारिश काफी होती है, पर वहाँ गर्मियों के दिनों में पानी की कमी होती है।
६. महाराष्ट्रातील लोक शूर आहेत, पण ते गरीब आहेत.	६. महाराष्ट्र के लोग शूर हैं, मगर वे गरीब हैं।
७. पैसे घेऊन काम करा.	७. पैसे लेकर काम करो।
८. पत्र लिहून पोस्टाच्या पेटीत टाक.	८. पत्र लिखकर डाकघर के बक्स में छोड़ो।
९. ते सकाळी व्यायाम करून दूध पितात.	९. वे सुबह कसरत करके दूध पीते हैं।

[१३६] शब्दकोश [अ]

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
या	अगर, अथवा	जैसे	जसे
ऐसा	असे	चुभना	टोचणे, बोचणे
उबलना	उकळणे	चुभाना	टोचविणे,
कमी, त्रुटि	कमतरता	तिनका	काडी [स्त्री.]
कैसे	कसे	तो	तर
कि	की	वैसे	तसे
चुगली	चहाडी, चुगली	तब	तेव्हा
चूसना	चोखणे	तब तक	तोपर्यंत

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
यदि, अगर	जर	पर, लेकिन, मगर	परन्तु, पण
जहाँ	जेथे	यानी	म्हणजे
जब	जेव्हा	रास्ता	रस्ता
जब तक	जोपर्यंत	सहना	सहन करणे
बारिश	पाऊस [पुं.]	कमाई	मिळकत

शब्दकोश – १४ [आ]

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
अशिक्षित	अपढ़	ताणणे	तानना
उतरणे	उतरना	पेटवणे	जलाना
ओढणे, खेचणे	खींचना	रानटी, जंगली	जंगली
औषध [न.]	दवा	विळा [पुं.]	दराँती
करवत [स्त्री.]	करौंत	सतरंजी [स्त्री.]	दरी
घसरणे	फिसलना	सुटणे	छूटना
(भांडी) घासणे	(बर्तन) माँजना	संपणे	खत्म होना
चिडणे	चिढ़ना	साबण	साबुन
चेपणे, दाबणे	दबाना	हमाल	कुली
चिरणे	चीरना	हिंदोळा [पुं.]	झूला
चौकशी [स्त्री.]	पूछताछ	हिशेब [,,]	हिसाब

शब्दकोश – १४ [इ]

[अ] नीचे लिखे शब्द मराठी में भी हैं –

गाल [पुं.]	डफ [पुं.]	तीक्ष्ण	देशी
बदल ,,	बुद्धि [स्त्री.]	विरोध [पुं.]	विदेशी
राष्ट्र [न.]	सरकार [न.]	सम्बन्ध ,,	हजामत [स्त्री.]

[आ] मराठी महीनों के नाम

१. चैत्र २. वैशाख ३. ज्येष्ठ ४. आषाढ ५. श्रावण ६. भाद्रपद ७. आश्विन ८. कार्तिक ९. मार्गशीर्ष १०. पौष [पूस] ११. माघ १२. फाल्गुन.

[१३७] अनुवाद–खण्ड–१४

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए–

१. वर्ष के कितने महीने होते हैं? उनके नाम बताओ। २. सावन में जोरों की बारिश होती है। ३. दीवाली आश्विन में आती है। ४. मेरे गुरुजी कहते हैं कि यहाँ बैठकर प्रश्नों के उत्तर लिखो। ५. वह बीमार है, इसलिए वह आज घर में है। ६. जब मेरे पास ज्यादा पैसे होते हैं, तब मैं सिनेमा देखता हूँ। ७. माँ जैसे कहती है, वैसे हम करते हैं। ८. मेरे पास बैठकर तुम मुझे पिन क्यों चुभाते हो? ९. दूध गर्म करो, पर उसे मत उबालो। १०. वह दर्द सहता है, मगर रोता नहीं। ११. नदी कैसे बहती है? १२. जब तक मनुष्य जिन्दा रहता है, तब तक वह सुख की आशा करता है। १३. वह आम का रस चूसता है। १४. जहाँ लाभ होता है, वहाँ लोग जाते हैं। १५. अगर तुम सफल होना चाहते हो, तो काम करो। १६. काम करते-करते मत रुको। १७. मैं पुस्तकें पढ़नेवाले को पुरस्कार देता हूँ। १८. यद्यपि वह आलसी है, तथापि वह ईमानदार है। १९. मैं कहता हूँ कि यह काम अभी पूरा करो। २०. यह पत्र पढ़कर मुझे दो।

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए :–

१. भिल्ल लोक रानटी व अशिक्षित आहेत. २. फरशी साफ करता करता तिकडे जाऊ नकोस. ३. आवश्यकतेपेक्षा अधिक चौकशी का करता? ४. दोरी बांधून दगड वर ओढा. ५. खाली घसरणाऱ्याला पकडा. ६. सुरीने फळे कापतात; विळ्याने गवत कापतात व करवतीने लाकडे चिरतात. ७. मांजर दुधाचे भांडे चाटते. ८. ही सतरंजी महाग आहे; पण ह्या चटया स्वस्त आहेत. मग त्याच का घेत नाही? ९. चूल पेटवा व कढईत तेल घालून ते गरम करा. १०. साबण आणून हे कपडे धुवा. ११. त्या हमालाला बोलावून त्याला सांगा की हे सामान स्टेशनपर्यंत ने. १२. प्रश्न विचारणाऱ्याला उत्तर द्या. १३. जरी ही शाई चांगली आहे, तरी ती स्वस्त नाही. १४. धावता धावता बोलू नकोस. १५. तू कापड स्वतः आण किंवा मला पैसे दे, मी आणतो.

१६. ज्यांच्या घरी नोकर आहेत, त्यांची कामे ते नोकर करतात. १७. जो काम अधिक करतो, तो अधिक बोलत नाही. १८. जे माझ्याजवळ असते ते मी सर्वांना देतो. १९. जी मुले खरे बोलतात, ती सर्वांना आवडतात. २०. डॉक्टर जे औषध देतात, ते तुम्ही घ्या.

◆ ◆ ◆

[१५] अभ्यास-१

[१३८] मराठी में अनुवाद कीजिए :—

[अ] कागज हररोज़ दिखाई देनेवाली वस्तु है। हम उसका उपयोग भी प्रति दिन करते हैं। मगर हममें से कितने लोग यह जानते हैं कि कागज़ को कैसे बनाते हैं। पहले फटे-टूटे कपड़ों को इकट्ठा करते हैं। उन्हें यंत्र में डालकर उनका मुलायम सफेद लई-सा गूदा बनाते हैं। इस गूदे से कागज़ तैयार करते हैं। आजकल भारत में कागज़ के कई कारखाने हैं। इन कारखानों में सफेद-रंगीन, महीन-मोटा, चिकना-खुरदरा-सभी तरह का कागज़ बनता है।

किताबें कागज़ पर छपती हैं। तरह-तरह के अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं के लिए कागज़ की जरूरत होती है। हमारे लेखन के लिए भी कागज़ चाहिए। दूकानदार शक्कर आदि वस्तुओं को कागज़ में बाँधकर देता है। इन पुड़ियों के लिए कागज़ की आवश्यकता होती है। यहाँ तक कि हमारे नोट भी कागज़ के ही बनाते हैं।

[ब] यह देखो हमारे गाँव का बाज़ार। यह हर मंगलवार को लगता है। शहर में रोज़ ही बाज़ार होता है। मगर हमारा गाँव छोटा है, इसलिए यहाँ मंगलवार को पास के शहर के कई दूकानदार तरह-तरह का माल लेकर आते हैं। सैंकड़ों रुपयों की खरीद-फरोख्त होती है। चारों तरफ बड़ी भीड़ नज़र आती है। तब यहाँ दूकानों की कतारें लगती हैं।

ये हैं शाक-भाजी की दूकानें। यहाँ सब प्रकार की सब्ज़ी-तरकारी मिलती है। अरवी, पालक, मेथी, चौलाई, गोभी, मटर, बैंगन, कद्दू, लौकी, टमाटर, धनिया आदि के ढेर के ढेर यहाँ दीखते हैं। दूसरी तरफ अमरूद, केले, ककड़ी आदि की दूकानें हैं। ये सब तरकारियाँ और

फल ताज़े और साफ-सुथरे हैं। इस बाज़ार में चावल, गेहूँ, ज्वार, मूँगफली, चना, मटर आदि भी बेचने के लिए व्यापारी लाते हैं। कुम्हार मिट्टी के और ठठेरे तांबे-पीतल के बर्तन बेचते हैं। मनिहार चूड़ियाँ बेचता है। हलवाई की दूकान में लोग पेड़ा, बर्फी, जलेबी, गुलाब-जामुन आदि मिठाई खरीदते हैं। कंधी, सूई, धागा आदि फुटकर चीजें भी यहाँ बेचने के लिए लेकर लोग आते हैं। ऐसे बाज़ार से देहात के लोग हफ्ते भर के लिए ज़रूरी चीज़ें खरीदते हैं।

[स] हमारे सूबे को महाराष्ट्र कहते हैं। कोंकण, देश, विदर्भ और मराठवाडा हमारे महाराष्ट्र के छोटे-छोटे प्रमुख हिस्से हैं। बम्बई, पूना, नागपुर, सोलापुर कोल्हापुर, औरंगाबाद महाराष्ट्र के प्रमुख शहर हैं। नासिक, पंढरपुर, पैठण यहाँ बड़े पवित्र स्थान हैं। यहाँ हरसाल बड़े-बड़े मेले लगते हैं। महाराष्ट्र के लोग मराठी भाषा बोलते हैं। फिर भी हज़ारों लोग हिन्दी और अंग्रेज़ी जानते हैं। गोदावरी, कृष्णा, भीमा आदि यहाँ की मशहूर नदियाँ हैं। इसके पश्चिम में अरब सागर है; इसलिए इसके पश्चिमी किनारे पर छोटे-बड़े कई बन्दरगाह हैं। उनमें बम्बई बन्दरगाह सारी दुनिया में मशहूर है। हरसाल बम्बई से करोड़ों रुपये का माल विदेश में जाता है और करोड़ों रुपये का सामान आनेवाले जहाज़ों से बम्बई में उतारते हैं। बम्बई में कपड़े की मिलें हैं, वैसे ही छोटे-बड़े कई कारखाने हैं।

महाराष्ट्र में चावल, ज्वार, रूई, ईख, आम, नारिंगी और मुसम्मी, तरह तरह की तरकारियाँ आदि पैदा होता है। ईख से शक्कर और गुड़ बनाने के कई कारखाने भी यहाँ हैं। देहात में रहनेवाले लोग खेतीबाड़ी करते हैं और शहरों में रहनेवाले नौकरी, मजदूरी या व्यापार करते हैं।

[१३९] शब्दकोश –२५ (अ)

	हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
(अ)	हममें से	आमच्यापैकी	तरह	प्रकार [पुं.]
	ज़रूरत	आवश्यकता, गरज, जरूर	फटे-टूटे	फाटके-तुटके
			मुलायम	मऊ

	हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
	लपेटना	गुंडाळणे, आत बांधणे	हर रोज़	रोज, दररोज
			प्रतिदिन	,, ,,
	लेई	गोंद [पुं. स्त्री.]	गूदा	लगदा [पुं.]
	छपना	छापले जाणे	महीन	पातळ
(ब)	अरवी	अळू [न.]	लौकी	दुध-भोपळा [पुं.]
	यहाँ तक कि	इतकेच नव्हे तर, येथपर्यंत की	धागा	धागा, दोरा [पुं.]
			पालक	पालक भाजी [पुं.]
	मनिहार	कासार [पुं.]	सब्ज़ी	पालेभाजी
	गोभी	कोबी [स्त्री.]	पुड़िया	पुडी
	कंधा	कंगवा [पुं.]	पेड़ा	पेढा
	कंघी	फणी [स्त्री.]	चूड़ी	बांगडी
	मटर	मटार [पुं.]	आलू	बटाटा [पुं.]
	खरीद	खरेदी [स्त्री.]	तरकारी	भाजी
	गेहूँ	गहू [पुं.]	(बाज़ार मेला) लगना	(बाजार, यात्रा) भरणे
	गुलाब-जामुन	गुलाम-जाम [पुं.]		
	चना [ने]	चणे, हरभरे	कद्दू	भोपळा [पुं.]
	चौलाई	चवळई [स्त्री.]	मेथी	मेथी [स्त्री.]
	जलेबी	जिलबी	मेला	यात्रा, जत्रा [स्त्री.]
	पास-पड़ोस के	जवळपासचे, शेजारपाजारचे	बैंगन	वांगे [न.]
			फरोख्त	विक्री
	ज्वार	ज्वारी [स्त्री.]	मूंगफली	शेंगदाणे
	टमाटर	टोमॅटो [पुं.]	सैंकड़ों	शेकडो
	नज़र आना, दिखाई देना, दीखना	दिसणे, नजरेस पडणे	ढेर	ढीग [पुं.] रास [स्त्री.]
			सूई	सुई, सूय [स्त्री.]

	हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
(स)	ऊख	ऊस [पुं.]	बंदरगाह	बंदर [न.]
	रूई	कापूस [पुं.]	मज़दूरी	मजूरी
	मिल	गिरणी [स्त्री.]	मसम्मी	मोसंबी [न.]
	दुनिया	जग [न.]	साल	वर्ष [न.]
	हर	प्रत्येक	खेतीबाड़ी	शेतवाडी, शेती
	मशहूर	प्रसिद्ध	सारी	सगळी, सर्व, सारी

अभ्यास-२

[१४०] हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) शेतकरी

आपल्या भारताची लोकसंख्या सुमारे ५५ कोटी आहे. त्यापैकी जवळ जवळ ८० टक्के लोक खेडेगावात राहतात. आपल्या देशात अशा खेडेगावांची संख्या पाच लाखांपेक्षा जास्त आहे. हे लोक शेतीभाती करतात. हे शेतकरी गरीब आहेत. ते फार उद्योगी आहेत. शेतात ते नाना प्रकारची कामे करतात. जमीन नांगरणे, माती सारखी करणे, बी पेरणे, लावणी करणे, शेताची राखण करणे, शेताला पाणी देणे किंवा शिंपण करणे, खत घालणे इत्यादी कामे शेतकरी वेळोवेळी करतो. हंगामात तो सकाळपासून संध्याकाळपर्यंत शेतात राबतो. शेतकऱ्याच्या घरची सर्वच् माणसे निरनिराळी कामे करतात. त्याची मुलगे शेत नांगरण्याच्या कामी त्याला मदत करतात. कोणी गुरे चरावयास नेतात. कोणी शेताची राखण करतात. पण या सर्वांत त्याचे खरे मदतनीस म्हणजे त्याचे बैल होत. शेती-भातीच्या कामी सर्वात कठीण काम ते करतात. म्हणून शेतकरी बैलांवर आपल्या प्राणांपेक्षाही अधिक प्रेम करतो. त्यांची तो सेवा-सुश्रूषा करतो—त्यांना तो देव मानतो. हे शेतकरीच् आपल्यासाठी नाना तऱ्हेची धान्ये पिकवतात. गहू, तांदूळ, ज्वारी, बाजरी, मका इत्यादी धान्ये, कापूस, निरनिराळ्या प्रकारच्या पाले-भाज्या, फळे, इत्यादी आपल्यासाठी शेतकरीच् पैदा करतो. म्हणून शेतकरी हा आपला खरा मदतनीस आहे.

(ख) दूध

चहा, कॉफी, दूध, कोको, निरनिराळी सरबते ही पेये आहेत. जरी चहा सर्वत्र दिसत असला, तरी चहा काही सर्वश्रेष्ठ पेय नव्हे. चहापेक्षा कॉफी चांगली, कॉफीपेक्षा कोको चांगला, पण त्यापेक्षाही दूध चांगले आहे. ही पेये बनवण्यासाठी दुधाची गरज आहे ती वेगळीच. दुधात सर्व प्रकारची जीवन-सत्त्वे आहेत. म्हणून ते आरोग्याला फार फायदेशीर आहे. दूध काहीसे गोडही असते, म्हणून ते रुचकर लागते. लहान मुलांचे पोषण तर दूधावरच होते. म्हणून दूध हे उत्तम अन्न आहे. दूधापासून अनेक पदार्थ बनवितात. मलई, खवा, खीर, बासुंदी हे पदार्थ कोणाला माहीत नाहीत ? दही, ताक, लोणी, तूप हे पदार्थ दुधापासूनच बनवितात. तूप व खवा यापासून नाना प्रकारच्या मिठाया बनवितात. हे पदार्थ कोणाला आवडत नाहीत ? (वेगळीच = अलाहिदा, अलग)

आपल्याला दूध मुख्यतः गाई व म्हशी यांपासून मिळते. शेळीचे दूध पण काही लोक पितात. पण गाईचे दूध सर्वांत चांगले असते. ते जरी थोडे पातळ असले, तरी ते अधिक पौष्टिक असते. ते पचनाला हलके असते. म्हशीचे दूध जरा घट्ट व पचनाला थोडे जड असते. म्हणून लहान मुलाला गाईचे दूध पाजतात. (पण, सुद्धा = भी; घट्ट = घना)

(ग) पोस्ट ऑफिस

आपण आपल्या मित्राला किंवा एखाद्या नातेवाइकाला पत्र लिहितो. ते पत्र पोस्टाच्या पेटीत टाकतो. अशा पेट्या ठिकठिकाणी आढळतात, तेथून पोस्टाचा शिपाई अशी सर्व पत्रे पोस्टात नेतो. तेथून ती निरनिराळ्या गावी पाठवतात व दुसऱ्या गावाहून पोस्टात आलेली पत्रे पोस्टाचे शिपाई लोकांकडे पोहोचवितात. या पोस्टाची व्यवस्था सरकार करते. पोस्टात निरनिराळे लोक वेगवेगळाली कामे करतात. कार्डे-पाकिटे-तिकिटे विकणे, तारा घेणे व पोहोचवणे, रजिस्टरे करणे इत्यादी कामे तेथे होतात. शिवाय प्रत्येक पोस्टात बँक पण असते. लोक आपले पैसे तीत ठेवतात. सरकारचे पोस्ट खाते त्या पैशावर आपल्याला व्याज पण देते. एका गावाहून दुसऱ्या गावी टपाल गाडीने, मोटारीने, आगगाडीने

किंवा विमानाने सुद्धा पाठवतात. त्यामुळे दूरच्या ठिकाणी पत्रे लवकर पोहोचतात. काही पोस्टात टेलीफोनसुद्धा असतात. त्यामुळे दूरदूरच्या ठिकाणच्या लोकांशी लोक सहज व्यवहार करू शकतात. तारेने जलद बातमी पाठवतात. पोस्ट खाते या सर्व कामासाठी पैसे घेते. पण तो पैसा फारच् कमी असतो. दहा नव्या पैशांचे कार्ड हिंदुस्थानात कोठेही जाते. वीस पैशाच्या लिफाफ्यात अधिक मजकूर जातो. पंधरा पैशातही पत्र पाठविण्याची सोय आहे. लोक मनिऑर्डर करून कोठेही पैसे पाठवतात. लहान मोठ्या वस्तूंचे पार्सल करतात. अशा रीतीने पोष्टामुळे आपली फार मोठी सोय होते. हल्ली प्रत्येक मोठ्या गावी पोस्ट आहे. मोठ्या शहरात तर कित्येक पोस्ट ऑफिसे असतात. ही पत्रे, मनीऑर्डरी इत्यादीला टपाल किंवा डाक असे म्हणतात. हे टपाल पोहोचविणाराला टपालवाला किंवा पोस्टमन असे म्हणतात.

[१४१] शब्दकोश–१५ (आ)

[क]

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
खत [न.]	खाद	मदतनीस	मददगार
खरा–रे	सच्चा–च्चे	माती	मिट्टी
—च्या पैकी	–में से	माती सारखी करणे	मिट्टी गोड़ना
–जवळ जवळ / –सुमारे	लगभग	राखण [स्त्री.]	रखवाली
		राबणे	मेहनत करना
टक्के [शेकडा]	प्रतिशत	लावणी [स्त्री.]	रोपाई
तऱ्हा [स्त्री.]	प्रकार	लोकसंख्या [,,]	आबादी
निरनिराळे-ळी / नाना	भिन्न-भिन्न	वेळोवेळी	समय-समय पर
		पिकवणे	पैदा करना
नाना प्रकारचे	भिन्न-भिन्न प्रकार के	शिपणे [न.]	सिंचाई
		संख्या	तादात
बाजरी	बाजरा	सरबत [न.]	शरबत

मराठी	हिंदी	मराठी	हिंदी
भाजीपाले	साग-तरकारियाँ	होत [क्रिया]	होते हैं।
मका [पुं.]	मकई	हंगाम [पुं.]	मौसम

[ख]

मराठी	हिंदी	मराठी	हिंदी
आढळणे	दिखाई पड़ना	मलई [स्त्री.]	मलाई
आरोग्य [न.]	तन्दुरुस्ती, सेहत	माहीत	मालूम
काहीसे	कुछ, ज़रा-सा	मुख्यतः	विशेषत:
जड	भारी	शेळी	बकरी
जरा	थोड़ा, कुछ	जीवन-सत्त्व [न.]	विटामिन
पचन [न.]	पाचन, हाज़मा	पेय [न.]	पेय
फायदेशीर	फायदेमन्द	बासुंदी (स्त्री.)	बसौंधी

[ग]

मराठी	हिंदी	मराठी	हिंदी
अशा रीतीने	इस तरह	आजकाल, हल्ली, सध्या	आजकल
आगगाडी	रेलगाड़ी	कार्ड, पत्र [न.]	कार्ड, पत्र
आलेली	आई हुई	कमी	कम
टपाल [न.]	डाक	पोस्टाचा शिपाई	डाकिया
टपालवाला, डाकवाला, पोस्टमन	डाकिया	पोहोचविणे	पहुँचाना
		बातमी	खबर
व्याज [न.]	सूद	मजकूर [पुं.]	मज़मून
ठिकाण [न.]	स्थान	शिवाय	अलावा, अतिरिक्त
ठिकठिकाणी	स्थान-स्थान पर	सहज	आसानी से
तार [स्त्री.]	तार	सोय [स्त्री.]	सुविधा
दूरदूरच्या	दूरदूर के	नातेवाईक	रिश्तेदार
पेटी [स्त्री.]	बक्स		

✦ ✦

विभाग – २

१६. सामान्य भविष्यत्-काल

[१४२] नीचे लिखे वाक्य पढ़िए और मोटे टाईप में छपे हुए शब्दों पर गौर कीजिए :–

हिन्दी	मराठी
१. मैं कुर्सी पर **बैठूँगा–गी** ।	१. **मी** खुर्चीवर **बसेन.**
२. हम किताब **पढ़ेंगे–गी** ।	२. आम्ही पुस्तक **वाचू.**
३. तू कहानी **पढ़ेगा–गी** ।	३. तू गोष्ट **वाचशील.**
४. तुम गीत **गाओगे–गी** ।	४. तुम्ही गीत **गाल** (म्हणाल).
५. आप मेरे साथ पत्ते **खेलेंगे–गी** ।	५. आपण माझ्याबरोबर पत्ते खेळाल.
६. वह अपने भाई को चिट्ठी **लिखेगा-गी** ।	६. तो-ती-ते आपल्या भावाला पत्र **लिहील.**
७. वे हमारे साथ **चलेंगे** ।	७. ते-त्या-ती आमच्या बरोबर **चलतील.**

बसेन (= बैठूँगा), **वाचू** (= पढ़ेंगे), **वाचशील** (= पढ़ेगा), **खेळाल** (= खेलेंगे) आदि क्रियाएँ भविष्यत्-काल में हैं। इन्हें **यों** समझाया जाएगा –

बसेन = बसणे – बस + ईन = बसेन

वाचू = वाचणे – वाच + ऊ = वाचू

खेळाल = खेळणे – खेळ + आल = खेळाल इत्यादी ।

[१४३] इससे मराठी में भविष्यत्-काल की क्रियाओं के रूप बनाए जा सकेंगे । मराठी में भविष्यत्-काल में मूल क्रिया में नीचे लिखे प्रत्यय लगाए जाते हैं :–

पुंलिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग

	एकवचन		बहुवचन
उत्तम पुरुष :	ईन	एन	ऊ
मध्यम पुरुष :	शील		आल
अन्य पुरुष :	ईल	एल	तील

[१४४] कुछ क्रियाओं के रूप :--

(अ) **अ-कारान्त** धातु – सकर्मक **१. करणे** (तीनों लिंगों में)

उ. पु. : मी करीन. आम्ही करू.
म. पु. : तू करशील. तुम्ही कराल, आपण कराल.
अ. पु. : तो-ती-ते करील. ते-त्या-ती करतील.

(ब) **अ-कारान्त** धातु – अकर्मक **२. बसणे**

उ. पु. : मी बसेन. आम्ही बसू.
म. पु. : तू बसशील. तुम्ही – आपण बसाल.
अ. पु. : तो-ती-ते बसेल. ते-त्या-ती बसतील.

(स) इसमें यह ध्यान में रखिए कि अ-कारान्त (मूल) क्रिया का अन्त्य **अ** और **ईन, एन, ईल** जैसे प्रत्यय में से आद्य **ई** या **ए** स्वर मिलकर **ई या ए** होते हैं। जैसे–

बस + एन = बस् + अ + एन = बसेन.
कर + ईन = कर् + अ + ईन = करीन.

(ड) **आ-कारान्त** **३. खाणे**

उ. पु. : मी खाईन. आम्ही खाऊ.
म. पु. : तू खाशील. तुम्ही **खाल**, आपण **खाल.**
अ. पु. : तो-ती-ते खाईल. ते-त्या-ती खातील.

सूचना – मोटे टाईप में छपे हुए शब्दों पर गौर कीजिए। मूल क्रिया का अन्त्य **आ** और प्रत्यय का **आ** एक होते हैं।

(ई) **इ-कारान्त** **४. पिणे**

उ. पु. : मी **पिईन.** आम्ही पिऊ.
म. पु. : तू पिशील. तुम्ही **प्याल**, आपण **प्याल.**
अ. पु. : तो-ती-ते **पिईल.** ते-त्या-ती पितील.

सूचना – मोटे टाईप में छपे शब्दों पर गौर कीजिए।

(फ) उ-कारान्त ५. धुणे

उ. पु. : मी **धुवीन.** आम्ही धुऊ.
म. पु. : तू धुशील. तुम्ही **धुवाल**, आपण **धुवाल.**
अ. पु. : तो-ती-ते **धुवील.** ते-त्या-ती धुतील.

सूचना— मोटे टाईप में छपे शब्दों पर गौर कीजिए।

(ग) ए-कारान्त ६ देणे

उ. पु. : मी देईन. आम्ही देऊ.
म. पु. : तू देशील. तुम्ही **द्याल**, आपण **द्याल.**
अ. पु. : तो-ती-ते देईल. ते-त्या-ती देतील.

सूचना— मोटे टाईप में छपे शब्दों पर गौर कीजिए। इसी प्रकार '**घेणे**' से '**घ्याल**' **रूप** बनेगा।

[१४५] कतिपय अन्य विशेष क्रियाएँ :—

	७. होणे	८. असणे
उ. पु. :	मी होईन; आम्ही होऊ.	मी असेन; आम्ही असू.
म. पु. :	तू होशील; तुम्ही / आपण } व्हाल.	तू असशील; तुम्ही / आपण } असाल.
अ. पु. :	तो-ती-ते होईल; ते-त्या-ती होतील.	तो-ती-ते असेल; ते-त्या-ती असतील.

[१४६] भविष्यत्-काल में **निषेध-सूचक रूप** यों बनाए जाते हैं— मूल क्रिया में **णार** प्रत्यय जोड़ा जाए और उसके साथ **नाही** (नाहीस, नाहीत) शब्द रखा जाए। सभी सर्वनामों के साथ यही **रूप** रहेगा। जैसे —

मी जाणार नाही (= मैं नहीं जाऊँगा।)
तो करणार नाही (= वह नहीं करेगा।)

नमूने के लिए —

९. जाणे

उ. पु. : मी जाणार नाही. आम्ही जाणार नाही.
म. पु. : तू जाणार **नाही(स)**. तुम्ही जाणार नाही, आपण जाणार नाही.

अ. पु. : तो-ती-ते जाणार नाही. ते-त्या-ती जाणार नाही (त.)

सूचना – नाही-नाहीस, नाही-नाहीत – दोनों रूप सही हैं।

१०. नसणे (= नहीं होना)

उ. पु. : मी नसेन. आम्ही नसू.

म. पु. : तू नसशील. तुम्ही–आपण नसाल.

अ. पु. : तो-ती-ते नसेल. ते-त्या-ती नसतील.

[१४७] नमूने के लिए वाक्य –

हिन्दी	मराठी
१. आज शाम को मेरा मित्र इलाहाबाद से आएगा।	१. आज संध्याकाळी माझा मित्र अलाहाबादहून येईल.
२. व्यापारी इसमें हज़ारों रुपये नफा कमाएँगे।	२. व्यापारी यात हज़ारो रुपये नफा मिळवतील (कमावतील).
३. कल इस वक्त मैं दिल्ली में हूँगा।	३. उद्या या वेळी मी दिल्लीत असेन.
४. हम विदेशी लोगों के सामने सिर नहीं झुकाएँगे।	४. आम्ही परदेशी लोकांसमोर मान वाकविणार नाही.
५. लड़कियाँ परिषद के आरम्भ में स्वागत-गीत गाएँगी।	५. मुली परिषदेच्या आरंभी स्वागत-गीत म्हणतील (गातील).

मराठी	हिन्दी
१. आपण आम्हाला हिंदी शिकवाल का ?	१. क्या आप हमें हिन्दी पढ़ाएँगे ?
२. ती असले वाईट काम कधीही करणार नाही.	२. वह ऐसा बुरा काम कभी भी नहीं करेगी।
३. तुम्ही काश्मीरहून आम्हाकरिता शाल आणाल का ?	३. क्या तुम कश्मीर से हमारे लिए शाल लाओगे ?
४. आमचे मांज़र उंदीर पकडून खाईल.	४. हमारी बिल्ली चूहों को पकड़कर खाएगी।
५. रात्री वीज चमकेल, ढगांचा गडगडाट होईल व पाऊस पडेल.	५. रात को बिजली चमकेगी, बादलों की गड़गड़ाहट होगी और बारिश होगी।

[१४८]

शब्दकोश–१६ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
कक्षा	इयत्ता, यत्ता	बादल	ढग, मेघ [पुं.]
उड़ाना	उडविणे	फैलना	पसरणे
परोसना	अन्न [पानात] वाढणे	बरसात	पावसाळा [पुं.]
कभी भी नहीं	कधीही नाही	बदलना	बदलणे
गुठली	कोय,, बाठ [स्त्री.]	गुड़िया	बाहुली
गुफा	गुहा [स्त्री.]	माँगना	मागणे
गड़गड़ाहट	गडगडाट [पुं.]	यहाँ से, इधर से	येथून
गुनगुनाना	गुणगुणणे	मुड़ना	वळणे
गुदड़ी	गोधडी [स्त्री.]	बढ़ना	वाढणे, मोठे होणे
गुम्बज	घुमट [पुं.]	खोजना	शोधणे
डगमगाना	डगमगणे	चिथड़ा	फाटकेंकापड
वहाँ से, उधर से	तेथून	ढूंढ़ना	शोधणे, धुंडणे

शब्दकोश–१६ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
आंगण [न.]	आँगन	पाऊस पडणे	बारिश होना
जमविणे	जमा-इकट्ठा करना	पोळे [न.]	छत्ता
आतडे [न.]	आँत	भगवा	गेरुआ
केशर [न.]	केसर	मध [पुं.]	शहद
केसरी	केसरिया	मधमाशी	मधुमक्खी
चमकणे	चमकना	मान [स्त्री.]	गर्दन
चांदणे [न.]	चाँदनी	मान वाकवणे	सिर झुकाना
निशाण [न.]	निशान	मिळवणे	कमाना
झेंडा	झंडा	वजन	भार, वज़न
धुरकट	धुंधला	घुबड [न.]	उल्लू
धडा, पाठ [पुं.]	पाठ	वजन करणे	तौलना
पाळणे	पालना	वाकविणे	झुकाना

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
फडकविणे	फहराना	वाकणे	झुकना
फसविणे	धोखा देना	[मागे] हटणे	पीछे हटना
संधि [स्त्री.]	मौका	माघार घेणे	

शब्दकोश–१६ (इ)

[अ] नीचे लिखे शब्द मराठी में भी हैं —

पतंग [पुं.],	मैदान [न.],	शाल [स्त्री.]	भाषण [न.]
खजूर [,,],	दैव [,,],	मार [पुं.]	दुर्भाग्य [,,]
आश्रम [,,],	आधार [पुं.],	पाप [न.]	पुण्य [,,]

[आ] क्रमवाचक संख्या —

पहिला – पहला	दुसरा—दूसरा	तिसरा—तीसरा
चौथा—चौथा	पाचवा—पाँचवाँ	सहावा—छठा
सातवा, आठवा,	नववा—नवाँ	दहावा

इस प्रकार आगे की हर संख्या में ' वा ' प्रत्यय लगाने से क्रमवाचक संख्या विशेषण बनते हैं।

पुं.	स्त्री.	न.
पहिला	पहिली	पहिले
दहावा	दहावी	दहावे इत्यादी

[१४९] अनुवाद खण्ड–१६

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए––

१. हम शाम को पतंग उड़ाएँगे। २. वह चिथड़ों से गुड़िया बनाएगी। ३. जाड़े के दिनों में वह बुढ़िया गुदडी ओढ़कर सोएगी। ४. पहले मेघों की गड़गड़ाहट होगी और उसके बाद बारिश होगी। ५. वह काम करते-करते हम नई-नई बातें सीखेंगे। ६. मैं विजापुर जाकर गोल गुम्बज देखूंगा। ७. संकट के समय वे कभी पीछे नहीं हटेंगे। ८. जब आप बम्बई जाएंगे तब वहाँ से मेरे लिए क्या लाएँगे ? ९. क्या तुम मुझे गाना सिखाओगी ? १०. जो बिल्ली मैं पालूंगा, वह चूहों को पकड़ेगी। ११. तू

क्या उसे चिट्ठी नहीं लिखेगी ? १२. हम आँखमिचौनी नहीं खेलेंगी १३. जब मौका मिलेगा तब जनता को लूटकर व्यापारी नफा कमाएँगे १४. आज शाम को हम आग्रा देखेंगे और कल हम दिल्ली जाएँगे १५. मैं दसवीं कक्षा में संस्कृत सीखूँगी। १६. उस मैदान में हम हररोज़ कबड्डी खेलेंगे।

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए —

१. आम्ही शत्रूपुढे मान वाकविणार नाही. २. त्या चिखलात तुम्ही पडाल. ३. ते त्या किल्ल्यावर झेंडा फडकवितील. ४. जर संध्याकाळी पाऊस पडेल तर अंगणात चिखल होईल. ५. ते बरोबर वज़न करतील. ६. तुम्ही लोकांना फसवू नका; नाही तर लोक तुम्हाला फसवतील. ७. धुराने ह्या काचा धुरकट होतील. ८. ज़र तू आजारी पडलास, तर तुला कोणीही मदत करणार नाही. ९. मी तलावात उडी मारीन. १०. मधमाशा आपल्या पोळ्यात मध जमवतील. ११. वीज़ चमकेल व पाऊस पडेल. १२. तुमच्या पुस्तकात किती धडे आहेत ? १३. दहावा धडा वाच. १४. तो संन्यासी भगवे कपडे घालतो. १५. जीवनात पैसा हा माणसाचा मोठा आधार असतो.

✦ ✦ ✦

१७. कृदन्त संज्ञा और कुछ विशेष शब्द-प्रयोग

[१५०] करना, देना, पीना आदि क्रियाएँ हैं। तथापि इन शब्दों का प्रयोग उनसे सूचित होनेवाली क्रिया करने के अर्थ में संज्ञाओं के रूप में भी होता है। जैसे —

१. मैं **तैरना** जानता हूँ। (= तैरने की क्रिया)

२. शराब **पीना** बुरा है। (= पीने की क्रिया)

मराठी में भी इसी तरह **करणे, देणे पिणे** आदि शब्दों का प्रयोग संज्ञाओं के रूप में होता है। जैसे—

१. **पोहणे** फार चांगली कला आहे. (= **तैरना** बहुत अच्छी कला है।) २. दूध **पिणे** चहा पिण्यापेक्षा चांगले आहे. (= दूध **पीना** चाय पीने से अच्छा है।

[१५१] ऐसे शब्दों में सभी कारकों की विभक्तियाँ और सम्बन्ध-सूचक अव्यय जोड़े जा सकते हैं। विभक्ति या सम्बन्ध-सूचक लगने से पहले अन्य संज्ञाओं की भाँति इनका भी विकृत रूप होता है। ये विकृत रूप दो-तीन प्रकार के होते हैं। उदाहरण के लिए —

१. **करणे — करण्या** (ला), **करावया** (ला), **कराय** (ला)
२. **खाणे — खाण्या** (चा), **खावया** (साठी), **खाय** (ला)
३. **वाच़णे— वाच़ण्या** (त), **वाच़ावया** (ला), **वाच़ाय** (च़े)

[१५२] सभी विभक्तियों के साथ एक शब्द—

सांगणे

(**मराठी विभक्ति**) – **प्रथमा**–सांगणे

द्वितीया – सांगण्यास-ला-(ते); सांगावयास-ला-(ते) सांगायला

तृतीया – सांगण्याने

चतुर्थी – (द्वितीया के रूपों के अनुसार)

पंचमी – सांगण्याहून

षष्ठी – सांगण्याच़ा, सांगावयाच़ा, सांगायच़ा...इत्यादी

सप्तमी – सांगण्यात.

सूचनाएँ– १. ऐसा शब्द नपुंसकलिंग भाववाचक संज्ञा होता है, इसलिए बहुधा उसका बहुवचन में प्रयोग नहीं होता। अगर कहीं करना हो तो ए–कारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा के अनुसार किया जाए।

२. ऐसे शब्द में सभी विभक्तियाँ जोड़ी जाती हों, सो बात नहीं है। कुछ विभक्तियों (जैसे–**ने**, आत) के प्रयोग में सिर्फ एक ही विकृत रूप होता है। जैसे–**सांगण्यात, सांगण्याने** (सांगाय, सांगावया– नहीं होते।)

३. साधारण नियम यों है–जहाँ जो शब्द कानों को खटकता है, उसका प्रयोग न किया जाए।

[१५३] **सम्बन्ध-सूचकों की जोड़** —

१. सांगण्या**साठी**, सांगायसाठी, सांगावयासाठी = कहने के लिए

२. करण्यासारखे, करायसारखे, करावयासारखे – करने योग्य
३. म्हणण्याविरुद्ध – – कहने के विरुद्ध
४. बोलण्यासाठी – – बोलने के लिए
५. लिहिण्यामुळे – – लिखने के कारण

[१५४] नीचे लिखे प्रयोग ध्यान में रखिए :—

फिरावयाला (फिरायला) – घूमने, घूमने के लिए

१. आम्ही रोज़ संध्याकाळी **फिरायला** ज़ातो–हम रोज़ शाम को घूमने जाते हैं।

२. त्याला **बोलवायला** कोण ज़ाईल ? – उसे बुलाने (के लिए) कौन जाएगा ?

३. माझ्या **सांगण्या**विरुद्ध तो काम करतो – मेरे कहने के विरुद्ध वह काम करता है।

४. करने के पहले – **करण्यापूर्वी, करावयाच्यापूर्वी**। काम पूर्ण **करण्यापूर्वी फिरायला** ज़ाऊ नका – काम पूर्ण करने के पहले घूमने मत जाओ।

५. करते वक्त – करताना, करायच्या वेळी। **खाते समय** – खायच्या वेळी.

[१५५] कुछ शब्दों का भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयोग —

(अ) **कपड़े 'पहनना'** के लिए मराठी में भिन्न-भिन्न प्रयोग—

१. लोक **कपडे घालतात** : **कपडे घालणे** = कपड़े पहनना (**घालणे**=पहनना)

२. पुरुष **धोतर नेसतात** = पुरुष **धोती पहनते** हैं (धोतर **नेसणे** = धोती **पहनना**) वैसे ही – स्त्रियाँ साड्या **नेसतात.**
मराठी में 'पहनना' के अर्थ में **घालणे** और **नेसणे** का प्रयोग वस्त्र-विशेष के अनुसार होता है–
लंगोटी, धोतर, साड़ी, लुगडे—**नेसणे**
टोपी, पायज़मा, पँट, कोट, शर्ट —**घालणे**

(आ) **काढणे** का साधारण अर्थ है **निकालना**। फिर भी इसके कई विशेष अर्थ यों होते हैं –

१. गवळी दूध **काढतो.** (दूध **काढणे** = दुहना)
२. बावाजी सूत **काढतात.** (सूत **काढणे** = सूत कातना)
३. आम्ही तिकिट **काढतो.** (तिकिट **काढणे** = टिकट कटाना)
४. सावकार गरीब शेतकऱ्यापासून जास्त पैसे **काढतो** = साहूकार गरीब किसानों से ज़्यादा पैसे उगाहता है।
पैसे काढणे - (यहाँ) उगाहना; (जास्त = ज़्यादा)
५. मुलाच्या लग्नासाठी रामजी दोन शे रुपये **काढतो** = बेटे की शादी के लिए रामजी दो सौ रुपये कर्ज लेता है।
रुपये (पैसे) **काढणे** = कर्ज़ लेना।
६. **पीक काढणे** = फसल पैदा करना, फसल निकालना। बंगालमध्ये काही ठिकाणी शेतकरी वर्षातून दोन-दोन **पिके काढतात.** (= बंगाल में कुछ स्थान पर किसान साल में दो-दो फसलें निकालते हैं।)
७. **चित्र काढणे**–चित्र खींचना। **फोटो काढणे**–तस्वीर उतारना। तो **चित्रे** चांगली **काढतो.** (=वह चित्र अच्छे खींचता है।)
८. **कशीदा–नक्शी, बेलबुट्टी काढणे** = कसीदा नक्काशी-बेलबूटे काढ़ना – बनाना। विमल कशीदा काढते. मुलगा कागदावर नक्शी काढतो. साडीवर बेलबुट्टी काढा. (= विमला कसीदा काढ़ती है। लड़का कागज़ पर नक्काशी करता है। साड़ी पर बेलबूटे बनाओ।)
९. **बातमी–माहिती काढणे**–खबर, जानकारी मालूम कर लेना। गुप्त हेर दुसऱ्या देशातील **बातमी–माहिती काढतात.** (जासूस विदेश में जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।)
१०. **फुले काढणे** = फूल तोड़ लेना।
मुले बागेत जाऊन **फुले काढतात.** (= बच्चे बगीचे में जाकर फूल तोड़ लेते हैं।)
११. **खोडी काढणे**–छेड़ना, तंग करना।
लहान मुले एकमेकाच्या **खोडचा काढतात.** (= बच्चे एक-दूसरे को छेड़ते हैं।)

(इ) 'पैदा होना' के लिए मराठी शब्द —

१. गन्दगी से बीमारियाँ **पैदा होती हैं।** – घाणीपासून रोग **उत्पन्न होतात.**

२. ऐसे युग में बड़े-बड़े महात्मा **पैदा होते हैं।** – अशा युगात मोठे मोठे महात्मा **जन्मतात.**

पैदा होना = जन्मणे, जन्म घेणे.

[१५६] नमूने के लिए वाक्य –

हिन्दी	मराठी
१. सुबह खुली हवा में घूमने जाना तन्दुरुस्ती के लिए अच्छा होता है।	१. सकाळी मोकळ्या हवेत फिरावयास जाणे आरोग्याला चांगले असते.
२. मैं रोज़ वाचनालय में समाचार-पत्र पढ़ने के लिए जाता हूँ।	२. मी रोज़ वाचनालयात वर्तमान-पत्रे वाचावयास ज़ातो.
३. उसे ताश लाने को कह दो।	३. त्याला पत्ते आणायला सांगा.
४. झूठ बोलने से हमारी ही हानि होती है।	४. खोटे बोलण्याने आपलेच नुकसान होते.
५. नई धोती (पहनकर) और गांधी टोपी पहनकर मेरे साथ चलो।	५. नवे धोतर नेसून व गांधी टोपी घालून माझ्याबरोबर चल.

मराठी	हिन्दी
१. येथील स्त्रिया साड्या नेसतात.	१. यहाँ की स्त्रियाँ साड़ियाँ पहनती हैं।
२. माझ्या म्हणण्याप्रमाणे कर, त्यापासून तुला फायदा होईल.	२. मेरे कहने के अनुसार करो, उससे तुम्हें लाभ होगा।
३. विणणे, शिवणे-टिपणे, कशीदा काढणे, चित्रे काढणे इत्यादी कला ह्या मुली शिकतात.	३. बुनना, सीना-पिरोना, कसीदा करना, चित्र खींचना आदि कलाएँ ये लड़कियाँ सीखती हैं।
४. ज़र मुलींची खोडी काढाल तर पोलिस तुम्हाला पकडतील.	४. यदि लड़कियों को छेड़ोगे तो पुलिस तुम्हें पकड़ेगी।
५. पंजाबात गहू पिकतो तर बंगाल-मध्ये तांदूळ फार होतो.	५. पंजाब में गेहूँ पैदा होता है, तो बंगाल में चावल बहुत होता है।

[१५७] शब्दकोश–१७ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
अफीम	अफू [स्त्री.]	भंग	भांग [स्त्री.]
पिरोना	ओवणे	मच्छर	डांस, मच्छर [पुं.]
आँवला	आवळा [पुं.]	शराब	दारू [स्त्री.]
उगाहना	(पैसे) उकळणे	शराबी	दारुडा
कसीदा	कशीदा [स्त्री.]	नक्काशी	नक्शी [स्त्री.]
कसीदा[इ.]काढना	कशीदा इ. काढणे	बोरा	पोते [न.], गोण [स्त्री.]
कतरव्योंत	काटकसर [स्त्री.]	चींटी	मुंगी [स्त्री.]
छेड़ना {	खोडी काढणे	खुला	मोकळा
	छेडणे	मौरना	मोहोरणे
घिसना	घासणे	दीमक	वाळवी [स्त्री.]
बर्तन माँजना	(भांडी)घासणे	बेलबूटे	वेलबुट्टी [,,]
घूंसा, मुक्का	ठोसा, बुक्का	सीना–पिरोना	शिवणे-टिपणे
घूंसा–मुक्का जमाना	ठोसा मारणे	बेहोश	बेशुद्ध

शब्दकोश–१७ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
(च्या) अगोदर, च्या पूर्वी	[के] पहले	पळी [स्त्री.]	करछुली
केरकचरा [पुं.]	कूडा-करकट	पाटा [पुं.]	सिल
कुटणे	कूटना, पीसना	पेठ [स्त्री.]	मुहल्ला
दळणे	दलना	पोळपाट [पुं.]	चकला
खल [पुं.]	खरल	बत्ता [पुं.]	बट्टा
गुप्त पोलीस [पुं.]	खुफिया पुलिस	–च्या बद्दल	[के] उपलक्ष्य में
नेसणे	[धोती, साड़ी] पहनना	लचक भरणे	मोच आना
(–च्या) जोगा	[के] योग्य	संसार, प्रपंच [पुं.]	गिरस्ती
तळणे	तलना	–च्या सारखा	[-के] समान
तपासणे	जाँचना		[-के] योग्य
तपासणी [स्त्री.]	जांच	शिलाई [स्त्री.]	सिलाई
दरी [स्त्री.]	घाटी	संवय [स्त्री.]	आदत
दोरी [स्त्री.]	रस्सी	सुपीक	उपजाऊ

शब्दकोश – १७ (इ)

[अ] **नीचे लिखे शब्द मराठी में भी हैं :–**

पापड [पुं.]	मादक	मधुर	प्रसन्नता
यजमान [पुं.]	यज्ञ [पुं.]	यंत्र [न.]	परिचय [पुं.]
मनोविज्ञान [न.]	मनोरम	मुखपत्र [न.]	परिचय-पत्र [न.]

[आ] पहिला – पहिल्यांदा (= पहली बार)
दुसरा – दुसऱ्यांदा (= दूसरी बार)
तिसरा – तिसऱ्यांदा (= तीसरी बार)

इस प्रकार चौथा – चौथ्यांदा, पाचवा – पाचव्यांदा, दहावा – दहाव्यांदा, शंभरावा – शंभराव्यांदा इ०। क्रमवाचक संख्या विशेषण में 'यांदा' प्रत्यय जोड़ा जाए।

[१५८] अनुवाद-खण्ड – १७

[अ] **मराठी में अनुवाद कीजिए —**

१. शराब मादक पेय है; इसलिए हम शराब कभी भी नहीं पिएँगे। अफीम, भंग, गाँजा, चरस आदि अन्य नशीली वस्तुएँ हैं। उनसे भी हम दूर रहेंगे। २. काँग्रेस का कौन-सा मुखपत्र है? ३. वह अपने पड़ोसी को घूँसा जमाता है। ४. इन बोरों में आप क्या रखेंगे? ५. दौड़ते-दौड़ते तुम गिर पड़ोगे और तुम्हारे पाँव में मोच आएगी। ६. ज़मीन पर मत सोओ; वहाँ मच्छड़, चीटियाँ हैं। तुम्हें मच्छड़ काटेंगे। ७. बरसात में लकड़ी में दीमक लगती है। ८. आप ज़रा कतरब्योंत कीजिए और पैसे बचाइए। ९. वसंत ऋतु में आम के पेड़ बौरेंगे। १०. इस काम में दूसरी बार उसे पुरस्कार मिलेगा। ११. वह कहता है कि मैं उसे चौथी बार पत्र लिखूंगा। १२. यज्ञ करके यजमान ब्राह्मणों को पैसे देंगे। १३. वह मनोरम दृश्य देखने के लिए मैं वहाँ तीसरी बार जाऊँगी। १४. ताजमहल देखने योग्य है। १५. उस काम को पूरा करने के बाद हम कहेंगे।

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

१. ही रेशमी साडी कोण नेशील ? २. सूत काढण्यासाठी मला एक चरखा द्या. ३.पाटा-वरवंटा, खलबत्ता, चमचे, पळचा या वस्तू संसारात आवश्यक आहेत. त्या घेण्यासाठी आम्ही बाजारात जाऊ. ४. मी त्याला तिसऱ्यांदा सांगणार नाही. ५. गुरुजी मुलांच्या वह्या तपासण्यासाठी येथे येतील. ६. आमचा आचारी सुद्धा पापड लाटील. ७. सरकारचे गुप्त पोलीस चोरांची बातमी काढतील. ८. काश्मीरची दरी सुपीक आहे. ९. वर्गात पहिला आल्याबद्दल मुख्याध्यापक त्याला दोन बक्षिसे देतील. १०. येथे घाण करू नका. सगळा केरकचरा कचऱ्याच्या पेटीत टाका. ११. आम्ही ह्या कंपनीचे आवळा-तेल वापरतो. १२. मोलकरीण गहू दळील. १३. ते मनोविज्ञानाचा अभ्यास करतील. १४. मसाला कुटण्यासाठी खल आणा. १५. ती आम्हाला देण्यासाठी वडे तळील. १६ आजही कित्येक लोक धोतर नेसतात; टोपी घालतात; पायजमा घालणे त्यांना पसन्त पडत नाही.

✦ ✦ ✦

१८. सामान्य भूतकाल

[१५९] ' असणे ' का भूतकाल —

		एकवचन	बहुवचन
उ. पु :	पुं.	– मी होतो. (मैं था)	आम्ही होतो. (हम थे-थीं) (तीनों लिंगों में)
	स्त्री.	– मी होते-त्ये. (मैं थी)	
	न.	– मी होते.	
म. पु. :	पुं.	– तू होतास. (तू था)	तुम्ही होता. (तुम थे-थीं) आपण होता. (आप थे-थीं) (तीनों लिंगों में)
	स्त्री.	– तू होतीस. (तू थी)	
	न.	– तू होतेस. (नपुं.)	
अ. पु. :	पुं.	– तो होता. (वह था)	: ते होते. (वे थे)
	स्त्री.	– ती होती. (वह थी)	: त्या होत्या. (वे थीं)
	न.	– ते होते.	: ती होती.

[१६०] **नसणे** (= न होना) का भूतकाल

		एकवचन	बहुवचन
उ. पु.	पुं.	– मी नव्हतो. (मैं नहीं था)	आम्ही नव्हतो. (हम नहीं थे-थीं)
	स्त्री.	– मी नव्हते-त्ये. (मैं नहीं थी)	
	न.	– मी नव्हते.	
म. पु.	पुं.	– तू नव्हतास. (तू नहीं था)	तुम्ही नव्हता. (तुम नहीं थे-थीं)
	स्त्री.	– तू नव्हतीस (तू नहीं थी)	आपण नव्हता. (आप नहीं थे-थीं)
	न.	– तू नव्हतेस.	(तीनों लिंगों में)
अ. पु.	पुं.	– तो नव्हता. (वह नहीं था)	– ते नव्हते. (वे नहीं थे)
	स्त्री.	– ती नव्हती. (वह नहीं थी)	– त्या नव्हत्या. (वे नहीं थीं)
	न.	– ते नव्हते.	– ती नव्हती.

[१६१] **होणे** (= होना) का भूतकाल—

'**होणे**' की '**हो**' मूल क्रिया 'झा' में बदल जाती है और उससे रूप बनाए जाते हैं। जैसे–

		एकवचन	बहुवचन
उ. पु.	पुं.	– मी झालो. (मैं हुआ)	आम्ही झालो. (हम हुए-हुईं)
	स्त्री.	– मी झाले-ल्ये. (मैं हुई)	(तीनों लिंगों में)
	न.	– मी झाले.	
म. पु.	पुं.	– तू झालास. (तू हुआ)	तुम्ही–आपण झाला–झालात. (तुम–आप–हुए)
	स्त्री.	– तू झालीस. (तू हुई)	तुम्ही–आपण झालात–झाला–झाल्यात. (तुम–आप–हुईं)
	न.	– तू झालेस.	तुम्ही–आपण–झाला–झालात–झालीत.
अ. पु.	पुं.	– तो झाला. (वह हुआ)	ते झाले. (वे हुए)
	स्त्री.	– ती झाली. (वह हुई)	त्या झाल्या. (वे हुईं)
	न.	– ते झाले.	ती झाली.

[१६२] **होणे** क्रिया का निषेध-सूचक रूप बनाते समय भूत-काल के रूप के साथ **नाही** शब्द का यों प्रयोग करें —

तू के साथ **नाहीस**; ते, त्या, ती के साथ '**नाहीत**'; अन्य सबके साथ '**नाही**'। जैसे—

मी झालो–ले–ल्ये नाही.	आम्ही झालो नाही.
तू झाला-ली–ले नाहीस.	तुम्ही–आपण झाला नाही.
तो झाला नाही.	ते झाले नाहीत.
ती झाली नाही.	त्या झाल्या नाहीत.
ते झाले नाही.	ती झाली नाहीत.

[१६३] नमूने के लिए कुछ वाक्य—

हिन्दी	मराठी
१. कल मैं वहाँ नहीं था।	– १. काल मी तेथे नव्हतो.
२. वे घर में थे।	– २. ते घरी होते.
३. ये वस्तुएँ मेज़ पर थीं	– ३. ह्या वस्तू टेबलावर होत्या.
४. वे सेनापति हुए।	– ४. ते सेनापती झाले.
५. तुम परीक्षा में उत्तीर्ण हुए।	– ५. तुम्ही परीक्षेत उत्तीर्ण झाला.

मराठी	हिन्दी
१. आपण यशस्वी झाला नाही.	१. आप सफल नहीं हुए।
२. ती दुर्बल झाली.	२. वह दुबली हुई।
३. आम्ही संस्थेचे सभासद झालो.	३. हम संस्था के सदस्य हुए।
४. ते आंबे खराब झाले.	४. वे आम खराब हो गए।
५. आमच्या शेतात पीक चांगले झाले नाही.	५. हमारे खेत में फसल अच्छी नहीं हुई।

[१६४] नीचे लिखे वाक्यों पर गौर कीजिए—

१. आम्ही हुतुतू **खेळलो**.	२. तू पाणी **आणलेस**.
३. ती घरी **गेली**.	४. मी पुस्तक **वाचले**.

इन वाक्यों में **खेळलो, आणलेस, गेली, वाचले** क्रियाएँ भूतकाल में हैं। अब देखेंगे कि मराठी में क्रियाओं के भूतकाल के रूप कैसे बनाए जाते हैं।

[१६५] आम तौर पर मूल क्रिया में नीचे लिखे प्रत्यय जोड़कर क्रिया का भूतकाल का रूप बनाया जाता है—

भूतकाल

	एकवचन			बहुवचन		
	पुं.	स्त्री.	न.	पुं.	स्त्री.	न.
उ. पु. :	लो	ले-ल्ये	ले	लो	लो	लो
म. पु. :	लास	लीस	लेस	ला-लात-लेत	लात-ल्यात	लीत
अ. पु. :	ला	ली	ले	ले	ल्या	ली

[१६६ अ] कुछ क्रियाओं के रूप—

१. **वाच़णे** – वाच़ला, वाचलेत, वाच़ले, वाच़ली इ.
२. **खेळणे** – खेळलो, खेळले, खेळल्ये, खेळलात, खेळली इ.
३. **लिहिणे** – लिहिला, लिहिले, लिहिली, लिहिल्या इ.
४. **नेणे** – नेलास, नेलेस, नेले, नेली, नेल्या इ.
५. **पाठविणे** – पाठविला, पाठविली, पाठविलेस इ.
६. **मारणे** – मारला, मारली, मारले इ.

[१६६ आ] अपवाद—

१. **होणे**– झ़ाला, झ़ाली, झ़ाले, झ़ालो, झ़ाल्या इत्यादी
२. **असणे**– होतो, होती, होते, होता, होत्या इत्यादी.
३. **पळणे**– पळाला, पळाली, पळाले, पळाल्या, पळालो इत्यादी.
(' पळ ' का ' **पळा** ' हो जाता है।)
४. **खाणे**– खाल्ला, खाल्ली, खाल्ले, खाल्ल्या, खाल्ले इत्यादी.
(प्रत्यय के **ल** के स्थान पर **ल्ल** होता है।)
५. **जाणे**– गेलो-गेले, गेलास-गेलीस-गेलेस, गेला इत्यादी.
(**जा** के स्थान पर **गे** आता है।)
६. **करणे**– केला-केली-केले, केल्या, केली इत्यादी.
(**कर** के स्थान पर **के** आता है।)
७. **देणे** - दिला, दिली, दिले, दिलीत इत्यादी.
(**दे** के स्थान पर **दि** होता है।)
८. **घेणे**– घेतला, घेतलो, घेतले इत्यादी.
(**घे** के स्थान पर **घेत** होता है।)

९. **धुणे**– धुतला, धुतली, धुतले इत्यादी.
(धु के स्थान पर धुत आता है।)

१०. **पिणे** - प्याला, प्याली, प्याले इत्यादी.
(पि के स्थान पर **प्या** होता है।)

११. **सांगणे**– सांगितला, सांगितली, सांगितले इत्यादी.
(**सांग** के स्थान पर **सांगित** होता है।)

१२. **येणे**– आला, आली, आले, आलात इत्यादी.
(**ये** के स्थान पर आ आता है।)

१३. **मिळणे** (मिलना, प्राप्त होना)– मिळाला, मिळाले, मिळाली इत्यादी.

[१६७] क्रियाओं का भूतकाल में जैसे हिन्दी में प्रयोग होता है, ठीक वैसे ही मराठी में होता है। अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं के प्रयोग के लिए भिन्न भिन्न नियम हैं।

[१६८] अकर्मक क्रियाओं का भूतकाल में प्रयोग :—

उद्देश्य के लिंग-वचन और पुरुष के अनुसार क्रिया के रूप को प्रयुक्त किया जाता है। हिन्दी में भी ठीक ऐसा ही प्रयोग होता है। इसलिए उसमें कोई कठिनाई नहीं मालूम होगी। जैसे–

१. **जाणे** –	मी घरी गेलो–गेले.	(मैं घर गया – गई।).
	आम्ही घरी गेलो.	(हम घर गए।).
	तू घरी गेलास–गेलीस.	तुम्ही–आपण घरी गेलात.
	तो घरी गेला.	ते घरी गेले.
	ती घरी गेली.	त्या घरी गेल्या.
	ते घरी गेले.	ती घरी गेली.

और उदाहरण --

१. मुलगी शाळेला **गेली.** – लड़की पाठशाला **गई।**
२. कमला मुंबईला **आली.** – कमला बम्बई **आई।**
३. ते मुलगे **झोपले.** – वे लड़के **सो गए।**
४. त्या वस्तू **खाली पडल्या.** – वे वस्तुएँ नीचे **गिर पड़ीं।**

५. एक सिंह वनात **मेला**. – एक शेर वन में **मर गया**।

६. चोर जंगलात **पळाले**. – चोर जंगल में **भाग गए**।

[१६९] **सकर्मक क्रियाओं का भूतकाल में प्रयोग :–**

यहाँ भी हिन्दी के अनुसार ही मराठी में प्रयोग होता है। ये नियम यों हैं :–

(अ) वाक्य के उद्देश्य में ने (करण-कारक की विभक्ति) जोड़ें।

(आ) वाक्य के कर्म के लिंग-वचन-पुरुष के अनुसार क्रिया के रूप को चुन लें। (कर्ता के लिंग-वचन-पुरुष के अनुसार क्रिया नहीं बदलती।)

उदाहरण के लिए :–

मराठी	हिन्दी
१. विद्यार्थ्याने **पुस्तक वाचले**. (पुस्तक–नपुं, ए. व.)	विद्यार्थी ने पुस्तक पढ़ी। (पुस्तक–स्त्री.)
२. विद्यार्थ्याने **पुस्तके वाचली**. (पुस्तके नपुं. ब. व.,)	विद्यार्थी ने **पुस्तकें पढ़ीं**।

३. **मी पत्र लिहिले**. (पत्र–नपुं. ए. व.) – मैंने चिट्ठी लिखी।

४. मी **पत्रे लिहिली**. (पत्रे–नपुं. ब. व.) – मैंने चिट्ठियाँ लिखीं।

५. त्याने **आंबा खाल्ला**. – उसने आम खाया।

६. त्याने **आंबे खाल्ले**. – उसने आम खाए।

[१७०] **नमूने के लिए वाक्य –**

हिन्दी	मराठी
१. अब तक मैंने ऐसी चीज कहीं **नहीं देखी**।	१. आतापर्यंत मी असली वस्तू कोठेही **पाहिली नाही**.
२. गुरुजी हमपर बहुत **गुस्सा हुए**; क्योंकि हम समय पर वहाँ **नहीं गए**।	२. गुरुजी आम्हा (आमच्या) वर फार **रागावले**; कारण (की) आम्ही तेथे वेळेवर **गेलो नाही**.
३. उन्होंने चार कापियाँ **जाँचीं**; उनमें उन्हें बहुत गलतियाँ **मिलीं**।	३. त्यांनी चार वह्या **तपासल्या**; त्यांत त्यांना पुष्कळ चुका **मिळाल्या**.

४. तुमने दरवाज़ा क्यों बन्द किया? खोलो उसे; ज़रा अन्दर हवा आएगी।	४. तुम्ही दरवाज़ा का बन्द केला? उघड़ा तो. ज़रा आत वारा येईल.
५. बाज़ार में जाकर वह दो किलो शक्कर लाया।	५. बाज़ारात जाऊन त्याने दोन किलो साखर आणली.

मराठी	हिन्दी
१. पोलिसाला कोणी बोलावले?	१. पुलिस को किसने बुलाया?
२. मी त्याला चार रुपये दिले, तेव्हा तो एवढे काम करावयाला तयार झाला.	२. मैंने उसे चार रुपये दिए; तब वह इतना काम करने को तैयार हुआ।
३. त्याने चांगला अभ्यास केला नाही, म्हणून तो नापास झाला.	३. उसने ठीक से पढ़ाई नहीं की; इसलिए वह अनुत्तीर्ण हुआ।
४. त्या मुलीने एक कविता लिहिली; मला ती बरी वाटली.	४. उस लड़की ने एक कविता लिखी; मुझे वह अच्छी लगी।
५. मे महिन्याची सुट्टी संपली. शाळा सुरू झाली, मला (माझ्यासाठी) वडिलांनी नवी पुस्तके आणली.	५. मई महीने की छुट्टी खत्म हुई। पाठशाला शुरू हुई। मेरे लिए पिताजी नई पुस्तकें लाए।

[१७१] शब्दकोश—१८ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
बदन	अंग, आंग [न.]	टहनी	डहाळी [स्त्री.]
उखाड़ना	उपटणे, उपटून टाकणे	खोंड़र	ढोली [स्त्री.]
लौटना	परतणे	लौट जाना	परत जाणे
लौट आना	परत येणे	गिराना	पाडणे

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
खाल	साल [स्त्री.] [जनावराचे] कातडे [न.]	पँखुड़ी	पाकळी [स्त्री.]
		गुलदस्ता	पुष्पगुच्छ [पुं.]
गमला	कुंडी [स्त्री.]	शाखा	फांदी, खांदी [स्त्री.]
तना	खोड [न.]	जड़	पाळ, मूळ [न.]
गूँथना	गुंफणे, माळणे	पहेली	कोडे [न.]
चढ़ना	चढणे	पौधा	रोपटे [न.]
चढ़ाना	[०च्यावर फुले वाहणे] चढ़विणे	सूँघना	हुंगणे, [०चा] वास घेणे
मलना	चोळणे	लीपना	सारवणे, लिंपणे
टुनगा	टिकशी [स्त्री.]	पोतना	,,

शब्दकोश– १८ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
कवटी, करवंटी [स्त्री.]	नरेली	चहाडी सांगणे	चुगली करना
कळणे	मालूम होना	ठोकणे	ठोंकना, पीटना
काथ्या	रेशा	ठेका [पुं.]	कॉन्ट्रॅक्ट
खणणे	खोदना	दिवस ढळणे	दिन ढलना
गर [पुं.]	गरी	[परीक्षेचा]निकाल	परीक्षा-फल
गहाण	रेहन, गिरवी	नापास	अनुत्तीर्ण
गहाण ठेवणे	रेहन रखना	पास	उत्तीर्ण
चव [स्त्री.]	ज़ायका	बीळ [न.]	बिल
गेला–मागला	पिछला	बरे, चांगले	अच्छा
चवदार, रुचकर	ज़ायकेदार	वाटणे	लगना
घर बांधणे	घर बनवाना	हातोडा [पुं.]	हथौड़ा
घसरणे	फिसलना	रेताड	रेतीला
चहाडी [स्त्री.]	चुगली	सरणे, संपणे	खत्म होना
चणे	चना	सावकार [पुं.]	साहूकार
चहाडखोर	चुगलखोर	सुरू होणे	शुरू होना

शब्दकोश– १८ (इ)

[अ] नीचे लिखे शब्द मराठी में भी हैं :—

उपवास [पुं.]	उपवन [न.]	ओजस्वी
कंजूस	कमज़ोर	कामचलाऊ
क्षत्रिय	वैश्य	नीच

[आ] एक + दा = एकदा [एक बार] कितनी बार – कितीदा ?
दोन + दा = दोनदा [दो बार]
पाच् + दा = पाच्दा [पाच बार]
शंभर + दा = शंभरदा [सौ बार]

इस तरह संख्या-वाचक विशेषण में 'दा' प्रत्यय लगाने से ऐसे आवृत्ति-सूचक संख्या विशेषण बनते हैं।

[१७२] अनुवाद-खण्ड – १८

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए :—

१. तोते ने उस पेड़ के खोड़र में घोंसला बनाया। २. उस पेड़ पर चढ़कर उसने फल और फूल तोड़े। ३. हमारे माली ने गमलों में गुलाब के पौधे लगाए। ४. नहाने के वक्त बदन को साबुन लगाओ और मल-मलकर हाथ-पाँव धोओ। ५. उस नटखट लड़के ने फूलों के पौधे उखाड़े। ६. मेज़ पर फूलदान में गुलदस्ता था। वह फूलदान किसने गिराया ? ७. वह फूल सूँघती है। ८. उसने आँगन लीपकर साफ किया। ९. तुम उस पेड़ पर चढ़कर वहाँ शाखा पर क्यों बैठे ? १०. मैंने फूल लेकर माला बनाई। ११. किसने इसकी जड़ें उखाड़ीं ? १२. बगीचे में आकर तितलियाँ टहनियों और टुनगों पर बैठीं। १३. नौकरों ने जहाज़ में सामान चढ़ाया। १४. तुम्हारा काम कब शुरू हुआ ? १५. वह तीन बार परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुई। क्या वह अब की बार भी उत्तीर्ण नहीं हुआ ?

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

१. माझी परीक्षा गेल्या [मागल्या] आठवडयात संपली. आज परीक्षेचा निकाल कळला. मी पास झालो. मला चांगले मार्क [गुण] मिळाले.

२. उंदराने घरात बीळ केले [खणले]. ३. तुम्ही आमच्या चहाड्या का सांगितल्या ? आम्ही तुम्हाला चहाडखोर म्हणू. ४. त्या स्त्रियांनी काथ्याच्या दोऱ्या बनविल्या व विकल्या; त्यांना या व्यवहारात बराच [= बहुत] पैसा मिळाला. ५. त्याने नारळाची करवंटी हातोड्याने फोडली. ६. त्या गरीब माणसाने आपले घर व शेत गहाण ठेवले व सावकारापासून हजार रुपये कर्ज काढले. ७. काल पाऊस पडला. अंगणात बराच चिखल झाला. तेथे धावता-धावता माझ्या मुलाचा पाय घसरला. ८. दिवस ढळला, आता रानातून गुरे घरी परत येतील. ९. त्या फळांचा गर रुचकर होता. १०. मी हा धडा दहादा वाचला. तुम्ही किती वेळा वाचला ?

✦ ✦ ✦

१९. [अ] अपूर्ण वर्तमान-काल

[१७३] नीचे लिखे हिन्दी और मराठी वाक्यों को पढ़िए और मोटे टाईप में छपे हुए शब्दों पर गौर कीजिए —

१. मैं **पढ़ रहा हूँ**। — १. मी **वाचीत आहे.**
२. वे **लिख रहे हैं**। — २. ते **लिहीत आहेत.**
३. लड़के **खेल रहे हैं**। — ३. मुलगे (मुले) **खेळत आहेत.**
४. लड़कियाँ गाना **गा रही हैं**। — ४. मुली गाणे **गात आहेत.**
५. तू क्या **कर रहा है** ? — ५. तू काय **करीत आहेस** ?

हरएक वाक्य की क्रिया से सूचित हो रहा है कि वह क्रिया चालू है, अपूर्ण अवस्था में है, चल रही है। देखिए, मराठी में ऐसे रूप कैसे बनाए गए हैं।

[१७४ अ] मूल क्रिया में साधारणतः 'त' प्रत्यय जोड़ा जाए। 'त' का कहीं-कहीं 'ईत' होता है, तो कहीं-कहीं दोनों रूढ़ हैं।

अ-कारान्त धातु — **करणे** — **करीत,** करत; **खेळणे** — खेळत

	पळणे	– पळत	धावणे	– धावत
	सांगणे	– सांगत	शिकणे	– शिकत
	शिकवणे	– शिकवत, शिकवीत	पाठवणे	– पाठवत, पाठवीत
	पहाणे	– पहात, पाहात	बांधणे	– बांधत, बांधीत
आ-कारान्त—	गाणे	– गात	खाणे	– खात
इ-कारान्त—	पिणे	– पीत		
उ-कारान्त—	धुणे	– धूत, धुवत, धुवीत		
ए-कारान्त—	देणे	– देत	घेणे	– घेत
	नेणे	– नेत		

सूचना–मोटे टाईप में छपे हुए रूप ध्यान में रखें। वे अपवाद हैं।

[१७४ आ] इस तरह बने रूप के साथ '**आहे**' क्रिया के वर्तमान-काल के रूप रखे जाएँ।

[१७४ इ] **निषेध-सूचक** वाक्य बनाने के लिए '**नाही**' शब्द और उसके बाद '**आहे**' के रूप रखे जाएँ। ऐसे प्रयोग में '**आहे**' के रूप शायद ही पाए जाते हैं।

[१७५] कुछ उदाहरण—

धावणे

उ. पु. : मी धावत आहे. आम्ही धावत आहो.
म. पु. : तू धावत आहेस. तुम्ही धावत आहात.
आपण ,, ,,
अ. पु. : तो-ती-ते धावत आहे. ते-त्या-ती धावत आहेत.

निषेध–सूचक

उ. पुं : मी धावत नाही (आहे), आम्ही धावत नाही (आहो).
म. पुं. : तू धावत नाहीस (आहेस), तुम्ही-आपण धावत नाही (आहात).
अ. पुं. : तो-ती-ते धावत नाही (आहे), ते-त्या-ती धावत नाहीत (आहेत).

[१७६] **नमूने के लिए कुछ वाक्य—**

हिन्दी	मराठी
१. क्या आप गाना नहीं सुन रहे हैं ?	१. आपण गाणे **ऐकत नाही** का **आहात ?**
२. तुम चाकू से फल काट रहे हो।	२. तुम्ही चाकूने फळ कापीत **आहात.**
३. वे ज़ोर से दौड़ रहे हैं।	३. ते ज़ोराने **धावत आहेत.**
४. स्त्रियाँ खेत में काम कर रही हैं।	४. स्त्रिया शेतात काम **करीत** आहेत.
५. चिड़ियाँ घोंसला बना रही हैं।	५. पाखरे **घरटे बांधत** आहेत.

मराठी	हिन्दी
१. पोस्टमन पत्रे **वाटत आहेत.**	१. डाकिया चिट्ठियाँ बाँट रहा है।
२. विमान **उडत आहे.**	२. विमान उड़ रहा है।
३. आपण **हसत आहात.**	३. आप हँस रहे हैं।
४. नावाडी होडी **चालवत आहे.**	४. मल्लाह नाव चला रहा है।
५. ती माणसे ओझे **उचलीत आहेत.**	५. वे आदमी बोझ उठा रहे हैं।

✦ ✦ ✦

[आ] अपूर्ण भूतकाल

[१७७] अपूर्ण भूतकाल के लिए भी क्रियाओं के वैसे ही रूप बनाए जाते हैं, जैसे अपूर्ण वर्तमानकाल के लिए बनाए जाते हैं। सिर्फ उस रूप के साथ '**आहे**' के भूतकाल के रूप रखें।

जैसे— १. मी पुस्तक **वाचीत होतो.** = मैं पुस्तक **पढ़ रहा था।**

२. त्या कपडे **शिवत होत्या.** = वे कपड़े **सी रही थीं।**

३. पोपट पेरू **खात होता.** = तोता अमरूद **खा रहा था।**

४. लोक भीतीने **पळून जात होते.** = लोग मारे डरके **भाग रहे थे।**

[१७८] उदाहरण के लिए एक क्रिया के रूप—

चालणे

उ. पु. : मी चालत होतो-ते-त्ये-ते.	आम्ही चालत होतो.
म. पु. : तू चालत होतास-तीस-तेस.	तुम्ही - आपण चालत होता.
अ. पु. : तो चालत होता.	ते चालत होते.
ती चालत होती.	त्या चालत होत्या.
ते चालत होते.	ती चालत होती.

[१७९] निषेध-सूचक रूप बनाने के लिए क्रिया के रूप के साथ नव्हतो–ते...... ' आदि रूप प्रयुक्त किए जाएँ। जैसे—

बोलणे

उ. पु. : मी **बोलत नव्हतो-ते-त्ये-ते.**	आम्ही बोलत नव्हतो.
म. पु. : तू बोलत नव्हतास-तीस-तेस.	तुम्ही - आपण बोलत नव्हता.
अ. पु. : तो बोलत नव्हता.	ते बोलत नव्हते.
ती बोलत नव्हती.	त्या बोलत नव्हत्या.
ते बोलत नव्हते.	ती बोलत नव्हती.

[१८०] नमूने के लिए वाक्य –

हिन्दी	मराठी
१. कल इस वक्त बारिश **हो रही थी**।	१. काल या वेळी पाऊस **पडत होता.**
२. किसान खेत में काम **कर रहे थे**।	२. शेतकरी शेतात काम **करीत होते.**
३. वह चाय **बना रही थी**।	३. ती चहा **तयार करीत होती.**
४. मैं पाठशाला से **आ रहा था**।	४. मी शाळेतून **येत होतो.**
५. तुम आम **ला रहे थे**।	५. तुम्ही आंबे **आणीत होता.**

मराठी	हिन्दी
१. तो वर्तमानपत्र **वाचत होता.**	१. वह समाचार-पत्र **पढ़ रहा था**।
२. ते भिकारी उष्टया पत्रावळी **चाटत होते.**	२. वे भिखमँगे जूठी पत्तलें **चाट रहे थे**।

३. आम्ही त्या वेळी रेडिओ **ऐकत नव्हतो.**	३. उस वक्त हम रेडिओ **नहीं सुन रहे थे।**
४. तेथे आपण छत्री खरेदी करीत होता काय ?	४. क्या आप वहाँ छाता **खरीद रहे थे ?**
५. गुरुजी मुलांना गोष्ट सांगत होते व मुले ऐकत होती.	५. गुरुजी बच्चों को कहानी **सुना रहे थे** और बच्चे **सुन रहे थे।**
६. मी बोलत नव्हते.	६. मैं नहीं **बोल रही थी।**

✦ ✦ ✦

[इ] अपूर्ण भविष्यत्-काल

[१८१] इस काल में मुख्य क्रिया के वे रूप ही प्रयुक्त होते हैं, जो अपूर्ण वर्तमानकाल और अपूर्ण भूतकाल में होते हैं। उन रूपों के साथ '**असणे**' क्रिया के भविष्यत्-काल के रूप रखे जाएँ। निषेध-सूचक रूप बनाने के लिए '**नसणे**' के भविष्यत्-काल के रूप चुने जाएँ। जैसे—

१. उद्या या वेळी मी शाळेत मुलांना **शिकवीत असेन** = कल इस वक्त मैं पाठशाला में बच्चों को पढ़ा रहा होऊँगा।

२. उद्या या वेळी मी कादंबरी **वाचीत असेन** = कल इस वक्त मैं उपन्यास पढ़ रहा होऊँगा।

३. संध्याकाळी तुम्ही याल, त्या वेळी तो **गात असेल** = शाम को तुम आओगे, तब 'उस वक्त' वह **गा रहा होगा।**

[१८२] एक उदाहरण —

चालणे

उ. पु. : मी चालत असेन - नसेन. आम्ही चालत असू - नसू.

म. पु. : तू चालत असशील - नसशील. तुम्ही - आपण चालत असाल - नसाल.

अ. पु. : तो-ती-ते चालत असेल - नसेल. ते - त्या - ती चालत असतील - नसतील.

[१८३] नमूने के लिए वाक्य--

हिन्दी		मराठी
१. वहाँ बारिश हो रही होगी।	–	१. येथे पाऊस पडत असेल.
२. वे आ रहे होंगे।	–	२. ते येत असतील.
३. नौकर सामान ला रहे होंगे।	–	३. नोकर सामान आणीत असतील.
४. घोड़ा इक्का खींच रहा होगा।	–	४. घोडा एक्का ओढीत असेल.
५. हम लिख रहे होंगे।	–	५. आम्ही लिहीत असू.

मराठी	हिन्दी
१. माझी आई पाणी भरीत असेल.	१. मेरी माँ पानी भर रही होगी।
२. शेतकरी शेत नांगरीत असेल.	२. किसान खेत जोत रहा होगा।
३. तुम्ही उद्या या वेळी चालत असाल.	३. तुम कल इस वक्त चल रहे होगे।
४. त्या मुली सूत काढीत असतील.	४. वे लडकियाँ सूत कात रही होंगी।
५. तू भाकरी खात असशील.	५. तू रोटी खा रहा होगा।

[१८४] शब्दकोश– १९ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
उठाना	**उचलणे**	मल्लाह	**नावाडी** [पुं.]
जूठा	**उष्टा**	फैसला	**निकाल** [पुं.]
सख्त	**कडक**	फैसला करना	**निकाल देणे–लावणे**
अदालत	**कोर्ट** [न.]	खूनी, हत्यारा	**खुनी**
छापना	**छापणे**	नालिश	**फिर्याद** [स्त्री.]
छाछ	**ताक** [न.]	फाँसी	**फाशी**
घोषित होना	**जाहिर होणे**	संवाद-दाता	**बातमीदार**
कैदखाना	**तुरुंग** [पुं. न.]	सज़ा	**शिक्षा, सजा**
जुरमाना	**दण्ड** [पुं.]	शिक्षा	**शिक्षण** [न.]
भुगतना	**भोगणे**	गवाह, साक्षी	**साक्षीदार**
संक्रामक	**साथीचा**	गवाही	**साक्ष** [स्त्री.]

शब्दकोश– १९ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
आजार, रोग [पुं.]	बीमारी	देवी [स्त्री.]	चेचक
इस्पितळ [न.]	अस्पताल	पडसे [न.]	जुकाम
इलाज, उपाय [पुं.]	इलाज	पत्रावळ [स्त्री.]	पत्तल
कॉलरा [पुं.]	हैज़ा	परतणे	लौटना
कावीळ [स्त्री.]	पीलिया	मुदत [स्त्री.]	मीयाद
खात्रीचा उपाय	शर्तिया इलाज	मुदतीचा ताप	मीयादी बुखार
खोकला [पुं.]	खाँसी	रोगी	मरीज़
गोळी [स्त्री.]	गोली, टिकी	लस [स्त्री.]	रोग का चेप
घोट [पुं.]	घूँट	बाटली [स्त्री.]	बोतल
डोकेदुखी [न.]	सिरदर्द	लस टोचणे	टीका लगाना
ताप [पुं.]	बुखार	अट [स्त्री.]	शर्त

शब्दकोश– १९ (इ)

[अ] नीचे लिखे शब्द मराठी में भी प्रयुक्त होते हैं :—

डॉक्टर	वैद्य	नर्स (परिचारिका)	
नमस्कार	नमाज	चर्च	देखरेख
दूत	घोषणा	घाट	परिषद

[१८५] **अनुवाद – खंड– १९**

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए—

१. इस छापाखाने में मेरी पुस्तक छप रही है। २. अखबार लेकर वह सिनेमा के विज्ञापन पढ़ रही है। ३. जब मैं अदालत पहुँचा, तब जज (न्यायधीश) फैसला सुना रहे थे। ४. जिस गवाह को वकील ने बुलाया वह झूठी गवाही दे रहा था। ५. संवाद-दाता समाचार तैयार कर रहा था। ६. अपराधी को छः साल की कैद हुई। वह कैदखाने में सजा भुगत रहा

होगा। ७. इस वक्त परिषद में अध्यक्ष पुरस्कार घोषित कर रहे होंगे। ८. अपने पड़ोसी की हत्या करके हत्यारा अँधेरी रात में भाग रहा था। उसे पकड़ने की कोशिश पुलिस कर रही थी। ९. मेरी बहन को पीलिया हुआ। उसे डॉक्टर ने अच्छी दवा दी। १०. जज ने अपराधी को फाँसी की सजा दी। ११. मुझे मालूम नहीं है कि उसे कितना जुरमाना हुआ।

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

१ पडसे, खोकला, डोकेदुखी हे सामान्य आज़ार आहेत; पण जर आपण वेळीच् (=समय पर) औषध घेतले नाही, तर त्यापासून आपल्याला अधिक त्रास होतो. २. देवी, कॉलरा व प्लेग भयंकर साथीचे रोग आहेत, पण त्यावरही आता खात्रीचे उपाय माहीत आहेत. ३. ते डॉक्टर रोग्याला इंजेक्शन देत होते. ४ टायफाइड हा मुदतीचा ताप आहे. ५. तो घोट घोट दूध पीत होता. ६. रोग्याला लोक इस्पितळात पोहोचवीत होते. ७. यात्रेकरू गंगेच्या घाटावर जात असतील. ८. काल या वेळी हे मूल रडत होते. ९. येथे बसून तुम्ही काय करीत आहात ? १०. आचारी काय शिजवीत आहे ? ११. धोबी कपडे धूत असेल. १२. रेडिओवर कोण गात आहे ? १३. मुंग्या रांकेने चालत आहेत. १४. हे मूल रांगत आहे. १५. पळता पळता ती मागे पाहात आहे.

✦ ✦ ✦

२० [अ] पूर्ण वर्तमानकाल

[१८६] नीचे लिखे हुए वाक्यों को पढ़कर बड़े टाईप में छपे हुए शब्दों पर गौर कीजिए —

१. मैंने वह पुस्तक **पढ़ी है**।
   =. मी ते पुस्तक **वाचले** आहे.

२. शिकारी शिकार के लिए **गए हैं**।
   = शिकारी शिकारीसाठी **गेले आहेत**.

३. तुमने मुझसे यह बात **कही है**।
   = तुम्ही ही गोष्ट मला **सांगितली आहे**.

पढ़ी है, गए हैं, कही है आदि क्रियाओं में दो दो शब्द हैं, जिनमें से एक भूतकाल का रूप है और दूसरा **होना** का वर्तमान काल का रूप है। इनमें से हरएक क्रिया से यह सूचित होता है कि वह क्रिया पूर्ण हुई है।

मराठी में भी इसी तरह पूर्ण क्रिया सूचित करनेवाली रचना होती है।

[१८७] वाक्य में मुख्य क्रिया का भूतकाल में प्रयोग कीजिए और उस क्रिया के साथ '**आहे**' क्रिया के रूप रखिए। अकर्मक क्रिया के साथ उद्देश्य के अनुसार और सकर्मक क्रिया के साथ कर्म के अनुसार '**आहे**' के रूप आएँगे। जैसे—

१. मुले शाळेला **गेली आहेत**. — बच्चे पाठशाला **गए हैं**।
नलिनी घरी **आली आहे**. — नलिनी घर **आई है**।
मजूर **थकले** आहेत. — मज़दूर **थक गए हैं**।
मी खुर्चीवर **बसलो** आहे. — मैं कुर्सी पर **बैठा हूँ**।

यहाँ क्रियाएँ अकर्मक हैं, इसलिए '**आहे**' के रूप उद्देश्य के लिंग-वचन-पुरुष के अनुसार रखे गए हैं।

२. त्यांनी हे **पत्र वाचले आहे**. — उन्होंने यह पत्र पढ़ा है।
त्यांनी ही **पत्रे वाचली आहेत**. — उन्होंने ये पत्र पढ़े हैं।
तू हे नाटक पाहिले आहेस. — तूने यह नाटक देखा है।

यहाँ सकर्मक क्रियाएँ हैं, इसलिए '**आहे**' के रूप कर्म के अनुसार रखे गए हैं।

[१८८] निषेध-सूचक वाक्य बना लेने के लिए ऐसी रचना में '**आहे**' के रूपों के स्थान पर '**नाही**' के रूप रखें। जैसे—

१. चोरांनी दागिने **चोरले आहेत**. —चोरों ने गहने **चुराए हैं**।
चोरांनी दागिने **चोरले** नाहीत. — चोरों ने गहने **नहीं चुराए हैं**।
२. मी तो सिनेमा **पाहिला नाही**. — मैंने वह सिनेमा नहीं देखा है।

[१८९] नमूने के लिए वाक्य—

हिन्दी	मराठी
१. डाकुओं ने गाँववालों को लूटा है।	डाकूंनी गावकऱ्यांना **लुटले** आहे.
२. मेरा काम पूरा हुआ है।	माझे काम पुरे **झाले आहे.**
३. मछुओं ने बहुत मछलियाँ पकड़ी हैं।	कोळ्यांनी पुष्कळ मासे **पकडले** आहेत.
४. मैं पैसे लाया हूँ।	मी पैसे **आणले आहेत.**
५. तूने कापियाँ अपने पास रखी हैं।	तू वह्या आपल्याजवळ **ठेवल्या** आहेस.

मराठी		हिन्दी
१. आम्ही चोर **पकडले** आहेत.	–	हमने चोरों को **पकड़ा** है।
२. आपण आपल्या बागेत आंब्याची झाडे **लावली आहेत.**	–	आपने अपने बाग में आम के पेड़ **लगाए** हैं।
३. त्यांनी ती फळे **कापली** आहेत.	–	उन्होंने वे फल **काटे** हैं।
४. गाई चरावयास **गेल्या आहेत.**	–	गायें चरने के लिए **गई** हैं।
५. मुलांनी बाग साफ **केली** आहे.	–	बच्चों ने बाग को साफ **किया** है।

◆ ◆ ◆

[आ] पूर्ण भूतकाल

[१९०] नीचे लिखे हुए वाक्य पढ़िए और इसपर गौर कीजिए कि क्रियाओं के बड़े टाईप में छपे रूप कैसे बने हैं।

१. आम्ही दिल्लीला **गेलो होतो** = हम दिल्ली **गए थे।**

२. हे पुस्तक आम्ही अगोदरच **वाचले होते** = यह पुस्तक हमने पहले ही **पढ़ी थी।**

३. शिपायांनी चोर **पकडले होते** = सिपाहियों ने चोर **पकड़े** थे। (चोरों को **पकड़ा था।**)

गए थे, पढ़ा था– आदि से यह सूचित होता है कि वह क्रिया पूर्ण हुई थी। मराठी में भी ठीक ऐसी ही रचना होती है।

[१९१] वाक्य में क्रिया के भूतकाल के रूप के साथ '**आहे**' के भूतकाल के रूप रखे जाएँ। अकर्मक क्रिया के साथ उद्देश्य के लिंग-वचन- पुरुष के अनुसार और सकर्मक क्रिया के साथ कर्म के लिंग-वचन-पुरुष के अनुसार 'आहे' के भूतकाल के रूप आएँगे। निषेध-सूचक रचना में '**नसणे**' के भूतकाल के रूप प्रयुक्त करें। जैसे—

१. मी हे शहर **पाहिले होते** (**पाहिले नव्हते**) = मैंने यह शहर **देखा था** (**नहीं देखा था**)।

२. आम्ही **धावलो होतो** = हम **दौड़े थे**।

३. ते वाटेत उभे **राहिले होते** = वे राह में खड़े **रहे थे**।

[१९२] नमूने के लिए वाक्य—

हिन्दी	मराठी
१. मैंने यह बात **कही थी**।	१. मी ही गोष्ट **सांगितली होती**.
२. हम तब तक वहाँ **ठहरे थे**।	२. आम्ही तोपर्यंत तेथे **थांबलो होतो**.
३. तू कहाँ **गया था**?	३. तू कोठे **गेला होतास**?
४. तुम बाग में क्यों **बैठे थे**?	४. तुम्ही बागेत का **बसला होता**?
५. आपने यह चीज़ **खरीदी थी**।	५. आपण ही वस्तु **खरेदी केली होती**.

मराठी	हिन्दी
१. त्याने माझे सांगणे **ऐकले नव्हते**.	१. उसने मेरा कहना **सुना** (माना) नहीं **था**।
२. तिने सर्व कपडे घरीच् **धुतले होते**.	२. उसने सब कपड़े घर पर ही **धोए थे**।
३. मांज़राने उंदीर **पकड़ला होता**.	३. बिल्ली ने चूहा **पकड़ा था**।
४. सर्व लोक अगोदरच् तेथे **पोहोचले होते**.	४. सब लोग वहाँ पहले ही **पहुँचे** (पहुँच गए) **थे**।
५. आम्ही सर्व वस्तू **घेतल्या होत्या**.	५. हमने सब वस्तुएँ **ली थीं**।

[इ] संदिग्ध भूतकाल

[१९३] **ये वाक्य देखिए** –

१. कल इस समय मैं बम्बई **पहुँचा होऊँगा**। = उद्या या वेळी मी मुंबईला पोहोचलो असेन.

२. उसने यह पत्र **लिखा होगा**। – त्याने हे पत्र **लिहिले असेल.**

इनमें से हरएक वाक्य की क्रिया यह सूचित करती है कि उस काम के पूर्ण हुए होने की सम्भावना है।

ऐसे प्रयोग हिन्दी में पाए जाते हैं। उनमें क्रिया के भूतकाल के रूप के साथ '**होना**' के भविष्यत्-काल के **रूप** आते हैं।

मराठी में भी उसी तरह क्रिया के भूतकाल के रूप के साथ '**असणे**' के भविष्यत्-काल के रूप आते हैं।

[१९४] नमूने के लिए वाक्य —

हिन्दी	मराठी
१. अब समारोह समाप्त हुआ होगा।	१. आता समारंभ समाप्त **झाला असेल** (संपला असेल).
२. मेरे पिताजी अब तक घर पहुँचे होंगे।	२. माझे वडील आतापर्यंत घरी **पोहोचले असतील.**
३. मेरी बहन आई होगी।	३. माझी बहीण **आली असेल.**
४. वह अब चंगा हुआ होगा।	४. तो आता चांगला **झाला असेल.**
५. उन्होंने हिन्दी भाषा सीखी होगी।	५. त्यांनी हिन्दी भाषा **शिकली असेल** (ते हिन्दी भाषा **शिकले** असतील).

मराठी	हिन्दी
१. गुरुजी आपल्यावर **रागावले असतील.**	१. गुरुजी हमपर गुस्सा हुए होंगे।
२. तिने चहात साखर जास्त **घातली असेल.**	२. उसने चाय में शक्कर ज़्यादा छोड़ी होगी।
३. कदाचित् त्याने पैसे **चोरले असतील.**	३. शायद उसने पैसे चुराए होंगे।

मराठी	हिन्दी
४. रघुनाथने आपले बैल विकले असतील.	४. रघुनाथ ने अपने बैल बेचे होंगे। (बेच दिए होंगे।)
५. सीता मुंबईतच राहिली असेल.	५. सीता बम्बई में ही रही होगी।

[१९५]

शब्दकोश–२० (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
(नौकरी से) जवाब मिलना	(नोकरीवरून) काढून टाकले जाणे	भरपेट	पोटभर
		भाग लेना	भाग घेणे
		पीछे हटना	माघार घेणे
घमासान	घनघोर	आयोजित करना	योजना करणे
घुड़सवार	घोडेस्वार	इज़्ज़त	प्रतिष्ठा
मुठभेड़	चकमक [स्त्री.]	आयोजन	योजना
मेंढ़क	बेडूक	घेरा (डालना)	वेढा (घालणे)
जीतना	जिकणे	शरण में आना	शरण येणे
सुलह	तह [पुं.]	हड़ताल	संप, हरताळ [पुं.]
मुकाबला करना	सामना करणे, तोंड देणे,	मेहमान	पाहुणा
ठहरना	थांबणे	मुकाबला	सामना
मुल्क	देश, मुलुख	मुद्दत	मुदत
नज़राना	नजराणा	हक	हक्क
तनख्वाह	पगार [पुं.]	हारना	हरणे
पंचवर्षीय	पंचवार्षिक	हमला	हल्ला

शब्दकोश– २० (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
कसेबसे, कसे-तरी करून	ज्यों-त्यों करके	महागाई	महँगी
		मोटळी [स्त्री.]	पोटली
खडक, [पुं.] शिळा [स्त्री.]	चट्टान शिला	बढती	बढ़ती
		वल्हे [न.]	डाँड़

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
टक्कर होणे ((०च्यावर आदळणे)	टकराना	वाढवणे	बढ़ाना
		शीड [न.]	पाल
म्होरक्या	अगुआ	प्रवासी	यात्री
डोलकाठी [स्त्री.]	मस्तूल	सल्ला [पुं.]	सलाह
सल्लागार	सलाहकार	स्वस्ताई	सस्ती
सुकाणू [न.]	पतवार	(०च्या) नंतर	(०के) बाद
पागोटे [न.]	पगड़ी	(०च्या) सारखा	(०के) जैसा
पाणबुडी [स्त्री.]	पनडुब्बी	पसरणे	फैलना
पिटाळणे, पिटाळून लावणे	खदेड़ना	महागाई भत्ता	महँगाई (भत्ता)
पुढचा	अगला	वेंगणे	झपकी लेना

शब्दकोश - २० (इ)

[अ] नीचे लिखे शब्द मराठी में भी हैं —

भत्ता	जय	[पुं.]	अंग-भर	निराश
उत्साह	विजय	[पुं.]	गाडी-भर	अनुभवी
पराभव	पराजय	[पुं.]	व्यवस्था	साहसी

[आ] १ एक; $\frac{१}{२}$ एक द्वितीयांश; $\frac{१}{३}$ एक तृतीयांश; $\frac{१}{४}$ एक चतुर्थांश; $\frac{१}{५}$ एक पंचमांश; $\frac{१}{६}$ एक षष्ठांश; $\frac{१}{७}$ एक सप्तमांश; $\frac{१}{९}$ एक नवमांश; $\frac{१}{१०}$ एक दशांश; $\frac{१}{११}$ एक अकरांश; $\frac{१}{१२}$ एक बारांश ...... इत्यादि।
संख्या में अंश शब्द जोड़कर ऐसे शब्द बनाइए।

[१९६] अनुवाद – खण्ड – २०

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए :–

१. दुश्मन ने इस मुल्क के किले पर हमला किया है और राजधानी को घेरा डाला है। २. सेनापति ने सैनिकों को इकट्ठा किया है; अब उनकी शत्रु से मुठभेड़ होगी। दोनों दलों में घमासान लड़ाई होगी।

३. घुड़सवार उत्साह से आगे बढ़े हैं। क्या तुम बताओगे कि जय किसकी होगी और कौन हारेगा? ४. बहादुर लोग लड़ाई में पीछे नहीं हटेंगे; वे दुश्मन की शरण में भी नहीं जाएँगे। ५. बम्बई नगरपालिका के कर्मचारियों ने हड़ताल की है। उसमें करीब तीस हज़ार कर्मचारियों ने भाग लिया है। ६. कुछ साल पहले सरकारी चपरासियों ने भी हड़ताल की थी, वे अपने हकों की रक्षा करना चाहते थे। मगर उस वक्त सरकार ने उन्हें नौकरी से जवाब दिया था। अगर हड़तालियों में एकता न रहेगी, तो हड़ताल का आयोजन करने से कोई लाभ न होगा।

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए :–

१. दुसऱ्या महायुद्धानंतर महागाई फार वाढली आहे. आता पुन्हा पहिल्यासारखी स्वस्ताई कधीहि होणार नाही. लोकांना मदत करण्यासाठी सरकार आपल्या सर्व नोकरांना महागाई भत्ता देत आहे. लोकांचे म्हणणे असे आहे की हा भत्ता कमी आहे, तेव्हा अधिक भत्ता द्या. २. समुद्रात भयंकर वादळ झाले होते. त्या वेळी आमच्या जहाजावर सुमारे पंचवीस प्रवासी होते. खलाशी अनुभवी व साहसी होते. पण वादळाशी ते कसा सामना करणार? जहाजाची शिडे फाटली होती. डोलकाठी मोडली होती. वल्ही व सुकाणू होती, पण त्यांचा काही उपयोग होत नव्हता. ३. पोलिसांनी संप करणाऱ्या लोकांच्या पुढाऱ्यांना पकडले आहे. ४. ते त्या खडकावर बसले असतील. ५. सल्लागारांनी योग्य सल्ला दिला असेल. ६ आम्हाला नोकरीत बढती मिळाली आहे. ७. त्या परिच्छेदाचा सारांश आम्ही लिहीत आहो. ८. आपल्या सरकार ने पंच-वार्षिक योजना तयार केली आहे. अशी योजना रशियन सरकारने सुद्धा केली होती. ९ जर्मनीच्या पाणबुडचांनी इंग्रजांच्या जहाजांना पिटाळून लावले होते. १०. त्या मोटळीत तो थोडेसे तांदूळ घेऊन आला होता. ती मोटळी त्याने आपले पागोटे फाडून बनवली होती.

◆ ◆ ◆

२१ [अ] आज्ञार्थ का विशेष प्रयोग

[१९७] नीचे लिखे वाक्य पढ़िए और मोटे टाईप में छपे शब्दों पर गौर कीजिए--

१. मी घरी जाऊ का ? – १. क्या मैं घर **जाऊँ** ?

२. आम्ही येथे राहू का ? – २. क्या हम यहाँ **रहें** ?

इन वाक्यों में आज्ञा, अनुमति माँगने की क्रिया सूचित है। हिन्दी में क्रिया के भविष्यत्-काल के रूप के **गा-गी-गे** को छोड़कर ऐसा रूप बनाया जाता है । जैसे :– जाऊँगा – जाऊँ, रहेंगे – रहें ।

(अ) मराठी में मूल क्रिया में ऊ प्रत्यय जोड़कर ऐसे रूप बनाए जाते हैं। (आ-कारान्त मूल क्रिया ही ऊ-कारान्त होती है; अन्य क्रियाओं में 'ऊ' जोड़ा जाता है।

(आ) दोनों वचनों और तीनों लिंगों में एक-से रूप ही प्रयुक्त होते हैं ।

(इ) हिन्दी '**क्या**' के स्थान पर मराठी में '**का**' आता है ।

[१९८] नमूने के लिए वाक्य—

मराठी	हिन्दी
१. मी हिन्दीच्या परीक्षेला **बसू** का ?	१. क्या मैं हिन्दी की परीक्षा में **बैठूं** ?
२. आम्ही फिरावयास **जाऊ का** ?	२. क्या हम घूमने **जाएँ** ?
३. मी त्या भिकाऱ्याला जुना शर्ट देऊ का ?	३. उस भिखारी को क्या मैं पुरानी कमीज़ दूँ ?

✦ ✦ ✦

[आ] सम्भावनार्थ

[१९९] इच्छा, अनुमान, आशीर्वाद आदि व्यक्त करते समय यों वाक्य बनाते हैं—

मराठी	हिन्दी
१. परमेश्वर आमचे रक्षण करो।	१. भगवान हमारी रक्षा करे।
२. माझा मुलगा लवकर बरा होवो.	२. मेरा बेटा जल्द चंगा होवे ।
३. दुष्टांचा नाश होवो.	३. दुष्टों का विनाश हो ।

मराठी में मूल क्रिया के एकवचन में **ओ** और बहुवचन में **वोत**, **वेत** प्रत्यय जोड़कर ऐसे रूप बनाए जाते हैं। अ-कारान्त क्रिया में **ओ** (**ए. व.**) और **ओत** (ब. व.) प्रत्यय लगते हैं।

करणे – **करोत**, देणे – **देवोत**, घेणे – **घेवोत**, होणे – **होवो**, होवोत, येणे – **येवोत**, पडणे – **पडोत**।

[२००] नमूने के लिए वाक्य—

मराठी	**हिन्दी**
१. यंदा वेळेवर पाऊस **पडो**.	१. इस साल वक्त पर बारिश हो जाए।
२. दुष्टांना सुबुद्धि **मिळो**.	२. दुष्टों को सुबुद्धि मिले।
३. गरिबांना पैसे **मिळोत**.	३. गरीबों को पैसे मिलें।
४. आमचे मित्र यशस्वी होवोत.	४. हमारे दोस्त सफल हो जाएँ।

[२०१] असल में आज्ञा माँगना, अनुमति देना, इच्छा करना आदि के अर्थ में क्रिया के रूप आज्ञार्थ के अन्तर्गत आते हैं। सबको एक साथ यों रखा है —

जाणे

उ. पु. – मी ज़ाऊ.	आम्ही ज़ाऊ.
म. पु. – तू ज़ा.	तुम्ही ज़ा, आपण ज़ा.
अ. पु. – तो-ती-ते ज़ावो.	ते-त्या-ती ज़ावेत-ज़ावोत.

✦ ✦ ✦

[इ] विध्यर्थ

[२०२] क्रिया द्वारा कर्तव्य, सम्भावना, योग्यता, इच्छा आदि का भी बोध होता है। हिन्दी में यह यों व्यक्त किया जाता है —

१. हम सुबह जल्दी **उठें** और कसरत **करें**।

२. बच्चे गुरुजनों की आज्ञा का पालन **करें**।

मराठी में इसे यों बताया जाता है–

१. आपण सकाळी लवकर **उठावे** व व्यायाम **करावा.**

२. **मुलांनी** गुरुजनांची (मोठ्यांची) आज्ञा **पाळावी.**

इससे हम यों नियम बना सकेंगे —

[२०३ अ] उद्देश्य को करण-कारक में रखें। ने, नी प्रत्यय जोड़ें। (ऊपर के वाक्य में **आपण** शब्द है। उस सर्वनाम का करण-कारक **आपण** ही होता है।)

[२०३ आ] मूल क्रिया में नीचे लिखे अनुसार प्रत्यय लगाएँ —

	एकवचन			बहुवचन		
	पुं.	स्त्री.	न.	पुं.	स्त्री.	न.
उ. पु. :	**वा**	**वी**	**वे**	**वे**	**व्या**	**वी**
म. पु. :	**वा** (स)	**वी** (स)	**वे** (स)	**वे**	**व्या**	**वी** (त)
अ. पु. :	**वा**	**वी**	**वे**	**वे**	**व्या**	**वी** (त)

जैसे—**करणे**—करावा-वी-वे (स); करावे, कराव्या, करावी (त)

खेळणे—खेळावा-वी-वे (स); खेळावे......

सूचना १ : अ-कारान्त धातु में ये प्रत्यय जोड़ते समय धातु के अन्त्य **अ** का **आ** होता है।

खाणे—खावा-वी-वे (स), खावे, खाव्या, खावे (स).

पिणे—प्यावा-वी-वे (स); प्यावे, प्याव्या, प्यावे (स)

सूचना २ : इ-कारान्त धातु में ये प्रत्यय लगते समय '**इ**' का '**या**' होता है। जैसे – पि – प् + इ = प् + या = प्या; प्यावा.

धुणे–धुवावा-वी-वे (स), धुवावे .....

सूचना ३ : उ-कारान्त धातु में ये प्रत्यय जोड़ते समय धातु में '**वा**' जोड़ें और उसके बाद प्रत्यय लगा दें। जैसे–

धुणे – धु + वा = धुवा + वा = धुवावा

देणे – द्यावा-वी-वे; द्यावे-द्याव्या...

घेणे – घ्यावा-वी-वे; घ्यावे, घ्याव्या......

नेणे – न्यावा-वी-वे; ......

सूचना ४ : ए-कारान्त धातु को प्रत्यय जोड़ते समय अन्त्य **ए** का **या** किया जाए। जैसे :–

देणे – दे = द् + ए = द् + **या** = द्या

[२०३ इ] **सकर्मक क्रिया** का प्रयोग करते समय कर्म के लिंग-वचन-पुरुष के अनुसार क्रिया के रूप रखें। जैसे–

मुलाने **पुस्तक वाचावे.** (पुस्तक–नपुं. ए. व.)
मुलाने **पुस्तके वाचावीत.** (पुस्तके–नपुं. ब. व.)
मुलाने **ग्रंथ वाचावा.** (पुं. ए. व.)
मुलांनी **ग्रंथ वाचावेत,** (पुं. ब. व.)
मुलांनी **पोथी वाचावी.** (स्त्री. ए. व.)
मुलांनी **पोथ्या वाचाव्यात,** (,, ब. व.)

[२०३ ई] **अकर्मक क्रिया** का प्रयोग करते समय उद्देश्य करण-कारक में रहेगा और क्रिया का रूप नित्य अन्य पुरुष, नपुंसकलिंग एक वचन में रहेगा। जैसे—

नौकराने **उठावे.** आम्ही **बसावे.**

[२०४] नमूने के लिए वाक्य :–

हिन्दी	**मराठी**
१. हर एक बाकायदा कसरत करे।	१. प्रत्येकाने नियमानुसार व्यायाम करावा.
२. रात को जल्दी सोएँ और सुबह जल्दी उठें।	२. रात्री लवकर झोपावे व सकाळी लवकर उठावे.
३. हम यथाशक्ति गरीबों की मदद करें।	३. आपण (=आम्ही) यथाशक्ति गरिबांना मदत करावी.
४. विद्यार्थी खुले मैदान में खेलें।	४. विद्यार्थ्यांनी मोकळ्या मैदानात खेळावे.
५. हम अपने माता-पिता की सेवा करें।	५. आपण (=आम्ही) आपल्या आई-वडिलांची सेवा करावी.

मराठी	हिन्दी
१. रोज़ प्रत्येकाने काही ना काही तरी वाचावे.	१. रोज़ हर एक कुछ न कुछ पढ़े।
२. आपण स्वच्छ पाणी प्यावे.	२. हम स्वच्छ पानी पिएँ।
३. वाईट लोकांपासून दूर रहावे.	३. बुरे लोगों से दूर रहें।
४. आपण शाळेत वेळेवर जावे.	४. हम समय पर पाठशाला जाएँ।
५. सर्व भारतीयानी राष्ट्रभाषा शिकावी.	५. सब भारतीय (लोग) राष्ट्रभाषा सीखें।

[२०५] निषेध-सूचक रचना करते समय—

(अ) मूल क्रिया में ऊँ प्रत्यय लगा दें और

(आ) उसके साथ **नये** (=न) क्रिया रखें। जैसे-

१. आपण गरीबांना **त्रास देऊ नये**. (हम गरीबों को न सताएँ।)

२. कोणीही गरीब पशु-पक्ष्यांना **मारू नये**. (कोई भी गरीब पशु-पक्षियों को न मारे।)

३. कोणीही कोणावर अन्याय **करू नये**. (कोई भी किसी के साथ अन्याय न करे।)

कुछ क्रियाओं के रूप—

करणे=करावा–वी–वे; करावे......करू नये.

देणे–द्यावा–वी–वे; द्यावे......देऊ नये.

पिणे–प्यावा–वी–वे; प्यावे......पिऊ नये.

आणणे–आणावा–वी–वे; आणावे......आणू नये.

[२०६] '**पाहिजे**', '**पाहिजेत**' (=चाहिए) **का प्रयोग** —

१. मला गेले पाहिजे.

२. प्रत्येकाने आपले कर्तव्य केले पाहिजे.

३. सर्वांनी देशाची सेवा केली पाहिजे.

केले पाहिजे, गेले पाहिजे, केली पाहिजे आदि रूप यों बनाए गए हैं। —

(अ) मुख्य क्रिया का भूतकाल का रूप बनाएँ।

(आ) क्रिया सकर्मक हो, तो कर्म के अनुसार क्रिया का रूप चुनें।

(इ) मुख्य क्रिया अकर्मक हो तो, क्रिया का रूप नित्य अन्य पुरुष नपुंसकलिंग, एकवचन में रहेगा।

(ई) उद्देश्य को वचन के अनुसार **ने-नी** आदि करण कारक की विभक्ति जोड़ी जाए।

(उ) मुख्य क्रिया के इस रूप के साथ **पाहिजे** क्रिया रखें। जैसे–

१. **प्रत्येकाने** योग्य रीतीने पैसे खर्च **केले पाहिजेत** = हरएक को उचित ढंग से पैसे खर्च करने चाहिए।

२. **सर्वांनी** खादी **वापरली पाहिजे** = सबको खद्दर पहननी चाहिए।

(ऊ) '**पाहिजे**' का बहुवचन में '**पाहिजेत**' रूप होता है।

✦ ✦ ✦

[ई] संकेतार्थ

[२०७] नीचे लिखे वाक्य पढ़िए—

१. **अगर** वह काम **करता, तो** उसे सफलता **मिलती**।
= **जर** तो काम **करता, तर** त्याला यश **मिळते.**

२. **यदि** वह बाकायदा कसरत **करता, तो** वह बीमार न **पड़ता**।
= **जर** तो नियमानुसार व्यायाम **करता,** तर तो आज़ारी **न पडता.**

इन वाक्यों का निरीक्षण करने पर जो बातें ध्यान में आती हैं; उन्हें नियमों के रूप में यों बताया जा सकता है––

[२०८] (अ) **जर** (=अगर, यदि)– **तर**(=तो) जैसे संयोग-सूचकों का प्रयोग उपवाक्यों के आरम्भ में करें।

(आ) मूल क्रिया में एकवचन में **ता** (पुं.), ती (स्त्री), ते (न.) और बहुवचन में ते (पुं.), त्या (स्त्री.), ती (न.) प्रत्यय लगाएँ। प्रत्यय जोड़कर कुछ क्रियाओं के रूप यों बनाए हैं–

करणे – करता-ती-ते; करते-त्या-ती
खाणे – खाता-ती-ते; खाते-त्या-ती
ज़ाणे – ज़ाता–ती–ते; ज़ाते–त्या–ती
पडणे – पडता–ती–ते; पडते–त्या–ती

[२०९] संकेतार्थ में भूतकाल की क्रियाओं का भी प्रयोग होता है। जैसे--

हिन्दी—अगर उसने मुझसे यह कहा होता, तो मैं उसकी मदद ज़रूर करता। (मैंने उसकी मदद ज़रूर की होती।)

मराठी--ज़र त्याने मला हे **सांगितले असते**, तर मी त्याला अवश्य मदत **केली असती.**

ऐसे प्रयोग में **ज़र......तर** का प्रयोग होता ही है। भूतकाल की क्रिया के साथ **असता-ती-ते, असते-त्या-ती** जैसी सहायकारी क्रिया भी रखी जाती है। यों कहा जा सकता है कि '**ज़र......असता-ती**' के बीच और '**तर......असता-ती......**' के बीच क्रिया का भूतकाल वाला (उप)वाक्य रखा जाता है।

[२१०] नमूने के लिए कुछ वाक्य--

मराठी	हिन्दी
१. **ज़र** वेळेवर पाऊस **पडता, तर** पीक चांगले **आले असते.**	१. अगर समय पर बारिश होती तो फसल अच्छी आती।
२. **ज़र** मी पुस्तक वाचले असते, तर मला उत्तर देता आले असते.	२. अगर मैं पुस्तक पढ़ता, तो मैं उत्तर दे पाता।
३. ज़र त्याने मला मदत केली असती, तर मी पण त्याला केली असती.	३. यदि वह मेरी मदत करता तो मैं भी उसकी (मदद) करता।
४. ज़र मनुष्यात स्वार्थ नसता, तर जगात शांतता राहिली असती.	४. यदि मनुष्य में स्वार्थ न होता तो दुनिया में शान्ति रहती।
५. अमेरिकेने ज़र इंग्लंडला मदद केली नसती, तर इंग्लंडचा महायुद्धात पराभव झाला असता.	५. यदि अमरीका इंग्लंड की सहायता न करता, तो महासमर में इंग्लंड की हार हो जाती।

[२११] शब्दकोश–२१ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
आज्ञा मानना	आज्ञा पाळणे	घमण्ड	घमेंड [स्त्री.]
ईमानदार	इमानी, प्रामाणिक	कायदा	नियम [पुं.]
धन्यवाद देना	आभार मानणे	बाकायदा	नियमानुसार
कानून	कायदा	निकम्मा	निकामी, कुचकामी
कानून तोड़ना	कायदा मोडणे	किताबी कीड़ा	पुस्तकी किडा
कारीगर	कारागीर	चंगा	बरा
मुंशी	कारकून	ढंग	रीत, पद्धति
खुराक	खुराक, पौष्टिक	रोज़नामचा	रोजनिशी, डायरी
	आहार [पुं.]	कसरतखाना	व्यायाम-शाळा
खाता	खाते [न.]	हिसाब	हिशेब [पुं.]
गुरुजन	गुरुजन, वडील	हवस	हौस [स्त्री.]
	माणसे	हौज़	हौद [पुं.]

शब्दकोश – २१ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
अक्कल [स्त्री.]	अक्ल	पारधी	बहेलिया
आळस	आलस	प्रकृति [स्त्री.]	स्वास्थ्य
आळशी	आलसी, सुस्त	बुद्धिमान	अक्लमंद
ओसाड, पडीक	परती	बेत [पुं.]	मन्सूबा
टाळाटाळ [स्त्री.]	टालमटोल	रुबाब, थाट [पुं.]	ठाठबाट
थट्टा [स्त्री.]	मज़ाक	शिवी [स्त्री.]	गाली
थट्टा करणे	मज़ाक करना,	शिवीगाळी [–ळ]	गालीगलौज
	–उड़ाना	सही [स्त्री.]	हस्ताक्षर
निरोगी	नीरोग	सावध	सावधान
पचवणे	पचाना	हवे ते	चाहे जो
पळापळ	भागदौड़,	हुबेहूब	हूबहू
	भगदड़	हंडी [स्त्री.]	हाँड़ी

शब्दकोश–२१ (इ)

[क] नीचे लिखे शब्द मराठी में भी हैं —

स्वावलंबन	स्वावलंबी	स्वार्थ	स्वार्थी
स्वार्थत्याग	परोपकार	आश्रित	अन्याय
नम्रता	स्पर्श	स्वयंसेवक	स्वागत

[ख] अर्धा – आधा, पाव, पाऊण – पौना, सवा, दीड – डेढ़, साडे – साढ़े पावणे दोन – पौने दो, सवा दोन – सवा दो, अडीच् – अढ़ाई; पावणे तीन, सवा तीन, साडे तीन, पावणे चार, सवा चार, साडे चार इत्यादि

[२१२] अनुवाद-खण्ड–२१

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए :–

१. साढ़े चार बजे मुझे यहाँ से जाना चाहिए। २. अगर आप उसे पहले बुलाते, तो वह जरूर आता। ३. क्या मैं आपकी पुस्तक लूं ? ४. परमात्मा हमें शक्तिमान बनाए। ५. यदि हमें स्वास्थ्य अच्छा रखना हो, तो रोज़ सुबह जल्दी उठकर हम कसरतखाने में जाएँ और बाकायदा खूब, कसरत करें। ६. हम अपने रोज़ के खर्च का ब्योरा रोज़नामचे में लिखें। ७. गुरुजनों से नम्रता से बात करें। ८ अपने देश के कानून हम न तोड़ें। ९. उसने तुम्हारी मदद की है। उसका शुक्रिया अदा करो। १०. हम बहुत पढ़ें; मगर किताबी कीड़े न बनें।

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए :–

१. जर तो आम्हाला शिवीगाळ करता, तर आम्ही त्याला मारले असते. २. तो वेळेवर न येता, तर त्याचे एक हज़ार रुपयाचे नुकसान झ़ाले असते. ३. आपण आपले कर्तव्य करण्यात टाळाटाळ करू नये. ४. आपल्याला ओसाड ज़मिनीतही शेती-भाती केली पाहिज़े. ५. तो बुद्धिमान आहे. त्याला ही गोष्ट सहज समज़ेल. ६. वडील माणसांची थट्टा करू नये. ७. आम्ही तुमच्या विरुद्ध तक्रार करू का ? ८. कोणीही

घमेंड करू नये. ९. ज़े आपल्याला माहीत असेल, ते दुसऱ्याला शिकवावे. १०. कधी कोणाचीही निन्दा करू नये, कधीही खोटे बोलू नये व कोणावरही अन्याय करू नये. ११. या कागदावर सही करण्यापूर्वी तो एकदा वाच. १२. तू हवे ते कर. पण गुरुजनांची नालस्ती करू नकोस. १३. त्या घटनेचे त्यांनी अगदी हुबेहूब वर्णन केले आहे. १४. हा कारकून प्रामाणिक नसता, तर त्याला आम्ही नोकरीवरून काढले असते. कारण जरी तो प्रामाणिक असला, तरी फार आळशी आहे. १५. आळस माणसाला निकामी बनवतो, म्हणून त्याला प्रत्येकाने आपल्यापासून दूर ठेवावे.

✦ ✦ ✦

२२ (अ) प्रेरणार्थक क्रिया

[२१३] नीचे लिखे वाक्यों को पढ़कर मोटे टाईप में छपे हुए शब्दों पर गौर कीजिए—

१. मी हिन्दी **शिकतो.**	१. मैं हिन्दी **सीखता हूँ।**
मी हिन्दी **शिकवितो.**	मैं हिन्दी **सिखाता हूँ।**
२. ते पैसे **देतात.**	२. वे पैसे **देते हैं।**
ते पैसे **देववितात.**	वे पैसे **दिलाते हैं।**

हिन्दी वाक्यों में प्रयुक्त **सिखाना** और **दिलाना** क्रियाएँ क्रमशः **सीखना** और **देना** से बनाई हुई प्रेरणार्थक क्रियाएँ हैं। 'मैं हिन्दी सीखता हूँ' = 'सीखने की क्रिया मैं स्वयं करता हूँ'; मगर 'मैं हिन्दी सिखाता हूँ' = 'मैं स्वयं नहीं सीखता, सीखनेवाला कोई दूसरा है, उसे सीखने की प्रेरणा देनेवाला मैं हूँ।' यही बात मराठी में **शिकणे** और **शिकविणे** से सूचित होती है। 'देना' से 'दिलाना' और 'देणे' से 'देवविणे' प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनी हैं। मराठी में प्रेरणार्थक क्रिया को **'प्रयोजक क्रियापद'** कहा जाता है।

अब यह देखेंगे कि मराठी में ये '**प्रयोजक क्रियापद**' (प्रेरणार्थक क्रियाएँ) कैसे बनाए जाते हैं।

[२१४] आम तौर पर अ-कारान्त मूल क्रिया में **वि** या **व** प्रत्यय जोड़ने से (पहली या मूल) प्रेरणार्थक क्रिया बनती है। जैसे–

क्रिया	प्रेरणार्थक	क्रिया	प्रेरणार्थक
करणे	करविणे, करवणे	आणणे	आणविणे, आणवणे
ऐकणे	ऐकवि (व) णे	चालणे	चालवि (व) णे
सांगणे	सांगवि (व) णे	हसणे	हसवि (व) णे
हालणे	हालवि (व) णे	उठणे	उठवि (व) णे

[२१५] अन्य (आ-कारान्त, इ-कारान्त, उ-कारान्त और ए-कारान्त) क्रियाओं में **ववि** या **वव** प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे–

खाणे–खावविणे, खाववणे। धुणे– धुवविणे, धुववणे।
नेणे– नेववि (व) णे

[२१६] इसके अतिरिक्त कुछ क्रियाएँ ऐसी हैं जिनसे भिन्न ढंग से एक प्रेरणार्थक क्रिया बनती है। यह क्रिया मूल क्रिया जैसी लगती है। उससे भी प्रेरणार्थक क्रिया बनती है। हिन्दी में 'लिखना' मूल क्रिया से 'लिखाना' पहली और 'लिखवाना' दूसरी प्रेरणार्थक क्रिया बनी है। इसी तरह मराठी में यों क्रियाएँ बनाई जाती हैं–

मरणे	मारणे	मारवि (व) णे (अ–आ)
गळणे	गाळणे	गाळवि (व) णे (,,)
पडणे	पाडणे	पाडवि (व) णे (,,)
तुटणे	तोडणे	तोडवि (व) णे (उ–ओ)
फुटणे	फोडणे	फोडवि (व) णे (,,)
सुटणे	सोडणे	सोडवि (व) णे (,,)

ये क्रियाएँ भी ध्यान में रखिए––

पिणे	पाजणे	पाजवि (व) णे
समजणे	समजावि (व) णे	
धावणे	धावவि (व) णे	

[२१७] कुछ क्रियाओं से बनी प्रेरणार्थक क्रियाओं से सिर्फ वह क्रिया करने की शक्यता - सामर्थ्य सूचित होती है। जैसे–

जाणे–जाववि(व)णे : मला **जाववते**—मुझसे **जाया जा सकता है।** **खाणे** – खाववि(व)णे : त्याला खाववते = उससे **खाया जा** सकता है।

पिववणे–इतके कढत पाणी माझ्याने कसे **पिववेल ?** — इतना गर्म पानी मुझसे कैसे **पिया जा सकेगा ? देववणे** – कृपणाला दुसऱ्याला पैसा **देववत नाही** – कृपण से दूसरे को पैसा **दिया नहीं जाता।**

सूचना–हरएक क्रिया से ऊपर बतलाए हुए तरीके से प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनती हैं, सो बात नहीं है। असल में यह ज़रा पेचीदा मामला है। इसलिए प्रयोग और आवश्यकता के अनुसार क्रिया का सावधानी से प्रयोग करें।

[२१८] **नमूने के लिए वाक्य** —

१. मी सकाळी सहा वाज़ता **उठतो** व मुलांना **उठवितो.**	१. मैं सुबह छः बजे उठता हूँ और बच्चों को उठाता हूँ।
२. ती स्वत: काम **करीत नाही,** पण नोकरांकडून सर्व काही **करविते.**	२. वह स्वयं काम नहीं करती; मगर नौकरों से सब कुछ कराती (करा लेती) है।
३. तू स्वत: धावत नाहीस; मग मुलांना का धाववितोस ?	३. तू स्वयं नहीं दौड़ता; फिर बच्चों को क्यों दौड़ाता है ?
४. ती स्वत: चहा **पिते** व मुलांना पण **पाजते.**	४. वह स्वयं चाय पीती है, और बच्चों को भी पिलाती है।
५. ते लवकर **झोपत नाहीत** व मुलांनाही **झोपवीत नाहीत.**	५. वे जल्दी नहीं सोते और बच्चों को भी नहीं सुलाते।

✦ ✦ ✦

(आ) सहायक और संयुक्त क्रियाएँ

[२१९] १. वह पहलवान बाघ से **लड़ सकता है**। २. पिताजी के आते ही वह **पढ़ने लगा**। ३. मैं तुमको हर्गिज़ नहीं **जाने दूंगा**।

इन वाक्यों में **लड़ सकता है, पढ़ने लगा, जाने दूंगा** क्रियाएँ हैं, जो दो या अधिक मूल क्रियाओं से बनी हुई हैं। **लड़, पढ़ने, जाने** मुख्य क्रियाएँ हैं और वे कृदन्त के रूप में हैं। **सकना, लगना, देना** सहायकारी क्रियाएँ हैं, जो काल के रूप में रखी गई हैं। ऐसे कृदन्त के साथ विशेष अर्थ में सहायक क्रिया ज़ोड़ने से **संयुक्त क्रिया** बनती है। संयुक्त क्रिया में से, मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रिया के योग से विशेष अर्थ सूचित होता है। हिन्दी में संयुक्त क्रिया का प्रयोग प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। मराठी में भी ऐसी संयुक्त क्रियाएँ हैं। ऐसी क्रियाओं का व्यावहारिक प्रयोग ध्यान में रखा जाए। यहाँ आवश्यक क्रियाएँ प्रयोग-सहित दी जा रही हैं।

[२२०] **अ** — आम तौर पर मुख्य क्रिया का कृदन्त, मूल क्रिया में '**ऊ**' प्रत्यय जोड़कर बनाया जाता है। **अ**—कारान्त धातु के अन्त्य **अ** में **ऊ** प्रत्यय मिलकर 'ऊ' बनता है और अन्य धातुओं के साथ '**ऊ**' वैसा ही रहता है। जैसे——

करणे — कर + ऊ = **करू**	**खेळणे** — खेळ + ऊ = **खेळू**
चालवणे — = चालू	**पाठवणे** — = **पाठवू**
जाणे — ज़ा + ऊ = जाऊ	**खाणे** — खा + ऊ = **खाऊ**
पिणे — पि + ऊ = पिऊ	**धुणे** — धु + ऊ = धुऊ(वू)
देणे — दे + ऊ = देऊ	**नेणे** — ने + ऊ = नेऊ

आ — उपर्युक्त कृदन्त के साथ सहायक क्रिया आवश्यक काल के रूप में रखी जाए। जैसे—

१. **लागणे** — लगना। (आरम्भ-सूचक)

मी पुस्तक **वाचू लागलो** — मैं पुस्तक **पढ़ने लगा**।

ती आता **बोलू लागेल** — वह अभी **बोलने लगेगी**।

२. **शकणे**– सकना। (समर्थता-सूचक)

तू एवढे सामान **उचलू शकशील** का ? – क्या तू इतना सामान **उठा सकेगा** ?

तो मुलगा इंग्रजी **वाचू शकतो** – वह लड़का अंग्रेज़ी **पढ़ सकता है**।

३. **इच्छिणे** – चाहना (इच्छा-सूचक)

आम्ही दिल्लीला **जाऊ इच्छितो** – हम दिल्ली जाना **चाहते हैं**।

त्या या कार्यक्रमात भाग **घेऊ इच्छित नाहीत** – वे इस कार्यक्रम में भाग **नहीं लेना** चाहतीं।

४. **देणे** – देना (अनुमति-सूचक)

आम्ही त्याला तसाच **जाऊ देणार नाही** – हम उसे वैसे ही **नहीं जाने देंगे**।

त्याला तेथे **बसू द्या** – उसे वहाँ **बैठने दो**।

५. **पाहणे, पहाणे** – देखना (इच्छा-सूचक)

कैदी तुरुंगातून **पळू पहातो** – कैदी जेल में से **भागना चाहता है**।

तो हे काम **करू पहातो** – वह यह काम **करना चाहता है**।

६. **पाहिजे** – चाहिए

नोकराने धन्याची आज्ञा **मानली पाहिजे** – नौकर को मालिक की आज्ञा **माननी चाहिए**।

आपल्याला लवकर **गेले पाहिजे** – हमें जल्दी **जाना चाहिए**।

७. **येणे** – आना ('जानना' के अर्थ में)

मला **पोहता येते** – मुझे **तैरना आता है**।

त्याला चित्रे **काढता येतात** – उसे चित्र **खींचना आता है**।

सूचना– '**ये**' के साथ मूल क्रिया में **ता** प्रत्यय लगाया गया है। यह कृदन्त रूप प्रयुक्त करें।

८. **राहणे-रहाणे** – रहना (रीति-सूचक)

तो सारखा **रडत राहिला** – वह बराबर **रोता रहा**।

आम्ही सूत **काढीत राहू** – हम सूत **कातते रहेंगे**।

सूचना–राहणे-रहाणे के साथ **ईत, अत** प्रत्ययवाला कृदन्त आता है।

९. **लागणे** – पड़ना, आवश्यक होना (आवश्यकता-सूचक)

मला **जावे लागले** – मुझे **जाना पड़ा।**

त्याला पैसे **द्यावे लागतील** – उसे पैसे **देने पड़ेंगे।**

सूचना–लागणे (– आवश्यक होना) के साथ **वा-वे-वी-** प्रत्ययान्त कृदन्त आता है। सकर्मक क्रिया का यह कृदन्त कर्म के लिंग-वचन के अनुसार और अकर्मक क्रिया के साथ अन्य पुरुष, नपुंसकलिंग एकवचन में आता है। जैसे—

आम्हाला ही **कामे करावी लागतात.** (**काम करावे** लागते, पैसा **द्यावा लागतो,** पैसे **द्यावे लागतात.**)

१० **जाणे** – जाना (गति-सूचक, स्थिति-सूचक)

त्याचा हट्ट **वाढतच जाईल** – उसका हठ **बढ़ता ही जाएगा।**

साखरेचा भाव **वाढतच गेला आहे** – शक्कर का भाव **बढ़ता ही गया है।**

सूचना —जाणे के साथ **अत-ईत** प्रत्ययान्त कृदन्त आता है।

११. **टाकणे** – डालना (अचानकता-बोधक, पूर्णता-सूचक)

माझे पैसे **देऊन टाक** – मेरे पैसे **दे डालो।**

आपले कपडे स्वताच का **धुऊन टाकीत नाहीस** – अपने कपड़े खुद क्यों नहीं **धो डालते हो?**

सूचना —टाकणे के साथ **ऊन** प्रत्ययान्त कृदन्त आता है।

१२ **होणे** – चुकना (पूर्णता-सूचक)

माझे एक पत्र **लिहून झाले** – मेरी एक चिट्ठी **लिखी जा चुकी।**

त्याचे **खाणे झाले आहे** – उसका खाना **हो चुका है।**

[२२१] हिन्दी में संयुक्त क्रिया का प्रयोग अधिक मात्रा में होता है। यह कोई आवश्यक बात नहीं है कि हरएक क्रिया के दोनों मुख्य और सहायक अंशों का शब्दशः अनुवाद मराठी में किया जाए। कहीं-कहीं वह अवश्य खटकता रहेगा। यहाँ नमूने के लिए कुछ ऐसे प्रयोग दिए जा रहे हैं। **जाना, देना, लेना** आदि का प्रयोग अधिकतर उलझन में डालता है। जैसे–

१. **जाना**– वह **मर गया**– तो **मेला** ('मरून गेला' नहीं)
वह आ **गई**– ती **आली** ('येऊन गेली' नहीं)
वे **उठ गए**– ते **उठले** ('उठून गेले' नहीं)
उसका पाँव **फिसल गया**– त्याचा पाय **घसरला.**
परंतु– वह भीड़ में से **भाग गया**– तो गर्दीतून **पळून गेला.**
ये पैसे **ले जाओ**– हे पैसे **घेऊन जा.**
यहाँ से **चले जाओ**– येथून **निघून जा.**

२. **देना**– मुझे अपनी पुस्तक **दे दो** – मला आपले पुस्तक **द्या.**
वह घर से रात को **चल दिया** – तो घरातून रात्री निघाला. (अचानकता)
मुझे एक पेन **ला दो** – मला एक पेन **आणून द्या.**
मैंने उसकी चीज़ें **लौटा दीं** – मी त्याच्या वस्तु परत **करून टाकल्या.**

३. **लेना**– **ले लो** अपनी चिट्ठयाँ – **घे (घेऊन टाक)** ही आपली पत्रे.
मैंने सभी पुस्तकें **पढ़ ली** हैं – मी सगळी पुस्तके **वाचून टाकली आहेत.**

४. **पाना**– मैं वहाँ गया था, मगर उससे **मिल नहीं पाया** – मी तेथे गेलो होतो, परंतु त्याला **भेटू शकलो** नाही (मला त्याला भेटता आले नाही)

यह काम हम अभी तक कर नहीं पाए।	हे काम आम्हाला आतापर्यंत **करता आले नाही.**
ज्यों-त्यों करके वह खाई में से बाहर **निकल पाया।**	कसे-बसे करून तो खड्ड्यातून बाहेर **आला.** (येऊ शकला)

५. **बन पड़ना**– यह कृति अच्छी **बन पड़ी है** – ही कृति चांगली निघाली आहे–चांगली **होऊ शकली आहे.**

[२२२] **अनुभव करना, स्वीकार करना, निश्चय करना** का प्रयोग किए हुए वाक्यों का मराठी रूपान्तर यों होगा–

१. **अनुभव करना** - अनुभविणे, (०चा) अनुभव होणे, जाणवणे (प्रतीत होना), वाटणे.

यह काम करने में मैंने कई **कठिनाइयाँ अनुभव कीं** – हे काम करताना मला कित्येक अडचणी **जाणवल्या** (अडचणी **वाटल्या**).

बच्चों से बिछुडने से कितना दुख होता है, यह मैं अनुभव कर रहा हूँ – मुलांपासून दूर ज़ाण्याने किती दुःख होते, याचा मी **अनुभव घेत** आहे. (हे मी **अनुभवीत** आहे.)

२. **स्वीकार करना**– स्वीकारणे, स्वीकार करणे.

आपका आमन्त्रण **स्वीकार करते** हुए मुझे आनन्द हो रहा है– आपल्या निमंत्रणाचा स्वीकार करताना (करण्यात) मला आनंद होत आहे.

अस्वीकार करणे– न स्वीकारणे, नाही म्हणणे, नाकारणे, स्वीकार न करणे.

मज़दूरों की माँगें अस्वीकार की जाएँगी – मजुरांच्या मागण्या स्वीकारल्या ज़ाणार नाहीत. (मागण्यांचा स्वीकार केला ज़ाणार नाही.)

३. **निश्चय करना**— (०चा) निश्चय करणे, ठरविणे; वहाँ जाना हमने **निश्चय किया**— तेथे **जाण्याचा** आम्ही निश्चय केला.

[२२३]

शब्दकोश–२२ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
लोरी	अंगाई गीत [न.]	अवधि	मुदत [स्त्री.]
मक्खीचूस	अत्यंत कृपण, कवडी-चुंबक	दिलाना	देवविणे
		इनकार करना	नाकारणे
अछूत	अस्पृश्य	अजनबी	परका
सुनाना	ऐकविणे, सांगणे	बुलबुला	बुडबुडा [पुं.]
पहेली	कोडे [न.]	लकड़हारा	लाकुडतोड्या
[पहेली] सुलझाना	[कोडे] सोडविणे, सरळ-सोपे करणे	मुहावरा	वाक्प्रचार [पुं.]
		छूना	शिवणे, स्पर्श करणे
खिलाना	खाऊ घालणे, खावविणे, 'खाणे' भरविणे	देखना	बघणे
		स्वीकार करना	स्वीकारणे
		हिलना	हलणे, हालणे

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
गोबर-गणेश	गुळाचा गणपति	हिलाना	हालविणे
खुर्राटे लेना	घोरणे	हलचल	हालचाल
तय करना	ठरविणे		खळबळ

शब्दकोश– २२ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
आचवणे	[भोजन के बाद] हाथ धोना	पारवा [पुं.]	कबूतर
		पाळणा [पुं.]	पालना
आळेपिळे [पुं.]	अंगड़ाई	फुटणे	फूटना
आठवणे	याद आना	बहिरा	बहरा
आठवण [स्त्री.]	याद, स्मरण	पांगळा	अपाहिज़
आणविणे	लिवाना	[वस्तु] भेट [स्त्री.]	उपहार
उतावळा	उतावला	सुटणे	छूटना
गळणे	छूटना, चूना	सोडणे	छोड़ना
गाळणे	चुवाना, छानना	हसविणे	हँसाना
झ़ोपाळा [पुं.]	झूला	धाववणे, धावविणे	दौड़ाना
झ़ोके देणे	झुलाना	धाव [स्त्री.]	दौड़
धनी	मालिक	निज़विणे	सुलाना

शब्दकोश–२२ (इ)

कुछ मुहावरे : —

१. श्रीगणेश करना – [०चा] श्रीगणेश करणे, [०चा] आरंभ करणे

२. आँख लगना – डोळा लागणे, झ़ोप येणे.

३. आँखें खुलना – डोळे उघडणे

४. कमर कसना – बाँधना – कंबर बांधणे.

५. [०की] कली खिलना – [०ची] कळी फुलणे, प्रसन्न होणे.

[२२४] अनुवाद–खण्ड–२२

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए :—

१. अगर तुम मेरी बात मानोगे, तो मैं तुम्हें उनसे ज़्यादा मज़दूरी दिलाऊँगी। २. लकड़हारा जंगल में जाकर लकड़ी तोड़ता है और बाज़ार में भिजवाकर बेचता है। ३. अगर बिल्ली को अधिक खिलाएंगे, तो वह चूहे कैसे पकड़ेगी ? ४. उस मक्खीचूस ने कंगालों को बुलाकर दान देना तय किया था; उसकी यह बात हमें पहेली-सी लगी। ५. माँ बच्चे को पालने में रखकर सुलाती थी और लोरी गाती थी। ६. आजकल कई लोग शब्द-पहेलियाँ सुलझाने में बहुत समय खर्च करते हैं। ७. अछूत लोगों की माँग उन ब्राह्मणों ने स्वीकार नहीं की और उन्हें कुएँ से पानी निकाल लेने की इजाज़त देने से इनकार किया। ८. जब हम सभागृह के पास पहुँच गए, तब हमें मालूम हुआ कि अध्यक्ष ने सभा का काम मुल्तवी रखा है। ९. जब उसे अधिक खर्च करना पड़ा, तब उसकी आँखें खुल गईं। १०. अपना परीक्षा-फल देखकर उसकी कली खिल गई।

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

१. हे काम पूर्ण करण्यासाठी तयार व्हा. २. मी आजच् हिन्दी शिकावयाचा् श्रीगणेशा करणार आहे. ३. माझा् ज़रा डोळा लागला होता, तोच् तो मला उठवू लागला. ४. मला बाज़ारातून छत्र्या आणून द्या. ५. पाणी घाणेरडे असेल, तर ते गाळून प्यावे. ६. त्या दोन्ही बहिऱ्या माणसांचे संभाषण ऐकून मी हसू लागलो. ७. विदूषक स्वतः हसत नाही, पण दुसऱ्यांना हसवितो. ८. गुरांना पाणी पाज़ल्यानंतर त्यांना च्रावयास सोडा. ९. तो गुराखी वासरांनासुद्धा धाववीत राहिला. १०. धनी, या गरीब नोकराच्या ह्या तुच्छ भेटीचा् स्वीकार करा. ११. तो उतावळा माणूस रागाने भांडी आपटू लागला. त्यामुळे त्यातून पाणी गळू लागले आहे. १२. ते वर्षभर खेळत राहिले. आता नापास झाल्यावर त्यांच़े डोळे उघडतील. १३. इकडे च़ोर घरात शिरले होते. तरी तो घोरत पडला होता. १४. त्याचा् भाऊ अगदी गुळाचा् गणपती आहे. तो कोणत्याही कामात यशस्वी होणार नाही. १५. हे जग पाण्याच्या बुडबुड्या-प्रमाणे आहे. हा बुडबुडा केव्हा फुटेल, हे कोणी सांगावे.

२३. (अ) रीति-वर्तमान-काल

[२२५] **मैं करता हूँ – मैं किया करता हूँ**–इन वाक्यों की क्रियाओं से उक्त क्रिया का 'होता रहना' सूचित होता है। मराठी में ऐसी क्रियाएँ **असणे** सहायकारी क्रिया का प्रयोग करके बनाई जाती हैं इस सहायकारी क्रिया के पहले मूल क्रिया का **ईत - अत** प्रत्ययवाला रूप प्रयुक्त होता है।

[२२६] नमूने के लिए '**करणे**' का रीति वर्तमान-काल—

उ. पु.–मी **करीत असतो-ते-त्ये**; आम्ही **करीत असतो.**

म. पु.–तू **करीत** असतोस-तेस-त्येस; तुम्ही–आपण **करीत असता.**

अ. पु. तो **करीत असतो**;
ती **करीत असते**;
ते **करीत असते**;

ते करीत असतात
त्या ,,
ती ,,

[२२७] निषेध-सूचक रूप में लिए **नसणे** क्रिया का प्रयोग किया जाए। जैसे–

मी **करीत नसतो**– ते-त्ये इत्यादि।

तुम्ही करीत नसता.

[२२८] **नमूने के लिए वाक्य–**

१. माझे मित्र रोज़ नवभारत टाइम्स (वाचतात) वाचीत असतात – (मेरे दोस्त हररोज़ नवभारत टाइम्स पढ़ा करते हैं।)

२. ते आपापसात नेहमी लढत असतात (लढतात)–(वे आपस में हमेशा लड़ा करते हैं।)

३. तुम्ही दरवर्षी सिमल्याला ज़ाता–ज़ात असता–(तुम हरसाल सिमला जाया करते हो।)

४. असली फळे त्या खात नसतात–(ऐसे फल वे नहीं खाया करतीं।)

५. हल्ली आगगाड्या वेळेवर येत नाहीत–(आजकल रेलगाड़ियाँ ठीक समय पर नहीं आतीं।)

✦ ✦ ✦

[आ] रीति-भूतकाल

[२२९] क्रिया के **ईत** - **अत** प्रत्ययान्त रूप के साथ **असणे** के नीचे लिखे रूप प्रयुक्त होते हैं। निषेध-सूचक के अर्थ में **नसणे** के रूपों का प्रयोग करते हैं। ये रूप नीचे लिखे अनुसार हैं–

असणे - नसणे

उ. पु. –मी **असे** (नसे)	आम्ही असू–असो (**नसू-नसो**)
म. पु. –तू असस (नसस)	तुम्ही–आपण **असा-नसा**
अ. पु. -तो–ती ते असे (नसे)	ते–त्या–ती–**असत** (नसत)

देणें, देत नसणे – निषेध–सूचक

मी देत असे–नसे	आम्ही देत असू-नसू
तू देत असस–नसस	तुम्ही–आपण देत असा–नसा
तो–ती–ते देत असे–नसे	ते–त्या–ती देत असत–नसत

[२३०] नमूने के लिए वाक्य—

मराठी	**हिन्दी**
१. लहाणपणी आम्ही लपंडाव खेळत असू.	१. बचपन में हम आँखमिचौली खेलते थे। (खेला करते थे।)
२. ते व्यायाम-शाळेत खूप व्यायाम करीत असत.	२. वे कसरतखाने में बहुत कसरत किया करते थे।
३. त्या आपल्या घरची भांडी स्वताच् घासत असत.	३. वे अपने घर के बर्तन खुद माँजा करती थीं।
४. आमचे गुरुजी आम्हाला शूरांच्या गोष्टी सांगत असत.	४. हमारे गुरुजी हमें शूरों की कथाएँ सुनाया करते थे।
५. तुम्ही आमच्याकडे खेळण्या-साठी रोज़ येत असा.	५. तुम हमारे यहाँ रोज़ खेलने के लिए आया करते थे।
६. मी तलावात पोहावयास ज़ात नसे.	६. मैं तालाब में तैरने के लिए नहीं जाया कऱता था।

◆ ◆ ◆

[इ] रीति-भविष्यत्-काल

[२३१] 'हम कल से यह काम करते रहेंगे'–जैसे वाक्य में यह बात सूचित की गई है कि भविष्य में कोई क्रिया नित्य होती रहेगी। हिन्दी में ऐसे प्रयोग के लिए **रहना** क्रिया का सहायकारी के तौर पर प्रयोग किया गया है। वैसे ही मराठी में क्रिया के **ईत–अत** प्रत्ययान्त रूप के साथ '**राहणे**' के भविष्यत्-काल के रूपों का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

१. मी रोज़ दुपारी सूत **काढीत राहीन** – मैं रोज़ दुपहर को सूत **कातता रहूँगा**।

२. आपण आम्हाला अशीच् मदत **करीत राहाल**– आप हमारी ऐसी ही मदद **करते रहेंगे**।

३. त्या तेथे काम **करीत राहतील**– वे वहाँ काम **करती रहेंगी**।

✦ ✦ ✦

[२३२] असल में सामान्य वर्तमानकाल के रूप से भी रीति-काल का बोध होता ही है। हिन्दी तथा मराठी दोनों में यह बात पाई जाती है। जैसे–

१. मी रोज़ वर्तमानपत्र **वाच्तो** (– **वाचीत असतो**) = मैं रोज़ अखबार **पढ़ता हूँ** (–**पढ़ा करता हूँ**)।

२. माळी बागेत शिपण्याचे काम **करतो** (– **करीत असतो**) = माली बाग में सिंचाई का काम **करता है**। (– **किया करता है**)

[२३३] **राहणे** क्रिया का प्रयोग क्रिया की अविरतता, क्रिया का चलता रहना दिखाने के लिए भी किया जाता है। जैसे–

मराठी	हिन्दी
१. रोज़ असेच् **येत रहा** (राहा).	१. रोज़ ऐसे ही **आते रहो**।
२. तो तसाच् **चालत राहिला.**	२. वह वैसा ही **चलता रहा**।
३. ते लोक आपआपसात असेच् **भांडत राहतील.**	३. वे लोग आपस में ऐसे ही झगड़ते रहेंगे।

४. ज़र असाच़ मुसळधार पाऊस आणखी आठ दिवस **पडत राहिला**, तर शेतीच़े काम पुरे होणार नाही.	४. अगर ऐसी ही मूसलाधार बारिश और आठ दिन **होती रहेगी**, तो खेती का काम पूरा नहीं होगा।
५. तो वेडा मनुष्य सारखा बोलतच़ राहिला.	५. वह पागल आदमी बराबर बोलता ही रहा।

✦ ✦ ✦

[उ] कुछ कृदन्त (भूतकालवाचक कृदन्त विशेषण)

[२३४] १. **किया हुआ** काम = **केलेले** काम

२. **दिया हुआ** वचन = **दिलेले** वचन

३. **लिखे हुए** अनुच्छेद = **लिहिलेले** परिच्छेद (पॅरिग्राफ)

४. **घटी हुई** घटना = **घडलेली** घटना (गोष्ट)

५. **मरी हुई** चिड़िया = **मेलेले** पाखरू

'**केलेले**' शब्द '**करणे**' क्रिया के '**केले**' (भूतकाल) रूप को '**ले**' प्रत्यय जोड़कर बनाया गया है। **ला-ले-ली-ल्या** प्रत्यय लगाकर ऐसे रूप बनाए जा सकते हैं। जैसे—**केलेला, केलेली, केलेले, केलेल्या** इत्यादि। अन्य क्रियाओं के उदाहरण—

खाणे– खाल्लेला-ली-ले, खाल्लेले-ल्या-ली इ०

देणे – दिलेला-ली-ले, दिलेले-ल्या-ली इ०

पडणे– पडलेला-ली-ले, पडलेले-ल्या-ली इ०

क्रिया के भूतकाल के **ले** प्रत्ययान्त रूप को **ला-ली-ले** आदि प्रत्यय लगाए गए हैं।

[२३५] ऐसा कृदन्त विशेषण होता है। यह कृदन्त विशेषण जिस संज्ञा के साथ होगा, उसी के अनुसार उसका लिंग-वचन माना जाता है। जैसे—

१. लिहिलेला **कागद** (पुं. ए. व.); लिहिलेले **कागद** (पुं. ब. व)

२. लिहिलेली कविता (स्त्री. ए. व.) – लिहिलेल्या कविता (स्त्री. ब. व.)

३. लिहिलेले **काव्य** (न. ए. व.)–लिहिलेली काव्ये (न. ब. व.)

[२३६] ऐसे विशेषण का विकृत रूप अन्य विशेषणों की तरह ही होता है। जैसे–

लिहिलेला कागद – लिहिलेल्या कागदावर
लिहिलेली कविता -- लिहिलेल्या कवितेवर
लिहिलेले काव्य – लिहिलेल्या काव्याचा
लिहिलेली पत्रे – लिहिलेल्या पत्रांचा

[२३७] ऐसे कृदन्त विशेषण द्वारा सूचित की जानेवाली क्रिया किसने की है – यह बतलाने की हिन्दी और मराठी पद्धति में फर्क है। उसे ध्यान में रखिए। जैसे–

हिन्दी	मराठी
१. **टागोर की** लिखी हुई कहानी	१. **टागोरांनी** लिहिलेली गोष्ट
२. **मेरा** किया हुआ कार्य	२. **मी** केलेले कार्य

हिन्दी में सम्बन्ध-कारक का प्रयोग होता है, तो मराठी में (ने – नी आदि विभक्त्यन्त) करण-कारक को प्रयुक्त किया जाता है।

[२३८] कोई बात करने का इरादा है या था – यह सूचित करने के लिए हिन्दी में यों कहा जाता है–

१. मैं यह काम **करनेवाला था**।

२. वह यह काम **करनेवाली थी**।

३. वे ऐसी घड़ी **लानेवाले हैं**।

४. हम आज शतरंज **खेलनेवाले हैं**।

मराठी में इसका शब्दशः अनुवाद ‘करणारा होतो’, ‘करणारी होती’ आदि करने की अपेक्षा ‘**करणार होतो**’, ‘**करणार होती**’ ऐसा किया जाए। मराठी में यह नीचे लिखे अनुसार बताया जाए– १. मी हे काम **करणार होतो.** २. ती हे काम **करणार होती.** ३. ते असे (असले) घड्याळ **आणणार आहेत.** ४. आम्ही आज बुद्धिबळे **खेळणार**

आहोत. फिर भी क्रिया वर्तमान-काल में हो, तो उसका अनुवाद मूल क्रिया का सिर्फ भविष्यत्-काल करके किया जाए तो भी अनुचित नहीं होगा। जैसे—आम्ही आज़ बुद्धिबळे खेळू. ते असले घड्याळ **आणतील.**

[२३९] मोटे टाईप में छपे शब्दों पर गौर कीजिए—

१. हारमोनियम **बजाते हुए** वह गा रहा था।

२. उसकी ओर **देखते हुए** वे हँस रहे थे।

४. हमारी तरफ **घूरते हुए** वह फौजी सिपाही ठहर गया।

बजाते हुए, देखते हुए, घूरते हुए आदि शब्द-प्रयोग से सूचित होता है कि एक क्रिया शुरू है, उसी वक्त दूसरी भी हो रही है या होगी। मराठी में यद्यपि **करते हुए** का शब्दशः अनुवाद **करताना** होगा, तो भी वह कानों को खटकता है। अतः आवश्यक परिवर्तन करते हुए उसे पेश करना चाहिए। जैसे—

१. हारमोनियम **वाजवीत** (-वाजवीत) तो गात होता.

२. त्याच्याकडे **पहात** ते हसत होते,

३. आमच्याकडे **टक लावून पहात** तो लष्करी शिपाई थांबला.

और कुछ वाक्यांश–१. **देखकर** – पाहून;

देखते हुए – पहात, पहात असताना; **देखते-देखते**– पहाता-पहाता.

२. **बैठकर**–बसून;

बैठते हुए–बसत असताना, बसत; **बैठते-बैठते**–बसता-बसता.

[२४०] **करने के बाद** 'करण्यानंतर', 'केल्यानंतर'–इनमें से दूसरा शब्द-प्रयोग अधिक उचित है। इसी तरह कृदन्तों में सम्बन्ध-सूचक अव्यय जोड़ते समय मूल क्रिया को **ल्या** प्रत्यय लगाएँ। जैसे—

१. काम पूर्ण **केल्यानंतर** – काम पूर्ण करने के बाद

२. पत्र **लिहिल्यावर** वाचून पहा – पत्र लिखने के बाद पढ़कर देखो।

३. **दाखविल्याप्रमाणे** चित्र काढा – दिखाए अनुसार चित्र खींचो।

४. **बोलल्याप्रमाणे** करा – कहे हुए अनुसार करो।

[२४१] कृदन्त का और एक प्रकार से प्रयोग किया जाता है। **जैसे**– १. या गोष्टी अशाच् **लिहिलेल्या होत्या**=ये बातें ऐसी ही **लिखी हुई थीं**। २. ते फारच् **थकलेले दिसले**=वे बहुत **थके हुए** दिखाई दिए।

ऐसी वाक्य-रचना में मूल क्रिया में **लेला, लेली, लेले, लेल्या** आदि प्रत्यय लगाए जाते हैं। या क्रिया के ले-प्रत्ययान्त भूतकाल के रूप में **ले, ल्या, ला, ली** प्रत्यय लगाए जाते हैं। उनका प्रयोग विशेषण की तरह किया जाता है। जैसे–

केलेले नुकसान – किया हुआ नुकसान। **फाटलेले पुस्तक** – फटी हुई पुस्तक।

◆ ◆ ◆

[ए] भविष्यत्-काल का विशेष प्रयोग

[२४२] मराठी में कभी-कभी उद्देश्य, निश्चय आदि भविष्यत्-काल की क्रिया द्वारा सूचित किया जाता है। जैसे–

१. मी उद्या कलकत्त्याला **जाणार** = मैं कल कलकत्ता जाऊँगा।
२. ते उद्या **येणार नाहीत** = वे कल **नहीं आएँगे**।
३. त्या उद्या सभेत भाग **घेणार नाहीत** = वे कल सभा में भाग नहीं लेंगी।

ऐसे प्रयोग के लिए मूल क्रिया में **णार** प्रत्यय जोड़ा जाए। कुछ रूप –

जाणे–जाणार **देणे**–देणार **पिणे**–पिणार
आणणे–आणणार **बसणे**–बसणार **करणे**–करणार

ये रूप सब पुरुषों में और सब लिंगों में प्रयुक्त होते हैं। निषेध-सूचक बनाने के लिए इस रूप के साथ **नाही** के रूप रखे जाएँ।

[२४३] नमूने के लिए वाक्य–

मराठी	हिन्दी
१. लोकहिताला हानिकारक ठरणाऱ्या चळवळी सरकार **चालू देणार** नाही.	१. लोकहित को हानिकारी होनेवाले आन्दोलनों को सरकार नहीं चलने देगी।
२. त्या भिकाऱ्याला पुढे **ढकलीत** असताना तो त्याला शिव्याही देत होता.	२. उस भिखमँगे को आगे धकेलते हुए वह उसे गालियाँ भी दे रहा था।

३. बी. ए. पास झाल्यानंतर तरी बहुतेक विद्यार्थी काय करणार?	३. बी. ए. करने के बाद भी अधिकांश विद्यार्थी क्या कर सकेंगे?
४. लोकांना ती म्हातारी आपल्या खोलीत ज़खमी होऊन पडलेली दिसली.	४. लोगों को वह बुढ़िया अपने कमरे में घायल होकर पड़ी हुई दिखाई दी।
५. आज माझे मामा येथे काही कामासाठी येणार होते.	५. आज मेरे मामा यहाँ किसी काम के लिए आनेवाले थे।
६. दादाभाई नौरोजींनी केलेले कार्य भारताच्या इतिहासात अमर झाले आहे.	६. दादाभाई नौरोजी का किया हुआ कार्य भारत के इतिहास में अमर हो चुका है।

[२४४] ## शब्दकोश–२३ (अ)

हिन्दी	मराठी	हिन्दी	मराठी
कुरेदना	उकरणे	दूरबीन	दुर्बीण [स्त्री.]
निगलना	गिळणे	मनौती	नवस [पुं.]
खरोंचना / नोचना	[नख वगैरेने] खरचटवणे, ओरबाडणे	नब्ज़	नाडी
		छिपकली	पाल
गोह	घोरपड [स्त्री.]	निचोड़ना	पिळणे
ठिठकना	चपापणे	जाली	बनावट
चाभी	चावी, किल्ली	ध्यान देना	लक्ष देणे
छोड़ देना	गाळणे, वगळणे	अवधान, ध्यान	लक्ष [न.]
दिखाई देना	दिसणे	सनकी	लहरी
जामुन	जांभूळ [स्त्री.]	बसना	वस्ती करून राहणे
सुरंग	बोगदा [पुं.]		
गोलाबारूद	दारूगोळा	हठ	हट्ट [पुं.]
बारूद	[बंदुकीची] दारू [स्त्री.]	हठी	हट्टी
दस्तावेज	दस्तऐवज [पुं.]	अनवधान	दुर्लक्ष [न.]

शब्दकोश-२३ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
अडकित्ता [पुं.]	सरौता	भुंगा	भौंरा
आगकाडी [स्त्री.]	दियासलाई	मरगळलेला	मरियल
कावड [स्त्री.]	बहँगी	माहेर [न.]	मायका
काडी	सलाई	मेण [न.]	मोम
घट्ट होणे, थिजणे	जमना	मेणबत्ती [स्त्री.]	मोमबत्ती
घाम	पसीना	विरघळणे	गलना
गंज [पुं.]	मोरचा, ज़ंग	सरकणे	सरकना
डोकावणे, वाकून पाहणे	झाँकना	सासर [न.]	ससुराल
		सिद्ध	साबित
दुरुस्ती	मरम्मत	हकीगत [स्त्री.]	समाचार
पाघळणे	पिघलकर चूने लगना	हटविणे	हटाना
पाळीपाळीने	बारी-बारी से	हाड [न.]	हड्डी
बादली	बालटी	हळवा	भावुक, कोमल मनवाला
व्रण	नासूर		

शब्दकोश-२३ (इ)

कुछ मुहावरे —

१. अर्पण करना – न्योछावर करना, २. दृष्ट लागणे – नज़र लगना [दृष्ट-नज़र], ३. डोक्यावर बसणे – सिर चढ़ना, ४. तिळाचा ताड करण– तिल का ताड़ करना, ज़रा-सी बात को बहुत बढ़ा देना, ५. तोंडावर थुंकणे– मुँह पर थूकना, धिक्कारना।

[२४५] अनुवाद - खण्ड–३

[अ] मराठी में अनुवाद कीजिए :—

१. कुछ लोग अपने बच्चों को बहुत ज़्यादा लाड़-प्यार करते हैं। वे उनकी हर एक माँग पूरी करते रहते हैं। इससे वे बच्चे हठ करने लगते हैं। वे माता-पिता के सिर पर चढ़ते हैं। २. वह गँवार औरत अपने

बीमार बच्चे को कोई दवा नहीं देती। वह मानती है कि उसे किसी की नज़र लगी है, इसलिए वह बीमार पड़ गया है। वह चंगा हो, इसलिए भगवान से वह मिन्नत करती है, पूजा-पाठ करवाती है। ३. बचपन में हम लोग अपने गाँव के तालाब में तैरने के लिए रोज जाया करते थे। उस तालाब के किनारे पर एक बरगद पेड़ था। उसकी एक शाखा तालाब के पानी पर लटकती थी। उस शाखा पर चढ़कर नीचे तालाब में कूद पड़ने में हमें बड़ा मज़ा आता था। हमारे माता-पिता हमें कभी नहीं रोका करते थे। ४. अगर मैं इस साल उत्तीर्ण न हो सकी, तो मैं फिर से परीक्षा के लिए तैयारी करूँगी। जब तक मैं उत्तीर्ण न हो जाऊँगी, तब तक मैं परीक्षा में बैठती रहूँगी। ५. मालूम नहीं, मेरा किया कोई भी काम मेरे चाचाजी को क्यों पसन्द नहीं आ रहा है। उनकी कही हुई हर बात मैं मानता हूँ। उनके बतलाए हुए नियमों के अनुसार काम करता रहता हूँ। फिर भी वे कभी मुझसे प्रसन्न नहीं दिखाई देते।

(आ) हिंदी में अनुवाद कीजिए :—

१. त्याचे लिहिणे इतके वाईट आहे की आपण स्वत: लिहिलेलेही त्याला वाचता येत नाही. २. रस्त्यात हा रुपया पडलेला होता. इतके लोक तिकडून गेले, पण कोणालाही तो दिसला नाही, हे पाहून आम्हाला आश्चर्य वाटते. ३. यंदा ती परीक्षेला बसणार होती; पण परीक्षा-मंत्र्यांनी तिचा फॉर्म [आवेदन-पत्र] स्वीकारला नाही. ४. दारिद्र्य आणि मरण यांपैकी मरण स्वीकारावे, असे म्हणतात; कारण दारिद्र्याच्या यातना सतत होत असतात; पण मरणाच्या यातना एकदाच् होतात. असे असले तरी शूर लोक प्रयत्न करतात. ते दारिद्र्याला भीत नाहीत. ५. त्यांच्या मृत्यूने संस्थेचे झालेले नुकसान फार मोठे आहे. ६. आपण जर म्हणण्याप्रमाणे काम केले नाही, तर लोक आपल्या तोंडावर थुंकतील. ७. मी जे सांगतो तिकडे लक्ष द्या; जर दुर्लक्ष केलेत तर तुमचेच् नुकसान होईल. ८. आपल्या बहिणीच्या सासरची हकीगत त्याने ऐकली. त्याचे मन फार हळवे आहे, म्हणून ते ऐकून तो एकदम रडू लागला. ९. पहारेकरी एकदम ओरडला – मागे हटा. काही लोक मागे सरकले; जे मागे हटले नाहीत, त्यांना पहारेकऱ्यांनी मागे हटवले. १०. त्याने सांगितलेली प्रत्येक गोष्ट खरी समजू नका. ११. त्या गादीवर बसलेला तो गृहस्थ कोण? १२. बोलता-बोलता हसायची त्याला वाईट सवय आहे.

✦ ✦ ✦

२४. [अ] कर्मवाच्य

[२४६] नीचे लिखे हिन्दी और मराठी वाक्य पढ़कर मोटे टाईप में छपे हुए शब्दों पर गौर कीजिए–

हिन्दी	मराठी
१. **राम** पुस्तक **पढ़ता है।**	१. **राम** पुस्तक **वाचतो.**
राम से पुस्तक **पढ़ी जाती है।**	**रामाकडून** पुस्तक **वाचले जाते.**
२. **मालिक** नौकर को पैसे **देता है।**	**मालक** नोकराला पैसे **देतो.**
मालिक से नौकर को पैसे **दिए जाते हैं।**	**मालकाकडून** नोकराला पैसे **दिले जातात.**
३. **हमने** आम **खाए।**	३. **आम्ही** आंबे **खाल्ले.**
हमसे आम **खाए गए।**	**आम्हाकडून** (आमच्याकडून) आंबे **खाल्ले गेले.**
४. **वह** चिट्ठी **लिख रही है।**	४. **ती** पत्र **लिहीत आहे.**
उससे चिट्ठी **लिखी जा रही है।**	**तिच्याकडून** पत्र **लिहिले जात आहे.**

हिन्दी के पहले वाक्य कर्तृवाच्य में हैं और उन्हें कर्म-वाच्य में बदल दिया गया है। कर्म-वाच्य में कर्ता करण-कारक में होता है और मूल क्रिया के भूतकाल के रूप के साथ **जाना** सहायकारी क्रिया के रूप रखे जाते हैं। यहाँ काल में परिवर्तन नहीं किया गया; परंतु कर्तृ-वाच्यवाली क्रिया का जो काल है, वही कर्म-वाच्यवाली **जाना** सहायकारी क्रिया का रखा गया है। वैसे ही क्रिया के रूप कर्म-वाच्य में कर्म के लिंग-वचन-पुरुष के अनुसार रखे गए हैं।

मराठी में भी लगभग ऐसा ही प्रयोग किया जाता है। यह परिवर्तन नीचे लिखे अनुसार होगा–

[२४७] (अ) वाक्य के उद्देश्य को **द्वारा, कडून** जैसे सम्बन्ध-सूचक जोड़े जाएँ। उदा० राम–राम (मा) कडून, मालक-मालकाकडून,

ती-तिच्याकडून, आम्ही-आम्हा (आमच्या) कडून। (आ) कर्तृ-वाच्यवाली क्रिया वा भूतकाल का रूप बनाएँ। इसका लिंग-वचन-पुरुष कर्म के लिंग-वचन-पुरुष के अनुसार रहे। (इ) **जाणे** सहायकारी क्रिया के रूप कर्तृ-वाच्यवाली क्रिया के काल के अनुसार बनाए जाएँ। कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के काल में परिवर्तन न करें। ये रूप भी कर्म के लिंग-वचन-पुरुष के अनुसार रहेंगे।

उदाहरण– १. विद्यार्थ्यांनी पाठ वाचले.

विद्यार्थ्यांनी उद्देश्य है। उसे **कडून** सम्बन्धसूचक लगा देने से **विद्यार्थ्यांकडून** (विद्यार्थ्यांच्याकडून) शब्द बन गया। **वाचले** क्रिया भूतकाल में है ही। इसलिए वही रूप रखें। **जाणे** सहायकारी क्रिया लेकर **पाठ** शब्द के अनुसार पुं. ब. व. अन्य पुं. में उसका रूप बनाएँ। **जाणे**–गेले। अब वाक्य होगा

विद्यार्थ्यांकडून पाठ वाचले गेले.

१. कर्तृवाच्य – मुली गाणी गातील.

कर्मवाच्य - मुलींकडून गाणी (न. ब. व.) गायली जातील.

कर्तृवाच्य – नोकर काम **करीत आहेत.**

कर्मवाच्य – नोकराकडून काम **केले जात आहे.**

[२४८] नियमों की झंझट में उलझनों की अपेक्षा हिन्दी वाक्य सामने रखकर ठीक उसी के अनुसार मराठी वाक्य बदल देने का अभ्यास करें। यहाँ भिन्न-भिन्न कालों के उदाहरण दिए जा रहे हैं—

कर्तृ-वाच्य	कर्म-वाच्य
१. फेरीवाला खिलौने बेचता है। फेरीवाला खेळणी विकतो.	१. फेरीवाले से खिलौने बेचे जाते हैं। फेरीवाल्याकडून खेळणी विकली जातात.
२. गाड़ीवान गाड़ी चला रहा है। गाडीवाला गाडी चालवीत आहे.	२. गाड़ीवान से गाड़ी चलाई जा रही है। गाडीवाल्याकडून गाडी चालविली जात आहे.
३. अनिल ने पुस्तक पढ़ी। अनिलने पुस्तक वाचले.	३. अनिल से पुस्तक पढ़ी गई। अनिलकडून पुस्तक वाचले गेले.

४. चम्पा कहानी लिख रही थी।	४. चम्पा से कहानी लिखी जा रही थी।
चम्पा गोष्ट लिहीत होती.	चम्पा (म्ये) कडून गोष्ट लिहिली ज़ात होती.
५. मैंने मज़दूर को पैसे दिए हैं।	५. मुझसे (मेरे द्वारा) मज़दूर को पैसे दिए गए हैं।
मी मजुराला पैसे दिले आहेत.	माझ्याकडून मजुराला पैसे दिले गेले आहेत.
६. नेताजी सुभाषचन्द्र ने आज़ाद हिन्द सेना की स्थापना की थी।	६. नेताजी सुभाषचन्द्र से आज़ाद हिन्द सेना की स्थापना की गई थी।
नेताजी सुभाषचन्द्रांनी आज़ाद हिन्द सेनेची स्थापना केली होती.	नेताजी सुभाषचन्द्रांकडून आज़ाद हिन्द सेनेची स्थापना केली गेली होती.
७. तुम उसे काम दोगे।	७. तुम्हारे द्वारा उसे काम दिया जाएगा।
तुम्ही त्याला काम द्याल.	तुमच्याकडून त्याला काम दिले ज़ाईल.
८. मैं उसे हिन्दी सिखाता था।	८. मुझसे उसे हिन्दी सिखाई जाती थी।
मी त्याला हिन्दी शिकवीत होतो (असे).	माझ्याकडून त्याला हिन्दी (भाषा) शिकविली ज़ात असे.
९. उसने पैसे चुराए होंगे।	९. उससे पैसे चुराए गए होंगे।
त्याने पैसे च़ोरले असावेत.	त्याच्याकडून पैसे च़ोरले गेले असावेत.
१०. (तुम) फल लाओ।	१०. (तुमसे) फल लाए जाएँ।
(तुम्ही) फळे आणा.	(तुम्हाकडून) फळे आणली ज़ावीत.
११. हर विद्यार्थी यह पाठ पढ़े।	११. हर विद्यार्थी द्वारा यह पाठ पढ़ा जाए।

प्रत्येक विद्यार्थ्याने हा पाठ वाचावा.	प्रत्येक विद्यार्थ्यांकडून हा पाठ वाचला जावा.
१२. क्या वे बेर लाएँगी ?	१२. क्या उनके द्वारा बेर लाए जाएँगे ?
त्या बोरे आणतील का ?	त्यांच्याकडून बोरे आणली ज़ातील का ?

[२४९] हिन्दी में–'उन्होंने बाघ को मारा।', 'मैंने पुस्तक को पढ़ा।' जैसे वाक्य आम प्रचार में हैं। मगर मराठी में इनमें से कुछ प्रयोग ग्राह्य नहीं माने जाते। आम तौर पर कर्म को कोई विभक्ति लगाई नहीं जाती, उसका वैसा ही प्रयोग किया जाता है। जैसे—

त्यानी वाघ मारला, त्यानी वाघाला मारले – इनमें से दोनों प्रयोग प्रचलित हैं; पर 'मी पुस्तकाला वाचले' की अपेक्षा 'मी पुस्तक वाचले' अधिक शिष्ट-सम्मत है। और कुछ वाक्य –

१. हमने कुत्तों को पाला है।	आम्ही **कुत्रे** पाळले आहेत.
२. मैंने रोटी को खाया।	मी **भाकरी** खाल्ली.
३. आपने तोते को पकड़ा।	आपण **पोपट** पकडला.

[२५०] 'बिल्ली ने चूहे को पकड़ा'=मांजराने उंदराला पकडले. इस प्रयोग में **मांज़राने** उद्देश्य है, जो करण-कारक में है। **उंदराला** कर्म है, जो कर्म-कारक में है। **पकडले** क्रिया अन्य पुरुष, नपुंसकलिंग और एकवचन है। इस तरह मराठी में ऐसी वाक्य-रचना में कर्म नित्य कर्म-कारक में और क्रिया नपुंसकलिंग, अन्य-पुरुष एकवचन में होती है। उसका वाच्य-परिवर्तन करते समय भी सहायकारी क्रिया नपुंसकलिंग, अन्य-पुरुष और एकवचन में होगी और कर्म कर्म-कारक में रहेगा। जैसे–

१. शिपायाने च़ोराला धरले = (शिपायाकडून च़ोराला धरले गेले.)
= शिपायाकडून च़ोर धरला गेला.

२. रामाने रावणाला मारले = (रामाकडून रावणाला मारले गेले.)
= रामाकडून रावण मारला गेला.

फिर भी कर्म को बिना कोई कारक-चिह्न लगाए उसी के लिंग-वचन-पुरुष के अनुसार क्रिया के रूप बनाकर रख दिए जा सकते हैं। ऐसा ही प्रयोग अधिक शिष्ट-सम्मत है।

[२५१] नमूने के लिए वाक्य—

१. दुकानदाराकडून लहान मोठ्या पुड्या तयार केल्या गेल्या.	१. दुकानदार से छोटी-बड़ी पुड़ियाँ तैयार की गईं।
२. पोलिसांकडून त्याच्यावर ठेवलेला खुनाचा आरोप सिद्ध केला जाऊ शकला नाही.	२. उसपर लगाया गया हत्या का अभियोग पुलिस द्वारा साबित नहीं किया जा सका।
३. होतकरू लेखकांकडून लिहिल्या गेलेल्या गोष्टी संपादक-मंडळाकडून स्वीकारल्या गेल्या नाहीत.	३. होनहार लेखकों की लिखी हुई कहानियाँ सम्पादक-मण्डल द्वारा स्वीकार नहीं की गईं।
४. फौजदाराकडून गाड्या अडविल्या गेल्या, चौकशी केली गेली व शेवटी काही माल ताब्यात घेतला गेला.	४. दारोगा से गाड़ियों को रोका गया, पूछताछ की गई और आखिर कुछ माल बरामद किया गया।
५. त्याच्याजवळून घेतलेल्या सर्व वस्तु त्याला परत केल्या जात आहेत.	५. उससे ली हुई सब चीज़ें उसे लौटाई जा रही हैं।

[२५१ अ] मराठी में 'वाच्य' शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता। उसमें 'प्रयोग = Voice' शब्द का प्रचलन है। मराठी 'प्रयोग' और हिन्दी 'वाच्य' में यद्यपि कुछ समानता है, फिर भी भिन्नता की भी कमी नहीं है। मगर इस बारीकी की ओर ध्यान न दें, व्यावहारिक प्रयोग मात्र देखें।

[२५२] शब्दकोश– २४ (अ)

हिंदी	मराठी	हिंदी	मराठी
हिचकी	उचकी [स्त्री.]	गिरगिट	सरडा
गीध	गिधाड [न.]	बढ़िया, बेहतरीन	सुंदर, उत्तम
चील	घार [स्त्री.]	सपना	स्वप्न
मँडराना	(वरून) घिरट्या घालणे	सपना देखना	स्वप्न पडणे
		ठुकराना	ठोकरणे
तलुवा	तळवा [पुं.]	हाशिया	[कागदाचा] समास
उल्लू	घुबड [न.]	सिसकी	हुंदका [पुं.]
किस्म	जात, तऱ्हा	सिसकना	हुंदके नेणे
समालोचक	टीकाकार	दहेज़	हुंडा
अकाल	दुष्काळ	हाथीदाँत	हस्तीदंत [पुं. न.]
हाँफना	धापा टाकणे	आज़ाद	स्वतंत्र
सुनसान	निर्जन	पहरा	पहारा
कद, डील	[शरीराचा] बांधा [पुं.], अंगलट [स्त्री.]	आज़ादी	स्वतंत्रता
मझोला	मध्यम, मधला	ढहना	ढासळण

शब्दकोश–२ (आ)

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
अपचन [न.]	बदहज़मी	भाचा-भाची	भानजा-भानजी
अभागी	अभागा	मतदार	मतदाता
आगाऊ	पेशगी	मँगूस [न. पुं]	नेवला
ओहोटी [समुद्राची]	भाटा	यादी, सूची	सूची
ऊन [न.]	धूप	सोंड [स्त्री.]	सूँड
चाचपडणे	टटोलना	स्क्रू [पुं.]	पेच
ठेवा [पुं.]	धरोहर	स्क्रू-ड्रायव्हर	पेचकश
थांबणे	रुकना, ठहरना, थमना	हाल [पुं.]	दुर्दशा
		हरकत [स्त्री.]	हर्ज, आपत्ति

मराठी	हिन्दी	मराठी	हिन्दी
दुर्दैवी	बदनसीब	होतकरू	होनहार
निघून जाणे	निकल जाना	पथ्य [न.]	परहेज़
भरती [समुद्राची]	ज्वार	पहारेकरी	पहरेदार
कोळी	मछुआ	बाभळ [स्त्री.] बाभूळ [„]	बबूल

शब्दकोश–२४ (इ)

कुछ मुहावरे :— दूध नासणे – दूध फटना ।
धुळीस [ला] मिळणे – मिट्टी में मिलना ।
[०ला, ०ना] देवाज्ञा होणे, स्वर्गवासी होणे – चल बसना ।
बांगड्या भरणे – चूड़ियाँ पहनना, स्त्रियों की तरह कायर होना

[२५३] अनुवाद–खण्ड– २४

(अ) मराठी में अनुवाद कीजिए —

१. उसकी हत्या की गई और एक सुनसान जगह मुर्दा रखा गया। २. समालोचकों द्वारा उसकी नई पुस्तक की प्रशंसा की गई है। ३. जब दो हज़ार रुपये दहेज़ माँगा गया, तब उसने तय किया कि इस साल बेटी का ब्याह न किया जाए। ४. सभी विद्यार्थियों को सूचना दी गई है कि उत्तरपत्रिका में लिखते वक्त हाशिया बनाया जाए। ५. मैंने कल रात को बुरा सपना देखा। ६. ऊँचे कद का वह आदमी मालिक है और मझोले कदवाला उसका नौकर है। ७. अकाल के दिनों में लोगों की मदद करने के लिए हज़ारों रुपये खर्च किए थे। ८. आसमान में मँड़राते-मँड़राते चील को जब ज़मीन पर साँप दिखाई दिया, तब वह एकदम नीचे आ गई, उसने लपककर साँप को पकड़ लिया और वह बबूल के पेड़ पर जा बैठी। ९. गीध सड़ा हुआ माँस खाता है। १०. ये मोती बढ़िया किस्म के हैं।

[आ] हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. दुधात मीठ टाकले गेले, तर ते दूध नासते. २. रात्री बारा वाजेपर्यंत ती आपल्या मुलाची वाट पहात राहिली. तो अद्यापि आला नाही, हे पाहून ती स्वतः चौकशी करण्यासाठी बाहेर गेली. ३. त्या शहराचे

वैभव शेवटी धुळीस मिळाले. ४. पाहाता काय ? इतका अन्याय तुम्ही का सहन करता ? तुम्ही काय बांगड्या भरल्या आहेत ? ५. १९२० साली लोकमान्य टिळकांना देवाज्ञा झाली. ६. स्क्रू काढण्यासाठी स्क्रू–ड्रायव्हर घेऊन ये. ७. शहरातील मतदारांची यादी बनविली जात आहे. ८. समुद्राच्या भरती-ओहोटीचा विचार करून मासे मारण्यासाठी कोळी होड्या घेऊन जातात. ९. मुंगूस सापाला मारून खातो. १०. उन्हामध्ये कपडे वाळण्यासाठी घाला. (= रखना) ११. माझा भाचा फार दुर्दैवी आहे. कारण इतके शिकल्यावरही त्याला नोकरी मिळाली नाही. १२. आगाऊ मंजूरी दिली जाणार नाही व बक्षिसही तुला मिळणार नाही. काम करावयाचे नसेल तर तू निघून जा. १३. आंधळा काठी घेऊन चाचपडत चाललेला होता. १४. अपचनापासून अनेक रोग उत्पन्न होतात. १५. हस्तीदंताच्या वस्तू फार मूल्यवान असतात. १६. मतदार येत होते. त्यांना मत-पत्रिका दिल्या जात होत्या. १७. मतदानाच्या वेळी प्रचार केला जात नव्हता, सर्वत्र चांगली व्यवस्था केली गेली होती.

◆ ◆ ◆

२५. कतिपय विशेष शब्द-प्रयोग

[२५४.] यहाँ कुछ मराठी के शब्द दिए जा रहे हैं। हरएक के प्रयोग में अर्थ की दृष्टि से कई विशेषताएँ पाई जाती हैं। इसलिए उनका प्रयोग करते समय सावधानी बरतें।

१. **म्हणणे** : १. **कहना** – तो **म्हणाला** – उसने **कहा**।

२. **कहना** – या वस्तुला रेडिओ-ग्राम **म्हणतात** – इस वस्तु को रेडिओ-ग्राम **कहते हैं**।

३. **गाना** – एक गोड गाणे **म्हण** – एक मीठा गीत **गाओ**।

२. **म्हणून** : १. **नामक** – बुद्ध-गया **म्हणून** एक पवित्र स्थान आहे – बुद्ध-गया **नामक** एक पवित्र स्थान है।

२. **इसलिए** – तो येईना **म्हणून** मीच आलो – वह नहीं आता था, **इसलिए** मैं ही आ गया।

३. कहकर, बोलकर – असे म्हणून तो चालू लागला – ऐसा बोलकर [कहकर] वह चलने लगा।

४. इससे – असे असले म्हणून काय झाले ? – ऐसा है, इससे क्या हुआ ?

३. म्हणजे : १ यानी – सूक्ष्मवेक्षण यंत्र म्हणजे दुर्बीण – सूक्ष्मवेक्षण यंत्र यानी दूरबीन।

२. फिर, तो – तू हे काम कर म्हणजे मी तुला दहा रुपये देईन – तुम यह काम करो, फिर मैं तुम्हें दस रुपये दूँगा।

३. [यह] – मुलांना शिकवायचे म्हणजे किती त्रासाचे काम ! बच्चों को पढ़ाना, यह कितनी तकलीफ का काम है !

४. ऐकणे : १. सुनना - आम्ही गाणी ऐकत होतो – हम गीत सुन रहे थे।

२. मानना – लहानांनी मोठ्यांचे म्हणणे ऐकावे – छोटों को बड़ों का कहना मानना चाहिए।

पण आमचे कोण ऐकणार ? – पर हमारी बात कौन मानता है !

५. टाकणे : १. फेंकना – हा कचरा [कचऱ्याच्या] पेटीत टाकून ये – यह कूड़ा-करकट कूड़ेखाने में फेंक आओ।

२. [लिखकर] भेजना–असे आहे, तर त्याला पत्र का टाकीत नाहीस – यदि ऐसा हो, तो उसे चिट्ठी क्यों नहीं [लिखकर] भेजते ?

३. [सहायक क्रिया – देना, लेना, डालना] त्याचा पूर्ण नाश करून टाका उसका पूरा नाश कर दो [डालो]।

४. त्याग करना, छोड़कर, डालना – गौतम घरदार टाकून दूर गेला – गौतम घरबार का त्याग करके [छोड़कर] दूर चला गया। हे पत्र पेटीत टाक – यह चिट्ठी बक्से में छोड़ो।

६. विचारणे : १. पूछना – गुरुजी मुलांना प्रश्न विचारतात – गुरुजी बच्चों से प्रश्न पूछते हैं।

२. पूछना, परवाह करना, मानना – आजकाल आम्हाला कोण विचारते आहे ? – आजकल हमें कौन पूछता है ? [हमारी कौन परवाह करता है ?]

७. मानणे : १. कृतज्ञता व्यक्त करना – या मदतीबद्दल आम्ही तुमचे आभार मानतो – इस मदद के लिए हम आपको धन्यवाद देते हैं।

२. **बड़ा समझना, इज्जत करना** – अजूनही लोक राजगोपालाचारींना **फार मानतात** – अब भी लोग राजगोपालाचारीजी की खूब इज्जत करते हैं।

३. **समझना** – आमचे काम आता होणार नाही, असेच **मानावे ना?** क्या हम यही मानें कि हमारा काम अब नहीं होगा?

८. **पडणे : १. गिरना, गिर जाना** – काल वावटळीमुळे आंबे फार **पडले** – कल आँधी के कारण आम बहुत गिर पड़े। २. **नाव पडणे : [नाम] मिलना**- तेव्हापासून कोंडाणा किल्ल्याला सिंहगड **नाव पडले** – तबसे कोंडाना किले को सिंहगढ़ **नाम मिल गया**।

३. **(पाऊस) पडणे : बारिश होना** – आज सकाळी फार ज़ोरदार पाऊस **पडला** — आज सुबह जोरों की बारिश हुई।

४ **(भाव, दर) पडणे : कीमत देनी पड़ना, भाव होना** – या साडीला **काय पडले?** – इस साड़ी के लिए **क्या देना पड़ा?**
आज संत्र्यांना काय **भाव पडला?** – आज संतरे का क्या **भाव देना पड़ा?**

५. **(चेहरा) पडणे – उदास होना**—हे अपयश पाहून त्यांचा **चेहरा पडला**– यह असफलता देखकर वह बहुत **उदास हुआ**।

६. **भाग पडणे : पडना, बाध्य होना** – तेथे आम्हाला थांबणे **भागच पडल**– हमें वहाँ ठहरना ही पड़ा।

७. **[अंथरुणावर] पडणे : [बिस्तर पर] लेटना** – जेवण झाल्यावर ज़रा **पडलो होतो** कॉटवर! – खाना होने पर ज़रा लेट गया था कॉट पर।

९. **ओढणे : १. खींचना** – त्याचा हात धरून **ओढा** इकडे – उसका हाथ पकड़कर **खींच लो इधर**।

२. **[बीड़ी, सिगारेट, तमाकू] पीना** – लहान मुलांनी तंबाकू **ओढू नये** — बच्चे तमाकू न **पिएँ**।

१०. **गुंतवणे : १. फँसाना** – या भानगडीत त्यांनी आम्हाला उगीच गुंतविले – इस झमेले में उन्होंने हमें व्यर्थ **ही फँसाया**।

२. **पैसा, भांडवल : [पूँजी लगाना]** आपले पैसे कोठे **गुंतवावे** या विचारात ते आहेत — वे यही सोच रहे हैं कि अपने पैसे किसमें (कहाँ) लगाएँ।

११. **सापडणे : १. मिलना** – त्या कचऱ्यात भिकारणीला एक नोट मिळाली – उस कूड़े में भिखारिन को एक नोट **मिल गया**।

२. अडचणीत - संकटात – [संकट, आपत्ति में फँसना] – रात्री जंगलात तो मोठ्या संकटात सांपडला – रात को वह जंगल में बड़ी मुसीबत में फंस गया। ज़हाज़ वादळात सापडले — जहाज़ तूफान में फँस गया।

१२. भाजणे–१. जल जाना–स्वयंपाक करतांना तिचा हात [भाजला – रसोई करते वक्त उसका हाथ जल गया।

२. चणे इ. –[भूनना] – भडभुंजा चणे भाजतो – भडभूंजा चने भूनता है।

३. भाकरी– [रोटी सेंकना] आई घरात भाकरी भाजीत होती – माँ घर में रोटी सेंक रही थी।

१३. निघणे—१. निकलना — गाड़ी पाच वाजता निघते — गाड़ी पाँच बजे निकलती है।

बाहेर– २. जाने के लिए बाहर आना — मी चार वाजता फिरावयास निघेन — मैं चार बजे टहलने निकलूँगा।

चांगले वाईट इ. — ३. [अच्छा बुरा आदि साबित होना – निकलना] हे आंबे चांगले निघाले – ये आम अच्छे निकले।

तो शेवटी चोर निघाला – आखिर वह चोर निकला।

१४. लांबविणे १. लम्बा [बड़ा] करना — निबंध फार लांबवू नका – निबन्ध को ज़्यादा लम्बा [बड़ा] न करना – न बढ़ाना।

२. छलकपट से (कोई चीज़) लेना, चुराना, हथिया लेना – त्या माणसाने माझी चार पुस्तके लांबविली — उस आदमी ने मेरी चार पुस्तकें छल-कपट से ले लीं – चुरा लीं।

[२५५.] नीचे ऐसे कुछ दो या अधिक शब्द दिए हैं, जिनसे एक-सी बात सूचित होती है; फिर भी उनका प्रयोग भिन्न-भिन्न सन्दर्भ में भिन्न-भिन्न अर्थों में किया जाता है।

१. (कपडे) घालणे – पहनना — पायज़मा [पाजामा], कोट, टोपी, शर्ट, पोलके [=ब्लाऊज़], चोळी [=चोली] इ.

नेसणे – पहनना — धोतर [=धोती पुरुषों की], लुगडे [=लूगड़], साड़ी, पातळ [साड़ी] – मी धोतर नेसतो व कोट घालतो.

२. **फुगणे**–फूलना—पोट फुगले आहे – पेट फूला हुआ है। **सूजना** – पाय सुजला आहे — पाँव सूजा हुआ है।

३. **बसणे** – बैठना। **वसणे** – बस जाना।

४. **उगवणे**–उगना, निकलना [सूर्य, चंद्र, तारे इ.]

उगम पावणे–निकलना [गंगा नदी हिमालयात उगम पावते – गंगा नदी हिमालय से निकलती है।

५. **विणे** — ब्याना, बच्चे को जन्म देना [जानवरों के लिए]।

प्रसवणे, बाळंत होणे, प्रसूत होणे — बच्चे को जन्म देना [स्त्रियों के लिए]।

६. **परीक्षा देणे** — परीक्षा देना।

परीक्षेला बसणे — परीक्षा में बैठना। **परीक्षा करणे** — परखना।

७. **अंग [आंग] धुणे** — नहाना [विशेषतः स्त्रियों के लिए]।

न्हाणे — नहाना [स्त्रियों का बाल धोकर स्नान करना]।

आंघोळ करणे — नहाना [साधारण अर्थ में]

८. **मोडणे** — टूट जाना, तोड़ना; **नोट मोडणे** — नोट भुनना।

[२५६] हिंदी में कई संज्ञाएँ ऐसी हैं, जिनके साथ कोई खास क्रिया प्रयुक्त की जाती है। उस क्रिया का मराठी में शब्दशः अनुवाद करने से उसमें 'मराठी–पन' नहीं आएगा। कोई विशेष क्रिया को ही वहाँ काम में लाना चाहिए। ऐसे कतिपय मुहावरे-नुमा शब्द–प्रयोग यहाँ दिए जा रहे हैं।

१. **अनुभव करना**—अनुभवणे, अनुभवास येणे. २. **उपदेश देना**—उपदेश करणे. ३. **ऊख पेरना, तेल पेरना**—उसाचा रस काढणे, तेल काढणे. ४. **कपडे उतारना** —कपडे काढणे. ५. **कुश्ती लड़ना**—कुस्ती खेळणे. ६. **खाना पकाना**—जेवण तयार करणे, अन्न शिजविणे. ७. **खोज [आविष्कार] करना**—शोध लावणे. ८. **खुशी [आनंद, मजा] आना**—खुशी [आनंद, मजा] वाटणे. ९. **गोद में उठा लेना**—कडेवर उचलून घेणे. १०. **गोली चलाना**—गोळी मारणे. ११. **घर [मकान, इमारत इ.] बनाना**—घर [मकान इ.] बांधणे १२. **चूड़ियां पहनना**—बांगड्या भरणे. १३. **चूल्हा जलाना**—चूल पेटवणे. १४. **चैन आना**—

चैन पडणे. १५. **चोट आना** — जखम होणे. १६. **जम्हाई लेना** — जांभई घेणे. १७. **बाल बनाना** – केस कापणे. १८. **दाढ़ी बनाना** – दाढी करणे. १९. **डुबकियाँ लगाना** – डुबक्या घेणे. २०. **थाली सजाना – लगाना** – ताट वाढणे. २१. **दही जमाना** – दही करणे. २२. **दान देना** – दान करणे. २३. **दीया जलाना** – दिवा लावणे. २४. **दीया बुझाना** – दीवा घालवणे-मालवणे. २५. **दूकान करना** – दुकान चालवणे. २६. **दूकान लगाना** – दुकान थाटणे-सजवणे. २७. **दूकान बढ़ाना** – दुकान बंद करणे. २८. **दीठ [नज़र] उतारना** – दृष्ट काढणे. २९. **दूध फटना** – दूध नासणे. ३०. **धरना देना** – धरणे देणे, पिकेटिंग करणे. ३१. **नारे लगाना** – घोषणा करणे. ३२. **नाटक खेलना** – नाटकाचा अभिनय करणे; नाटक करणे. ३३. **पसन्द आना** – पसंत पडणे. ३४. **पत्थर फेंकना** – दगड मारणे. ३५. **पान–बीड़ा रचना** – पान [विडा] रंगणे. ३६, **बर्तन माँजना** – भांडी घासणे. ३७. **भाषण देना** – भाषण करणे. ३८. **माला पहनाना** – माळ घालणे. ३९. **मुक्का [घूँसा, थप्पड़ इ.] जमाना** – बुक्का [ठोसा, थप्पड इ.] मारणे. ४०. **गुस्सा उतरना** – राग काढणे. ४१. **आत्मसमर्पण करना** – शरण जाणे.

✦ ✦ ✦

२५. कतिपय मराठी और हिन्दी शब्द

[२५७] यहाँ नमूने के लिए कुछ ऐसे शब्द दिए जा रहे हैं, जो मराठी तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में पाए जाते हैं। फिर भी दोनों भाषाओं में एक-से अर्थ में वे प्रयुक्त नहीं होते। इन दोनों भाषाओं में ये शब्द संस्कृत, अरबी-फारसी आदि भाषाओं से आए हुए हैं; मगर दोनों भाषाओं ने उन्हें भिन्नार्थ में अपनाया है। हिन्दी में जो शब्द पाया जाता है, ठीक वैसा ही मराठी में पाया जाता है, सो बात नहीं, एकाध वर्ण में परिवर्तन होकर भी वह मराठी में आता है — जैसे : कागज़ — **कागद**, स्याही – **शाई**, फरियाद – **फिर्याद**, नवाब – **नबाब**, मदद – **मदत** इ.

ऐसे **शब्दों का प्रयोग गौर से** किया जाए।

मराठी	मराठी में अर्थ	हिन्दी	हिन्दी में अर्थ
आगं [गां] तुक	बिना बुलाए आया हुआ [बुरे अर्थ में प्रयुक्त]	आगंतुक	अतिथि
औ [अव] लाद	संतान [बुरे अर्थ में]	औलाद	संतान
ओढणे	खींचना इ.	ओढ़ना	वस्त्र आदि से आच्छादित करना
कडक	सख्त	कडक	ध्वनि-विशेष
काठी	छड़, लाठी	काठी	ज़ीन, शरीर का गठन
कायदा	कानून	कायदा	नियम
खडा	पत्थर का टुकड़ा	खड़ा	ऊपर को सीधा उठा हुआ
खोली	कमरा	खोली	आवरण, गिलाफ
गर्मी	एक बुरा रोग-विशेष	गर्मी	उष्णता
गाँठ	ग्रंथि, भेंट	गाँठ	ग्रंथि
गडबड	शोरोगुल	गड़बड़	अस्तव्यस्तता
ग्राम्य	अश्लील	ग्राम्य	ग्रामीण
गाँव	स्थान, बस्ती	गाँव	देहात
घडी	तह, घटिका	घड़ी	समय-सूचक यंत्र
घड्याळ	घड़ी	घड़ियाल	मगर
चेष्टा	मज़ाक	चेष्टा	यत्न
चिठी–चिठ्ठी	छोटा-सा पत्र	चिट्ठी	पत्र
छळ (करणे)	तंग करना	छल	कपट
झाड	पेड़	झाड़	घनी पत्तियोंवाला पौधा, काँच की झाड़
थंड	ठण्डा	ठण्ड	शीत
थंडी	ठण्ड, शीत	ठण्डा-डी	जो गर्म न हो
त्रास	तकलीफ	त्रास	भय
तकरार–तक्रार	शिकायत	तकरार	झगड़ा

मराठी	मराठी में अर्थ	हिन्दी	हिन्दी में अर्थ
तमाशा	ग्राम्य नाटय	तमाशा	मनोरंजक बात
ताई	दीदी	ताई	बड़ी चाची
तालीम	कसरत, कसरतखाना	तालीम	शिक्षा
दंग	मशगूल	दंग	आश्चर्य-मुग्ध
दरिया	समुद्र	दरिया	समुद्र, बड़ी नदी
दुर्लक्ष	अनवधान	दुर्लक्ष्य	कठिनता से दिखाई देनेवाला
धनी	मालिक	धनी	धनवान, मालिक
नट	अभिनेता	नट	बाज़ीगरी आदि करनेवाला
नादान	बदचलन	नादान	नासमझ
पक्षपात	समता का अभाव	पक्षपात	तरफदारी
पत्ता	पता	पत्ता	पेड़ का पत्ता
पगार	तनखवाह	पगार	घेरा
पाठान्तर (करणे)	कण्ठस्थ (करना)	पाठान्तर	पाठभेद
बन्दर	बन्दरगाह	बन्दर	मर्कट
भीड	संकोच	भीड़	जमाव
भात	पका चावल, धान	भात	पका चावल
भिक्षुक	पुरोहित	भिक्षुक	भिखारी
मणी	मनका	मणि	रत्न
मिजास	घमण्ड	मिज़ाज	स्वभाव
यंत्रणा	सुगठित व्यवस्था	यंत्रणा	पीड़ा
यात्रा	तीर्थक्षेत्र की यात्रा	यात्रा	मुसाफिरी
प्रकृति	स्वास्थ्य	प्रकृति	कुदरत
प्रवास	यात्रा	प्रवास	विदेश में निवास.
विचारण	पूछना	विचारना	सोचना
वशीला	प्रभावपूर्ण आधार	वसीला	आधार
छान	संदर	शान	प्रतिष्ठा, इज्जत
शिक्षा	सज़ा	शिक्षा	शिक्षण
साला	एक गाली	साला	पत्नी का भाई
साव	जो चोर न हो, ईमानदार	साव	साहूकार

मराठी	मराठी में अर्थ	हिन्दी	हिन्दी में अर्थ
सारा	लगान, सर्व	सारा	समस्त
संसार	गिरस्थी	संसार	दुनिया
हप्ता	एक मुश्त दी जानेवाली रकम	हफ्ता	सप्ताह
हैराण	परेशान	हैरान	चकित

* * *

२६. शब्द-सिद्धि

(१) लिंग – परिवर्तन

[२५८] मराठी में कुछ प्राणिवाचक संज्ञाएँ तीनों लिंगों में पाई जाती हैं। पुंलिंग में वे आ-कारान्त, स्त्रीलिंग में ई-कारान्त और नपुंसकलिंग में ए-कारान्त होती हैं। जैसे —

[अ]

पुं.	स्त्री.	न.	पुं.	स्त्री.	न.
घोडा	घोडी	घोडे	कुत्रा	कुत्री	कुत्रे
बकरा	बकरी	बकरे	कोल्हा	कोल्ही	कोल्हे
पोरगा	पोरगी	पोरगे	मुलगा	मुलगी	मुलगे, मूल

सूचना — इनमें से नपुंसकलिंग रूप हीनत्व-सूचक होता है। वह प्राणी नर है या मादा है, इसका निश्चित ज्ञान नहीं है, इसका भी वह सूचक होता है।

[आ]

पुं.	स्त्री.	पुं.	स्त्री.	पुं.	स्त्री.
मामा	मामी	काका	काकी [काकू]	चुलता	चुलती
आजा	आजी	मेहुणा	मेहुणी		

अन्त्य **आ** का **ई** होता है।

[इ] प्राणि-वाचक संज्ञा का **ईण** प्रत्ययान्त रूप — [हिन्दी में **इन-अन** प्रत्ययान्त रूपों की तरह]

पुं.	स्त्री.	पुं.	स्त्री.	पुं.	स्त्री.
वाघ	वाघीण	सोनार	सोनारीण	गवळी	गवळीण

सुनार	सुतारीण	सिंह	सिंहीण [सिंही]	शिक्षक	शिक्षकीण
धोबी	धोबीण	कोळी	कोळीण	माळी	माळीण
व्याही	विहीण	शिंपी	शिंपीण	चांभार	चांभारीण
आचारी	आचारीण	न्हावी	न्हावीण	तेली	तेलीण

[ई] प्राणिवाचक संज्ञा का ई–प्रत्ययान्त रूप —

पुं.	स्त्री.	पुं.	स्त्री.	पुं.	स्त्री.
दास	दासी	हंस	हंसी	मगर	मगरी
तरुण	तरुणी	हरीण	हरिणी	वानर	वानरी
गाढव	गाढवी	उंदीर	उंदरी	बेडूक	बेडकी
नवरा	नवरी	नर	नारी		

[उ] लघुत्व-सूचक स्त्रीलिंग संज्ञाएँ : ई-कारान्त —

आरसा	आरशी	खडा	खडी [कंकड]	लोटा	लोटी
कळसा	कळशी				
खळगा	खळगी	दांडा	दांडी	पळा	पळी.

[ऊ] भिन्न रूप —

पुरुष	स्त्री	वर	वधू	पुत्र	कन्या
पिता	माता	विधुर	विधवा	दीर	जाऊ
बाप	आई	राजा	राणी	नवरा	बायको
बोका	भाटी	बोकड	शेळी	उंट	सांडणी
बैल	गाय	रेडा [भैंसा]	म्हैस	मोर	लांडोर
बंधु	भगिनी	भाऊ	भावजय	भाऊ	बहीण
सासरा	सासू	आजोबा	आजी	मित्र	मैत्रीण.

[२५९] (२) भाववाचक संज्ञाएँ

१. विशेषणों से भाववाचक संज्ञाएँ —

[अ] अन्त्य अ का ई करें – [ई-कारान्त]

गोड	गोडी	खुश [प]	खुशी [षी]
बेकार	बेकारी	हुशार	हुशारी
लबाड	लबाडी		

[आ] अन्त्य अ का आई करें – [आई–प्रत्ययान्त]

नरम नरमाई स्वस्त स्वस्ताई महाग महागाई

[इ] पणा – प्रत्ययान्त [अन्त्य आ का ए करें] –

लहान लहानपणा ठिसुळ ठिसुळपणा हावरा हावरेपणा

मोठा मोठेपणा खरा खरेपणा लोभी लोभीपणा

हसरा हसरेपणा खोटा खोटेपणा म्हातारा म्हातारपण

कोडगा कोडगेपणा नासका नासकेपणा

[ई] गिरी प्रत्ययान्त — [अन्त्य आ का ए करें]

भामटा भामटेगिरी सोदा सोदेगिरी

[उ] संस्कृत तत्सम शब्द [विशेषण] में साधारणतः त्व, ता या य प्रत्यय लगाया जाता है। हिन्दी में भी प्रयुक्त होनेवाले ऐसे शब्द से ऐसी ही भाववाचक संज्ञा बनाई जाती है। जैसे —

१. त्व – प्रत्यय — महत् महत्त्व वृद्ध वृद्धत्व लघु लघुत्व
जड जडत्व हीन हीनत्व गुरु गुरुत्व

२. ता – प्रत्ययान्त – उदार उदारता महान महानता लघु लघुता
क्षम क्षमता घन घनता शुद्ध शुद्धता

३. य – प्रत्ययान्त – मधुर माधुर्य चतुर चातुर्य कुमार कौमार्य
जड जाड्य कुशल कौशल्य सुंदर सौंदर्य

४. अन्य प्रकार – मृदु मार्दव गोड गोडवा
ताठ ताठा चिकट चिकटा

२. जातिवाचक संज्ञाओं से भाववाचक संज्ञाएँ (व्यवसाय-सूचक)

ई-प्रत्ययान्त – डॉक्टर डॉक्टरी वकील वकीली
भिक्षुक भिक्षुकी जमीनदार जमीनदारी

की-प्रत्ययान्त – वैद्य वैद्यकी, डॉक्टरकी माणूस माणुसकी
सुतार सुतारकी

गिरी-प्रत्ययान्त – शिपाई शिपाईगिरी मुत्सद्दी मुत्सद्देगिरी
गुलाम गुलामगिरी

[२६०] (३) विशेषण

संज्ञाओं से विशेषण

प्रत्यय	उदाहरण					
आळ	तोंड तोंडाळ	वाचा वाचाळ			खोडी	खोडचाळ
	फेस फेसाळ					
आळू	कष्ट कष्टाळू	झोप	झोपाळू		कृपा	कृपाळू
	माया मायाळू	दया	दयाळू			
कर	खोडी खोडकर	खेळ	खेळकर			
खोर	चहाडी चहाडखोर	भांडण	भांडखोर		थट्टा	थट्टेखोर
दार	रुबाब रुबाबदार	मजा	मजेदार		ऐट	ऐटदार
	समजूत समजूतदार					
ईट	राग रागीट					
एला	तहान तहानलेला	भूक	भुकेला भूकेलेला		नाक	नाकेल
कट	धूर धुरकट	तेल	तेलकट		मळ	मळकट
ट	रोग रोगट	तूप	तुपट			
मंत	बुद्धि बुद्धिमंत	श्री	श्रीमंत			
वंत	कृपा कृपावंत	गुण	गुणवंत			
वान्	गुण गुणवान्	ऐश्वर्य	ऐश्वर्यवान्			
ई	दोष दोषी	गुण	गुणी		वज़न	वज़नी
	लोखंड लोखंडी	पोलाद	पोलादी		माप	मापी
	नागपूर नागपुरी	सोलापूर	सोलापुरी			
री	पुणे पुणेरी					
शील	सहन सहनशील	मर्यादा	मर्यादाशील, मर्यादशील			

[२६१] (४) विशेषणों से सादृश्यता-सूचक विशेषण

प्रत्यय	उदाहरण			
एला	उंच	उंचेला	गोरा	गोरेला, गोरटेला
वट	काळा	काळवट	लाल	लालवट
सट	भोळा	भोळसट	तिरका	तिरसट

प्रत्यय		उदाहरण		
सर	काळा	काळसर	भोळा	भोळसर (ट)
गा	लहान	लहानगा		
सा	लहान	लहानसा	मोठा	मोठासा
	नीट	नीटसा	पुष्कळ	पुष्कळसा

[२६२] (५) क्रियाओं से विशेषण

क्रिया	विशेषण	क्रिया	विशेषण
आटणे	आटीव	आखणे	आंखीव
उघडणे	उघडा	उधळणे	उधळा
ऐकणे	ऐकीव	ओतणे	ओतीव
कोरणे	कोरीव	कुजणे	कुजका
खाजणे	खाजरा-का	खाणे	खादाड
घाबरणे	घाबरट	चरणे	चराऊ
चिडणे	चिडका	झोपणे	झोपाळू
टिकणे	टिकाऊ	नटणे	नटवा
नासणे	नासका	पळणे	पळपुटा
पाळणे	पाळीव	पिळणे	पीळदार
पिकणे	पिका-वका	पडणे	पडीक, पडेल
पसरणे	पसरट	फुगणे	फुगीर
फाटणे	फाटका	बुडणे	बुडीत
बसणे	बसका	बनवणे	बनावट
बोलणे	बोलका	रडणे	रडचा, रडका
लाजणे	लाजरा, लाजाळू	भरणे	भरीव
विसरणे	विसराळू	विकणे	विकाऊ
शिकणे	शिकाऊ	सोसणे	सोशीक
सुकणे	सुका	हसणे	हसरा
होणे	होतकरू	भटकणे	भटका-क्या
वाढणे	वाढीव	छापणे	छापील
निवडणे	निवडक	विटणे	विटका
चावण	चावरा	गाळणे	गाळीव

[२६३] (६) संयुक्त शब्द

कभी-कभी बोलनेवाला अपनी बात को अधिक प्रभावकारी करने के लिए संयुक्त शब्द को प्रयुक्त करता है। ऐसे शब्दों की जोड़ी में से दोनों कभी-कभी समानार्थी होते हैं, कभी विरुद्धार्थी होते हैं, तो कभी दूसरा शब्द पहले शब्द से मिलता-जुलता रखा जाता है। हर भाषा में ऐसे शब्द पाए जाते हैं। यहाँ मराठी के कुछ ऐसे संयुक्त शब्द दिए जा रहे हैं — (कठिन शब्दों का ही हिन्दी में प्रचलित समानार्थी शब्द दिया गया है।)

अधिक-उणा – कम-बेश, **आदळ-आपट** – उठा-पटक, **आडवा-तिडवा** – आडा-तेढ़ा, **आरडा-ओरड [डा]** – शोरोगुल, **इष्ट-मित्र [आप्तेष्ट]** – सगे-सम्बन्धी, **उडवा-उडवी** – टालमटोल, **उलट-सुलट** – उलटा-सीधा, **उलटा-पालट** – उलटना-पुलटना, **उलथा-पालट** – उथल-पुथल, **एकटा-दुकटा** – इक्का-दुक्का, **ओढाताण** – खींचातानी, **कडू-जहर** – कडवा-ज़हरीला, **काळा-कभिन्न** – काला-कलूटा, **काळा-सावळा** – काला-साँवला, **काटकसर** – कतरब्योंत, **कापा-कापी** – मारकाट, **केरकचरा** – कूडा-करकट, **खरे-खोटे** – झूठ-सच, **खरेदी-विक्री** – खरीद-फरोख्त, **खाणे-पिणे** – खाना-पीना, **गोरापान** – गोराचिट्टा, **गोर-गरीब** – दीन-हीन, **घाणेरडा-साणेरडा** – गन्दा, **चोरबीर [चिलट]** – चोर-उचक्का, **चालचलणूक** – चाल-चलन, **मिळता-जुळता** – मिलता-जुलता, **जाळपोळ** – जलाना-झुलसाना, **झाडलोट** – झाड़ना-बुहारना, **टाळाटाळ** – टालमटोल, **ढकलाढकली** – ठेलठाल, **ताजा-तवाना** – तरोताज़ा, **थकला-भागलेला** – थका-मांदा, **थरकाप** – कँपकँपी, **थांग-पत्ता** – पतावता, **ठोसाठोशी** – धक्का-मुक्की, **दीनदुबळा** – दीन-दुखिया, **धक्काबुक्की** – धक्का-मुक्की, **धामधूम** – धूमधाम, **धांगडधिंगा** – धींगा-धींगी, **नासका-कुसका** – सड़ा-गला, **निरवानिरव** – निपटारा, **नीटनेटका** – ठीक-ठाक, **ने-आण** – लेना-लाना, **नोकरचाकर** – नौकर-चाकर, **पळापळ** – दौड़धूप, भागदौड़, **फळफळावळ** – फल वगैरह, **फाटका-तुटका** – फटा-टूटा, **बोंबा-बोम** – हो-हल्ला, **भाईबंद** – भाईबंद, **भांडी-कुंडी** – बर्तन-ठीकरे, **भाजीबिजी** – साग-तरकारी, **मीठ-मिरची** – नमक-मिर्च, **मारामारी** – मारपीट, **मारहाण** – मारकाट, **मुलेबाळे** – बच्चेबाले।

[२६४] **रात्रंदिन** – दिनरात, **रडारड** – रोना-धोना, **रीतभात** – तौर-तरीका, **लांडी-लबाडी** – छलकपट, **लुळापांगळा** – लूला-लंगडा, **लाजलज्जा** – शर्मह्या, **लूटमार** – लूटखसोट, **वेडावाकडा** – टेढा-मेढ़ा, **वाकडातिकडा** – टेढ़ा-मेढ़ा, **शिवणे-टिपणे** – सीना-पिरोना, **शिकला-सवरलेला** – पढ़ा-लिखा, **साफसुफ** – साफ-सुथरा, **सेवा-शुश्रूषा** – सेवाटहल, **हिरवागार** – हराभरा।

• • •

२७ मराठी मुहावरे

[२६५] भाषा के व्यवहार में मुहावरों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मुहावरेदार भाषा में बोलना-लिखना व्यक्ति की भाषा-प्रभुता का लक्षण समझा जाता है। यहाँ मराठी के कतिपय मुहावरे दिए जा रहे हैं—

१. **अंकुश मारणे** — बार-बार तकाज़ा करते रहना। २. **अकलेचा कांदा** — बेवकूफ [अक्कल - अक्ल]। ३. **अकलेचे तारे तोडणे** — विवेक-हीनता से बातें करना। ४. **अक्काबाईचा फेरा येणे** – बहुत बुरी हालत आना। [अक्काबाई – बुरी हालत, बुराई की अधिष्ठात्री देवी को 'अक्काबाई' कहते हैं।] ५. **अंग काढून घेणे** — जिम्मेवारी से पीछे हटना। ६. **अंग झाडून मोकळे होणे**– जिम्मेदारी से दूर होकर किसी बात से सम्बन्ध तोड़ना। ७. **अंगाचा तिळपापड होणे, अंगाचा भडका उडणे, अंगाची लाही-लाही होणे, अंगाची आग होणे** — आगबबूला होना। ८. **अंगावर पडणे-येणे**–बड़ी जिम्मेवारी आ पड़ना। ९. **आंगठा दाखविणे**–ना कहना, ठगना, अंगूठा दिखाना। १०. **अग्नि देणे**– [शव को] जलाना।

११. **अघळ-पघळ बोलणे**–आडम्बर पूर्ण बढ़-बढ़कर बातें करना [अघळ-पघळ – ढीली-ढाली] १२. **अटकेवर झेंडे लावणे**–बहुत भारी बहादुरी दिखलाना। १३. **अठरा धान्याचे कडबोळे असणे-करणे** — अनेकों का ऐसा समूह होना-करना जिससे किसी एक का भी प्रभाव न बना रहे। १४. **अठरा विश्वे दारिद्रच असणे** — अत्यधिक बुरी हालत होना। १५. **अडकित्त्यातली सुपारी होणे**—दोनों तरफ से कठिनाइयों में उलझना। १६. **एकाद्याची अंडी-पिल्ली बाहेर काढणे** – किसी की

गुप्त बुरी बातों को प्रकट करना। [अंडी पिल्ली - बुरी बातें, कमजोरियाँ, गुप्त बातें]। **अंडी-पिल्ली माहीत असणे** – गुप्त बातें मालूम होना; अंडी-पिल्ली सांगणे – गुप्त बातों को प्रकट करना।] १७. **अंत पाहणे** – कठिन परीक्षा करना, बहुत सताना। १८. **अतिरथी महारथी** – बड़े-बड़े भारी लोग। १९. **अत्तराचे दिवे जाळणे** – घी के चिराग जलाना, बिलासिता-पूर्ण जीवन बिताते हुए बहुत फिजूल खर्च करना। २०. **अंथरुणास खिळणे** – बहुत बीमार होना। [अंथरूण - बिस्तर, खिळणे - चिपके रहना]।

२१. **अद्दल घडणे** – किसी व्यवहार के लिए न्यायोचित सजा मिलना। २२. **आंधळ्याची काठी** – अंधे की लकड़ी। २३. **आंधळ्याची बहिऱ्याशी गाठ पडणे** – अंधे और बहिरे का मेल होना, एक कमजोर आदमी की दूसरे कमजोर से भेंट होना जिससे दोनों में से किसी को भी अधिक लाभ न हो। २४. **अंधेर नगरी – झोटिंग पातशाही असणे** – स्वैर अन्याय-पूर्ण व्यवहार के लिए अवकाश होना। २५. **अनागोंदी कारभार** – अस्तव्यस्तता-पूर्ण व्यवहार। २६. **अन्न अंगी लागणे** – अन्न हज़म होकर पुष्ट होते जाना। २७. **अन्नास [पोटास] लावणे** – उदर-निर्वाह का साधन जुटा देना। २८. **अपराध [दोष] पोटात घालणे** – अपराध क्षमा करना, – की ओर ध्यान न देना। २९. **अब्रूला [प्रतिष्ठेला, नावाला] कलंक [- बट्टा] लागणे** – बेइज्जती होना। इज्जत-नाम को धब्बा लगना। ३०. **आभाळ [आकाश] डोक्याला लागणे, ठेंगणे होणे, दोन बोटे उरणे** – बहुत घमण्ड से दूसरे को तुच्छ समझना।

३१. **आभाळास भोक पडणें** – अति वृष्टि होना। ३२. **अर्थाचा अनर्थ करणे** – कुछ का-कुछ समझना। ३३. **अक्षर शत्रू असणे** – बिलकुल अनपढ़ होना। ३४- **अळवावरचे पाणी** – क्षणभंगुर बात। ३५. **आ वासणे** – आश्चर्य आदि से देखना, मुँह ताकना। ३६. **आकारास येणे** – कुछ सफलता मिलने लगना। ३७. **आकाश पाताळ एक करणे** – कोलाहल मचाना। ३८. **आकाश पाताळाचे अंतर** – ज़मीन-आसमान का अन्तर। ३९. **आकाशाला गवसणी घालणे** – अद्भुत बात करना। ४०. **आग लावणे** – कलह पैदा करना, आग लगाना।

४१. **आगीत तेल ओतणे [टाकणे]** – झगड़े को और बढ़ाना। ४२. **आयत्या पिठावर रेघा ओढणे** – दूसरे की मेहनत से लाभ उठाना। ४३. **इरेला पेटणे** – ज़िद करना। ४४. **उकीरडा फुंकणे** – हीन दशा के कारण खुले में भले बुरे का ख्याल छोड़कर बुरा काम करने लगना। ४५. **उजळ माथ्याने फिरणे** – किसी से न डरते हुए निर्दोष अवस्था में रहना। ४६. **उजवा हात** – प्रमुख आधार ४७. **डावे उजवे असणे** – सरस – नीरस होना, ० **करणे** – पक्षपातपूर्ण व्यवहार करना। ४८- **उंटावरून शेळ्या हाकणे [राखणे]** – स्वयं मेहनत न करते हुए

दूसरे से काम करा लेना। ४९. **उंटावरचा शहाणा** – महामूर्ख, अपने को सयाना समझनेवाला व्यक्ति। ५०. [एकाद्याची] **उठबस करणे** – [किसी का] स्वागत करना।

५१. [एकाद्याचा] **उदोउदो करणे** –[किसी की] बढ़-चढ़कर तारीफ करना। ५२. **उंबरास फूल येणे** – अनहोनी बात होना। ५३. **एका पायावर तयार असणे** – बहुत उत्सुक होना। ५४. **ऐतखाऊ असणे** – परोपजीवी होना। ५५. **ओठापर्यंत येणे** – बोलने की उत्कट इच्छा होना, फल-प्राप्ति का समय आना। ५६. **औट घटकेचे राज्य** – [औट = साढ़े तीन] – क्षणिक वैभव। ५७. **औषधावाचून खोकला जाणे** – [वाचून – सिवा] – बिना श्रम और खर्च के काम होना। ५८. **कच्च्या गुरूचा चेला** – अधूरा कच्चा ज्ञान रखनेवाला आदमी। ५९. **कंठ [गळा] दाटून [भरून] येणे** – गद्गद होना, गला भर आना। ६०. [एकाद्याचा] **कड घेणे** – [किसी का] पक्ष लेना।

६१. **कढी पातळ होणे** – बहुत दुबला होना, बहुत घबराना। ६२. **कपाळमोक्ष करणे** – प्रहार से मार डालना। ६३. **कपाळाला आठ्या घालणे** – [आठ्या- सिकुडनें, कपाळ - भाल] गुस्सा-नापसन्दगी दिखलाना। ६४. **कपाळी येणे**– भुगतने पडना। ६५. **कपाळी लिहिलेले असणे** – नसीब में बदा होना। ६६. **कमर टूटना** – हिम्मत खो बैठना। ६७. [एकाद्याच्या] **करवंटी [धुपाटणे] हाती येणे** – विपन्नावस्था के कारण भीख मांगने की नौबत आना। [करवंटी-नरेली; धुपाटणे – धूपदान]। ६८. [एकाद्यात] **कली संचारणे** – [किसी में] कुबुद्धि पैदा होना, जिससे वह बुरा काम करने लग जाए [कली-कलिपुरुष]। ६९. **कवडीचुंबक** – अत्यंत कृपण [कवडी-कौडी] ७०. **कसर काढणे** – थोड़ा-बहुत लाभ कर लेना।

७१. **कळीचा नारद** – चुगली करके कलह लगानेवाला आदमी। ७२. **काखा वर करणे** – [काख-काँख] दीवालिया बनना। ७३. **काटयाचा नायटा होणे** – थोडी-सी बात का बड़ा बुरा परिणाम निकलना। ७४. **काडीमोड करणे** – संबंध विच्छेद करना। ७५. **कात टाकणे** – बुरी पुरानी बातों को छोड़कर नवचेतना प्राप्त करना। ७६. [एकाद्याचे] **कान फुंकणे** – [किसी से कुछ] कह-कहकर किसी दूसरे के बारे में बुरा मत बना लेना। ७७. **सोनाराकडून कान टोचणे** – योग्य व्यक्ति द्वारा दंड दिलवाना। ७८. [एकाद्याच्या] **नावाने खडे फोडणे** – किसी को बराबर दोष देते रहना। ७९. **खडा टाकून पाहणे** – सूचक प्रश्न करना, प्रयत्न करना। ८०. **गाडवाचा नांगर फिरवणे** – बदला लेने के हेतु बरबाद करना।

८१. **गोंडा घोळणे** – बहुत खुशामद करना। ८२. **गोडी-गुलाबी** – मिलनसारी। ८३. **गोता खाने** – हानि उठाना। **गोत्यात आणणे** – नुकसान पहुँचाना।

८४. **गोंधळ घालणे** – अस्तव्यस्तता पैदा करना; स्वैर आचरण करना। ८५. [एखाद्याची] **घडी विसकटणे [मोडणे, बिघडविणे]** – किसी के काम में अस्तव्यस्तता लाना [घडी - तह, विसकटणे - बिगाड़ना] ८६. **घाण्याला जुंपणे** – कडी मेहनत कराना। ८७. **घाण्याचा बैल** – [घाणा - कोल्हू] – कोल्हू का बैल, बिना चूँ-चपट किए कड़ी मेहनत करनेवाला। ८८. [एकाद्याला] **घालून पाडून बोलणे** – [किसी को] ताने-तिश्ने देते रहना। ८९. **घोडा - मैदान जवळ असणे** – परीक्षा या कसौटी का समय आना। ९०. **चऱ्हाट लावणे** – आडम्बर-पूर्ण व्यर्थ बातें करते रहना।

९१. **चांभारचौकशा करणे** – बिना किसी ठोस कारण के अत्यधिक पूछताछ करना। ९२. **चारी दिशा मोकळ्या असणे** – मनचाही बातें करने का अवकाश होना। ९३. **चालत्या गाडीला खीळ घालणे** – ठीक से चलते व्यवहार में रोड़े अटकाना। ९४. **चोरावर मोर असणे**–सेर को सवा सेर होना। ९५. [एकाद्याला] **चोरट्यासारखे होना** – संकोच लगना। ९६. [हाती] **चौपदरी घेणे [येणे]**– भीख माँगने लगना [माँगने की नौबत आना] ९७. **छक्के पंजे** – छक्के-पंजे, छलकपट, ९८. [मध्ये] **छत्तीसाचा आकडा असणे** – [में] दुश्मनी होना। ९९. [एकाद्याला-ची] **छाती असणे** – [किसी में] हिम्मत होना; [एकाद्याची] **छाती दडपून जाणे** – घबराना। **जंग-जंग पछाडणे** – बहुत प्रयत्न करना। १००. **जातीवर जाणे** – मूल स्वभाव प्रकट होने लगना।

१०१. **जीभ मोकळी सोडणे** – चाहे जो बोलने लगना। **जिभेचा पट्टा चालू करणे** – चाहे जो बोलने लगना। १०२. **जिवावर उदार होणे** – प्राणों की बाज़ी लगाना। १०३. [तोंडाची] **टकळी चालू असणे** – बराबर बोलते रहना। १०४. [एकाद्याच्या] **टाळूवरून हात फिरवणे** – [किसी को] बहुत बुरी तरह ठगना। १०५. **ठिय्या देऊन बसणे** – डटकर बैठना। १०६. [एकाद्या गोष्टीचा] **ठाव [थांग] लागणे** –[किसी के बारे में] अनुमान कर सकना, पता चलना। १०७. **ठेच लागणे** – कटु अनुभव होना। १०८. [एकाद्याची] **डाळ न शिजणे** – [किसी की] दाल न गलना। १०९. [एकाद्याच्या] **डोळ्यात धूळ फेकणे** – [किसी की] आँखों में धूल झोंकना। ११०. **डोके खाजवणे** – बहुत सोच-विचार करना।

१११. [एकाद्याच्या] **डोळ्यांत प्रकाश पडणे** – किसी बात को ठीक से समझने लगना। ११२. **डोळे मिटणे** – सो जाना। **कायमचे डोळे मिटणे** – मर जाना। ११३. **डोळ्यात तेल घालून बसणे** – सावधानी से देखते रहना। ११४. **ढेकळाप्रमाणे विरघळणे** – [ढेकूळ – मिट्टी का ढेला] – बहुत लज्जि

होना। ११५. **तग धरणे** – टिके रहना। ११६. **तलवार गाजविणे** – बहुत बड़ी बहादुरी दिखलाना; तीर मारना। ११७. [एकाद्याचे] **तळपट वाजणे** [**होणे**] – बुरी तरह बरबाद होना। ११८. **तळहातावर शिर घेणे** – जान हथेली पर लेना। ११९. **ताटाखालचे मांजर असणे** – पूर्णतः अधीन होना। १२०. [एकाद्याला] **ताळतंत्र** [**ताळमेळ**] **नसणे** – [किसी में] समझदारी से व्यवहार करने की योग्यता न होना, कोई नियंत्रण न होना।

१२१. **तिलांजली देणे** [वहाणं, सोडणे] – सम्बन्ध-विच्छेद करना। १२२. [एकाद्याची] **तुंबडी भरणे** – अपना ही लाभ कर लेना। १२३. **तुळस उपटून भांग लावणे** – अच्छे काम की जगह बुरी बात की नींव डालना। १२४. **तुळशीपात्र ठेवणे** – त्याग करना, अधिकार छोड़ना। १२५. **तेरड्याचा रंग** – जल्द बदलनेवाली बात। १२६. **तोंड काळे करणे** – मुँह काला करना, लज्जास्पद हालत में व्यवहार करना, निकल जाना। १२७. **तोंडघशी पडणे** – पूरी फज़ीहत होना। १२८. **तोंडादेखले बोलणे** – खुश करने के लिए बोलना। १२९. [एकाद्याच्या] **तोंडाला कुत्रे बांधलेले असणे** – हमेशा झगड़ते रहना। १३०. **त्राही-त्राही करून सोडणे** – अत्यधिक सताना।

१३१. **थंड पडणे** – शिथिल-कमज़ोर पड़ना। १३२. **थंड़ा फराळ करणे** – भूखे पेट रहना। १३३. **थुंकी झेलणे** – बहुत खुशामद करना, थूक झेलना। १३४. **थेर-थेर** [**थेर चाळे**] **करणे** – मनमाना-स्वैर व्यवहार करना। १३५. **दगडाला-पाझर फुटणे** – पत्थर पसीजना, अत्यन्त निर्दय व्यक्ति में दया पैदा होना। १३६. **दगा देणे** – धोखा देना। १३७. [एकाद्याला] **दट्टया लावणे** – किसी के बहुत पीछे पड़ना। १३८. **दम घेणे** – विश्राम करना। १३९. **दम खाणे** – सब्र करना। १४०. **दम देणे** – धमकी देना।

१४१. **दातखिळी बसणे** – निरुत्तर होना, बहुत घबराना। १४२. [एकाद्यावर] **दात धरणे** – बदला लेने की ताक में रहना, मत्सर-होना। १४३. [एकाद्याचे] **दात पाड़णे** – [किसी को] दण्ड देना। १४४. **पोटाची दामटी वळणे** – बहुत भूखों रहना, भूख से पेट-पीठ एक होना। १४५. **दुधात साखर पडणे** – दो अच्छी बातों का मेल होना, दूध में शक्कर होना। १४६. **दैव काढणे** – कड़ी मेहनत करके सम्पन्न होना। १४७. **द्राविडी प्राणायाम करणे** – सीधे मार्ग को छोड़कर कठिन मार्ग अपनाना। १४८. **द्राक्षे आंबट होणे** – अंगूर खट्टे होना। १४९. [एकाद्याच्या] **पायावर नक्षत्र असणे** – बराबर घूमते रहना। १५०. **नाक तोंड मुरडणे** – नापसन्दगी दिखलाना।

१५१. **नाक मुठीत धरून** [**शरण**] **जाणे** – विवश होकर हार स्वीकार करते हुए शरण में जाना। १५२. [एकाद्याच्या] **नाकावर टिचून** – [किसी से]

बिलकुल न डरते हुए, बेधड़क। १५३. **नाकासमोर जाणे** – सीधी राह चलना। १५४. **नाडी आखडणे** – तरक्की रुकना। १५५. **पगडी बदलणे** – पक्ष या मत बदलना। १५६. **पगडा पाडणे** – रौब जमाना। १५७. **पडल्या पडल्या** – लेटे लेटे। १५८. [एकाद्यात] **पाणी असणे** – किसी में साहस या बुद्धिमानी होना। १५९. [एकाद्याचे] **पाणी जोखणे – ओळखणे** – शक्ति जानना। १६०. **पाणी सोडणे** – त्याग करना।

१६१. [एकाद्याचे] **पाय धरणे** – पाँवों पड़ना, शरण में आना। १६२. **पासंगास न पुरणे** – बहुत कम होना। १६३. **पाऊल पुढे असणे** – आगे होना, प्रगति करते रहना। १६४. **पोपटपंची करणे** – रटी हुई बातें बोलना। १६५. **प्रस्थान ठेवणे** – चले जाने की तैयारी करना। १६६. **बजबजपुरी असणे** – बहुत अस्तव्यस्तता होना। १६७. **बारा वाजणे** – समाप्त होना, बरबाद होना। १६८. **बारा वाटा मोकळया होणे** – चाहे जो करने की - चाहे जहाँ जाने की स्वतंत्रता होना। १६९. **बारा घाटांचे [बंदरांचे] पाणी पिणे** – बहुत अनुभवी होना। १७०. [**एकाद्या गोष्टीचे**] **बाळकडू मिळणे** – बचपन से ही किसी बात की शिक्षा मिलना।

१७१. **विंचवाचे बिऱ्हाड पाठीवर** – किसी के पास ज्यादा कुछ न होना। १७२. **बुद्धिचा सागर** – बहुत बुद्धिमान्। १७३. [एकाद्याच्या नावाने] **बोटे मोडणे** – [किसी को] शाप देना, दोष देना। १७४. **बोंडल्याने [बोळ्याने] दूध पिणे** – बहुत अज्ञान होना। १७५. **बोलाफुलाला गाठ पडणे** – संयोग से घटना। १७६. **भवति न भवति होणे** – विवाद होना। १७७. **भाकरी भाजावयास लागणे** – हीन सेवा करने में जुटना। १७८. [घरचे खाऊन] **लष्करच्या भाकऱ्या भाजणे** – जिससे कोई लाभ न हो ऐसी बातें करना। १७९. **भित्री भागूबाई बनणे** – बहुत कायर होना। १८०. **बिन भाड्याचे घर** – कैदखाना।

१८१. **भिकेचे डोहाळे लागणे** – [डोहाळे-दोहद] सम्पन्न होते हुए भी दरिद्र वृत्ति दिखाना। १८२. **मगर-मिठी** – मज़बूत पकड़। १८३. **मनात भरणे** – पसन्द आना। १८४. **मागल्या [त्याच] पावली परत येणे** – फौरन लौटना। १८५. **मागे पुढे न पहाणे**–बेधड़क आगे बढ़ना। १८६. **यक्षिणीची कांडी फिरणे**–जादू का-सा प्रभाव होकर अनपेक्षित रूप से स्थिति में बदल होना। १८७. **रत्नापोटी गारगोटी होणे**--भले आदमी के कुपुत्र पैदा होना। १८८. **राईचा पर्वत करणे** –

अत्युक्ति करना। १८९. राजापुरी गंगा – अनपेक्षित रूप में होनेवाली बात। १९०. विरजण पडणे – [अच्छी बात] बिगड़ना।

१९१ शंभरी भरणे – मौत या विनाश का समय आना। १९२. शाल-जोडीतला मारणे – ताना देना। १९३. शिंग फुटणे – सयाना होना, आवश्यकता से अधिक ज्ञानी होना। १९४. शेणामेणाचा असणे – बहुत दुर्बल होना। १९५. शेंदाड शिपाई – कायर आदमी। १९६. शेपूट हालविणे – खुशामद करना। १९७. षट्कर्णी होणे – गुप्त बात सबपर प्रकट होना। १९८. साता समुद्रापलीकडे – बहुत दूर। १९९. हात आखडणे – हाथ समेटना, उदारता कम करना। २००. होळी करणे – जला देना।

✦ ✦ ✦

२८. मराठी कहावतें

[२६६] हर एक कहावत या लोकोक्ति में कोई न कोई व्यावहारिक सिद्धान्त निहीत होता है। उसके उचित प्रयोग से बोलनेवाले की भाषा अधिक सुन्दर, प्रभावशाली होती है। यहाँ कतिपय मराठी कहावतें दी जा रही हैं —

१. अडला नारायण गाढवाचे पाय धरी — अटका बनिया देवे उधार। वक्त पडे बाँका, तो गधे को कहे काका। २. अति तेथे माती — जहाँ अतिरेक वहाँ विनाश। ३. अति झाले नि हसू आले — किसी भी बात का अतिरेक हास्यास्पद होता है। ४. अति शहाणा त्याचा बैल रिकामा — आवश्यकता से ज्यादा चतुराई हो, तो वह काम की चीज़ नहीं। ५. अंथरूण पाहून पाय पसरावेत — बिस्तर देखकर पाँव पसारें; तेतों पाँव पसारिए जेतों चादर होय। ६. असतील शिते तर जमतील भुते – जहाँ लाभ की आशा हो, वहाँ लोग इकट्ठा होंगे। ७. आंधळा मागतो एक डोळा नि देव देतो दोन – अंधा माँगे एक आँख, भगदान देवे दो। ८. आंधळे दळते नि कुत्रे पीठ खाते – अंधा पीसे कुत्ता खाए। ९. आधी पोटोबा मग विठोबा – पहले पेट फिर परमेश्वर। १०. आंधळ्याशी जन सारेची आंधळे – अंधे को सारा संसार अंधा। ११. अडाण्याची

गोळी नि प्राणानिशी गिळी – नीम हकीम खतरे जान। १२. असंगाशी संग नि प्राणाशी गाठ – मेलजोल करने अयोग्य व्यक्ति का साथ देने से प्राण खतरे में पड़ते हैं। १३. आयत्या बिळांत नागोबा – सब तैयार तो मैं राजा। १४. आपण मेल्याशिवाय स्वर्ग दिसत नाही – बिना स्वयं मरे स्वर्ग नहीं दिखाई देता; बिना कष्ट सहन किए लाभ नहीं होता। १५. उतावळा नवरा नि गुढग्याला बाशिंग – उतावला दूल्हा घुटने को सेहरा बाँधे; उतावला आदमी गधा बराबर। १६. उथळ पाण्याला खळखळाट फार – अधजल गगरी छलकत जाय। १७. उंदराला मांजर साक्षी – स्वार्थसिद्धि के लिए दुश्मन भी हामी भरता है। १८. एक घाव दोन टुकडे – एक घाव दो टुकड़े; इस पार या उस पार। १९. ऐकावे जनाचे करावे मनाचे – सुनें सबकी करें मन की। २०. एका हाताने टाळी वाजत नाही – एक हाथ से ताली नहीं बजती; झगड़े का उत्तरदायित्व सिर्फ एक पर नहीं होता। २१. करावे तसे भरावे – करो वैसा भरो। २२. कुत्र्याचे शेपूट नळीत घातले तरी वाकडे ते वाकडेच – कुत्ते की पूँछ, हरदम टेढ़ी की टेढ़ी। २३. कुऱ्हाडीचा दांडा गोतास काळ – अपने प्रिय जन के हाथों ही अपने को कभी-कभी हानि उठानी पड़ती है। २४. कोठे इंद्राचा ऐरावत आणि कोठे शामभटाची तट्टाणी – कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली। २५. कोळसा उगाळावा तितका काळा – बुरी बात जितनी घिसें उतनी काली; कोयला होय न उजला सौ मन साबुन धोय। २६. खाई त्याला खवखवे – अपराधी का मन उसे खाता रहता है; करेगा सो डरेगा। २७. खायचे दात वेगळे, दाखवायचे दात वेगळे – हाथी के दाँत खाने के और, दिखाने के और। २८. गरजेल तो पडेल काय – जो गरजते हैं वे बरसते नहीं; जो बढ़-बढ़कर डींग हाँकते हैं, वे क्रियाशून्य होते हैं। २९. गर्वाचे घर खाली – अभिमान का मुँह काला। ३०. गाढवांचा गोंधळ लाथांचा सुकाळ – गधों की हुई भेंट, लातों की हुई वर्षा। ३१. गाढवाला गुळाची चव काय – गधा क्या जाने अदरक का स्वाद। ३२. गूळ नाहीं तरी गुळाची वाचा हवी – गुड न हो, फिर भी गुड़-सी वाणी चाहिए; मीठा न दें, मीठे शब्द तो बोलें। ३३. गोगल गाय नि पोटात पाय – [गोगलगाय - घोंगा] – दिखने में कुछ और होने में कुछ; बाहर से सीधा-साधा, अंदर से खतरनाक; चालबाज़ आदमी। ३४. गोरा-गोमटा कपाळ करंटा – दिखने में गोरा-चिट्टा करने में बेकार। ३५. घरोघरी मातीच्याच चुली – घर-घर मिट्टी के चूल्हे; घर-घर में एक-सी हालत होती है। ३६. चोराच्या उलटचा बोंबा – उलटा चोर कोतवाल को डाँटे। ३७. चोराच्या मनात चांदणे – चोर की दाढ़ी में तिनका। ३८. जशास तसे – जैसे को तैसा। ३९. जावे त्याच्या वंशा तेव्हा कळे – जिसका दर्द वही जाने। ४०. जित्याची खोड [= बुरी लत] मेल्या-

शिवाय जाणार नाही – जनम की आदत मरे बगैर नहीं जाती। ४१. **ज्याचे हाती ससा तो पारधी** – जिसके हाथ में खरगोश हो उसी को बहेलिया माना जाए; जिसके हाथ में चीज हो उसे मालिक माना जाए। ४२. **ज्याचे करावे भले तो म्हणतो माझेच खरे** – जिसका करें भला वह कहे मेरा ही सच। ४३. **जात्यावर बसले की ओवी सुचते** – कोई काम आरम्भ करें तो सुझाई देता है कि उसे कैसे पूरा करें। ४४. **झाकली मूठ सवा लाखाची** – बँधी मुट्ठी सवा लाख की। ४५. **ताकापुरते रामायण** – काम होने तक रामायण सुनाना; काम सिद्ध होने तक खुशामद की जाती है। ४६. **थेंबे थेंबे तळे साचे** – बूँद-बूँद से तालाब बनता है। ४७. **दगडापेक्षा वीट मऊ** – पत्थर से ईंट नर्म। ४८. **दाम करी काम** – दाम करे काम। ४९. **दिव्याखाली अंधार** – चिराग तले अँधेरा। ५०. **दुरून डोंगर साजरे** – दूर के ढोल सुहाने। ५१. **देश तसा वेश** – जैसा देस वैसा भेस। ५२. **नकटीच्या लग्नाला सतराशे विघ्ने** – बदसूरत की शादी में सैकड़ों कठिनाइयाँ आती हैं; अभागे की भलाई में सैकड़ों दिक्कतें आती हैं। ५३. **नाव सोनूबाई हाती कथलाचा वाळा** – आँख का अँधा नाम नयनसुख। ५४. **देव तारी त्याला कोण मारी** – जिसे देवता बचाए, उसे कौन मारे। ५५. **निर्लज्जम् सदा सुखी** – बेहया आदमी हमेशा सुखी रहता है। ५६. **पदरी पडले पवित्र झाले** – जो हाथ आया वही अच्छा माना जाए। ५७. **पळसाला पाने तीनच** – [पळस–पलास, ढाक] ढाक के तीन पात; हर कहीं एक-सी हालत होती है। ५८. **पाचा मुखी परमेश्वर** – जहँ पंच, तहँ परमेश्वर। ५९. **पुढच्यास ठेच मागचा शहाणा** – आगे चलनेवाले का कटु अनुभव पीछे से आनेवाले को सचेत बनाता है। ६०. **बडा घर पोकळ वासा** – [वासा–छत का बल्लम]–नाम बड़े दर्शन खोटे। ६१. **बळी तो कान पिळी** – जिसकी लाठी उसकी भैंस। ६२. **बाप दाखव नाहीं तर श्राद्ध कर** – अपनी बात का प्रमाण दिखाओ या मेरी बात मान लो। ६३. **बुडत्याला काडीचा आधार** – डूबते को तिनके का सहारा। ६४. **बैल गेला नि झोपा केला** – बैल हाथ से निकल जाने पर उसके बँधवाने का प्रबंध करना; ठीक समय पर काम न किया और समय निकल जाने पर उसके किए जाने से क्या लाभ। ६५. **प्रयत्नांती परमेश्वर** – प्रयत्न करने पर परमेश्वर की भी प्राप्ति होती है। ६६ **प्रयत्ने वाळूचे कण रगडिता तेलही गळे** – प्रयत्न करने पर बालू को पीसने से भी उससे तेल निकाला जा सकता है। ६७. **पाण्यात राहून माशाशी वैर करू नये** – पानी में रहकर मगर से वैर नहीं करना चाहिए। ६८. **भटाला दिली ओसरी नि भट हात पाय पसरी** – जिसे आधार चाहिए उसे देने पर वह अपना आसन और दृढ़ता से जमाने लगता है; लोभी का लोभ बढ़ता ही जाता है। ६९. **मरावे परी कीर्ति-रूपे उरावे** – मरे परंतु कीर्ति रूप में जिन्दा रहें। ७०. **मुलाचे पाय पाळण्यात दिसतात** – होनहार बिरवान के

होत चिकने पात। ७१. **मनी वसे ते स्वप्नी दिसे** – जो मन में हो वही सपने में दिखाई देता है। ७२. **रिकामा न्हावी भिंतीला तुंबड्या लावी** – निठल्ला बनिया क्या करे, इस कोठी का धान उस कोठी में भरे। ७३. **रोज मरे त्याला कोण रडे** – रोज मरे उसके लिए कौन रोए? ७४. **वासरांत लंगडी गाय शहाणी** – अंधों में काना राजा। ७५. **शेळी जाते जिवानिशी खाणारा म्हणतो वातड** – बकरी की जान गई, खानेवाले को मज़ा न आया। ७६. **साखरेचे खाणार त्याला देव देणार** – जो अच्छी बातें सोचता है, उसे बहुत लाभ होता है। ७७. **सुंभ जळते पण पीळ जळत नाही** – रस्सी जलती है मगर ऐंठन नहीं जलती। ७८. **हातच्या काकणाला आरसा नको** – हाथ के कंगन को आरसी नहीं चाहिए। ७९. **हत्ती गेला नि शेपूट उरले** – किसी कार्य का महत्त्वपूर्ण अंश तो पूर्ण हो जाए लेकिन आखिरी छोटा-सा अंश शेष रहे या खटाई में पड़ा रहे। ८०. **हत्ती चाले कुत्रे भुंके** – हाथी चलता है और कुत्ता भूँकता है; बड़ा आदमी अपने ढंग से अपना काम करता रहता है, लेकिन छोटे लोग उसकी निंदा करते हैं, फिर भी वह बड़ा आदमी उनकी ओर ध्यान नहीं देता। ८१. **हत्तीचे ओझे हत्तीने उचलावे** – बड़े आदमी का काम बड़ा आदमी ही करे। ८२. **हलवायाच्या घरावर तुळशीपत्र** – स्वयं हानि नहीं उठाए और दूसरे की चीज़ तीसरे को दे डाले। ८३. **हसतील त्यांचे दात दिसतील** – जो किसी को हँसेंगे, उनके दाँत दिखाई देंगे, निंदा करनेवालों की परवाह नहीं करें।

◆ ◆ ◆

२९. पत्र-लेखन

[२६७] मराठी के शिक्षार्थी को यह भी जान लेना चाहिए कि मराठी में चिट्ठियाँ कैसे लिखी जाती हैं। वैसे तो हिन्दी और मराठी की पत्र-लेखन पद्धतियाँ काफी मिलती-जुलती हैं। पत्र-लेखन के प्रमुख अंग नीचे लिखे अनुसार हैं –

१. पता और तारीख, २. प्रशस्ति (मराठी में '**मायना**' कहते हैं। ३. मुख्य मज़मून, (इसे मराठी में 'मज़कूर' कहा जाता है।) ४. पत्र का अन्त। ५. पानेवाले का पता।

[२६८] व्यक्तिगत पत्र

१. पता और तारीख – ठीक उसी ढंग से लिखें, जैसे हिन्दी में लिखा जाता है।

२. प्रशस्ति (= मायना) और अन्त

माता-पिता, भाई-बहन आदि को जिस नाम से पुकारा जाता है, उसी का उपयोग 'प्रशस्ति' में किया जाए। पुरानी पद्धति में अत्यधिक शब्दाडम्बर रहा करता था। अब सरलता को अधिक अपनाया जा रहा है और बड़े-बुज़ुर्ग भी उसमें बुरा नहीं मानते। पुरानी पद्धति की प्रशस्ति का नमूना देखिए –

"तीर्थरूप राजमान्य राजश्री नाना यांस, अपत्ये बालके गोविंदाचा त्रिकाल चरणी मस्तक ठेऊन शिरसाष्टांग नमस्कार, वडिलांचे सेवेशी ... !"
और अन्त में लिखा जाता था —

'सेवेशी श्रुत होय, हे विज्ञापना'

= ['तीर्थस्वरूप राजमान्य राजश्री के ... चरणों में पुत्र गोविन्द के त्रिकाल शिरसाष्टांग नमस्कार। पिताजी की सेवा में'

'सेवा में श्रुत हो यह विनती ...']

आम तौर पर पत्र के आरम्भ में ऊपर की ओर मध्य में – 'श्री', 'जयहिंद' जैसा कोई शब्द लिखा जाता है। नई प्रणाली को अपनानेवाले इस तरह कोई शब्द नहीं लिखते। ध्यान में रहे, पत्र में मृत्यु आदि का समाचार लिखना हो तो इस प्रकार पुराने तरीके के अनुसार लिखे हुए पत्र के शिरोभाग में 'श्री' आदि नहीं लिखा जाता।

यहाँ आधुनिक प्रणाली के नमूने दिए जा रहे हैं --

१. पिताजी को --

तीर्थरूप ... यांस --

२. माताजी को --

तीर्थरूप सौभाग्यवती आई हीस -(स्त्री अगर विधवा हो तो '**सौभाग्यवती**' के स्थान पर '**गंगाभागीरथी**' शब्द का प्रयोग करें।)

ध्यान में रखिए, '**तीर्थरूप**' शब्द का प्रयोग माता-पिता के लिए ही किया जाए।

३. माता-पिता के अतिरिक्त चाचा-चाची, मामा-मामी, भाई-बहन आदि रिश्ते में बड़े-बूढ़ों के लिए **तीर्थस्वरूप** शब्द का प्रयोग करें। जैसे -

तीर्थस्वरूप काका यांस -

४. गुरुजी को — **गुरुवर्य वामनराव जोशी यांस** -

५. मित्र को - मित्रवर्य सुधीरचन्द्र यास (यांस)-

६. अन्य लोगों के लिए [पुरुषों के लिए] - **राजमान्य राजश्री जयंतराव यांस** - या **श्रीयुत जयंतराव यांस** -

७. [स्त्रियों के लिए] - सुहागिन हो तो -

सौभाग्यवती शालिनीबाई यांस -

विधवा हो तो - '**श्रीमती शालिनीबाई यांस**' —

इतनी प्रशस्ति के बाद सबके लिए लिखा जाता है -

८. **कृतानेक शिरसाष्टांग नमस्कार विनंती विशेष** -

असल में आज सिर्फ इन शब्दों में भी पत्र में प्रशस्ति लिखी जाती है।

९. अपने से छोटों के लिए -

चिरंजीव अनिल यास अनेक आशीर्वाद विशेष,

१०. पत्र के प्रमुख मज़मून के अन्त में आवश्यकता के अनुसार लिखा जाता है—

वडील मंडळीस नमस्कार, लहानांस आशीर्वाद. [बड़ों को प्रणाम, छोटों को आशिष।]

११. इसके बाद लिखा जाता है—

बड़ों के लिए - '**कळावे, लोभ असावा ही विनंती.**' - छोटों के लिए— सिर्फ — '**कळावे.**'

१२. आजकल प्रशस्ति में संक्षिप्त रूपों को भी काम में लाया जाता है। जैसे—

कृ. सा. न. वि. वि. [कृतानेक साष्टांग नमस्कार विनंती विशेष] या सा. न. वि. वि.

१३. अन्त – पानेवाले से लिखनेवाले के सम्बन्ध के अनुसार पत्र का अन्त किया जाता है। जैसे–

क. आपला आज्ञाधारक – [पुत्र] [कन्या] आदि [रिश्ता चाहें तो लिखें]

[हस्ताक्षर] दिलीप

ख. आपला [– ली] मित्र [मैत्रीण]

सुहास

ग. आपला हितचिंतक

सुधीर जोशी

आदि।

१४. अपरिचित व्यक्ति को अगर पत्र लिखा हुआ हो, तो लिखनेवाला हस्ताक्षर में पूरा नाम लिखे और ऊपर सिर्फ 'आपला' अथवा 'आपला नम्र' शब्द लिखे – जैसे।

आपला

विनायक शंकर वैद्य

१५. पता – हिंदी में जैसे लिखा जाता है, वैसे ही लिखा जाए। नाम के पहले सम्बन्ध-विशेष के अनुसार यों लिखें–

क. पिताजी को – ती. रा. रा [तीर्थरूप राजमान्य राजश्री]

ख. माताजी को – ती सौ. [तीर्थरूप सौभाग्यवती]

या

ती. गं. भा. [तीर्थरूप गंगाभागीरथी]

आजकल बड़ों के लिए पुरुष हो तो **श्रीयुत** [= श्री.] और स्त्री हो तो **सौभाग्यवती** या **श्रीमती** लिखा जाता है।

ग. छोटो के लिए – **चिरंजीव** [या सिर्फ चि.]

१६. याद रहे कि – मराठी में अविवाहित लड़की के नाम के पहले साधारणतः कु. [= कुमारी], विवाहित स्त्री – सुहागन [जिसका पति जिन्दा है] के नाम के पहले सौ. [= सौभाग्यवती] और विधवा के 'श्रीमती' लिखा जाता है।

१७. आजकल माता-पिता या अन्य किसी भी गुरुजन को पत्र लिखते समय सिर्फ यों भी प्रशस्ति लिखी जाती है– **'शिरसाष्टांग नमस्कार विनंती विशेष'** –

[२६९] सिर्फ पता, तारीख, प्रशस्ति और अन्त दिखानेवाला नमूना —

श्री

विकास,
शिवाजीनगर, पुणे ५
१ जून १९७३

ती. रा. रा. दादा यांस—

कृतानेक साष्टांग नमस्कार वि. वि.—

... ...
... ...
... ...
... ...

वडील मंडळीस नमस्कार व लहानांस आशीर्वाद.

आपला आज्ञाधारक,
विनय

[२७०] (२) औपचारिक पत्र

कभी-कभी हमें नौकरी के लिए आवेदनपत्र, संपादक के या किसी अधिकारी के नाम चिट्ठियां लिखनी पड़ती हैं। मराठी और हिन्दी में ऐसे पत्रों के लेखन का तरीका लगभग एक-सा है । यहां आवश्यक जानकारी दी जा रही है।

१. पता, तारीख आदि या तो साधारण पत्र में जैसे लिखा जाता है, वैसे ही लिखें या पत्र के अन्त में बाईं तरफ कोने में लिखें।

२. प्रशस्ति में **श्रीयुत** या **श्रीमती** [आवश्यकता के अनुसार] या सिर्फ **श्री.** लिखकर उक्त व्यक्ति का पूरा ओहदा लिखें। उसके बाद स्वतंत्र पंक्ति में '**सा. न. वि. वि.**' या '**सादर प्रणाम**' लिखें। जैसे–

क. श्री. संपादक,
'केसरी'–पुणे ३०.
सा. न. वि. वि.

ख. श्री. मुख्याध्यापक,
नूतन मराठी विद्यालय प्रशाळा, पुणे २
सादर प्रणाम,

ग. श्री. स्टेशन-मास्तर,
मध्य रेल्वे, पुणे स्टेशन, पुणे १.

सा. न. वि. वि.

३. पत्र के मुख्य मजमून के अन्त में आवश्यकता के अनुसार नीचे लिखे वाक्य भी लिखे जा सकते हैं –

माझ्या विनंतीचा सहानुभूतिपूर्वक विचार होईल अशी आशा आहे.
तसदीबद्दल [= तकलीफ के लिए] क्षमा असावी.

४. तथा अन्त में—

'**आपला नम्र**' या '**आपला कृपाकांक्षी**' लिखकर उसके नीचे दस्तखत किए जाएं।

[२७१] एक नमूना–[सिर्फ पता, तारीख, प्रशस्ति और अन्त]
श्री. कार्याध्यक्ष,
महाराष्ट्र साहित्य परिषद, पुणे ३०.

सा. न. वि. वि.

... ...
... ...
... ...
... ...

माझ्या विनंतीचा सहानुभूतिपूर्वक विचार होईल अशी आशा आहे.
तसदीबद्दल क्षमा असावी.

इन्द्रभुवन,
घोडबन्दर रोड,
अंधेरी, मुंबई ५९
१ जून १९७३

आपला नम्र,
सदाशिव जोगळेकर

* * *

३०. अभ्यास–२ [अ]

[२७२] मराठी में अनुवाद कीजिए :—

(१) दो शताब्दियों से अधिक साल बीत गए हैं। पर आज भी चिन्ता देवी का नाम बुन्देलखण्ड में सुनाई देता है। बुन्देलखण्ड के एक बीहड़ स्थान में आज भी मंगलवार को हज़ारों स्त्री-पुरुष चिन्तादेवी की पूजा करने के लिए आते हैं। उस दिन यह निर्जन स्थान सुमधुर गीतों से गूंज उठता है; टीले और टोकरे रमणियों के रंग-बिरंगे वस्त्रों से सुशोभित हो जाते हैं। देवी का मन्दिर एक बहुत ऊँचे टीले पर बना हुआ है। उसके कलश पर लहराती हुई लाल पताका बहुत दूर से दिखाई देती है। मन्दिर इतना छोटा है कि उसमें मुश्किल से ही एक साथ दो आदमी खड़े रह सकते हैं। भीतर कोई भी प्रतिमा नहीं है, केवल एक छोटी-सी वेदी बनी हुई है। नीचे से मन्दिर तक पत्थर का ज़ीना है। भीड़-भाड़ में धक्का खाकर कोई नीचे गिर न पड़े, इसलिए ज़ीने की दीवार दोनों तरफ बढ़ी हुई है। यहीं चिन्तादेवी सती हुई थी; पर लोक-रीति के अनुसार वह अपने मृत पति के साथ चिता पर नहीं बैठी थी। उसका पति हाथ जोड़े तब सामने खड़ा था; पर वह उसकी ओर आँख उठाकर भी न देखती थी। वह पति के साथ नहीं, उसकी आत्मा के साथ सती हुई। उस चिता पर पति का शरीर नहीं था, उसकी मर्यादा खाक हो रही थी।

(२) यमुना तट-पर कालपी एक छोटा-सा शहर है। चिन्ता उसी नगर के एक वीर बुंदेले की कन्या थी। उसकी माता उसकी बाल्यावस्था में ही परलोक

सिधार चुकी थी। उसके पालन-पोषण का भार पिता पर पड़ा। वह संग्राम का युग था, योद्धाओं को हथियार नीचे रखने की भी फुरसत न मिलती थी, वे घोड़े की पीठ पर भोजन करते और ज़ीन ही पर झपकियाँ लेते थे। चिन्ता का बाल्य-काल पिता के साथ समर-भूमि में कटा। बाप उसे किसी खोह में या वृक्ष की आड़ में छिपाकर मैदान में चला जाता। चिन्ता निःशंक भाव से बैठी हुई मिट्टी के किले बनाती और बिगाड़ती। उसके घरौंदे न थे, उसकी गुड़ियाँ ओढ़नी न ओढ़ती थीं। वह सिपाहियों के गुड्डे बनाती और उन्हें समर-भूमि में खड़ा करती थी। कभी-कभी उसका पिता शाम के समय भी न लौटता; पर चिन्ता को भय छू तक न गया था। सुनसान स्थान में भूखी प्यासी रात-रात भर बैठी रह जाती। उसने नेवले और सियार की कहानियाँ कभी न सुनी थीं। वीरों के आत्मोत्सर्ग की कहानियाँ, और वह भी योद्धाओं के मुँह से सुन-सुनकर वह आदर्श की पुजारिन बन गई।

(३) एक बार भगवान बुद्ध का एक प्रचारक घूम रहा था। उसे एक भिखारी मिला। वह प्रचारक उसे धर्म का उपदेश देने लगा। उस भिखारी ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। उसमें उसका मन नहीं है, यह देखकर प्रचारक नाराज़ हुआ। बुद्ध के पास जाकर वह बोला, 'वहाँ एक भिखारी बैठा है। मैं उसे इतने अच्छे-अच्छे सिखावन दे रहा था, तो भी वह सुनता ही नहीं।' तब बुद्ध ने कहा, 'उसे मेरे पास लाओ।' वह प्रचारक उसे बुद्ध के पास ले गया। भगवान बुद्ध ने उसकी दशा देखी। उन्होंने ताड़ लिया कि वह भिखारी तीन चार दिनों से भूखा है। उन्होंने उसे भर-पेट खिलाया और कहा, 'अब जाओ।' यह देखकर प्रचारक को बड़ा अचम्भा हुआ। उसने कहा, 'आपने उसे खिला तो दिया, लेकिन उपदेश कुछ भी नहीं दिया।' भगवान बुद्ध ने उसे समझाते हुए कहा, 'आज उसके लिए अन्न ही उपदेश था आज उसे अन्न की ही सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी। वह उसे पहले देना चाहिए, सो उसे मैंने दे दिया। अगर वह जिएगा तो कल सुनेगा।'

(४) एक बार एक सज्जन ने अपने नौकर से कहा, "अगर तुम सुबह दो कौओं को साथ में बैठे हुए देख पाओ तो मुझे खबर देना; क्योंकि यह बड़ा शुभ शकुन है और इससे सारा दिन अच्छी तरह कट जाता है।" मालिक की यह बात नौकर ने ध्यान में रखी। एक दिन दो कौओं को साथ में बैठे हुए देखा और दौड़ते हुए मालिक के पास पहुँचकर उसे बतला दिया। खबर पाते ही मालिक भी दौड़ता-हाँफता वहाँ आ पहुंचा; पर उसे उस स्थान पर एक ही कौआ दिखाई दिया; क्योंकि इतने में दूसरा उड़ गया था। वह बहुत गुस्सा हुआ; उसे लगा कि नौकर

ने उसका मज़ाक किया है। वह नौकर को पीटने लगा। थोड़ी देर बाद एक आदमी बढ़िया मिठाई की थाली लिए हुए आ पहुँचा। वह थाली उसके सामने रखकर उस आदमी ने कहा, "महाराज, आपके दोस्त विमलराय ने आपकी सेवा में यह उपहार पेश किया है। इसे स्वीकार कीजिए।" यह देखकर नौकर ने कहा, "मालिक आपने सिर्फ एक ही कौआ देखा था, इसके फलस्वरूप आपको यह उपहार मिल गया। अगर आपने दो कौए देखे होते, तो आपको मेरी तरह ही भारी मार पड़ती।"

(५) दफ्तर में काम करनेवाला कर्मचारी मानो एक बेज़बान जीव होता है। मज़दूर को आँखें दिखाओ, तो वह त्योरियाँ बदलकर खड़ा हो जाएगा। कुली को डाँट बताओ तो सिर से बोझ फेंककर वह अपनी राह लेगा। किसी भिखारी को दुतकारो, तो वह तुम्हारी ओर गुस्से से देखते हुए चला जाएगा। यहाँ तक कि गधा भी कभी-कभी तकलीफ होने पर दोलत्तियाँ झाड़ने लगता है। मगर बेचारे दफ्तर के कर्मचारी को आप चाहे आँखें दिखाएँ, डाँट बताएँ, दुत्कारें या ठोकरें मारें, उसके माथे पर बल न आएगा। उसे अपने मन पर इतना काबू होता है कि इतना संयम शायद कोई संन्यासी भी न कर पाएगा। वह संतोष का पुतला होता है, सब्र की मूर्ति होता है, सच्चा आज्ञाकारी होता है। उसमें मानव की तमाम अच्छाइयाँ मौजूद होती हैं। सुनसान जगह के भी किसी दिन भाग्य जगते हैं। दीवाली के दिन उसपर भी रोशनी होती है। बरसात में उसपर हरियाली छाती है। प्रकृति की खुशी में वह भी शामिल हो सकता है। लेकिन इस गरीब कर्मचारी के नसीब कभी नहीं जागते। इसकी अँधेरी तकदीर में रोशनी कभी नहीं दिखाई देती। उसके फीके-पीले चेहरे पर कभी मुस्कराहट की चमक नहीं नजर आती। इसके जीवन में सदा मायूसी, मुर्दनी फैली हुई होती है, जिन्दादिली का कोई नामोनिशान कहीं दिखाई नहीं देता।

[२७३] शब्दकोश

(१) **शताब्दी** – शतक (न.); **बीत जाना, बीतना** – (काळ, वर्ष, वेळ) होऊन-निघून जाणे. (काळ) लोटणे; (अधिक वर्षे लोटली - होऊन गेली.) **बीहड़** – उंच-सखल जागा. **गूंज उठना** – (आवाज़ाने) भरून जाणे, दुमदुमून जाणे; **टीला** – टेकडी, उंचवटा; **कलश** – कळस.

(२) **लहराना** – फडकणे. **मुश्किल से** – अडचणीने. **प्रतिमा** – प्रतिमा, मूर्ति; **केवल** – केवळ, फक्त. **वेदी** – ओटा. **भीड़भाड़** – गर्दी; **सती होना** – सती जाणे; **आँख उठाकर** – डोळे (दृष्टि) वर करून; **मर्यादा** – मान, प्रतिष्ठा;

खाक होना – भस्म होणे, जळून जाणे. **परलोक सिधारना** – स्वर्गवासी होणे, परलोकी जाणे; **संग्राम** – युद्ध; **जीन** – जिन (न.); **झपकियाँ लेना** – (झोपेची) डुलकी घेणे; **(काल) कटना** – (काळ) निघून जाणे; **हथियार** – हत्यार, शस्त्र (न.) **खोह** – गुहा; **० की आड़ में** –० च्या आड,० च्या आडोशाला, **भाव** – वृत्ति; **बिगाड़ना** – मोडून टाकणे; **घरौंदा** – घरकुल (न.); **गुड्डा** – बाहुला (पुं.); **छू तक न जाना** – स्पर्श सुद्धा न करणे, शिवत सुद्धा नसणे; **सुनसान** - निर्जन; **आत्मोत्सर्ग** – प्राणार्पण; बलिदान; **पुजारिन** – पुजारीण.

(३) **उपदेश देना** – उपदेश करणे; **ध्यान देना** – लक्ष देणे; **मन लगना** – मन लागणे, **सिखावन** – उपदेश (पुं.), शिकवण (स्त्री.) **दशा** – अवस्था – दशा; **ताड़ लेना** – ताडणे, अंदाज करणे; तर्क (पुं.) करणे; **अचम्भा** – अचंबा, आश्चर्य (न.)

(४) **सज्जन** – सद्‌गृहस्थ; **साथ में** – जवळ; **खबर देना** – कळवणे, खबर देणे; **ध्यान में रखना** – लक्ष्यात ठेवणे; **बात** – गोष्ट; **दौड़ता-हाँफता** – धावत-पळत; **गुस्सा होना** – रागावणे; **आपकी सेवा में......पेश किया है** – आपल्याला ही भेट पाठविली आहे; **इसके फलस्वरूप** – त्याचे फळ म्हणून; **उपहार** – भेट; **भारी मार पड़ती** – फार मोठा मार मिळाला असता.

(५) **दफ्तर** – कचेरी (स्त्री.), ऑफिस; **कर्मचारी** – नोकर; **मानो** – जणू काही; **बेजबान** – मुका; **(० को) आँखें दिखाना** – (० च्या कडे) रागाने पहाणे; **त्योरियाँ बदलना** – रागीट नजरेने पहाणे, नाखुशी दाखवणे; **डाँट बताना** – धमकी देणे; **अपनी राह लेना** – आपली वाट धरणे, चालू लागणे; **दुतकारना** – झिडकारणे; **दोलत्तियाँ झाड़ना** – दुगाण्या झाडणे; **ठोकर मारना** – ठोकरणे, ठोकर मारणे; **माथे पर बल आना** – कपाळाला आठ्या घालणे, नाखुशी दाखवणे; **काबू** – ताबा; **सब्र** – धीर; **तमाम** – सर्व; **अच्छाई** – चांगुलपणा; **मौजूद** – हजर; **भाग्य जगना** – नशीब (भाग्य) उदयाला येणे; **रोशनी** – रोषणाई; **हरियाली छाना** – हिरवळ पसरणे; **प्रकृति** – निसर्ग; **शामिल** – सामिल; **अंधेरी** – काळोख्या, अंधाऱ्या; **फीके-पीले** – फिकट; **मायूसी** – निराशा; **मुर्दनी** – प्रेतकळा; **जिंदादिली** – उत्साही वृत्ति; **नामोनिशान** – चिन्ह, लक्षण।

अभ्यास [आ]

[२७४] हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(१) फार वर्षापूर्वीची गोष्ट आहे. अवंती नगरीत एक राजा राज्य करीत होता. कर्णासारखा तो उदार, दानशूर आहे, असे सर्व लोक म्हणत. तो राजा दर

वर्षी निरनिराळी व्रते धरी व निरनिराळ्या रीतीने दान करी. या वर्षी राजाने ब्राह्मणाना दान करण्याचा नेम केला. त्याने असे ठरविले की सकाळी ज्या ब्राह्मणाचे तोंड दिसेल, त्याला सूपभर मोती द्यावयाचे. हा हा म्हणता ही बातमी सर्व राज्यात पसरली व गावोगावचे ब्राह्मण दान मिळवण्यासाठी येऊ लागले.

(२) अवंती नगरीत यत्नकांत नावाचा एक ब्राह्मण रहात होता. तो फार मोठा विद्वान, दयाळू, प्रामाणिक होता. त्याची रहाणी साधी होती. पूजा-पाठ करून तो संसार चालवी. राजाच्या दानाची गोष्ट त्यानेही ऐकली होती. पण त्याने राजाकडे जायचा कधी विचारच केला नाही. यत्नकांताच्या बायकोला वाटे, आपल्या पतीने राजाकडे जावे, सूपभर मोती आणावे; म्हणजे आपले दारिद्र्य फिटेल; पोराबाळांची आबाळ होणार नाही. ती यत्नकांतास रोज सांगे – तुम्ही एकदा राजाकडे जावे. अखेरीस पत्नीच्या समाधानासाठी तो राजाकडे जावयास तयार झाला.

(३) दुपारपासून उकाडा वाढतच होता. आता तर आभाळ ढगांनी भरून गेले. सूर्य झाकून गेला आणि सगळीकडे उदासीनता पसरली. पण एकीमागून एक मुली भाषण करीतच होत्या, त्यांची भाषणे थांबेनात. ताई विषय फार सोपा करून शिकवीत, हे कोणी सांगितले. दुसरी म्हणाली, ताई स्वतः स्वयंपाक करतात. म्हणून मीसुद्धा घरी स्वयंपाक करू लागले; आम्हाला ताई आवडतात, म्हणून आम्ही त्यांच्यासाठी फुले व गजरे आणतो. दुसऱ्या वर्गातील मुलींना आमचा हेवा वाटतो, असे तिसरी म्हणाली. आम्ही तर ताईंना 'अहिल्यादेवी' च म्हणणार होतो, पण ते त्यांना आवडणार नाही; ताई इतक्या साध्या आहेत, असे चौथीने सांगितले. शेवटी शेवंती बोलावयास उभी राहिली. ती म्हणाली, 'मी पोरकी लहान पोर. मला ताईंनी आईसारखे सांभाळले; काय बोलावे आणि काय द्यावे तेच मला सुचत नाही. मला तर वाईट वाटतेच, पण पाहा – सूर्याला, वाऱ्याला आणि ढगाला सुद्धा वाईट वाटले आहे ताई जाणार म्हणून.'

(४) एकदा एक ब्राह्मण एका जमीनदाराकडे गेला. त्याने जमीनदाराची खूप स्तुती केली. त्याच्याशी तत्त्वज्ञानाची चर्चा केली. तो म्हणाला, 'जग हे नश्वर आहे आज आहे ते उद्या राहीलच असे नाही. म्हणून माणसाने पुण्यकर्म करावे. उगीच संचय करू नये. या नश्वर जगात आपण योगायोगे एकत्र आलो आहोत. आपण ईश्वराची लेकरे! तेव्हा आपण सर्व भाऊ भाऊ आहोत, असे समजावे.' नंतर थोडा वेळ तो थांबला. जमीनदारावर आपल्या उपदेशाचा काय परिणाम झाला आहे, हे त्याने पाहिले. त्याला वाटले, हा गृहस्थ गंभीर झाला आहे. आपले म्हणणे त्याला पटले असावे. तेव्हा तो म्हणाला– 'महाराज, आपल्या

मिळकतीतील मला काही भाग द्या.' जमीनदाराने क्षणभर विचार केला. मुनिमाला बोलावून सांगितले की यांना एक पैसा द्या. ब्राह्मणाला हे पाहून आश्चर्य वाटले. तो म्हणाला 'हे काय ? माझा वाटा एवढाच ?' त्यावर जमीनदार शांतपणे म्हणाला, 'हे पहा, जगातले सगळे लोक माझे बंधू. माझ्या मिळकतीपैकी प्रत्येकाला त्याचा वाटा द्यावयाचा आहे. हा हिस्सा पैपेक्षाही कमी असणार. तेव्हा तुला तुझ्या खरोखरच्या वाटयापेक्षा जास्तच दिले आहे. बरे ! हा पैसा पण नश्वरच ! उगीच दु:ख कशाला करतोस ?'

हे ऐकून ब्राह्मण ओशाळला व चालू लागला.

(५) त्या राजाने श्रीमंत व्यापाऱ्याचा वेष घेतला आणि सेनापती त्याचा नोकर झाला. अशा तऱ्हेने राजा आणि सेनापती वसुमती नगरीच्या सीमेवर पोहोचले. राजा म्हणाला, "किती बेफिकीर लोक आहेत हे ! सीमेचे रक्षण करायला येथे एकही सैनिक नाही !" सेनापती म्हणाला, "या लोकांना शत्रूचे भय वाटत नाही. हे लोक किती निर्धास्त आहेत, हे आपणच पाहा. तो पाहा गाई चारणारा मुलगा. त्याचीच आपण परीक्षा घ्या."

राजा म्हणाला– ठीक आहे. शितावरून भाताची परीक्षा होईल. नंतर राजाने गुराख्याला खूण केली. गाई बाजूला नीट वळवून तो मुलगा राजाजवळ आला. त्याने आपला पावा काखेत धरला व हसत हसत नमस्कार केला. तो म्हणाला, "पाहुणे कोणत्या गावचे ? आपण दमलेले दिसता ! चालायची सवय दिसत नाही."

त्याच्याकडे नजर रोखून राजा म्हणाला, 'काय रे पोरा, तुझे नाव काय ? कुणाच्या चाकरीला असतोस ? काय मिळते तुला ?"

मुलाने उत्तर दिले, "माझे नाव हलधर, मी या गावच्या गाई चारतो. गावचे काम म्हणजे माझेच काम समजतो. त्यासाठी पैसा कसला घ्यायचा !"

हे ऐकून राजा आश्चर्यचकित झाला.

(६) सौराष्ट्रात गिरनार नावाचा एक मोठा पर्वत आहे. त्याच्या पायथ्याशी जुनागड नावाचे एक मोठे शहर आहे. प्राचीन काळी हे नगर मोठ्या राज्याची राजधानी होते. जवळ जवळ पाचशे वर्षांपूर्वी या शहरात नरसी मेहता नावाचे एक मोठे भक्त व संत होऊन गेले. ते अत्यंत उच्च अशा नागर जातीत जन्मले होते. ते नेहमी भगवंताचे भजन करीत. त्यातच ते असला जातिभेद विसरून गेले. जे लोक ईश्वराची भजन-भक्ती करीत, त्यांच्याचबरोबर ते राहत व फिरत असत. ते स्वत: भजने तयार करीत व गोड गळ्याने एकतारीवर म्हणत. ते देवाचे भक्त कसे बनले, याविषयी एक आख्यायिका आहे.

(७) एकदा नरसी मेहतांची भावजय त्यांना खूप टोचून बोलली. ते त्यांना सहन झाले नाही. तेव्हा त्यांनी आपले घर सोडले. दूर समुद्रकिनाऱ्यावर भावनगर शहराजवळ गोपनाथ नावाचे एक तीर्थक्षेत्र आहे. तेथे ते जाऊन राहिले. तेथे त्यांनी अन्नपाणी सोडून महादेवाची भक्ती सुरू केली. त्यामुळे महादेव त्यांच्यावर प्रसन्न झाले; व तुला काय पाहिजे ते माग, असे म्हणाले. नरसी मेहतांनी 'मला भगवान कृष्णाचे दर्शन करवा,' असे सांगितले. तेव्हा त्यांना भगवान कृष्णाचा साक्षात्कार झाला व ते हळूहळू उच्च कोटीचे भक्त बनले.

(८) "त्या वेळी तू एक वर्षाचा होतास. घरात धान्याचा कण सुद्धा नव्हता. वेळ अशीच संध्याकाळची होती. मी तुला कडेवर घेऊन काळजी करीत उभी होते. तोच ते बाहेरून आले. झिंगतच आले आणि दारूकरिता माझ्याजवळ पैसे मागू लागले. माझ्याजवळ फुटकी कौडी सुद्धा नव्हती. मी म्हटले, 'माझ्याजवळ काय असणार? एवढे पोर शिल्लक आहे...' ते रागाने म्हणाले, 'हा! मग ते पोरच वीक आणि आण पैसे. आण म्हणतो ना लवकर!'

मीही रागाने काही बोलले. त्यांचा राग अनावर झाला. 'माझ्यापेक्षा तुला ते पोर जास्त वाटले काय?' असे काहीसे पुटपुटत ते रस्त्यावर गेले; तुला मारण्यासाठी दगड घेऊन आले आणि तो तुझ्या अंगावर भिरकावला. मी मध्ये आले... ती ही कपाळावरची खोक."

(९) तो आश्चर्याने त्या सुन्दरीकडे पाहातच राहिला. थोड्या वेळाने तो चाचरत म्हणाला, "तू कोण? देवी की परी? कोठून आलीस? काय नाव तुझे?"

देवी गोड हसली. ती मंजूळ स्वराने म्हणाली, "शिदबा, ऊठ. भिऊ नकोस, मी देवी आहे, माझे नाव विद्युत. पण मला तू आपला 'बिजली'च म्हण. मी आताच आकाशातून पिंपळावर उतरले. आता जगात सगळीकडे माझेच युग सुरू झाले आहे. तुमची कामे करायला मी येथे आले आहे. ते त्या कोयना नदीवरचे धरण बांधून झाले म्हणजे मी खेड्यापाड्यातून फिरणार, अवसेला मी उन्हासारखा लख्ख उजेड पाडणार. अन् शिदबा, तुमची कष्टाची कामे मी हलकी करणार, तुम्हाला सुखी करणार! मी येथे खेड्यात राहून शहरातल्या सारख्या सगळ्या सुखसोयी करून देणार आहे!"

(१०) "या बसा, गुरुजी! कसे काय? ठीक आहे ना?"

"वा वा: ! ठीक आहे."

"आज इकडे कसे आलात?"

'बाबासाहेब ! आपल्याकडेच मुद्दाम आलो आहे.'

'मोठी कृपाच समजायची ही ! अहो गुरुजी, आपले पाय आमच्या घराला लागले, हे मोठे भाग्यच नव्हे का ?'

'अहो लाजवता काय असे बाबासाहेब ! आमच्या कार्याला आपल्या सारख्यांचा आशीर्वाद हवा, म्हणून आलो.'

'कसले कार्य काढलेत एवढे !'

'असे पाहा बाबासाहेब ! आमच्या संस्थेची माध्यमिक शाळा आपल्याला माहीत आहेच. यंदा संस्थेच्या चालकांनी येथे शेतीभातीचे शिक्षण द्यायचे ठरविले आहे मुलांना !'

'का बरे ?'

'असं पाहा, भारतासारख्या कृषिप्रधान देशाला उत्तम शेतकऱ्यांची गरज आहे. पण आजच्या मुलांना शेतीभातीत गोडी कुठे वाटते ? त्यांना हव्यात नोकऱ्या ! शेतीभातीची आवड निर्माण व्हावी, म्हणून हा प्रयत्न आहे. दुसरे असे की गरीब होतकरू विद्यार्थी थोडे फार काम करतील, त्यांना फी वगैरेच्या बाबतीत आम्ही सवलत देणार आहोत.'

'पण गुरुजी यात मी काय करू शकणार -- मला नाही समजले ?'

'बाबासाहेब, आपण गावचे मोठे जमीनदार. बागायतदार ! आपल्या शेतात मुलांना काही काम आपण देऊ शकाल -- त्यापेक्षा आपण काम कसे करावे, हे शिकवू शकाल.'

'जरूर देईन -- मोठ्या आनंदाने !'

'आपला मी आभारी आहे याबद्दल ! आपल्यासारखे सत्कार्याला हौसेने हातभार लावणारे लोक विरळे !'

[२७५] शब्दकोश

(१) **गोष्ट**–बात; **राज्य करणे**–राज करना; **व्रत धरणे**–व्रत रखना; **नेम**–नेम, व्रत; **हा, हा म्हणता**–बात की बात में; **गावोगावचे**–स्थान-स्थान के।

(२) **मोठा विद्वान**–प्रकांड पंडित; **संसार चालवणे**–गिरस्ती चलाना; **विचार केला नाही**–सोचा तक नहीं था; **बायको**–स्त्री, पत्नी; **वाटणे**–लगना, मन में आना; **आबाळ**–अवहेलना, दुरवस्था; **अखेरीस**–आखिर में।

(३) **उकाडा**–गरमी; **आभाळ**–आकाश; **झाकून जाणे**–छिप जाना; **थांबणे**–खत्म होना; **सोपा करून**–सुगम-सुलभ करके, सुलझाकर; **ताई**–दीदी; **आवडणे**–

प्रिय होना, प्रिय लगना, पसन्द आना; **हेवा वाटणे**–ईर्षा होना; **पोरकी**–अनाथ; **पोर**–छोकरी; **आईसारखे संभाळले**–माँ की तरह पालपोस किया; **सुचत नाही**–सुझाई नहीं देता; **वाईट वाटणे**–दुःख होना।

(४) **तत्त्वज्ञान** – दर्शन; **चर्चा करणे** – चर्चा करना; **उगीच्** – व्यर्थ; **योगायोगाने** – संयोग से; **लेकरे** – संतानें; **परिणाम** – प्रभाव, **पटणे** – पसन्द आना, अच्छा लगना; **मिळकत** – मिलकियत; **वाटा** – हिस्सा; **शांतपणे** – शांति के साथ; **खरोखरीचा** – सही; **ओशाळणे** – शर्मिन्दा होना।

(५) **वेष घेणे** – स्वाँग रचना; **बेफिकीर** – बेफिक्र; **निर्धास्त** – निर्भय; **परीक्षा घेणे** – परीक्षा करना; **शितावरून भाताची परीक्षा होईल** – भात के एक कण से पूरे भात की परख होगी; **खूण** – इशारा; **नीट** – ठीक से; **वळवून** – हाँककर; **पांवा** – बाँसुरी; **पाहुणे** – अतिथि, मेहमान; **हसत हसत** – मुस्कराते हुए; **नजर रोखून** – आँखें गड़ाकर, नज़र गड़ाकर; **चाकरी** – नौकरी।

(६) **पायथा** – तलहटी; **होऊन गेले** – हो गए; **जन्मले** – पैदा हुए, आविर्भूत हुए; **भजने** – भक्तिगीत; **गोड गळयाने** – मधुर स्वर में; **एकतारीवर** – इकतारेपर; **याविषयी** – इस संबंध में; **आख्यायिका** – आख्यायिका, किंवदन्ती।

(७) **भावजय** – भाभी, भौजाई; **टोचून बोलणे** – चुभती बातें कहना, जली कटी सुनाना; **जाऊन राहिले** – जाकर बस गए; **अन्नपाणी** – खानपान; **सोडणे** – त्यजना, त्याग करना; **हळूहळू** – आहिस्ता आहिस्ता।

(८) **काळजी** – चिन्ता; **झिंगत येणे** – नशे में झूमते हुए आना। **फुटकी कौडी** – कानी कौड़ी; **पोर** – बच्ची; **शिल्लक** – बाकी, बचा हुआ; **अनावार** – **होणे** – आपे से बाहर होना; **भिरकावणे** – तपाक से फेंक देना; **खोक** – चोट; **मध्ये** – बीच में।

(९) **मंजुळ** – मधुर, मीठा; **तू आपला** – तुम तो; **पिंपळ** – पीपल; **सगळीकडे** – सभी ओर; **धरण** – बाँध; **खेड्यापाड्यातून** – गाँव गाँव में; **अवस** – अमावस; **उन्हासारखा लख्ख** – धूप जैसा तेज; **सुख-सोयी** – सुख-सुविधा।

(१०) **मुद्दाम** – जान-बूझकर, खासकर; **कार्य काढले** – कार्य किया चाहते हैं; **यंदा** – इस साल; **गोडी** – दिलचस्पी; **आवड** – रुचि; **होतकरू** – होनहार; **बाबतीत** – बाबत में; **सवलत** – रिआयत; **बागाइतदार** – काश्तकार, बागवान; **हौसेने** – हविस से; **हातभार लावणे** – हाथ बँटाना; **विरळा** – विरला।

✦ ✦ ✦

विभाग – ३

अनुवाद – मार्गदर्शिका

[१] अ : १. ती चटई आहे. २. तू मुलगी आहेस. ३. ती (तो) बाग आहे. ४. ते फळ आहे. ५. ही भिंत आहे. ६. मी मनुष्य आहे. ७. तो सिंह आहे. ८. हे शहर नाही (नव्हे). ९. तो बैल नव्हे (नाही), ती गाय आहे. १० हा बकरा आहे. ती बकरी (शेळी) आहे.

आ : १. मैं लड़का हूँ। २. वह लड़की है। ३. तू सिपाही है। ४. वह चित्र है। ५. यह छप्पर नहीं है। ६. यह घोड़ा है। ७. वह टोपी नहीं है। ८. वह पत्ता है। ९. वह दवात है। १० यह कागज़ है। ११. वह तलवार है; यह भाला है। १२. यह दरवाजा है; वह खिड़की है। १३. यह दवात है; वह कलम है। १४. वह बंगला है; वह दूकान है। १५. वह नदी है; यह नाला है।

[२] अ : १. हे दगड आहेत. २. ते अंगरखे आहेत. ३. ही गादी आहे. ४. तुम्ही भाऊ-भाऊ आहात. ५. मी शेतकरी नाही, शिक्षक आहे. ६. हा पेरू आहे आणि ते केळे आहे. ७. हे लोणी आहे, मिठाई नव्हे. ८. ही सहा सुपे आहेत. ९. ही नऊ झाड़े आहेत. १०. ही पाच चित्रे आहेत. ११. ती स्त्री आहे आणि ही मुलगी आहे. १२. तो राजा आहे. १३. हे पक्षी मोर आहेत. १४. हे मनुष्य साधू आहेत. १५. हे शेत आहे व ती बाग आहे.

आ : १. ये सिपाही हैं और वे किसान हैं। २. ये लड़के हैं और वे अध्यापक हैं। ३. वे नारियल हैं और ये केले हैं। ४. वह आकाश है। ५. वे गेंदें हैं। ६. यह हल नहीं है। ७. यह घोड़ा नहीं है; यह गधा है। ८. यह चाय है और वह दूध है। ९. यहाँ पानी है; दूध नहीं है। १०. वह मुर्गा है और वह मुर्गी है। ११. यह खेत है; बाग नहीं है। १२. क्या यहाँ साँप हैं? १३. क्या वह मिठाई है? १४. यह हलवाई है। १५. वह सेनापति नहीं है।

[३] अ : १. येथे वीस मुली व पंधरा मुलगे आहेत. २. ती स्त्री शिक्षिका आहे. ३. हे चमचे आहेत व त्या पळच्या आहेत. ४. तेथे सुऱ्या व चाकू नाहीत. ५. या (ह्या) विटा आहेत; दगड नव्हेत. ६. ह्या (या) कोण आहेत ? ह्या (या) मोलकरणी आहेत. ७. ह्या भाकऱ्या आहेत; चपात्या नव्हेत. ८. शाळा कोठे आहे ? ९. येथे उंट नाहीत का ? १०. ह्या वह्या व पुस्तके आहेत. ११. तेथे कढया आहेत का ? १२. हा मनुष्य (ही व्यक्ती) सरदार आहे. १३. सूर्य व तारे कोठे आहेत ?

१४. येथे गादी व उशा नाहीत. १५. येथे दहा सुया आहेत. १६ तेथे बारा चमचे, सोळा पातेल्या व वीस पळचा आहेत. १७. ही व्यक्ती कोण आहे? १८. चन्द्र कोठे आहे? १९. रामराव शिक्षक व कवी आहेत. २०. सह्याद्री पर्वत आहे.

आ : १. वे लड़कियाँ बहनें हैं। २. क्या ये कलियाँ हैं? ३. कौआ कहाँ है? ४. हिमालय पहाड़ है। ५. वे गायें हैं; वे बछड़े हैं। ६. ये काँच हैं। ७. वह बाघ नहीं है; वह बाघिन है। ८. वह स्त्री अध्यापिका है और ये लड़कियाँ छात्राएँ हैं। ९. वह रानी है और ये दासियाँ हैं। १०. ये मालाएँ हैं। ११. जौंकें कहाँ हैं? १२. क्या यहाँ जूते हैं? १३. ये हथनियाँ और बाघिनें हैं। १४. लौंगें कहाँ हैं? १५. वे पंद्रह लाठियाँ हैं। १६. ये कितनी कापियाँ हैं? वे कापियाँ अठारह हैं। १७. तकिये कहाँ हैं? १८. क्या यहाँ तीन नावें हैं? १९. ये बारह सुइयाँ हैं। २०. वे ईंटें उन्नीस हैं।

[४] अ : १. आकाश निळे आहे. २. हा कुत्रा काळा आहे. ३. ही साडी सफेद आहे. ४. हे शिपाई शूर आहेत. ५. ह्या चपात्या (पोळ्या) चांगल्या आहेत. ६. ही फुले सुगंधी नाहीत. ७. ही जमीन सुपीक आहे. ८. तो मनुष्य श्रीमंत आहे. ९. तुम्ही उद्योगी आहात. १०. ही पाने हिरवी आहेत. ११. ती मुले अनाथ आहेत. १२. हे लोक क्रूर व लोभी नाहीत. १३. तो मनुष्य वेडा आहे. १४. तांबडे व पिवळे कागद कोठे आहेत? १५. ती स्त्री उदार व विरक्त आहे. १६. ही किती फळे आहेत?

आ : १. यह छोटा लड़का चतुर है। २. यह नीली साड़ी अच्छी नहीं है। ३. यह गुलाब खुशबूदार है। ४. वे पाँच भाई हैं। ५. ये नदियाँ बड़ी नहीं हैं। ६. ये तालाब गहरे नहीं हैं, उथले हैं। ७. ये वस्तुएँ टिकाऊ नहीं हैं। ८. तुम उदार और त्यागी हो। ९. यह आम कच्चा और खट्टा है, पक्का (पक्व) और मीठा नहीं है। १०. वह आदमी विद्वान है। ११. वे सिपाही लड़ाके हैं। १२. वे पेड़ ऊँचे हैं। १३. यह कुआँ छोटा है। १४. यह लड़का बुद्धिमान है। १५. ये मिर्चें हरी हैं। १६. वहाँ कितने घर हैं?

[५] अ : १. या, बसा. हे पुस्तक वाचा. २. सकाळी ताजे दूध प्या, चहा पिऊ नका. ३. अनिल, चल, विटी-दांडू खेळ. ४. रमेश, हे चाळीस रुपये घे. ५. नेहमी खरे बोला, खोटे बोलू नका. ६. हा चहा गरम (कढत) आहे, पण ती कॉफी थंड (गार) आहे. ७. येथे आले, मिरची, चिंच, मीठ व कच्चा आंबा आहे. ८. तुम्ही हा चेंडू व बॅट घ्या आणि खेळा. ९. शीला, कपडे धू व इकडे ये. १०. सुनील, येथे बस व एक चांगले गाणे म्हण (गा). ११. त्या सर्व मुली लपंडाव खेळतात. १२. ह्या किती चिंचा आहेत? १३. खोटे बोलू नका, खरे सांगा. १४. गुरुजी, हा पाठ शिकवा. १५. हे किती रुपये आहेत?

आ : १. तुम अच्छे खिलाड़ी हो। यहाँ आओ और कबड्डी खेलो। २. आप यह काम न कीजिए। ३. वे कापियाँ लाओ और जवाब लिखो। ४. हिन्दी राष्ट्रभाषा है; यह भाषा तुम सीखो। ५. यह चिट्ठी पढ़ो और जवाब लिखो। ६. कमला, यह नीली साड़ी अच्छी है; तू वह ले। ७. यह शरबत खट्टा है, शक्कर दो (दे)। ८. यह पोथी पढ़ो और अर्थ बताओ। ९. ये आम कच्चे हैं, तू वे मत खा। १०. तू ये चार पाठ पढ़ और वहाँ जा। ११. एक बड़ा शब्दकोश लाओ। १२. वे पैंतीस पुस्तकें लो और उधर जाओ। १३. वे कितने वाक्य हैं? १४. ये प्रश्न मत पूछो। १५. सुबह उठो और कसरत करो।

[६] अ : १. शिंपी कपडे शिवतो. २. आम्ही कपडे घालतो. ३. सोनार दागिने घडवितो. ४. कोष्टी कापड विणतो. ५. धोबी कपडे धुतो. ६. विद्यार्थी पुस्तके वाचतात. ७. मुली गाणी (गीते) गातात. ८. मी पत्र लिहितो. ९. हंस दूध पितात. १०. तू काम करतेस. ११. तुम्ही धान्य विकता. १२. आपण सकाळी स्नान करता. १३. बैल गाडी ओढतात. १४. अरुणा चादर आणते. १५. मांजर उंदीर पकडते आणि खाते. १६. ह्या मुली प्रार्थना करतात. १७. पुजारी पूजा करतो व पोथी वाचतो. १८. तुम्ही किती वाजता आंघोळ (स्नान) करता? १९. विद्यार्थी कोठे बसतात? २०. तुम्ही सकाळी वर्तमान-पत्र वाचता का?

आ : १. किसान खेत जोतता है और बीज बोता है। २. कुम्हार मटके बनाता है और बेचता है। हम मटके खरीदते हैं। ३. गाय दूध देती है। ग्वाला गाय को दुहता है और बेचता है। ४. पंछी दाने चुगते हैं। ५. मैं सुबह उठती हूँ, हाथ-मुँह धोती हूँ और दूध पीती हूँ। ६. तुम ताश खेलते हो और वे शतरंज खेलती हैं। ७. तू कहानी सुनाती है और लड़कियाँ सुनती हैं। ८. तुम मराठी सिखाते हो और हम सीखते हैं। ९. हम दस बजे सोते हैं। १०. चमार जूते बनाता है। ११. वह पत्र इधर लाओ। १२. भैंसें चारा खाती हैं। १३. मेजें बड़ी हैं; कुर्सियाँ बड़ी नहीं हैं। १४. लौंग तीखी होती है। १५. बरफी मीठी होती है। १६. यह अनाज अड़तालीस किलो है। १७. क्या यहाँ पचास गुदड़ियाँ हैं? १८. तुम पूजा कब करते हो? १९. झरना कहाँ है? २० ढक्कन बंद मत करो।

[७] अ : १. हा मुलगा माझा भाऊ आहे व ती मुलगी माझी बहीण आहे. २. माझा भाऊ जलद पळतो. ३. भारत आपली मातृभूमी आहे. ४. आम्ही तिची सेवा करतो. ५. तुमचे घर मोठे आहे; पण त्याचे (घर) लहान आहे. ६. आपला नोकर काम करतो; त्याला कपडे द्या. ७. त्याचा मित्र आजारी आहे. ८. अविनाश माझा मोठा भाऊ आहे. अरुणाबेन त्याची पत्नी आहे. मी तिचा दीर आहे. ९. आशा माझी बहीण आहे. रमाकान्त तिचे पती आहेत. रामराय तिचे सासरे (श्वशुर)

आहेत व सीताबेन तिची सासू आहे. १०. या मुली भांडखोर आहेत. त्या रोज भांडतात. ११. तुमचे घर कोठे आहे? १२. तो मनुष्य लुळा व लंगडा आहे. १३. हा फकीर आंधळा आहे. १४. शिपाई लढतात. १५. मला पंचावन रुपये द्या.

आ : १. मेरा एक दोस्त है। उसका नाम श्रीकान्त है। मैं उसको पुस्तकें देता हूँ। २. तुम्हारा खेत बड़ा है। तुम उसमें बीज बोते हो। ३. आप उदार हैं। आप उसे पैसे दीजिए। ४. उसे मराठी सिखाओ। ५. मैं तुझे दूध देता हूँ। ६. तू केले ला; आम भी खरीदो। ७. यह कुत्ता गन्दा है। ८. यह आदमी अन्धा है। ९. तेली तेल पेरता है और बेचता है। १०. उसके ये चित्र देखो। ११. सुबह कलियाँ खिलती हैं। १२. पृथ्वी बड़ी है। चन्द्र उससे छोटा है और सूरज उससे बड़ा है। १३. नौकर नगाड़ा बजाता है। १४. राज दीवार बनाता है। १५. उसकी ननद चतुर है। १६. कागज़ जल्द जलता है। १७. (तुम) हमारे कागज़ मत जलाओ। १८. लुटेरे उन्हें लूटते हैं। १९. विमला और कमला सौतें (– सौतें) हैं। २०. मेरी भाभी पकौड़े तलती है।

[८] अ : १. हे कोणते (खेडे) गाव आहे? २. त्यात पोस्ट-ऑफिस नाही का? ३. मुले का हसतात? ४. तो गाडीवान आपली गाडी चालवितो. ५. या मुली का धावतात? ६. आमचे गुरुजी आम्हाला प्रश्न विचारतात व आम्ही त्यांची उत्तरे देतो. ७. मांजर येते, तेव्हा उंदीर पळून जातात. ८. त्याची बहीण चांगली नाचते. ९. सुहास का रडतो? १०. तुम्ही पत्र केव्हा लिहिता? ११. तुम्हाला किती भाऊ आहेत? १२. ही किती कमळे आहेत? १३. ती गोष्ट केव्हा वाचते? १४. यांचे घर कोठे आहे? १५. गंगा नदी पवित्र आहे. १६. पाटण तालुका कोठे आहे? १७. पोस्टमन पत्रे वाटतो. १८. त्यात चादर नाही. १९. आज माझा वाढ-दिवस आहे. २०. तेथे कोण रडतो (रडत आहे)?

आ : १. इसको चार पुस्तकें दो। २. उसका भाई कहाँ है? ३. इसे क्या कहते हैं? ४. तुम अपना काम करो। ५. पंछी क्या खाते हैं? ६. हमारे नेता कौन हैं? ७. यह छाछ है; इसमें मक्खन भी है। ८. प्रयाग और काशी बड़े पवित्र तीर्थक्षेत्र हैं। वहाँ गंगा नदी है। ९. भारत हमारा देश है। उसे हिंदुस्थान भी कहते हैं। १०. ये लोग कौन हैं? ११. वे कहाँ रहते हैं? उनका कौन नेता है? १२. मेरी टोपी कहाँ है? वह मुझे दो। १३. मैं सत्तर रुपये देती हूँ। १४. उसकी ननद क्या करती है? १५. क्या तुम्हारे चाचाजी तुम्हें पुस्तकें देते हैं? १६. तेरी माँ तुझे मिठाई देती है। १७. इसमें कौन-से फल हैं? १८. वे तुम्हें कितने रुपये देते हैं? १९. खोया कहाँ मिलता है? २०. क्या वहाँ कमला गाना गाती है?

[९] अ : १. शेतकऱ्यांचे बैल नांगर ओढतात. २. चित्ता, वाघ, लांडगा आणि कोल्हा (हे प्राणी) जंगलात राहतात. त्यांना 'जंगली जनावरे' (असे) म्हणतात. परन्तु लोक गाय, म्हैस, कुत्रा, घोडा इत्यादि जनावरे पाळतात; ह्या जनावरांना 'पाळीव जनावरे' (असे) म्हणतात. ३. लोक पोपटाला पिंजऱ्यात ठेवतात. ४. वसन्त ऋतूत कोकिळा गोड स्वरात (आवाजात) गाते. ५. वानर, ससा, खार व हरीण (ही जनावरे) फार वेगाने धावतात. ६. येथे टेकडीवर मारुतीचे सुप्रसिद्ध मंदिर (= देऊळ) आहे. तेथे लोक जातात व त्याची पूजा करतात. ७. हा कागद गुळगुळीत नाही, हा खरखरीत आहे. ८. ते नारळ दगडावर आपटतात. ९. हिमालयात गंगा यमुना व इतर नद्या उगम पावतात. १०. चोर तिचे (त्याचे) दागिने चोरतो. ११. भक्त मंदिरात (= देवळात) जातात व भजन-पूजन करतात. १२. भगवान (= परमेश्वर) कृपाळू आहे. १३. ही गल्ली रुंद नाही; पण पुष्कळ लांब आहे.

आ : १. वह मुझे पचहत्तर रुपये देता है। २. घोड़ा और कुत्ता आदमी के दोस्त हैं। ३. इस तालाब में बहुत पानी है; यह बहुत गहरा है। ४. पक्षी घोंसले में रहते हैं। ५. हमारे बंगले में चार अलमारियाँ हैं। ६. चोर से दूर रहो। ७. तोते को कच्चे फल दो। ८. रास्ते में खड़े मत रहो। ९. वे स्त्रियाँ काम नहीं करतीं (नहीं करती हैं)। १०. तुम तोते पकड़ते हो और उन्हें पिंजड़ों में रखते हो। ११. भेड़िया छोटे-छोटे जानवरों को मार डालता है और खाता है। १२. वे व्यापारी घड़ियाँ खरीदते हैं। १३. इस गाँव की पहाडी पर ऊँचे ऊँचे पेड़ हैं। १४. उन व्यापारियों का काफिला बड़ा है। १५ भिखारियों को दान दो। १६. गरीब लोग झोंपड़ियों में रहते हैं। १७. वे सिपाही शूर हैं। वे देश की रक्षा करते हैं। १८. नदियों का पानी मीठा है। १९. यह नौकर सुस्त है। उसे ज्यादा पैसे न दो। २०. विद्यार्थी के कपड़े अच्छे नहीं हैं।

[१०] अ : १. हे माझे पुस्तक आहे. माझ्या पुस्तकात नव्वद पृष्ठे आहेत. ह्यात बारा चित्रे आहेत. ह्याच्या मुख-पृष्ठावर रंगीत चित्र आहे. माझ्या पुस्तकात काही गोष्टी आहेत, तर काही निबंध आहेत. मी हे पुस्तक रोज वाचतो. २ हे बलराम [मा] चे शेत आहे. बलराम शेत नांगरतो, शेतात नांगर चालवितो आणि बी पेरतो. त्याच्या शेतात तांदूळ पिकतो. [तांदूळ तयार होतो.] ३. आम्ही चहात साखर घालतो, गूळ घालीत नाही. ४. सुरेश आपल्या दप्तरात आपल्या वह्या आणि पुस्तके ठेवतो. ५. गाईची शिंगे टोकदार असतात. ६. ओले लाकूड जळत नाही. ७. मी केळे सोलते व खाते. ८. मी टॉवेल [ला] ने हात पुसतो. ९. आम्ही सकाळी आंघोळ करतो आणि चांगले चांगले कपडे घालतो. १०. आमच्या घरी [घरात] चार पेट्या आहेत. ११. शांत बसा, गडबड [आरडाओरड] करू

नका. १२. राजा राजवाड्यात राहातो. १३. वडाचे झाड मोठे असते. १४, आम्ही वर्तमानपत्रात बातम्या वाचतो, त्यात जाहिरातीसुद्धा असतात. आम्ही जाहिराती-सुद्धा वाचतो. १५. दगड पाण्यात बुडतो.

आ : १. नारियल का पेड़ ऊँचा बढ़ता है। २. [तू] जल्द कपड़े पहन और बाहर जा। तेरे दोस्त तेरी प्रतीक्षा करते हैं (कर रहे हैं)। ३. यह पगडण्डी अच्छी नहीं है। ४. पान और सुपारी मत खाओ। ५. इंधन महँगा है। ६. पेड़ के पत्ते हरे होते हैं। ७. मैं अपने भाई के दोस्त को पहचानता हूँ। ८. उस घर के छप्पर पर बन्दर है। ९. फूल ला और माला तैयार कर। १०. बाजार में जाओ और चावल लाओ। ११. ये मेरे भाई की पुस्तकें हैं। १२. कश्मीर में सेब [पैदा] होते हैं। १३. गुजरात में रूई [पैदा] होती है। १४. गुड़ सस्ता होता है, पर शक्कर महँगी होती है। १५. नौकर कुएँ का पानी रहँट से निकालता है। कभी-कभी वह रस्सी से बालटी बाँधता है और वह बालटी कुएँ में (डालता) छोड़ता है। वह उस बालटी को रस्सी से ऊपर खींचता है।

[११] अ : १ आकाशात असंख्य तारे आहेत. २. ती म्हातारी चरख्यावर सूत कातते व विकते. ३. ती मंद व आळशी नाही; उद्योगी आहे. ४. माझी मावशी नागपुरात [नागपुरमध्ये] राहते; ती दरवर्षी माझ्यासाठी संत्री पाठविते. ५. तो अगदी [पूर्ण] अडाणी आहे. म्हणून साधे कामसुद्धा तो चांगले करीत नाही. ६. थंडीच्या दिवसात आम्ही गरम [= कढत] पाण्याने आंघोळ करतो; पण उन्हाळ्यात कोमट पाण्याने स्नान करतो. ७. विहिरीचे पाणी थंड असते. ८. आम्ही आपल्या शेतात बटाटे, कांदे व लसूण पैदा करतो [पिकवतो]. ९. चणे कोण भाजतो ? १०. मोटारीची चाके रबराची [पासून] बनवितात.

आ : १. गरीब लोग कम्बल काम में लाते हैं। २. हम स्टेशन [पर] जाकर टिकट कटाते हैं। ३. इस नदी के किनारे पर परती ज़मीन है। वहाँ खेत तैयार करो [बनाओ]। ४. वह स्त्री उसकी सौतेली माँ है और यह लड़का उसका सौतेला भाई है। ५. तमाकू पीना अच्छा नहीं है। फिर भी गरीब लोग उसके लिए बहुत पैसा खर्च करते हैं। ६. मेरा कमरा बड़ा है। ७. वह लड़का बहुत नटखट हैं। ८. बाघ गाय को मार डालता है। ९. मुझे फल भाते हैं। १०. मेरे दांत और मसूडे दुखड़े हैं [दुख रहे हैं।] ११. उस बूढ़े आदमी का इकलौता बेटा बहुत बीमार है। १२. उस टोकरी में एक सौ आम हैं। १३. हररोज खुली हवा में खेलो. १४. इस गली में बड़ी-बड़ी इमारतें नहीं हैं। १५. इस लड़के को क्यों पीटते हो ?

[१२] अ : १. माझ्या घरासमोर एक बाग आहे; व तिच्या मागे नोकरां-साठी एक झोपडी आहे. २. छोट्या [लहानग्या] अरुणसाठी त्याचे वडील शहरातून काय आणतात ? ३. ह्या शहराबाहेर एक किल्ला आहे. त्या किल्ल्यात जुन्या तोफा, बंदुका, तलवारी व ढाली आहेत. ४. ह्या लिफाफ्या [= पाकिटा] वर पत्ता लिहा व बीस नव्या पैशांची तिकिटे लावा [= डकवा, चिकटवा]. ५. माझ्याप्रमाणे काम करा. ६. फाटके-जुने कागद जाळू नका, ७. आरडा-ओरडा बंद करा. येथे का ओरडता ? ८. त्या लहान मुलांना त्रास देऊ नका. ९. आमच्या-जवळ बसा व आम्ही काय सांगतो [ते] ऐका. १०. गरिबीमुळे तो नवे कपडे [विकत] घेत नाही. ११. ती भाकऱ्या भाजते आणि आपल्या मुलांना खाऊ घालते.

आ : १. इस अच्छे कागज़ पर स्याही के छींटे मत गिराओ। २. इस थाली में नमक, कचूमर और चटनी परोसो। ३. सोंठ, अदरक, मिर्च और काली मिर्च-ये पदार्थ तीखे होते हैं। ४. ककड़ी छीलो। ५. वह छलनी से आटा छानती है। ६. दाल में तेल की छौंक दो। ७. कुछ लोगों को धनिया पसन्द नहीं आता। ८. मराठी भाषा नागरी लिपि में लिखते हैं। ९. हमें पाठशाला में भारत का इतिहास और भूगोल भी पढ़ाते हैं। १०. मेरे लिए पाँच बटन लाओ। ११. वर्ष के कौन-सी प्रमुख ऋतुएँ हैं ? १२. सूरज पूरब में उगता है। १३. उसके पास पुस्तकें नहीं हैं।

[१३] : १. माझा धाकटा भाऊ रागीट व चिडखोर आहे. म्हणून तो सर्वां-बरोबर भांडतो. २. सोने व चांदी मूल्यवान धातू आहेत; पण तांबे व पितळ स्वस्त धातू आहेत. ३. लोखंड स्वस्त असते, परंतु ते सोन्या-चांदीपेक्षा अधिक उपयोगी आहे. ४. लोहार लोखंडापासून नांगर बनवितो व सोनार सोन्या-चांदीचे दागिने घडवितो. ५. तांबट तांब्या-पितळेची भांडी बनवितो व विकतो. ६. पावसाळ्यात पुष्कळ वेळा तुफान होते. ७. घोडे टांगा ओढतात. ८. वावटळ येते [उठते] तेव्हा वारा जोराने वाहतो. ९. कांच लवकर फुटते. १०. हळूहळू चालू नको [नका]. ११. कोण उभा आहे [ते] समोर पाहा. १२. आत जा व दोन खुर्च्या बाहेर आणा. १३. खाली जा व पुन्हा वर येऊ नका. १४. कधी कधी मी त्याच्या घरी जातो. १५. ब्रशाने त्या कागदावर चित्र काढा. १६. कोल्हा खेकडा खातो. १७. मला अशी गोष्ट सांगू नका. १८. ती परमेश्वराला प्रार्थना करते. १९. दुपारी आम्ही येथे रहात नाहीं. २०. रात्री तेथे वसू नका.

आ : १. मैं मुंह-अँधेरे उठता हूँ और कसरत करता हूँ। शाम को दोस्तों के साथ खेलता हूँ। २. चरवाहे गोरू को गाँव के बाहर ले जाते हैं; ग्वाले गायों और भैंसों को दुहते हैं। ३. बछड़े तेज़ दौड़ते हैं। ४. जानवरों के चमड़े से चमार जूते

बनाते हैं। ५. हमारा रसोइया रसोईघर में रसोई तैयार करता है। ६. लोग दूध से दही जमाते हैं। ७. दूध से खोया, घी, मिठाई, बसौंधी और खीर भी बनाते हैं। ८. गीली घास नहीं जलती है। ९. गायों को सानी और खली दो; उन्हें सुबह-शाम चारा-पानी दो। १०. हमें हर इतवार को पूरी और शनिवार को आधी छुट्टी होती है। ११. एक मिनट के साठ सेकंड होते हैं; और साठ मिनटों का एक घण्टा होता है। १२. एक प्रहर के तीन घण्टे होते हैं। ऐसे आठ प्रहरों का एक दिन होता है १३. एक महीने के कितने हफ्ते होते हैं। १४. मंत्री सेनापति का स्वागत करते हैं। १५. हफ्ते के कितने दिन होते हैं? १६. उस लड़की [बच्ची] को दूध पिलाओ। १७. चकला और बेलन लो और पापड़ बनाओ [बेलो]। १८. आप हमसे ऐसे प्रश्न क्यों पूछते हैं? १९. छिः! अच्छा नहीं। २०. वाहवाह! बहुत (ही) अच्छा!

[१४] अ : १. वर्षाचे किती महिने असतात? त्यांची नावे सांगा. २ श्रावणात जाराचा पाऊस पडतो. ३. दिवाळी आश्विनात येते. ४. येथे बसून प्रश्नांची उत्तरे लिहा, असे माझे गुरुजी सांगतात, ५. तो आजारी आहे, म्हणून तो आज घरी आहे. ६. जेव्हा मजजवळ जास्त पैसे असतात, त्या वेळी मी सिनेमा पहातो. ७. आई जसे सांगते, तसे आम्ही करतो. ८. माझ्याजवळ बसून तुम्ही मला टाचणी का टोचता? ९. दूध गरम करा; पण ते उकळवू नका. १०. तो वेदना-(दुःख) सहन करतो, पण रडत नाही, ११. नदी कशी वहाते? १२. जोपर्यंत मनुष्य जिवंत असतो, तोपर्यंत तो सुखाची आशा करतो (बाळगतो). १३. तो आंब्याचा रस चोखतो. १४. जेथे फायदा होतो, तेथे लोक जातात. १५. जर तुम्ही यशस्वी होऊ इच्छिता तर काम करा. १६. काम करता करता थांबू नका. १७. मी पुस्तके वाचणाराला बक्षीस देतो. १८. जरी तो आळशी आहे (असला) तरी तो प्रामाणिक आहे. १९. मी सांगतो की हे काम आताच पूर्ण करा. (हे काम आताच पूर्ण करा, असे मी म्हणतो) २०. हे पत्र वाचून मला द्या.

आ : १ भील लोग जंगली और अनपढ़ हैं। २. फर्श साफ करते-करते उधर मत जा। ३. ज़रूरत से अधिक पूछताछ क्यों करते हो? ४. रस्सी बाँधकर पत्थर (को) ऊपर खींचो। ५. नीचे फिसलनेवाले को पकड़ो। ६. छुरी से फल काटते हैं। हँसिये से घास छीलते हैं और आरे से लकड़ियाँ चीरते हैं। ७. बिल्ली दूध का बर्तन चाटती है। ८. यह दरी महँगी है; पर ये चटाइयाँ सस्ती हैं। फिर वे ही (उन्हीं को) क्यों नहीं लेते (खरीदते)? ९. चूल्हा जलाओ और कड़ाही में तेल डालकर उसे गर्म करो. १० साबुन लाकर कपड़े धोओ। ११. उस कुली को

बुलाकर उससे कहो कि यह सामान स्टेशन तक ले जाओ। १२. प्रश्न पूछनेवाले को जवाब दो। १३. यद्यपि यह स्याही अच्छी है, तथापि वह सस्ती नहीं है। १४. दौड़ते-दौड़ते मत बोलो। १५. तुम खुद कपड़ा लाओ या मुझे पैसे दो; मैं लाता हूँ। १६. जिनके घर नौकर होते हैं, उनके काम वे नौकर करते हैं। १७. जो काम अधिक करता है वह ज्यादा नहीं बोलता। १८. जो मेरे पास होता है, वह मैं सबको देता हूँ। १९. जो बच्चे सच बोलते हैं, वे सबको प्यारे लगते हैं। २०. डॉक्टर जो दवा देते हैं, वह [उसे] तुम लो।

[१५] अभ्यास–१

[१३८] अ : कागद दररोज़ दिसणारी वस्तु [गोष्ट] आहे. आपण त्याचा उपयोग पण दररोज़ करतो. परंतु कागद कसा बनवितात, हे आपल्यापैकी किती लोकांना [किती जणांना] माहीत आहे ? प्रथम फाटके-तुटके कपडे गोळा करतात. ते यंत्रांत टाकून त्यापासून मऊ, पांढुरका गोंदीसारखा लगदा बनवितात. या लगद्यापासून कागद तयार करतात. हल्ली भारतात कागदाचे कित्येक कारखाने आहेत. या कारखान्यांत पांढरा-रंगीत, पातळ-जाड, गुळगुळीत-खरखरीत सर्व प्रकारचा कागद तयार होतो.

पुस्तके कागदावर छापतात [छापली जातात]. निरनिराळ्या तऱ्हेच्या वर्तमानपत्रांना व पत्र-पत्रिकांना [साठी] कागदाची गरज़ असते. आपल्या लिखाणाकरिता पण कागद हवा. दुकानदार साखर इत्यादि वस्तु कागदात बांधून देतो. या पुड्यांसाठी कागदाची गरज़ असते. एवढेच काय, आपल्या नोटासुद्धा कागदाच्याच बनवितात.

ब : हा पाहा, आमच्या गावचा बाजार. हा दर मंगळवारी भरतो. शहरात रोज़च बाज़ार असतो; पण आमचा गाव लहान आहे, म्हणून येथे मंगळवारी जवळच्या शहरातील कित्येक दुकानदार निरनिराळ्या प्रकारचा माल घेऊन येतात. शेकडो रुपयांची खरेदी-विक्री होते. चारी बाजूला मोठी गर्दी दिसून येते. तेव्हा इकडे दुकानांच्या रांगाच रांगा लागतात.

ही आहेत भाजी पाल्याची दुकाने. येथे सर्व प्रकारचा भाजी-पाला मिळतो. अळू, पालक, मेथी, चवळई, कोबी, मटार, वांगी, भोपळा, दूध-भोपळा, टमाटू, कोथिंबीर इत्यादीचे ढीगच्या ढीग येथे दिसतात. दुसऱ्या बाजूला पेरू, केळी, काकडी इत्यादीची दुकाने आहेत. ह्या सर्व भाज्या व फळे ताजी व स्वच्छ आहेत. ह्या बाज़ारात तांदूळ, गहू, ज्वारी, शेंगदाणे, हरभरे, मटार इत्यादि सुद्धा विकण्या-साठी व्यापारी आणतात. कुंभार मातीची व तांबट तांब्या-पितळेची भांडी विकतात.

कासार बांगड्या विकतो; हलवायाच्या दुकानात लोक पेढे, बर्फी, जिलबी, गुलाबजाम इत्यादी मिठाई खरेदी करतात. फण्या, सुई, दोरा इत्यादि किरकोळ वस्तू सुद्धा विकण्यासाठी लोक घेऊन येतात. अशा बाजारात लोक आठवडाभर आवश्यक असलेल्या वस्तू खरेदी करतात.

स : आमच्या प्रान्ताला महाराष्ट्र [असे] म्हणतात. कोकण, देश, विदर्भ [वऱ्हाड] व मराठवाडा असे आमच्या महाराष्ट्राचे लहान लहान प्रमुख विभाग आहेत. मुंबई, पुणे, नागपूर, सोलापूर, कोल्हापूर, औरंगाबाद [ही] महाराष्ट्रातील मुख्य शहरे आहेत. नासिक, पंढरपूर, पैठण [ही] येथील मोठी पवित्र ठिकाणे आहेत. येथे दरवर्षी मोठमोठ्या जत्रा भरतात. महाराष्ट्रातील लोक मराठी भाषा बोलतात. तरीसुद्धा हजारो लोक हिन्दी व इंग्रजी या भाषा जाणतात. गोदावरी, कृष्णा, भीमा इत्यादी येथील प्रसिद्ध नद्या आहेत. ह्याच्या पश्चिमेला अरबी समुद्र आहे; म्हणून ह्याच्या पश्चिम किनाऱ्यावर लहानमोठी कित्येक बन्दरे आहेत. त्यांतील मुंबई बंदर साऱ्या दुनियेत प्रसिद्ध आहे. दरवर्षी मुंबईतून कोट्यवधी रुपयांचा माल परदेशी जातो व कोट्यवधी रुपयांचे सामान परदेशातून येणाऱ्या बोटीतून मुंबईला उतरवितात. मुंबईत कापडाच्या गिरण्या आहेत; तसेच लहान-मोठे कित्येक कारखाने आहेत.

महाराष्ट्रात तांदूळ, ज्वारी, कापूस, ऊस, आंबे, संत्री आणि मोसंबी, निरनिराळ्या प्रकारच्या भाज्या उत्पन्न होतात. उसापासून साखर व गूळ बनविण्याचे कित्येक कारखानेसुद्धा येथे आहेत. खेडेगावात राहणारे लोक शेती-भाती करतात व शहरात राहणारे [लोक] नोकरी, मजूरी किंवा व्यापार करतात.

अभ्यास–२

[१४०] क : किसान–हमारे भारत की आबादी लगभग पैंतीस करोड़ है। उसमें से प्रतिशत करीब अस्सी लोग देहात में रहते हैं। हमारे देश में ऐसे गाँवों की तादाद पाँच लाख से ज़्यादा है। ये लोग खेतीबाड़ी करते हैं। ये किसान गरीब है। वे बहुत मेहनती हैं। खेत में वे तरह-तरह के काम करते हैं। ज़मीन जोतना, मिट्टी गोड़ना, बीज बोना, रोपाई करना, खेत की रखवाली करना, खेत को पानी देना या सिंचाई करना, खाद डालना आदि काम किसान समय-समय पर करता है- मौसम में वह सुबह से शाम तक खेत में मेहनत-मशक्कत करता है। किसान के घर के सभी लोग तरह-तरह के काम करते हैं। उसके बेटे खेत जोतने के काम में उसकी मदद करते हैं। कोई गोरू को चराने ले जाते हैं (तो) कोई खेत की रखवाली करते हैं। पर इन सबसे उसके सच्चे मददगार हैं उसके बैल। खेती। बाड़ी के काम में सबसे कठिन काम वे करते हैं। इसलिए किसान बैलों को अपने

प्राणों से भी अधिक प्यार करता है। वह उनकी सेवा-टहल करता है, उन्हें वह देवता मानता है। ये किसान ही हमारे लिए नाना प्रकार के अनाज पैदा करते हैं। गेहूँ, चावल, ज्वार, बाजरा, मकई आदि अनाज, रूई भाँति-भाँति की सब्जी-तरकारियाँ, फल हमारे लिए किसान ही पैदा करता है। इसलिए किसान ही हमारा सच्चा मददगार है।

[ख] दूध : चाय, कॉफी, दूध, कोको, तरह-तरह के शरबत पेय हैं। यद्यपि चाय सब जगह दिखाई देती हो, तथापि वह कोई सर्वश्रेष्ठ पेय नहीं है। चाय से कॉफी अच्छी है, कॉफी से कोको अच्छा है; पर उससे भी दूध अच्छा है। इन पेयों को बनाने में दूध की आवश्यकता होती है — सो अलाहिदा। दूध में सभी तरह के जीवन-सत्त्व (मौजूद) हैं, इसलिए वह तन्दुरुस्ती के लिए बहुत ही लाभकारी है। दूध कुछ मीठा भी होता है, इसलिए वह जायकेदार लगता है। छोटे बालकों का भरण-पोषण तो दूध से ही होता है। अत: दूध उत्तम अन्न है। दूध से कई चीजें बनाई जाती हैं। मलाई, खोया, खीर, बसौंधी जैसे पदार्थ किसे मालूम नहीं हैं? दही, छाछ, मक्खन, घी दूध से ही बनाते हैं। घी और खोये से नाना प्रकार की मिठाइयाँ बनाते हैं। ये पदार्थ किसे अच्छे नहीं लगते?

खास तौर से हमें दूध गायों और भैंसों से मिलता है। बकरी का दूध भी कुछ लोग पीते हैं। फिर भी गाय का दूध सब से अच्छा होता है। यद्यपि वह कुछ पतला होता है, तथापि वह अधिक पौष्टिक होता है। वह पाचन के लिए हलका होता है। भैंस का दूध कुछ गाढ़ा और पाचन के लिए ज़रा भारी होता है। इसलिए छोटे बच्चे को गाय का दध पिलाते हैं।

[ग] **पोस्ट-ऑफिस [डाकघर]** : हम अपने मित्र या रिश्तेदार को चिट्ठी लिखते हैं। वह चिट्ठी डाकघर के बक्स में छोड़ते हैं। ऐसे बक्स स्थान-स्थान पर दिखाई देते हैं। उधर से डाकघर का सिपाही (डाकिया) ऐसी सब चिट्ठियाँ डाकघर में ले जाता है। उधर से उन्हें भिन्न भिन्न जगह भेज देते हैं और दूसरे स्थान से डाकघर में आई हुई चिट्ठियाँ डाकिया लोगों तक पहुँचाता है। इन डाकघरों का इन्तजाम सरकार करती है। डाकघर में भिन्न-भिन्न लोग जुदा-जुदा काम करते हैं। कार्ड, लिफाफे, टिकट बेचना; तार स्वीकार करना और पहुँचाना रजिस्ट्री करना आदि काम वहाँ होते हैं। इसके अतिरिक्त हर डाकघर में बैंक भी होता है। लोग अपने पैसे उसमें रखते हैं। सरकारी डाक-विभाग उस रकम पर हमें सूद भी देता है। एक स्थान से दूसरे स्थान डाक गाड़ी, मोटर, रेलगाड़ी या विमान से भी भेज देते हैं। इसलिए दूर-दूर के स्थान पर चिट्ठियाँ जल्द पहुंचती हैं। कुछ डाकघरों में टेलिफोन भी होते हैं। उससे लोग दूर-दूर के स्थान के लोगों के साथ आसानी से व्यवहार कर सकते हैं। तार द्वारा भी जल्द

खबर भेजते हैं। डाक-विभाग इस सब काम के लिए पैसा लेता है। पर यह पैसा बहुत कम होता है। दस नए पैसे का कार्ड भारत में कहीं भी जाता है। बीस पैसे के लिफाफे में अधिक मजमून (लिखा) जा सकता है। पंद्रह पैसे में भी चिट्ठी भेजने की सुविधा है। लोग मनीऑर्डर द्वारा कहीं भी पैसे भेज देते हैं (भेज सकते हैं।)। छोटी-बड़ी वस्तुओं का पार्सल भेजते हैं। आजकल हर बड़े गाँव में डाकघर है। बड़े शहर में तो कई डाकघर होते हैं। इन चिट्ठियाँ, मनीऑर्डर आदि को डाक कहते हैं। यह डाक पहुँचानेवाले को डाकिया या पोस्टमन कहते हैं।

[१६] अ : १. आम्ही सायंकाळी पतंग उडवू. २. ती फाटक्यातुटक्या कपड्यांपासून (–ची) बाहुली बनवील (करील). ३. थंडीच्या दिवसांत (हिवाळ्यात) ती म्हातारी गोधडी पांघरून झोपेल. ४. पहिल्यांदा ढगांचा गडगडाट होईल आणि त्यानन्तर पाऊस पडेल. ५. ते काम करता-करता आम्ही नव्या-नव्या गोष्टी शिकू. ६. मी विजापूरला जाऊन गोलघुमट पाहीन. ७. संकटाच्या वेळी ते कधी माघार घेणार नाहीत. ८. जेव्हा आपण मुंबईला जाल, तेव्हा तेथून माझ्यासाठी काय आणाल ? ९. तुम्ही मला गाणे शिकवाल का ? १०. मी जे मांजर पाळीन, ते उंदीर (उंदरांना) पकडील. ११. तू तिला पत्र लिहिणार नाहीस का ? १२. आम्ही लपंडाव खेळणार नाही. १३. जेव्हा संधी मिळेल तेव्हा व्यापारी जनतेला लुटून नफा मिळवतील. १४. आज सायंकाळी आम्ही आग्रा पाहू आणि उद्या आम्ही दिल्लीला जाऊ. १५. मी दहाव्या इयत्तेत संस्कृत शिकेन. १६. त्या मैदानात आम्ही हुतुतू खेळू

आ : १. हम शत्रु के सामने सिर नहीं झुकाएँगे। २. उस कीचड में तुम गिरोगे (गिर पड़ोगे)। ३. वे उस किले पर झंडा फहराएँगे। ४. यदि शाम को बारिश होगी, तो आँगन में कीचड़ होगा। ५. वे ठीक से (सही) वजन करेंगे। ६. तुम लोगों को मत ठगो; नहीं तो लोग तुम्हें धोखा देंगे। ७. धूएँ से ये काँच धूमिल होंगे। ८. अगर तू बीमार हो जाएगा, तो कोई भी तेरी मदद नहीं करेगा। ९. मैं तालाब में कूदूंगा। १०. मधुमक्खियाँ अपने छत्ते में शहद जमा करेंगी। ११. बिजली चमकेगी और बारिश होगी। १२. तुम्हारी पुस्तक में कितने पाठ हैं ? १३. दसवाँ पाठ पढ़ो। १४. वह संन्यासी गेरुए कपड़े पहनता है। १५. जीवन में पैसा आदमी का बड़ा आधार होता है।

[१७] अ : १. दारू (हे) मादक पेय आहे; म्हणून आम्ही दारू कधी-सुद्धा पिणार नाही. अफू भांग, गांजा चरस इत्यादि इतर मादक वस्तू आहेत. आम्ही त्यांपासूनही दूर राहू. २. काँग्रेसचे मुखपत्र कोणते आहे ? ३. तो आपल्या शेजाऱ्याला बुक्का मारतो. ४. ह्या पोत्यात आपण काय ठेवाल ? ५. धावता

धावता तुम्ही पडाल व तुमचा पाय मुरगळेल. ६. ज़मिनीवर झ़ोपू नका; तेथे डांस, मुंग्या आहेत. तुम्हाला डास चावतील. ७. पावसाळ्यात लाकडाला वाळवी लागते. ८. आपण ज़रा (थोडीशी) काटकसर करा व पैसे वाच़वा. ९. वसंत ऋतूत आंब्याची झाडे मोहोरतील. १०. ह्या कामात त्याला दुसऱ्यांदा बक्षीस मिळेल. ११. तो म्हणतो की मी त्याला चौथ्यांदा पत्र लिहीन. १२. यज्ञ करून यजमान ब्राह्मणांना पैसे देतील. १३. ते मनोहर दृश्य पाहण्यासाठी मी तेथे तिसऱ्यांदा ज़ाईन. १४. ताजमहाल पाहण्यासारखा आहे. १५. ते काम पुरे केल्यावर आम्ही मांगू.

आ : १. यह रेशमी साड़ी कौन पहनेगी ? २. सूत कातने के लिए मुझे एक चरखा दो। ३. सिल-बट्टा, खरल-लोढ़ा, चम्मच, करछुलियाँ गिरस्थी में ज़रूरी चीज़ें हैं। ४. मैं यह बात उसे तीसरी बार नहीं कहूँगा। ५. गुरुजी लड़कों की कापियाँ जाँचने के लिए इधर आएँगे। ६. हमारा रसोइया भी पापड़ बेलेगा। ७. सरकार की खुफिया पुलिस (के कर्मचारी) चोरों की खबर जान लेगी (लेंगे)। ८. कश्मीर की घाटी उपजाऊ है। ९. कक्षा में प्रथम आने के कारण [उपलक्ष्य में] मुख्याध्यापक उसे दो पुरस्कार देंगे। १०. इधर गन्दगी मत करो; सब कूड़ा-करकट कूड़ाखाने में डालो (फेंक दो)। ११. हम इस कम्पनी का आँवला तेल काम में लाते हैं। १२. नौकरानी गेहूँ पीसेगी। १३. वे मनोविज्ञान का अध्ययन करेंगे। १४. मसाला कूटने के लिए खरल लाओ। १५. हमें देने के लिए वह बड़े तलेगी। १६. आज भी कई लोग धोती पहनते हैं, टोपी पहनते हैं। पाजामा पहनना उन्हें पसन्द नहीं आता।

[१८] अ : १. पोपटाने त्या झ़ाडाच्या ढोलीत घरटे बनवले. २. त्या झ़ाडावर च़ढून फळे व फुले काढली. ३. आमच्या माळ्याने कुंड्यात गुलाबाची रोपे लाविली. ४. आंघोळ करण्याच्या वेळी अंगाला साबण लावा आणि च़ोळून च़ोळून हात-पाय धुवा. ५. त्या खोडकर मुलाने फुलझाडांची रोपे उपटली. ६. टेबलावर फुलदाणीत पुष्पगुच्छ होता. ती फुलदाणी कोणी (खाली) पाडली ? ७. ती फुलाचा वास घेते (फूल हुंगते). ८. त्याने अंगण सारवून स्वच्छ केले. ९. तुम्ही त्या झ़ाडावर च़ढून तेथे फांदीवर का बसला ? १०. मी फुले घेऊन माळ केली. ११. याची पाळे कोणी उपटली ? १२. बागेत येऊन फुलपाखरे लहान फांद्या व डहाळ्यांवर बसली. १३. नोकरांनी जहाज़ात सामान च़ढविले. १४. तुमचे काम केव्हा सुरू झ़ाले ? १५. ती तीन वेळा परीक्षेत नापास झ़ाली. ती या वेळी वेळी सुद्धा पास झ़ाली नाही का ?

आ : १. मेरी परीक्षा पिछले हफ्ते में खत्म हुई। आज परीक्षा-फल मालूम हुआ। मैं उत्तीर्ण हुआ। मुझे अच्छे अंक प्राप्त हुए। २. चूहे ने घर में बिल बनाया।

३. तुमने हमारी चुगली क्यों की? हम तुम्हें चुगलखोर कहेंगे। ४. उन स्त्रियों ने रेशों से रस्सियाँ बनाईं और बेचीं; उन्हें इस व्यवहार में बहुत पैसा मिला। ५. उसने नारियल की नरेली हथौड़े से तोड़ी। ६. उस गरीब आदमी ने अपना घर और खेत गिरवी रखा और साहूकार से एक हज़ार रुपये कर्ज़ लिया। ७. कल बारिश हुई; आँगन में बहुत कीचड़ हुआ। उधर दौड़ते-दौड़ते मेरे बेटे का पैर फिसला (फिसल गया)। ८. दिन ढला (ढल गया), अब बन में से गोरू घर वापस आएँगे। ९. उन फलों की गरी ज़ायकेदार थी। १०. मैंने यह पाठ दस बार पढ़ा। तुमने कितनी बार पढ़ा?

[१९] अ : १. त्या छापखान्यात माझे पुस्तक छापले जात आहे (छापत आहे). २. वर्तमानपत्र घेऊन ती सिनेमाच्या जाहिराती वाचीत आहे. ३. जेव्हा मी कोर्टात पोहोचलो, तेव्हा न्यायाधीश निकाल सांगत होते. ४. ज्या साक्षीदाराला वकिलाने बोलाविले, तो खोटी साक्ष देत होता. ५. बातमीदार बातमी तयार करीत होता. ६. अपराध्याला (गुन्हेगाराला) सहा वर्षांची कैद झाली. तो तुरुंगात शिक्षा भोगत असेल. ७. या वेळी परिषदेत अध्यक्ष बक्षिसे जाहीर करीत असतील. ८. आपल्या शेजाऱ्याचा खून करून खुनी काळोख्या रात्री पळून जात होता. ९. माझ्या बहिणीला कावीळ झाली. तिला डॉक्टरने चांगले औषध दिले. १०. न्यायाधीशाने गुन्हेगाराला फाशीची शिक्षा दिली. ११. त्याला किती दंड झाला, हे मला माहीत नाही.

आ : १. जुकाम, खाँसी, सिर-दर्द मामूली बीमारियाँ हैं; पर यदि हम समय पर दवा न लें, तो उनसे हमें ज़्यादा तकलीफ होती है। २. चेचक, हैज़ा और प्लेग भीषण संक्रामक बीमारियाँ हैं; पर अब उनके (लिए) भी शर्तिया इलाज मालूम हैं। ३. वे डाक्टर मरीज़ को टीका लगा रहे थे। ४. टाइफाइड मीयादी बुखार है। ५. वह घूँट-घूँट दूध पी रहा था। ६. मरीज़ को लोग अस्पताल पहुँचा रहे थे। ७. यात्री गंगा के घाट पर जा रहे होंगे। ८. कल इस वक्त यह बालक रो रहा था। ९. यहाँ बैठकर तुम क्या कर रहे हो? १०. रसोइया क्या पका रहा है? ११. धोबी कपड़े धो रहा होगा। १२. रेडियो पर कौन गा रहा है? १३. चींटियाँ कतार में चल रही हैं। १४. यह बच्चा रेंग रहा है। १५. दौड़ते-दौड़ते वह पीछे देख रही है।

[२०] अ : १. शत्रूने या देशाच्या किल्ल्यावर हल्ला केला आहे व राजधानीला वेढा घातला आहे. २. सेनापतीने सैनिकांना गोळा केले आहे; आता त्यांची शत्रूशी चकमक उडेल (होईल). दोन्ही दळांत घनघोर लढाई होईल. ३.

घोडेस्वार उत्साहाने पुढे गेले आहेत. जय कोणाचा होईल व कोण हरेल, हे तुम्ही सांगू शकाल काय ? ४. शूर लोक लढाईत मागे सरणार नाहीत; ते शत्रूला शरण पण जाणार नाहीत. ५. मुंबई नगरपालिकेच्या कामगारांनी संप केला आहे. त्यात सुमारे तीस हजार कामगारांनी भाग घेतला आहे. ६. काही वर्षांपूर्वी सरकारी चपराश्यां (शिपायां) नी सुद्धा संप केला होता; ते आपल्या हक्कांचे रक्षण करू इच्छित होते. परंतु सरकारने त्यांना त्या वेळी नोकरीवरून काढून टाकले होते. संपवाल्यात जर ऐक्य (एकी) न राहील (टिकेल), तर संपाची योजना करण्याने काहीच फायदा होणार नाही.

आ : १. दूसरे महासमर के बाद महँगी बहुत बढ़ी (बढ़ गई) है। अब पहले जैसी सस्ती कभी भी नहीं होगी। लोगों की मदद करने के लिए सरकार अपने सब नौकरों को महँगाई भत्ता दे रही है। लोगों का कहना है कि यह भत्ता कम है, अतः ज्यादा भत्ता दो। २. समुद्र में भीषण तूफान हुआ था। उस वक्त हमारे जहाज़ में करीब पचीस यात्री थे। खलासी अनुभवी और साहसी थे। पर तूफान का सामना वे कैसे करेंगे ? ३. जहाज के पाल फटे (हुए) थे। मस्तूल टूट गया था। डांड़ और पतवार थे, पर उनका कोई उपयोग नहीं हो रहा था। ४. पुलिस ने हड़ताल करनेवाले लोगों के नेताओं को गिरफ्तार किया है। ५. वे उस चट्टान पर बैठे होंगे। ६. सलाहकारों ने उचित सलाह दी होगी। ७. हमें नौकरी में तरक्की मिली है। ८. हम उस परिच्छेद का सार लिख रहे हैं। ९. हमारी सरकार ने पंचवर्षीय योजना बनाई है। ऐसी योजना रूसी सरकार ने भी बनाई थी। १०. जर्मनी की पनडुब्बियों ने अँग्रेज़ों के ज़हाज़ों को खदेड़ दिया था। ११. वह उस थैली में थोड़े-से चावल ले आया था। उसने अपनी पगड़ी फाड़कर वह थैली बनाई थी।

[२१] अ : १. साडे चार वाजता मला येथून ज़ावयास पाहिजे. २. ज़र आपण त्याला अगोदर बोलाविले असते तर तो अवश्य येता. ३. मी आपले पुस्तक घेऊ का ? ४. ईश्वर आम्हाला शक्तिशाली बनवो (करो) ! ५. आपल्याला ज़र आरोग्य चांगले ठेवायचे असेल, तर (आपण) रोज़ सकाळी उठून व्यायाम-शाळेत जावे आणि नियमानुसार भरपूर व्यायाम करावा. ६. आपल्या रोज़च्या खर्चांचे विवरण रोज़निशीत लिहावे. ७. गुरुजनांशी नम्रपणाने बोलावे. ८. आपल्या देशाचे कायदे आपण मोडू नये. ९. त्याने तुम्हाला मदत केली आहे. त्याचे आभार माना. १०. आपण पुष्कळ वाचावे, पण पुस्तकी किडे बनू नये.

आ : १. यदि वह हमें गाली-गलौज करता, तो हम उसे पीटते। २. अगर वह समय पर न आता, तो उसका एक हज़ार रुपये का नुकसान होता। ३. हम अपना कर्तव्य करते में टालमटोल न करें। ४. हमें परती ज़मीन में भी खेतीवाड़ी करनी

चाहिए। ५. वह अक्लमन्द है। उसकी समझ में यह बात आसानी से आएगी। ६. गुरुजनों का मज़ाक न करें। ७. क्या हम आपके खिलाफ शिकायत करें ? ८. कोई भी घमण्ड न करें। ९. हमें जो मालूम हो, वह दूसरे को सिखाएँ। १०. कभी किसी की भी निन्दा न करें; कभी झूठ न बोलें और किसी के साथ अन्याय न करें। ११. इस कागज़ पर दस्तखत करने के पहले उसे एक बार पढ़। १२. तू चाहे सो (जो) कर; पर गुरुजनों की बुराई मत कर। १३. इस घटना का उन्होंने बिलकुल हूबहू वर्णन किया है। १४. यह क्लर्क अगर ईमानदार न होता, तो हम उसे नौकरी से जवाब देते; क्योंकि यद्यपि वह ईमानदार है, तो भी वह बहुत आलसी है। १५ आलस आदमी को निकम्मा बनाता है, इसलिए उसे हर कोई अपने से दूर रखे।

[२२] अ : १. जर माझी गोष्ट (माझे म्हणणे) ऐकाल (मानाल), तर मी तुम्हाला त्यांच्याकडून अधिक मजूरी देवबीन. २. लाकूडतोड्या जंगलात ज़ाऊन लाकडे तोडतो आणि बाज़ारात पाठवून विकतो. ३. (जर) मांजराला जास्त खाऊ घालाल तर ते उंदीर कसे पकडील ? ४. त्या कृपणाने कंगाल लोकांना बोलावून दान द्यावयाचे ठरविले होते. त्याची ही गोष्ट (त्याचे हे करणे) आम्हाला कोड्यासारखीच् वाटली. ५. आई मुलाला पाळण्यात ठेवून (घालून) झोपवीत होती व अंगाई-गीत गात होती. ६. हल्ली कित्येक लोक शब्द-कोडी सोडविण्यात पुष्कळ वेळ खर्च करतात. ७. अस्पृश्य लोकांचे मागणे त्या ब्राह्मणांनी मान्य केले नाही व विहिरीचे पाणी काढू देण्याला परवानगी देण्याचे नाकारले. ८. जेव्हा आम्ही सभागृहाजवळ पोहोचलो, तेव्हा सभेचे काम अध्यक्षांनी स्थगित ठेवले आहे, असे आम्हाला समज़ले (कळले). ९. जेव्हा त्याला अधिक खर्च करावा लागला, तेव्हा त्याचे डोळे उघडले. १०. आपल्या परीक्षेचा निकाल पाहून त्याची कळी खुलली.

आ : १. यह काम पूर्ण करने के लिए तैयार हो जाओ। २. मैं आज ही हिन्दी सीखने का श्रीगणेश करनेवाला हूँ। ३. मेरी आँख ज़रा लगी ही थी कि वह मुझे उठाने लगा। ४. मुझे बाज़ार से छाते ला दो। ५. (यदि) पानी गन्दा हो, तो छानकर पिएँ। ६. उन दोनों बहरे आदमियों की बातचीत सुनकर मैं हँसने लगा। ७. विदूषक खुद हँसता नहीं, पर दूसरों को हँसाता है। ८. गोरू को पानी पिलाने के बाद उन्हें चरने के लिए छोड़ो। ९. वह चरवाहा बछड़ों को भी दौड़ाता रहा। १०. मालिक, इस गरीब सेवक की इस तुच्छ भेंट को स्वीकार कीजिए। ११. वह उतावला आदमी गुस्से से बर्तन पटकने लगा। इसलिए उनमें से पानी चूने लगा है। १२. वे साल-भर खेलते रहे। अब अनुत्तीर्ण होने पर उनकी आँखें खुलेंगी। १३. इधर चोर घर में घुसे (हुए) थे। फिर भी वह खुर्राटे भरता लेटा

हुआ था। १४. उसका भाई बिलकुल गोबर-गणेश है। वह किसी भी काम में सफल नहीं होगा। १५. यह संसार पानी के बुदबुदे के समान है। यह बुदबुदा कब फूटेगा. कौन कहे ?

[२३] अ : १. काही लोक आपल्या मुलांचे फारच् अधिक लाड करतात. ते त्यांचे प्रत्येक मागणे पुरे करीत राहतात. त्यामुळे ती मुले हट्ट करू लागतात. ती आई-बापाच्या डोक्यावर बसतात. २. ती गांवढळ स्त्री आपल्या आजारी मुलाला काही औषध देत नाही; त्याला कोणाची तरी दृष्ट लागली आहे, म्हणून तो आजारी पडला आहे, असे तिला वाटते. तो चांगला (बरा) व्हावा, म्हणून ती देवाला नवस करते, पूजा-पाठ करविते. ३. लहानपणी आम्ही आमच्या गावच्या तलावात रोज़ पोहावयास जात असू. त्या तलावाच्या किनाऱ्यावर वडाचे एक झाड होते. त्याची एक फांदी तलावाच्या पाण्यावर लोंबकळत होती, त्या फांदीवर चढून खाली तलावात उडी मारावयास आम्हाला फार गंमत वाटत असे. आमचे आई-वडील आम्हाला कधी अडवीत नसत. ४. जर या वर्षी पास होऊ शकले नाही, तर मी परीक्षेची (परीक्षेसाठी) पुन: तयारी करीन. जोपर्यंत मी परीक्षेत पास होणार नाही, तोपर्यंत मी परीक्षेला बसत राहीन. ५. मी केलेले कोणतेहि काम माझ्या काकांना का पसंत पडत नाही, (हे मला) माहीत (कळत) नाही. त्यांनी सांगितलेली प्रत्येक गोष्ट मी ऐकतो (मानतो), त्यांनी सांगितलेल्या नियमाप्रमाणे मी काम करीत असतो (राहतो), तरीसुद्धा ते कधी माझ्यावर प्रसन्न झालेले दिसत नाहीत.

आ : १. उसकी लिखावट इतनी खराब है कि खुद का लिखा हुआ भी वह पढ़ नहीं सकता। २. रास्ते में यह रुपया पड़ा हुआ था। इतने लोग उधर से गए, पर किसी को भी वह दिखाई नहीं दिया। यह देखकर हमें अचरज होता है। ३. इस साल वह परीक्षा में बैठनेवाली थी। पर परीक्षा-मंत्री ने उसका आवेदन-पत्र स्वीकार नहीं किया। ४. कहते हैं (कि) दरिद्रता और मृत्यु में से मृत्यु को स्वीकार करें; क्योंकि दरिद्रता की यातनाएँ हरदम होती रहती हैं; पर मौत की पीड़ा एक बार ही होती है। ऐसा होने पर भी बहादुर (लोग) कोशिश करते हैं। वे दरिद्रता से नहीं डरते। ५. उनकी मौत से संस्था को पहुँची हुई हानि बहुत बड़ी है। ६. यदि हम कहे मुताबिक काम न करें, तो लोग हमारे मुँह पर थूकेंगे। ७. मैं जो कहता हूँ, उसपर ध्यान दो; यदि तुम ध्यान न दोगे, तो तुम्हारी ही हानि होगी। ८. अपनी बहन की ससुराल की खबर उसने सुनी; उसका मन बहुत भावुक है, इसलिए उसे सुनकर वह एकदम रो पड़ा। ९. पहरेदार एकदम चिल्ला उठा - पीछे हट जाओ। कुछ लोग पीछे हट गए; जो पीछे नहीं हटे, उन्हें पहरेदारों ने (पीछे) हटा दिया। १०. उसकी कही (हुई) हर बात सच्ची मत समझो। ११. उस गद्दी पर बैठा

हुआ वह गृहस्थ (सज्जन) कौन है ? १२. उसे बोलते-बोलते हँस देने की बुरी आदत है।

[२४] अ : १. त्याचा खून केला गेला आणि प्रेत (मुडदा) एका निर्जन जागी ठेवला गेला. २. टीकाकारांकडून त्याच्या नव्या पुस्तकाची प्रशंसा केली गेली आहे. ३. जेव्हा दोन हज़ार रुपये हुंडा मागितला गेला, तेव्हा या वर्षी मुलीचे लग्न करू नये (केले जाऊ नये) असे त्याने ठरविले. ४. उत्तरपुस्तिकेत लिहिताना समास सोडला जावा, अशी सूचना सर्व विद्यार्थ्यांना दिली गेली आहे. ५. मला काल रात्री वाईट स्वप्न पडले. ६. उंच बांध्याचा तो मनुष्य मालक आहे व मध्यम बांध्याचा त्याचा नोकर आहे. ७. दुष्काळाच्या दिवसात (काळात) लोकांना मदद करण्यासाठी हज़ारो रुपये खर्च केले होते. ८. आकाशात वर्तुळाकार फिरता-फिरता घारीला जेव्हा ज़मिनीवर साप दिसला, तेव्हा ती एकदम खाली आली, तिने झडप मारून सापाला पकडले आणि ती बाभळीच्या झाडावर जाऊन बसली. ९. गिधाड सडलेले मास खाते. १०. ही मोत्ये उत्कृष्ट जातीची आहेत.

आ : १. (यदि) दूध में नमक छोड़ा जाए, तो वह दूध फट जाता है। २. रात को बारह बजे तक वह अपने बेटे का इन्तजार करती रही। वह अभी तक नहीं आया, यह देखकर वह स्वयं पूछताछ करने के लिए बाहर गई। ३. उस नगर का वैभव अन्त में मिट्टी में मिल गया। ४. देख क्या रहे हो ? इतना अन्याय तुम क्यों बरदाश्त कर रहे हो ? तुमने क्या चूड़ियाँ पहन रक्खी हैं ? ५. १९२० में लोकमान्य तिलक का स्वर्गवास हुआ। ६. पेच निकालने के लिए पेचकश ले आओ। ७. नगर के मतदाताओं की सूची बनाई जा रही है। ८. समुद्र के ज्वार-भाटे का ख्याल करके मछलियों को पकड़ने के लिए मछुए नावें ले जाते हैं। ९. नेवला साँप को मार डालकर खाता है। १०. कपड़े सूखने के लिए धूप में रखो। ११. मेरा भानजा बड़ा अभागा है। क्योंकि इतना पढ़ने पर भी उसे नौकरी नहीं मिली। १२. पेशगी स्वीकृति नहीं दी जाएगी और तुझे पुरस्कार भी नहीं मिलेगा। काम करना न हो, तो तू चला जा। १३. अन्धा लाठी लेकर टटोलते-टटोलते चल रहा था। १४. बदहजमी से कई बीमारियाँ पैदा होती हैं। १५. हाथी-दाँत की (बनी) वस्तुएँ बहुत मूल्यवान् होती हैं। १६. मतदाता आ रहे थे; उनको मतपत्रिकाएँ दी जा रही थीं। १७. मतदान के समय प्रचार नहीं किया जा रहा था। सब जगह अच्छी व्यवस्था की गयी थी।

[३०]　　　　　अभ्यास–२ [अ]

[१] दोन शतकांपेक्षा अधिक वर्षे होऊन गेली आहेत. पण आजसुद्धा चिन्तादेवीचे नाव बुन्देल-खण्डात ऐकू येत आहे. बुन्देल-खण्डातील एका बिकट जागी आजसुद्धा मंगळवारी हज़ारो स्त्री-पुरुष चिन्तादेवीची पूजा करावयास येत असतात. त्या दिवशी ही निर्जन जागा गोड गाण्यांनी दुमदुमून ज़ाते. लहान-मोठ्या टेकड्या व जागा रमणींच्या रंगी-बेरंगी वस्त्रांनी शोभायमान होतात. देवीचे देऊळ एका बऱ्याच् उंच टेकडीवर बांधलेले आहे. त्याच्या कळसावर फडकत असलेली लाल ध्वजा (पताका) खूप दूरवरून दिसून येत असते. आत मोठ्या अडचणी-नेच् एकदम दोन माणसे उभी राहू शकतील, इतके (ते) देऊळ लहान आहे. आत कोणतीही मूर्ती नाही, फक्त एक लहान-सा ओटा बांधलेला आहे. खाल-पासून देवळापर्यन्त एक दगडी जिना आहे. गर्दीत धक्का लागून कोणी खाली पडू नये, म्हणून जिन्याची भिंत दोन्ही बाजूला वाढवलेली आहे. येथेच चिन्तादेवी सती गेली होती. पण लोकरिवाजाप्रमाणे ती आपल्या मृत पतीबरोबर चितेवर बसली नव्हती. तिचा पति हात जोडून त्या वेळी समोर उभा होता. परन्तु ती त्याच्याकडे डोळे वर करून सुद्धा पहात नव्हती. ती पतीबरोबर नव्हे, त्याच्या आत्म्या-बरोबर सती गेली होती. त्या चितेवर पतीचा देह नव्हता, त्याची प्रतिष्ठा भस्म होत होती.

[२] यमुना नदीच्या किनारी कालपी नावाचे एक लहानसे शहर आहे. चिन्ता (ही) त्याच् शहरातील एका वीर बुन्देल्याची मुलगी होती. तिची आई तिच्या (चिन्तेच्या) बालपणीच् परलोकवासी झाली होती. (म्हणून) तिच्या पालन-पोषणाचा भार (तिच्या) बापावरच् पडला. तो काळ युद्धाचा होता. योद्ध्यांना हत्यार खाली ठेवायलासुद्धा फ़ुरसत मिळत नसे; ते घोड्याच्या पाठी-वरच् भोजन करीत आणि जिनावरच् डुलकी घेत असत. चिन्तेचे बालपण बापा-बरोबर युद्धभूमीतच गेले. तिला एकाद्या गुहेत किंवा झाडाआड लपवून ठेवून बाप (युद्धाच्या) मैदानात जाई. चिन्ता निर्धास्त मनाने बसून मातीचे किल्ले तयार करी व मोडून टाकी. तिच्याजवळ घरकुले नव्हती, तिच्या बाहुल्या ओढणी वापरीत नसत. ती शिपायांचे बाहुले बनवी व ते युद्ध-क्षेत्रात उभे करीत असे. कधी-कधी संध्याकाळीसुद्धा तिचा बाप परत येत नसे; पण चिन्तेला भीतीचा स्पर्शही झालेला नव्हता (भीति कशी ती तिला माहीतच् नव्हती). (त्या) निर्जन जागी भुकेलेल्या-तान्हेलेल्या स्थितीत ती रात्रभर बसून राही. तिने मुंगसांच्या, कोल्ह्यांच्या गोष्टी कधी ऐकल्या नव्हत्या. शूरांच्या आत्मार्पणाच्या गोष्टी आणि त्यासुद्धा योद्ध्यांच्या तोंडून ऐकून-ऐकून ती आदर्शाची पुजारीण बनली होती.

[३] एकदा भगवान बुद्धांचा (कोणी) एक प्रचारक फिरत होता. त्याला एक भिकारी भेटला. तो प्रचारक त्याला धर्मोपदेश करू लागला. (परंतु) त्या भिकाऱ्याने त्याकडे लक्ष दिले नाही. त्यात (उपदेश ऐकण्याकडे) त्याचे मन (लक्ष) नाही. हे पाहून प्रचारक नाराज झाला. (नन्तर) बुद्धाजवळ जाऊन तो म्हणाला, 'तिकडे एक भिकारी बसला आहे. मी त्याला इतकी चांगली शिकवण देत होतो, पण ती तो ऐकतच नाही.' तेव्हा बुद्ध म्हणाले, — 'त्याला माझ्याकडे आण (घेऊन ये). (तेव्हा) तो प्रचारक त्याला बुद्धाजवळ घेऊन गेला. भगवान बुद्धांनी त्याची स्थिति पाहिली. हा भिकारी तीन-चार दिवसांचा भुकेलेला (उपाशी) आहे, हे त्यांनी ताडले. त्याला पोटभर खाऊ घातले व सांगितले — 'जा आता'! हे पाहून (त्या) प्रचारकाला अचंबा वाटला. तो म्हणाला, – 'आपण त्याला खाऊ तर घातले, पण उपदेश मात्र काहीच केला नाही.' (यावर) भगवान बुद्ध त्याला म्हणाले, – 'आज त्याला अन्न हाच उपदेश होता. आज त्याला अन्नाचीच सगळ्यात जास्त गरज होती. ते त्याला पहिल्यांदा द्यावयाला पाहिजे, म्हणून मी (ते) त्याला देऊन टाकले. जर तो जिवन्त राहिला तर उद्या (उपदेश) ऐकेल.'

[४] एकदा एका सद्‌गृहस्थाने आपल्या नोकराला (असे) सांगितले की जर तू सकाळी दोन कावळे एका जागी (जवळ-जवळ) बसलेले पाहिलेस तर मला ते कळव. कारण ही गोष्ट शुभ शकुन आहे (मानली जाते), व त्यामुळे सर्व दिवस चांगला जातो. मालकाचे सांगणे नोकराने चांगले ध्यानात ठेवले. एक दिवस दोन कावळे त्याने एका ठिकाणी जवळ-जवळ बसलेले पाहिले व धावत-धावत मालकाजवळ जाऊन त्याला ती गोष्ट सांगितली. ही गोष्ट (बातमी) समजताच मालक सुद्धा धावत पळत तेथे येऊन पोहोचला. परंतु त्याला त्या जागी एकच कावळा दिसला. कारण एवढ्यात (दरम्यान) दुसरा उडून गेला होता. (त्यामुळे) तो फार रागावला. नोकराने आपली गम्मत (थट्टा) केली आहे, असे त्याला वाटले. (म्हणून) तो नोकराला मारू लागला. थोड्या वेळानंतर उत्कृष्ट मिठाईचे एक ताट घेऊन एक मनुष्य तेथे आला. ते ताट त्याच्या पुढे ठेवून तो मनुष्य म्हणाला, 'महाराज, आपले मित्र विमलराय यांनी हे आपल्याला भेट म्हणून पाठवले आहे. त्याचा स्वीकार करा.' हे पाहून नोकर म्हणाला, 'मालक, आपण फक्त एकच कावळा पाहिला होता, ह्याचे फळ म्हणून आपल्याला ही भेट मिळाली. जर आपण दोन कावळे पाहिले असते, तर माझ्याप्रमाणे आपल्यालाही मोठा मार मिळाला असता.'

[५] कचेरीत काम करणारा कारकून (नोकर) जणू काही कोणी मुका प्राणीच असतो. मजूराकडे रागाने पाहा, तो रागावून (काम टाकून) उभा

राहील. हमालाला धमकी द्या, तो डोक्यावरून ओझे फेकून देऊन आपली वाट धरील. एखाद्या भिकाऱ्याला धुडकवाल, तर तो रागाने तुमच्याकडे पाहात चालता होईल एवढेच काय, तर गाढवसुद्धा कधी-कधी त्रास झाल्यावर दुगाण्या झाडू लागते. परंतु कचेरीतल्या कारकुनाकडे आपण हवे तर रागाने पाहा, धमकावा, धुडकावून लावा किंवा लाथा मारा, त्याच्या कपाळावर आठी उमटणार नाही. त्याचा आपल्या मनावर इतका ताबा असतो की इतका संयम कदाचित कोणी संन्याशीही करू शकणार नाही. तो (कारकून जणू काही) समाधानाचा पुतळाच असतो, धैर्याची मूर्ती असतो; तो खरा आज्ञाधारक असतो. त्याच्यात मानव-प्राण्यातील सर्व चांगल्या गोष्टी अस्तित्वात असतात. निर्जन स्थानाचे सुद्धा कधी काळी भाग्य उदयाला येते. दिवाळीच्या दिवशी तेथे सुद्धा रोषणाई होते. पावसाळ्यात त्यावर हिरवळ पसरते. निसर्गाच्या खुषीत ते सुद्धा सामील होते. परंतु या गरीब कारकुनाचे भाग्य कधीही उदयास येत नाही. त्याच्या काळोख्या नशिबात प्रकाश कधीही दिसत नाही. त्याच्या फिकट चेहऱ्यावर स्मितहास्याची चमक कधी दृष्टीला पडत नाही – ह्याच्या जीवनात सदासर्वदा निराशा, प्रेतकळा पसरलेली असते; उल्हासाचे काही चिन्ह कोठेही दिसून येत नाही.

अभ्यास – २ [आ]

[१] बहुत साल पहले की बात है। अवन्ती नगरी में एक राजा राज कर रहा था। सब लोग कहते थे कि वह कर्ण के समान उदार, दान-वीर है। वह राजा प्रतिवर्ष भिन्न-भिन्न व्रत रखा करता और तरह-तरह से दान दिया करता, इसी राजा ने ब्राह्मणों को दान देने का व्रत रखा। उसने यह तय किया कि सुबह जिस ब्राह्मण का मुखदर्शन होगा, उसे सूप-भर मोती दें। बात-की-बात में यह खबर राज्य-भर में फैल गई और स्थान-स्थान के ब्राह्मण दान पाने के हेतु आने लगे।

[२] अवन्ती नगरी में यत्नकान्त नामक कोई ब्राह्मण रहता था। वह बहुत बड़ा विद्वान, मेहनती, ईमानदार था। उसकी रहन-सहन सादी थी। पूजा-पाठ करके वह गिरस्ती चलाता। राजा के दान के बारे में उसने भी सुना था; पर राजा के यहाँ जाने की उसने कभी नहीं सोची। यत्नकान्त की पत्नी को लगता – मेरे पति राजा के यहाँ जाएँ, सूप-भर मोती लाएँ; उससे हमारी दरिद्रता नष्ट होगी; बच्चों-बालों की दुरवस्था नहीं होगी। रोज़ वह यत्नकान्त से कहा करती – एक दफा राजा के पास जाइए। अन्त में पत्नी के संतोष के लिए वह राजा के पास जाने के लिए तैयार हुआ।

[३] दुपहर से गर्मी बढ़ती ही जा रही थी। अब तो आसमान बादलों से व्याप्त हो गया। सूरज छिप गया और सभी ओर उदासीनता फैल गई। फिर भी एक के बाद एक लड़कियाँ भाषण दे ही रही थीं, उनका भाषण रुकता नहीं था। किसी ने कहा – दीदी विषय बहुत सुलझाकर पढ़ाती हैं। दूसरी ने कहा – दीदी स्वयं रसोई बनाती हैं, इसलिए मैं भी घर पर रसोई बनाने लगी; हमें दीदी बहुत प्यारी लगती हैं, सो हम उनके लिए फूल और गजरे लाती हैं। तीसरी ने कहा कि अन्य कक्षाओं की लड़कियों को हमसे ईर्ष्या है। हम तो दीदीजी को ' अहिल्यादेवी ' ही कहनेवाली थीं, पर उन्हें यह पसन्द नहीं आएगा। वे इतनी सीधी हैं – यह चौथी ने कहा। अन्त में शेवन्ती बोलने के लिए खड़ी हुई। वह बोली, ' मैं तो अनाथ छोटी बच्ची (ठहरी)। दीदीजी ने माँ की तरह मेरा पालपोस किया, क्या बोलूं और क्या दूं – मुझे वही नहीं सुझाई दे रहा है। मुझे तो दुःख हो रहा ही है, पर देखो – दीदी जा रही हैं, इसलिए सूरज, हवा और मेह को भी दुःख हो रहा है।

[४] एक बार एक ब्राह्मण किसी ज़मींदार के यहाँ गया। उसने (उस) ज़मींदार की बहुत प्रशंसा की। उससे दर्शन-शास्त्र पर चर्चा की। वह बोला, ' संसार नश्वर है। जो आज है वह कल रहेगा ही, सो बात नहीं है। इसलिए मनुष्य पुण्य-कर्म करे। (हम) व्यर्थ संचय न करें। इस अनित्य संसार में संयोग से हम एकत्र आए हैं। हम भगवान की सन्तानें हैं। सो यह समझ लें कि हम सब भाई-भाई हैं। अनन्तर वह कुछ समय रुक गया। उसने यह देखा कि ज़मींदार पर अपने उपदेश का क्या प्रभाव हुआ है। उसे लगा – यह सज्जन गम्भीर हुआ है, अतः मेरी बात उसे जँची होगी। फिर उसने कहा, ' महाराज ' अपनी मिलकियत में से कुछ अंश मुझे दीजिए। क्षण-भर के लिए ज़मींदार ने सोच लिया। मुनीम को बुलाकर उसने कहा कि इन्हें एक पैसा दो। यह देखकर ब्राह्मण को अचरज हुआ। वह बोला – क्या ? मेरा हिस्सा इतना ही है ? तिस पर ज़मींदार ने शान्ति के साथ कहा – यह देखो, दुनिया के सारे लोग मेरे भाई हैं। मेरी जायदाद में से हर एक को उसका हिस्सा देना है। यह हिस्सा पाई से भी छोटा होगा। फिर भी तुम्हें तुम्हारे सही हिस्से की अपेक्षा अधिक ही दिया है। खैर ! यह पाई भी नश्वर ही है। नाहक संचय काहे को कर रहे हो ?

यह सुनकर ब्राह्मण लज्जित हुआ और चल दिया।

[५] उस राजा ने दौलतमन्त सौदागर का स्वाँग बनाया और सेनापति उसका नौकर बना। इस तरह राजा और सेनापति वसुमती नगरी के सीमान्त तक आ पहुँचे। राजा ने कहा – ' कितने बेफिक्र लोग हैं ये। सीमान्त की रक्षा करने के

लिए यहाँ एक भी सैनिक नहीं है।' सेनापति बोला – 'इन लोगों को शत्रु से कोई भय नहीं लगता। यह आप ही देखिए कि ये लोग कितने निर्भय हैं। देखिए वह गायों को चरानेवाला छोकरा। आप उसी की परीक्षा कर लीजिए।'

राजा ने कहा – ठीक है। एक से सबकी परख होगी। उसके बाद राजा ने चरवाहे को इशारा किया। गायों को एक तरफ हाँककर वह लड़का राजा के पास आया। उसने अपनी बाँसुरी बगल में दबाकर रखी और मुस्कराते हुए प्रणाम करते हुए वह बोला – अतिथि किस स्थान से आ रहे हैं? आप थके-माँदे लगते हैं। लगता है, चलने की आदत नहीं है।

उसकी ओर नज़र गड़ाकर राजा बोला – क्यों बे छोकरे! तेरा क्या नाम है? किसकी नौकरी कर रहा है? तुझे क्या मिलता है?

लड़का बोला – मेरा नाम है हलधर। मैं इस गाँव की गायों को चराता हूँ। गाँव के काम को अपना ही काम समझता हूँ। उसके लिए पैसे क्यों कर लिए जाएँ?

यह सुनकर राजा अवाक हो गया।

[६] सौराष्ट्र में गिरनार नामक बड़ा पहाड़ है। उसकी तलहटी में जूनागढ़ नामक बड़ा शहर है। पुराने ज़माने में यह शहर बड़े राज्य की राजधानी था। करीब पाँच सौ साल पहले इस नगर में नरसी महेता नामक बड़े भक्त और सन्त हो गए। वे अति उच्च नागर जाति में पैदा हुए। फिर भी वे हमेशा भगवान का भजन करते थे। उसी (धुन) में वे ऐसा जातिभेद भूल गए। वे उन्हीं लोगों में रहते और घूमते-घामते जो भगवान की भजन-भक्ति करते। वे स्वयं भक्ति-गीतों की रचना किया करते और इकतारे पर मीठे स्वर में गाया करते। वे भगवान के भक्त कैसे हुए, इसके बारे में एक किंवदन्ती है।

[७] एक समय नरसी महेता की भाभी ने उन्हें खूब जलीकटी सुनाई, यह उनसे बरदाश्त नहीं हो सका। सो उन्होंने अपने घर का त्याग किया। सुदूर समुद्र-तट पर भावनगर शहर के पास गोपनाथ नामक तीर्थक्षेत्र है, वहीं जाकर वे बस गए। उधर उन्होंने खान-पान का त्याग करके महादेव की भक्ति आरम्भ की। उससे महादेव उनपर प्रसन्न हुए और बोले – तू चाहे जो माँग ले। नरसी महेता ने कहा – मुझे भगवान कृष्ण के दर्शन करवा दो। तब उन्हें भगवान कृष्ण का साक्षात्कार हुआ और आहिस्ता-आहिस्ता वे उच्च कोटि के भक्त बन गए।

[८] उस वक्त तू एक साल का था। घर में अनाज का कण भी नहीं था। समय ऐसा ही शाम का था। तुझे गोद में लिए हुए मैं चिन्ता करती हुई खड़ी थी कि वे बाहर से आ गए। नशे में झूमते हुए आए और शराब के लिए मुझसे पैसे

माँगने लगे। मेरे पास कानी कौड़ी भी नहीं थी। मैं बोली – मेरे पास क्या हो सकता है? इतना बच्चा ही बाकी है...। गुस्से से उन्होंने कहा – हाँ! फिर उस बच्चे को ही बेच दे और ला दे पैसे! ला दे जल्दी – कह रहा हूँ न! मैंने भी गुस्से के साथ कुछ कह दिया। वे मारे क्रोध के आपे के बाहर हो गए। मेरी अपेक्षा वह बच्चा ही तुझे अधिक (प्यारा) लगता है क्या?' ऐसा कुछ बुद-बुदाते हुए वे रास्ते पर गए। तुझे मार डालने के लिए पत्थर ले आए और तपाक के साथ वह तुझपर फेंक दिया — मैं बीच में आ गई। यह है सिर पर वह चोट।

[९] वह अचरज के साथ उस सुन्दरी की ओर देखता ही रहा। थोड़ी देर के बाद वह अचकचाते हुए बोला, 'तुम कौन हो? देवी या परी? कहाँ से आई हो? क्या नाम है तुम्हारा?'

देवी मधुर मुस्कराई। वह मीठे स्वर में बोली – शिदबा, उठो। डरो मत। मैं देवी हूँ। मेरा नाम है विद्युत। पर तुम मुझे 'बिजली' ही कहो। मैं अभी-अभी आसमान से पीपल (के पेड़) पर उतरी। अब संसार में चारों ओर मेरा ही युग, आरम्भ हुआ है। तुम्हारे काम करने के लिए मैं यहाँ आई हूँ। (जब) वह उस कोयना नदी का बाँध बन जाएगा तब मैं गाँव-गाँव में घूमनेवाली हूँ। अमावस के दिन मैं धूप जैसी उजली रोशनी देनेवाली हूँ। और शिदबा, तुम्हारे भारी काम मैं हलके बना दूँगी, तुम्हें सुखी बनाऊंगी। इधर देहात में रहकर मैं शहर की-सी सुख-सुविधाएँ कर देनेवाली हूँ।

[१०] 'आइए, विराजिए, गुरुजी! कहिए कुशल है न।'

'वाह! वाह! ठीक तो है।'

'आज इस तरफ आने का कैसे कष्ट किया?'

'बाबासाहब, आप ही के यहाँ जान-बूझकर आया हूँ।'

'बड़ी कृपा ही समझनी चाहिए। अजी गुरुजी! आप हमारे घर तशरीफ ले आए – हमारा अहोभाग्य है।'

'क्यों लज्जित कर रहे हैं, बाबासाहब? हमारे कार्य के लिए आप जैसों का शुभाशिष चाहिए, सो आया हूँ।'

'क्या करना चाहते हैं?'

'देखिए बाबासाहब, हमारी संस्था की माध्यमिक पाठशाला को आप जानते ही हैं। इस साल संस्था के संचालकों ने लड़कों को खेती-बाड़ी की शिक्षा देने की सोची है।'

'क्यों?'

'देखिए, भारत जैसे कृषि-प्रधान मुल्क में उत्तम कृषकों की आवश्यकता है। पर आज के लड़कों को खेतीबाड़ी में दिलचस्पी है कहाँ? उन्हें तो नौकरी चाहिए! खेती-बाड़ी के प्रति रुचि पैदा हो, इसलिए यह प्रयास है। दूसरे गरीब होनहार छात्र कुछ-न-कुछ काम करेंगे, उन्हें फीस आदि के बारे में हम कुछ रिआयत देनेवाले हैं।'

'पर गुरुजी, मैं यह नहीं समझ पाया कि मैं इसमें क्या कर सकूँगा।'

'बाबासाहब, आप इस गाँव के बड़े ज़मींदार हैं, बागान के मालिक हैं। अपने खेत में आप कुछ काम लड़कों को दे सकेंगे। अलावा उसके यह भी पढ़ा सकेंगे कि काम कैसे किया जाए!'

'ज़रूर दूंगा – बड़ी खुशी के साथ!'

'मैं आपका आभारी हूँ इसके लिए। सत्कार्य में खुशी से हाथ बाँटनेवाले आप जैसे लोग विरला ही होते हैं।'

◆ ◆ ◆

व्यावहारिक शब्दकोश

१. रिश्तेदार = नातेवाईक

कन्या	कन्या, लेक, मुलगी
चचेरा-री-रे	चुलत (विशेषण)
चाचा	चुलता, काका
चाची	चुलती, काकी-कू
गोद-नशीन	दत्तक (विशेषण)
गोत्री	गोत्रीय, भाईबंद
जननी	जननी, माता, आई
जमाई, जामात	जावई
जुड़वाँ, यमज	जुळे (न.)
जेठ	वडील दीर
जेठानी	वडील जाऊ
जोड़ा दम्पती	जोडपे
दादा	आजोबा, आजा
दादी	आजी
देवर	दीर
देवरानी	जाऊ
ननद (दी)	नणंद
ननदोई	नणदेचा नवरा
नवासा	(नातू) मुलीचा मुलगा
नाता	नाते (न.)
नातेदार	नातेवाईक
नाती	नातू
नतिनी-नातिन	नात
नाना	आजोबा, आजा
नानी	आजी
[ननिहाल	आजोळ]
पति	पति, नवरा
पत्नी	पत्नी, बायको
परदादा,(परदादी)	पणजोबा, (पणजी)
पिता, बाप	पिता, बाप, वडील

पुत्र	पुत्र
पोता - पोती	नातू - नात
पुरखा - पूर्वज	पूर्वज, वाडवडील
बापदादा	,,
फूफा	आत्याचा नवरा
फूफी, बुआ	आत, आत्या, आते
फुफेरा-री-रे	आते (विशेषण)
बन्धु	बन्धु, भाऊ
बहन	बहीण
बेटा-बेटी	लेक (पुं. स्त्री.) मुलगा-गी
बहनोई	बहिणीचा नवरा, मेहुणा, मेव्हणा
बहू, पतोहू	सून
बहू-बेटियाँ	लेकी-सुना
भतीजा-जी	पुतण्या-णी
भाई	भाऊ
भाभी	वहिनी
भानजा-जी	भाचा-ची
ममेरा-री-रे	मामे (विशेषण)
मामा, मामी	मामा, मामी
माँ, माता	आई, माता
मौसी	मावशी
मौसा	मावशीचा नवरा
मौसेरा-री-रे	मावस (विशेषण)
[मायका, पीहर	माहेर (न.)]
मित्र, दोस्त	मित्र, दोस्त
रिश्ता	नाते (न.)
वारिस	वारस
समधी, समधिन	व्याही, विहीण

ससुर	सासरा	साढू	साडू
[ससुराल	सासर (न.)]	सौत	सवत
सास	सासू	सौतेला-ली-ले	सावत्र (विशेषण)
साला	मेहुणा - मेव्हणा	सखी, सहेली	मैत्रीण
साली	मेहुणी - मेव्हणी	सगोत	सगोत्र (विशेषण)
सगा-गी-गे	सख्खा-ख्खी-ख्खे	संतान	संतान (न.)

२. शरीर के अंग = अवयव

अंग, अवयव	अवयव	खाल	चामडी
अंगुली	आंगूळ, बोट (न.)	गरदन	मान
अँगूठा	आंगठा	खून	रक्त (न.)
अंजलि (ली)	ओंजळ	गला	गळा
आँख	डोळा (पुं.)	गाल	गाल
आँत	आंतडे (न.)	गोद (दी)	मांडी
इंद्रिय	इन्द्रीय (न.)	घुटना	गुडघा
एड़ी	टांच़	चमड़ा-ड़ी	च़ामडे (न.)-डी
ओं (हों) ठ	ओंठ	चुटकी	चिमटी
कद, डील	(शरीराच़ा) बांधा	चुल्लू	ओंज़ळ
कंधा	खांदा	चोटी	वेणी, शेंडी
कनपटी	कानशील (न.)	चोंच	च़ोच़
कमर	कंबर	छाती	छाती
करवट	कूस	जटा	जटा (केसांच्या)
कलई	मनगट (न.)	ज़बान, जीभ	ज़ीभ
कलेजा	काळीज़, हृदय	जबड़ा	ज़बडा
काँख	काख	जाँघ	ज़ांघ
कानी अंगुली	करंगळी	जूड़ा	आंबाडा
कुहनी–कोहनी	कोपर (न.)	टाँग	टांग, तंगडी
कोख	कूस	ठुड्डी, ठोड़ी, चिबुक	हनुवटी-हनवटी
केंचुली	कांत	तलुवा	तळवा
खुर	खुर	तालु	टाळू
खोपड़ी	कवटी, टाळके (न.)	थूथना-नी	जनावरांच़ा लांबट (ज़बडा)
खोपा	विशेष प्रकारची वेणी, खोपा	दाँत	दांत

दाढ़	दाढ
दाढ़ी	दाढी
दिमाग	मेंदू
दिल	मन, चित्त (न.)
धमनी	धमनी, रक्त-वाहिनी
नख, नाखून	नख
नथुना	नाकपुडी
नस	नस, शीर
नाक	नाक (न.)
नाभि	नाभि, बेंबी
पर	पीस (न.)
पलक	पापणी
पंख	पंख
पसली	फांसळी
पिंडली	पोटरी
पीठ	पाठ
पुतली	बुब्बूळ
पूँछ, दुम	शेपुट (न.), शेपटी
पेट	पोट (न.)
पेशी	पेशी
पेड़ू	ओटीपोट (न.)
पैर, पाँव	पाय
पोर	(बोटाचे़) पेर
प्लीहा	पाणथरी
फेंफड़ा	फुप्फुस (न.)
बगल	बगल, काख
बाल	केस
बाहु, बाँह, भुजा	दंड, बाहू
बरौनी	पापणीचे़ केस
बित्ता	वीत
भौंह	भुवई
मसूढ़ा	हिरडी (स्त्री.)
माँस	मास
मुँह, मुख	तोंड (न.)
मूँछ	मिशी
मूत्राशय	मूत्राशय
मुट्ठी	मूठ
रीढ़	मेरुदंड, पाठीचा़ कणा
लार	लाळ
सिर	डोके (न.)
सींग	शिंग (न.)
सीना	छाती
स्तन	स्तन
हथेली	तळहात
हाथ	हात

३. पशु, पक्षी, कीटक इ.

अंड़ा	अंडे (न.)
अबाबील	पाकोळी
ऊँट, ऊँटनी	उंट, उंटीण
उल्लू	घुबड (न.)
कबूतर	कबूतर (न.)
कठफोड़वा	सुतार पक्षी
कछुआ	कासव (न.)
काकाकौआ	काकाकुवा
कीड़ा	किडा
कीटक	कीटक
कुत्ता	कुत्रा
कुतिया	कुत्री
केंकड़ा	खेकडा
केंचुली	कात
केंचुआ	गांडुळ (न.)
कोयल	कोकिळा

कौआ	कावळा
खटमल	ढेकूण
खच्चर	खेचर (न.)
खरगोश, खरहा	ससा
गधा	गाढव (न.)
गाय	गाय
गिध, गिद्ध	गिधाड (न.)
गिलहरी	खार
गिरगिट	सरडा
गीदड	कोल्हा
गोज़र	गोम
गोरैया	चिमणी
गोरू	गुरे (न.)
घड़ियाल	मगर
घोंघा	गोगलगाय
[घोंसला	घरटें (न.)]
चकवा, चकई	चक्रवाक, चक्रवाकी
[चमड़ा-चमड़ी	चामडे (न.)]
चमगादड	वटवाघुळ (न.)
चिचड़ी	गोचीड
चिड़िया	चिमणी
चीड़ा	चिमणा
चीता	चित्ता
चीतल	चितळ (न.)
चील	घार
चींटी	मुंगी
चुहिया	घूस, उंदरी
चूहा	उंदीर
च्यूँटा	मुंगळा
छछुंदर	चिचुंद्री
छाल	कातडी
छिपकली	पाल
जुगनू	काजवा
जूँ	ऊ
जोंक	जळू
झिल्ली, झींगुर	किरकिरकिडा
टिड्डी	टोळ (पुं.)
ढोर	गुरेढोरे
तितली	फुलपाखरू (न.)
तीतर	तितर पक्षी
तोता	पोपट
दीमक	वाळवी
घुन	वाळवी, कसर
नेवला	मुंगूस
नाग, नागिन	नाग, नागीण
पपीहा	चातक
पर	पीस (न.)
पंख	पंख
पतंगा, परवाना	पतंग
पिल्ला	कुत्र्याचे पिल्लू
[फन	फणा (स्त्री.)]
बकरा	बकरा, बोकड
बकरी	बकरी, शेळी
बत्तख	बदक (न.)
बछड़ा	वासरू (न.)
बछिया	कालवड
बाघ, बाघिन	वाघ, वाघीण
बारहसिंगा	सांबर (न.)
बाज़	ससाणा
बिच्छू	विंचू
बिल्ली	मांजर (न.)
बिलाव	बोका
बछेड़ा	घोडयाचे पोर
बग (गु) ला	बगळा
बन्दर	वानर

बगेरी, भरुही	भारद्वाज	मोरनी	लांडोर
बर्रें	गांधीलमाशी	मगर	मगर
बिल, माँद	बीळ (न.)	मच्छड़ (र)	डांस
बैल	बैल	मेंढ़क-की	बेडूक-बेडकी
भालू	अस्वल (न.)	रीछ	अस्वल
भेड़	मेंढरू (न.)	लंगूर	माकड
भेड़िया	लांडगा	बीरबहुटी, इंद्रवधू	मृगकिडा (पुं.)
मेमना	कोकरू (न.)	शुतुरमुर्ग	शहामृग
मवेशी	गुरेढोरे (न.)	शेर, शेरनी	सिंह, सिंहीण
मकड़ी	कोळी (पुं.)	सियार	कोल्हा
मकौड़ा	छोटा किडा	सूअर	डुक्कर (न.)
मछली	मासा, मच्छी	हरिन, हिरन	हरीण (न.)
मुर्गा-र्गी	कोंबडा-डी	हाथी, हथिनी	हत्ती, हत्तीण
मक्खी	माशी	साँढ़	सांड
मधुमक्खी	मधमाशी	साँप	साप
मोर	मोर (पुं.)		

४. फल, साग-तरकारी इ. = फळे, भाज्या-पाले इ.

अंगूर	द्राक्ष (न.)	ककड़ी	काकडी
अंजीर	अंजीर	कटहल	फणस
अंबिया	कैरी	कबीठ	कवठ (न.)
अखरोट	अक्रोड	कद्दू	भोपळा
अनन्नास	अननस	करेला	कारले (न.)
अनार	डाळिंब (न.)	करौंदा	करवंद
अमरूद	पेरू	काली (गोल) मिर्च	मिरी (न.)
अरवी	अळू (न.)	कुम्हडा-कोंहडा	कोहळा
आँवला	आवळा	किशमिश	मनुका, बेदाणा
आम	आंबा	केला	केळे (न.)
आलू	बटाटा	काजू	काजू
इमली	चिंच	खजूर	खजूर
ईख, ऊख, गन्ना	ऊस	खरबूजा	खरबूज (न.)

खारिक, छोहारा	खारीक
खीरा	खिरा
गाजर	गाजर
गूलर	उंबर
गोभी	कोबी
घीया	(दुध) भोपळा
घुंघची	गुंज
चकोतरा	महाळुंग (न.)
चचींड़ा, चचुलाई	पडवळ (न.)
चौलाई	चवळई
छोहारा	खारीक
जामुन	जांभुळ (न.)
जायफल	जायफळ (न.)
जैतून	ऑलिव्ह
टमाटर	टोमाटो, टमाटू
तरकारी	भाजी
तरबूज़	टरबूज़
दाख	बेदाणा, द्राक्ष
धनिया	कोथिंबीर (न.)
नारियल	नारळ
नारंगी	संत्रे (न.)
नाशपाती	नासपाती
नींबू	लिंबू (न.)
पपीता	पपई (स्त्री.)
	पोपया (पुं.)
परवल	परवल (न.)
पालक	पालक

पिश्ता	पिस्ता
पुदीना	पुदीना
प्याज	कांदा
फल	फळ (न.)
फली	शेंग
फूलगोभी	फ्लावर
बादाम	बदाम
बेर	बोर (न.)
बैंगन	वांगे (न.)
भिंडी	भेंडी
मिर्च	मिरची
मुनक्का	मनुका (स्त्री.)
मुसम्मी	मोसंबे (न.)
मूली	मुळा (पुं.)
मेथी	मेथी
मौलसिरी	बकूळ
रतालू	रताळे (न.)
लहसून	लसूण
लीची	लिची
लौकी	(दुध) भोपळा
शरीफा, सीताफल	सीताफळ (न.)
शहतूत	तुती
सहजन	शेवगा (पुं.)
सुपारी	सुपारी
सूरन	सुरण
सेब	सफरचंद (न.)

५. खाद्यान्न = धान्ये

अनाज, नाज	अन्नधान्ये, धान्य (न.)	जौ	जव, बार्ली
अरहर	तूर (स्त्री.)	चौलाई	चवळी
अलसी	आळशी	ज्वार	ज्वारी
ऊड़द	उडीद	तिल	तीळ
कर्डी बीज	करडी	तीसी	आळशी
खेसारी	(दुध्या) मटार	तेलहन	तेल-बी (न.)
गेहूँ	गहू	दलहन	कडधान्य (न.)
चना	चणे, हरभरा	दाल	डाळ
चावल	तांदूळ	धान	भात (न.)
बाजरा (री)	बाजरी	मसूर	मसूर (स्त्री.)
भुट्टा	कणीस (न.)	मूंग	मूग
मक्का, मकई	मका (पुं.)	मूंगफली	शेंगदाणा (पुं.)
मटर	मटार, वाटाणा	सरसों	मोहरी
मोंठ	मटकी	साबूदाना	साबूदाना

६. पेशेवर, कलाकार = व्यावसायिक, कलावन्त इ०

अखबारनवीस	वर्तमानपत्रकार	काश्तकार	शेतकरी
अभिनेता (त्री)	नट (टी)	किसान	शेतकरी
अध्यापक, अध्यापिका	शिक्षक, शिक्षिका	किताब-फरोश	पुस्तक-विक्रेता
अहीरिन, ग्वालन	गवळ(ळी)ण	कीर्तनिया	कीर्तनकार
अहीर, ग्वाला	गवळी	कुँजड़ा	भाजीविक्या
ओझा	मांत्रिक	कुली	हमाल
कबाड़ी	जुने सामान विकणारा	खज़ान्ची	खजिनदार
कवि, कवयित्री	कवि, कवयित्री	खलासी	खलाशी
कर्मचारी	नोकर	खेतीहर	शेतकरी
कलाल	मद्यविक्या	गायक, गवैया	गवई
कारकुन	व्यवस्थापक	घड़ीसाज़	घड्याळे दुरुस्त करणारा
कारीगर	कारागीर	चमार	चांभार
काछी	काछी		

चिट्ठीरसा	पोस्टमन
चित्रकार	चित्रकार
चुड़िहारा	कासार
ज़मींदार	ज़मिनदार
जहाज़ी	खलाशी
जादूगर	जादूगार
जासूस	हेर, दूत
जुलाहा	कोष्टी
जिल्दसाज़	बुक-बाइण्डर
जौहरी	जवाहिऱ्या
टिकटबाबू	तिकिटमास्तर
ठठेरा	तांबट
ठी (ठे) केदार	कॉन्ट्रॅक्टर
डाकबाबू	पोस्टमास्तर
डाकिया	पोस्टमन
डाक्टर	डाक्टर
तबलची	तबलजी
तमोली, तंबोली	पानवाला
तार-बाबू	तार-मास्तर
तेली, तेलिन	तेली, तेलीण
दर्ज़ी	शिंपी
द (दा) रोगा	फौज़दार
दलाल	दलाल, अडत्या
दवाफरोश	औषध-विक्रेता
दाई, धाय	दाई
दीवान	दिवाण, मंत्री
दूकानदार	दुकानदार
धुनियाँ	(कापूस) पिंजणारा
धोबी, धोबिन	धोबी, धोबीण
नकलनवीस	(कागद-पत्रांची) नक्कल करणारा
नकलची	नकल्या
नक्शा-नवीस	नकाशे काढणारा
नाई	न्हावी
नाविक	नावाडी
पटवारी	तलाठी
पनडुबिया	पाणबुडा
पनभ (ह) रा	पाणक्या
पहरेदार	पहारेकरी
पहलवान	पैलवान, मल्ल
परोसिया	वाढपी
प्रबन्धकार	व्यवस्थापक
पी (फी) लवान	माहूत
पुरोहित	भटजी
पुजारी	पुजारी
बढ़ई	सुतार
बजाज	कापड-विक्रेता
बहेलिया	पारधी
बागवान	माळी
बेगड़ी	रत्नपारखी, जवाहिरा
बिचवई	मध्यस्थ
भड़भूंजा	भडभुंजा
मनिहार	कासार
मछुआ	कोळी
मशालची	मशालजी
मल्ल	मल्ल
माली, मालिन	माळी, माळीण
मालिक, मालकिन	मालक, मालकीण
माँझी	खलाशी

मुतवल्ली	संरक्षक
मुनीम	प्रमुख कारकून
मु(मो)हर्रिर	कारकून
मुनसिफ	मुनसफ, सबजज्ज
मुद्दई	वादी
मुद्दालेह	प्रतिवादी
मुवक्किल	अशील, पक्षकार
मुद्रक	मुद्रक
मेहतर	झाड़ूवाला
मेज़वान	यजमान
मेमार	गवंडी
मोची	चांभार
योद्धा	योद्धा
रंगसाज़	रंगारी
राज	गवंडी
रसोइया	आचारी
रोकड़िया	कॅशियर
लु(लो)हार	लोहार
वैद्य, बैद	वैद्य
वकील	वकील
व्यापारी	व्यापारी
शिल्पी	शिल्पकार
शिकारी	शिकारी
संगतराश	पाथरवट
संवाददाता	बातमीदार
सुनार	सोनार
सौदागर	व्यापारी
हकीम	हकीम
हजाम	न्हावी
हीरातराश	हिऱ्याला पैलू पाडणारा

७. विकार, बीमारियाँ = रोग, आजार (संज्ञाएँ, विशेषण इ.)

अँगड़ाई	आळोखे-पिळोखे
अंधा	आंधळा
अपाहिज	पांगळा
अल्पदृष्टि	(ऱ्हस्व) लघुदृष्टि
अम्लपित्त	आम्लपित्त (न.)
अतिसार	हगवण (स्त्री.)
आंख आना	डोळे येणे
आलसी	आळशी
ऐंचा	तिरळा
ओकाई	ओकारी, शिसारी
कखौरी	काखमांजरी
कंठमाला	गंडमाला
कफ	कफ
कनपेड़ा	कर्णमूळ (न.)
काना, कनौड़ा	एकडोळ्या
कुबड़ा	कुबडा
केंचुआ	जंत
कै	ओकारी
कोढ़	कोड, महारोग
क्षय	क्षय
खरोंच	ओरबाडा (पुं.)
खरोंचना	ओरबाडणे
खसरा	इसब
खांसी	खोकला (पुं.)
खुजली	खाज
खुजलाना	खाजवणे

गठिया	संधिवात
गरदनतोड़ बुखार	मेनिंजाइटिस
गरमी	गरमी
गलका	नखुर्डे (न.)
गला बैठना	घसा-गळा बसणे
गलसूआ	गालगुंड (न.)
गाँठ, गिलटी	गाठ
गूँगा	मुका
गंजा	टक्कल असलेला
घाव	ज़खम (स्त्री.)
चक्कर	चक्कर, भोवळ (स्त्री.)
चकोता	खांडुक (न.)
चोट	ज़खम
चौंधियाना चकाचौंध होना	(डोळे) दिपणे, डोळचा- समोर अंधेरी येणे
चुनचुनाना	(थोडेसे) खाजणे
चेचक	देवी (स्त्री.)
छींकना	शिंकणें
छींक	शिंक
जहरबाद	कारबंकल, काळपुळी
जलोदर	जलोदर (न.)
जुकाम	सर्दी, पडसे (न.)
जूड़ी	हिंवताप (पुं.)
जँभाई	जांभई
ज्वर	ताप
डकार	ढेकर (स्त्री.)
तपेदिक	क्षय
तन्दुरुस्ती	आरोग्य (न.)
तिलमिली	तिरीमिरी
दमा	दमा
दर्द	वेदना, दुखणे
दस्त	जुलाब
दाद	नायटा
दाँत बैठना	दातखिळी बसणे
दूरदृष्टि	दीर्घदृष्टि
नहरुआ	नारू
नींद	झोप
पंग, पंगु	पांगळा
पथरी	मुतखडा
पसीना	घाम
पागल	वेडा
पित्त	पित्त (न.)
पीलिया, कामला	कावीळ (स्त्री.)
पीब	पू
पेचिश	आव
पीलपांव	हत्तीरोग
प्यास	तहान
फुंसी	पुटकळी
फोड़ा	फोड
बलगम	कफ
बवासीर	मूळव्याध
बिवाई	(हातापायांत पड- णारी) भेग, चीर
बीमार	आजारी
बीमारी	आजार, दुखणे (न.)
बुखार	ताप
बदहजमी	अपचन (न.)

भूख	भूक	लार	लाळ
मंदाग्नि	अग्निमांद्य (म.)	लूला	लुळा
मरोड़	मुरडा	शीतला	देवी
मस्सा	चामखीळ (स्त्री.)	सिरदर्द	डोकेदुखी (स्त्री)
महामारी	महामारी	सिसकी	हुंदका (पुं.)
मिरगी	मिरगी, फेफरे (न.)	सूजन	सूज
मोतियाबिंद	मोतीबिन्दू	सूजाक	परमा
मोहासा	मुरूम (न.)	स्वस्थ	निरोगी
मोच आना	(शिरं) लचकणे	हिचकी	उचकी
लँगड़ा	लंगडा	हैज़ा	कॉलरा
लकवा	अर्धांगवात		

८. घर-गिरस्ती का सामान

अखबार	वर्तमानपत्र (न.)	उस्तरा	वस्तरा
अगरू	अगरू	ऊद	ऊद
अगरबत्ती	उदबत्ती	ऐना, आईना	आरसा
अंगीठी	शेगडी	ऐनक	आरशी, चष्मा (पुं.)
अंगुस्तान	अंगुस्तान (न.)	ओखली	उखळ (न. स्त्री.)
अंगूठी	आंगठी	औज़ार	अवज़ार, साधन (न.)
अंगोछा	अंगपुसणे (न.)	कंघा	कंगवा (पुं.)
अंटी	बाबिन	कंघी	फणी
अलमारी	कपाट (न.)	कंगन	कांकण (न.)
आभूषण	दागिना	कड़ाही	कढई
आरती	आरती, निरांजन (न.)	करनफूल	कर्णफूल, इअरिंग (न.)
आरा	करवत (स्त्री.)	करघा	हातमाग
आलपीन	टाचणी	कमीज़	अंगरखा (पुं.)
इत्र	अत्तर (न.)	करछुली	पळी
इंधन	सरपण (न.)	कपूर	कापूर

करौंत	करवत
कंबल	कांबळे (न.)
कलम	लेखणी, पेन (न.)
कलमदान	पेनस्टॅण्ड
कागज़	कागद
कागज़दाब	पेपरवेट
कपड़ा	कापड (न.)
काजल	काजळ (न.)
किताब	पुस्तक (न.)
कील	चूक, खिळा (पुं.)
कुरता	अंगरखा, शर्ट
कुदाल	कुदळ
कुर्सी	खुर्ची
कैंची	कात्री
कोयला	कोळसा
खरल	खल
खड़िया, खड़ी	खडू (पुं.)
खाट, खटिया	खाट, बाज़
गहना	दागिना
गमला	कुंडी (स्त्री.)
गद्दा, गद्दी	गादी
गागर, गगरी	घागर
गिलास	ग्लास
गुलदस्ता	पुष्पगुच्छ
गुलदान	फुलदाणी (स्त्री.)
गुच्छा	गुच्छ, जुडगा
गुलाबजल	गुलाबपाणी (न.)
गुलाबपाश	गुलाबदाणी
गुलाल	गुलाल
गुल्ली	विटी
गुल्ली-डण्डा	विटी-दांडू
गेंद	चेंडू (पुं.)
घंटा	घंटा (स्त्री.)
घड़ी	घड्याळ (न.)
घडौंची	घडवंची
घुँघरू	घुंगूर
चकला	पोळपाट
चटाई	चटई
चक्की	जाते (न.)
चम्मच	चमचा
चन्दन	चन्दन
चलनी, छलनी	चाळणी
चरखा	चरखा
चादर	चादर
चाँदी	चांदी
चारपाई	बाज़
चाकू	चाकू
चाभी	किल्ली, चावी
चिलम	चिलीम
चिमनी	चिमणी
चूल्हा	चूल (स्त्री.)
चूड़ी	बांगडी
चोंसा	किसणी
छड़, छड़ी	छडी
छलनी	गाळणे
छाता	छत्री (स्त्री.)
छींका	शिंके (न.)
छुरा	सुरा

छेनी छिन्नी
जाजिम ज़ाजम (न.)
जाँता ज़ाते (न.)
जूता जोडा
झाड़-फानूस झुंबर (न.)
झाड़ू केरसुणी,झाडणी (स्त्री)
झाँझ . झंज़
झिंगोला झबले (न.)
झोली झ़ोळी
टिकिया गोळी
टेबुल टेबल (न.)
टोकरी टोपली
टोपी टोपी
डिब्बा डबा
डिबिया डबी
ढक्कन झ़ाकण (न.)
तसवीर चित्र (न.)
तकली टकली, चा़ती
तसला तसराळे (न.)
तकिया उशी (स्त्री.)
तश्तरी बशी
तराज़ू तराजू, तागडी (स्त्री.)
तवा तवा
ताला कुलूप (न.)
तानपूरा, तंबूरा तंबोरा
ताँबा तांबे (न.)
तागा तागा, दोरा
तिपाई तिवई
तेल तेल (न.)

तौलिया टॉवेल
तख्ता फळी (स्त्री.), फळा
थापी थापी
थेगली ठिगळ (न.)
थैला-ली मोटळी, थैली
दवात दऊत
दराँती विळा (पुं.)
दस्तावेज़ दस्तऐवज़
दातुन दातवण (न.)
दराज़ ड्रॉवर
दरी सतरंजी
दीयासलाई आगकाडी
दीया दिवा
दूरबीन दुरबीण
धूपदान धुपदाणी (स्त्री.)
धोती धोतर (न.)
नगाड़ा नगारा
नूपुर नुपूर
पलंग पलंग
पंखा पंखा
परात परात
प्याला पेला
पायल पैंज़ण (पुं.)
पाँवपोश पायपुसणे (न.)
पाटा पाट
पालना पाळणा
पालकी पालखी
पिंजड़ा पिंज़रा
पीतल पितळ

पीकदानी	पिकदाणी
पेच	स्क्रू
पेचकश	स्क्रू-ड्रायवर
फावड़ा	पावडे (न.)
फुंकनी	फुंकणी
बक्स	पेटी (स्त्री.)
बट्टा	वरवंटा, बत्ता
बर्तन	भांडे (न.)
बहंगी	कावड
बर्तन-ठिकरे	भांडी-कुंडी (न.)
बरमा	गिरमिट (न.)
बत्ती	बत्ती
बंसी	गळ, मुरली
बालटी	बादली
बाजूबंद	बाजूबंद
बाँसुरी	बांसरी
बाजा	बाजा, वाजंत्रे (न.)
बुरूस	ब्रश
बेलन	लाटणे (न.)
बोतल	बाटली
बोरा	पोते (न.)
	गोण (पुं. स्त्री.)
भंडा	भांडे (न.)
भस्म	भस्म (न.)
भाथा	भाता
मटका	मडके (न.)
मूसल	मुसळ (न.)
मथानी	माथणी, रवी
मोम	मेण (न.)

रस्सा-स्सी	दोर-री
रंग	रंग
रंदा	रंधा
रिकाबी	बशी
रज़ाई	रजई
रबड़	रबर
रीठा	रिठे (न.)
रूमाल	रुमाल
लकड़ी	लाकूड (न.)
लाठी	लाठी
लिफाफा	लिफाफा, पाकीट (न.)
लोटा-टी	लोटा-टी
लोढ़ा	वरवंटा
लोहा	लोखंड (न.)
शहनाई	सनई
शीशी	बाटली, कुपी
सलाई	आगकाडी, काडी
संदूक	पेटी (स्त्री.)
सरोता	अडकित्ता
संडसी	सांडशी
साड़ी	साडी
साबुन	साबण
सिल	पाटा (पुं.)
सिकड़ी	सांखळी
सिंदूर	शेंदूर, कुंकू (न.)
सीटी	शिटी
सुराही	सुरई
सूई	सुई, सूय
सोना	सोने (न.)

सोख्ता	टिपकागद
स्याही	शाई
हँसिया	विळा
हथौड़ा	हातोडी (स्त्री.)
हथियार	हत्यार (न.)
हुक्का	हुक्का

९. भोज्य वस्तुएँ इ. [फलों, साग-तरकारियों, खाद्यान्नों के नाम अन्यत्र दिए गए हैं।]

अंडा	अंडे (न.)
अचार	लोणचे (न.)
अजवाइन	ओवा
अदरक	आले (न.)
अफीम	अफू
अमचूर	आंबोशी इ.
अरारूट	आरारूट
आटा	पीठ (न.)
इलायची	वेलची, वेलदोडा
ईख, ऊख	ऊस
एरंड-रेंड-रेंडी का तेल	एरंडेल तेल (न.)
औषध	औषध (न.)
कचूमर	कोशिंबीर
कचोरी	कचोरी
कढ़ी	कढी
कत्था	कात
करौंदा	करवंद
कलेवा	न्याहारी (स्त्री.)
कहवा	कॉफी
काँजी	पेज़
काढ़ा	काढा
कीमा	खिमा
खली	पेंड (न.)
खसखस	खसखस
खाजा	खाजा
खाँड	खांड-साखर
खान-पान	खाणे-पिणे
खिचड़ी	खिचडी
खीर	खीर
खोआ, खोया	खवा
गांजा	गांजा
गुड़	गूळ
गुड़धानी	गुडदानी
गुलकंद	गुलकंद
गुलाब-जामुन	गुलाब-जाम
गोली	गोळी
घास	गवत (न.)
घी	तूप (न.)
घूंट	घोंट
चटनी	चटनी
चपाती	चपाती
चाट	चाट
चाय	चहा (पुं.)
चारा	चारा
चाशनी	पाक (पुं.)

चीनी	साखर	नमक	मीठ (न.)
चूना	चुना	नमकीन	खारे पकवान्न (न.)
चोकर	कोंडा	पकवान	पकवान्न (न.)
छाछ	ताक (न.)	पकौड़ी	भजे (न.)
जलपान	न्याहारी, नाश्ता	पसाव	पेज (स्त्री.)
जलेबी	जिलबी	पनीर	चीज़
जीरा	जिरे (न.)	पान	पान (न.)
जूस	रस्सा	पीठी	पिठी
जूसी	काकवी	पुलाव	पुलाव
जूठन	उष्टे अन्न (न.)	पूरी (ड़ी)	पुरी
टिकिया	वडी, गोळी	पेड़ा	पेढा
तरकारी	भाजी	फली	शेंग
ताडी	ताड़ी	फिटकिरी	तुरटी
ताड़गुड़	ताडगूळ	फुलका	फुलकी (स्त्री.)
तिल	तीळ	बताशा	बत्तासा
तिलकुट	तिळाची वडी	बहेड़ा	बेहडा
दलहन	कडधान्य (न.)	बड़ा	वडा
दलिया	रवा	बरफी	बर्फी
दवा	औषध (न.)	बसौंधी	बासुंदी
दही	दही (न.)	बालाई	मलई
दही-बड़ा	दही-वडा	बीड़ा	विडा
दाल	डाळ, आमटी	बीड़ी	विडी
दालचीनी	दालचिनी	भंग, भांग	भांग
बेसन	बेसन (न.)	भात	भात
बिनोला	सरकी (न.)	भुरता	भरीत (न.)
दूध	दूध (न.)	मक्खन	लोणी (न.)
धनिया	धने (पुं.)	मलाई	मलई, साय
	कोथिंबीर (स्त्री.)	मट्ठा	मठ्ठा
धतूरा	धोतरा	मसाला	मसाला

मांडा	पेज़ (स्त्री.)
मांस	मास (न.)
मिश्री, मिसरी	खडीसाखर
मिष्टान्न	पकवान्न (न.)
मुरब्बा	मोरंबा
मैदा	मैदा
रस	रस
रसा	रस्सा
रायता	रायते (न.)
रोटी	भाकरी
लड्डू	लाडू
लस्सी	लस्सी
लौंग	लवंग
शक्कर	साखर
शक्करपारा	शंकरपाळा
शरबत	सरबत (न.)
शराब	दारू
शहद	मध
शोरबा	भाजीचा रस
सनाय	सोनामुखी
सँखिया	अर्सेनिक (न.)
साग	भाजी
सानी	आंबोण (न.)
सालन	तोंडी-लावणे (न.)
सेवैंया	शेवया
सोंठ	सुंठ
सोंफ	शोपा
हल्दी	हळद
हलुवा	शिरा
हींग	हिंग
उबालना	उकळणे, उकडणे
ओसाना	पाखडणे
छौंकना, बघारना	फोडणी देणे
छौंक, तड़का	फोडणी
तलना	तळणे
थाली लगाना	(ताट) पान वाढणे
परोसना	(अन्न) वाढणे
पीसना	दळणे

१०. इमारत सम्बन्धी

अजायबघर	वस्तुसंग्रहालय (न.)
अटारी	छत (न.)
	सज्जा (पुं.)
अड्डा	अड्डा, तळ
अदालत	कोर्ट (न.)
अस्पताल	इस्पीतळ (न.)
अस्तबल	तबेला
आँगन	अं(आं)गण (न.)
आला	कोनाडा
इमारत	इमारत
ईंट	वीट
ओरी, ओलती	वळचण
कक्ष	दालन (न.), खोली, हॉल (पुं.)
कचहरी	कचेरी
कठहरा	कठडा
कमरा	खोली (स्त्री.)
कलश	कळस

कसरतखाना	व्यायामशाळा (स्त्री.)
काँजीखाना	कोंडवाडा
कारखाना	कारखाना
किवाड़	कवाड (न.)
किला	किल्ला
कुआँ	विहीर (स्त्री.)
कुटिया, कुटी	कुटी, झोपडी
कैदखाना, जेल	तुरुंग (न. पु.)
कोना	कोपरा
कोनिया	कोन, ब्रॅकेट
कोठी	कोठी
खपरैल	कौल (न.)
खंभा	खांब
खलिहान	खळे (न.)
खिड़की	खिडकी
खूंटी	खुंटी
गली	गल्ली
गिरजाघर	चर्च (न.)
गुम्बज	घुमट
घंटाघर	क्लॉक-टॉवर
घर	घर (न.)
च(चि)टखनी	बोलट (पुं.)
चबूतरा	चौथरा
चिड़ियाघर	प्राणी-संग्रहालय (न.)
चिमनी	चिमणी, धुराडे (न.)
चूना	चुना
चूल्हा	चूल (स्त्री.)
चौकी	चौकी
चौखट	चौकट
चौपाल	बैठक
छड़	गज़ (पुं.)
छत	छत (न.)
छप्पर	छप्पर (न.)
छापाखाना	छापखाना
जाली	ज़ाळी
जंजीर	सांखळी
झरोखा	झ़रोका
झोंपडी	झ़ोपड़ी
टट्टी	तट्टया (पुं.)
(पुलिस) थाना	(पोलिस) ठाणे
टिकटघर	तिकीट ऑफिस (न.)
डाकघर	पोस्ट ऑफिस (न.)
तहखाना	तळघर (न.)
ताक़	फडताळ, कोनाडा
तारघर	तार-ऑफिस (न.)
दरवाज़ा	दरवाज़ा
दवाखाना	दवाखाना
दफ्तर	कचेरी, कार्यालय (न.)
दरगाह	दर्गा
दालान	दालन (न.)
दीवार	भिंत
दुकान	दुकान (न.)
देहली	उंबरठा (पुं.)
धरन	आढे (न.)
धर्मशाला	धर्मशाळा

नल	नळ
नाबदान	गटार (न.)
नींव	पाया (पुं.)
पता	पत्ता
पड़ोस	शेजार
पलस्तर	प्लॅस्टर (न.)
पाखाना	पायखाना, संडास
पागलखाना	वेड्यांचे इस्पीतळ (न.)
पाठशाला, मदरसा	शाळा
पिछवाड़ा	मागची बाजू, पिछाडी
पुस्तकालय	ग्रंथालय (न.)
झुनझुना	खुळखुळा
पुतलीघर	गिरनी (स्त्री.)
पे(पि) शाबखाना	मुतारी (स्त्री.)
फर्श	फरशी
फाटक	फाटक (न.) वेस (स्त्री.)
फौवारा	कारंजे (न.)
बंगला	बंगला
बरामदा	व्हराण्डा
बल्लम	बहाल (न.)
बाड़ा	गोठा
बिजलीघर	वीजघर (न.)
बैठक	बैठक
मकान	घर (न.)
मचान	माचा
मंज़िल, खण्ड	मजला (पुं.)
मंडी	मंडई
मंदिर	मंदिर, देऊळ (न.)
महल	महाल
मसज़िद	मशीद
मीनार	मीनार, मनोरा (पुं)
मोरी	मोरी
रसोईघर	स्वयंपाक-घर (न.)
सराय	सराई, धर्मशाळा
साँकल	कडी (स्त्री.)
सीढ़ी	पायरी, शिडी, (स्त्री) जिना
स्नानघर	न्हाणीघर (न.)
हवेली	हवेली, वाडा (पुं)
हाँडी	हंडी
हौज	हौद

११. गणित, भूगोल, इतिहास, विज्ञान सम्बन्धी

अन्तरीप	भुशीर (न.)
अनुसन्धान	संशोधन
आक्रमण, हमला	हल्ला
किनारा	किनारा, काठ
किला	किल्ला
कोण	कोन
कोष्ठक	कंस
खंदक	खंदक
खाड़ी	खाडी, उपसागर (पुं.)
खाता	खाते (न.)
खाताबही	खतावणी

खान	खाण
गुना	पट
दुगुना	दुप्पट
तिगुना	तिप्पट
चौगुना	चौपट
गुणा करना	गुणाकार करणे, गुणणे
गुणन-फल	गुणाकार
घाटी, दर्रा	दरी, खोरे (न.)
घेरा	वेढा
घमासान	घनघोर
चोटी	शिखर (न.)
जोड़	बेरीज़
टापू	बेट (न.)
ढलान	उतार
तट	तट
तलवार	तलवार
तोप	तोफ
त्रिभुज	त्रिकोण
दर्शनशास्त्र	तत्त्वज्ञान (न.)
नक्शा	नकाशा
नहर	कालवा (पुं.)
नौदल	आरमार (न.)
पहाड़	पर्वत
पहाड़ी	टेकडी, डोंगर (न.)
बरछी	बर्ची
बम	बॉम्ब
बाँध	धरण (न.)
बाकी	वज़ाबाकी
बालू	वाळू
बन्दरगाह	बंदर (न.)
बन्दूक	बन्दूक
बगावत	बंड (न.)
बागी	बंडखोर
बुर्ज	बुरूज़
भाला	भाला
भाग देना	भागणे, भागाकार करणे
भाग-फल	भागाकार
भूतविज्ञान	पदार्थविज्ञान (न.)
मरुभूमि, रेगिस्तान	वाळवंट (न.)
मैदान	मैदान (न.)
मनोविज्ञान	मानसशास्त्र (न.)
मुहिम	मोहिम
मोरचा	मोर्चा
राशि	रास
रेखा	रेषा
रेखागणित	भूमिति (स्त्री.)
राजनीति	राज्यशास्त्र
लड़ाई	लढाई
विज्ञान	शास्त्र, विज्ञान (न.)
वृत्त	वर्तुळ (न.)
शिक्षाशास्त्र	शिक्षणशास्त्र (न.)
सुलह, संधि	तह (पुं.)

✦ ✦ ✦